भारत का रक्षक

महाराजा सुहेलदेव

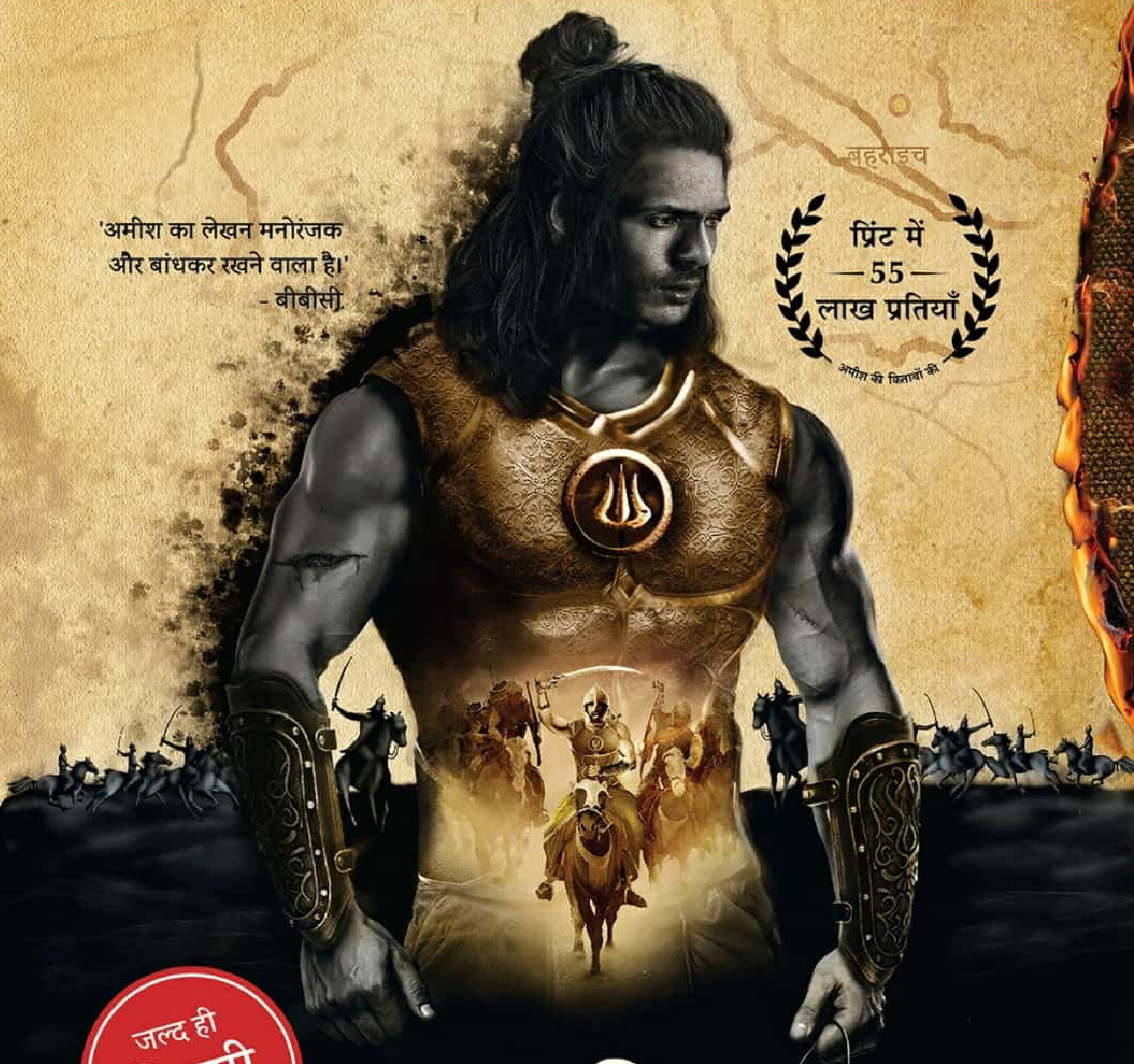

'अमीश का लेखन मनोरंजक और बांधकर रखने वाला है।'
- बीबीसी

प्रिंट में
— 55 —
लाख प्रतियाँ
अमीश की किताबों की

जल्द ही
फ़िल्मी
पर्दे पर

अमीश

इम्मॉर्टल राइटर्स सेंटर की किताब

भारत का रक्षक

महाराजा सुहेलदेव

1974 में जन्मे अमीश ने आईआईएम (कोलकाता) से पढ़ाई करने के बाद एक बोरिंग बैंकर से एक सफल लेखक तक का लम्बा सफ़र तय किया है। अपने पहले उपन्यास *मेलूहा के मृत्युंजय* (शिव रचना त्रयी का प्रथम भाग) की सफलता से प्रोत्साहित होकर वो फ़ाइनेंशियल सर्विसेज में चौदह साल का करियर छोड़ कर लेखन में ध्यान केन्द्रित करने लगे। इतिहास, पौराणिक कथाओं और दर्शन के प्रति उनके रुझान ने उन्हें विश्व के सभी धर्मों और उनके सौन्दर्य को समझने की प्रेरणा दी। अमीश की किताबों की पचपन लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं और उनका उन्नीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

www.authoramish.com
www.facebook.com/authoramish
www.instagram.com/authoramish
www.twitter.com/authoramish

अनुवादक *धीरज कुमार अग्रवाल* मीडिया प्रोफेशनल हैं और मुम्बई में रहते हैं। जर्नलिज़्म और कम्युनिकेशन में आपका पन्द्रह वर्षों से अधिक का अनुभव है। आप एक दर्जन से अधिक किताबों का हिन्दी में अनुवाद कर चुके हैं। आपकी पर्सनल फाइनेंस से जुड़े मुद्दों में गहरी पकड़ है और *क्विंट* और *निवेश मन्थन* जैसी वेबसाइट्स के लिए नियमित रूप से आर्टिकल लिखते हैं।

अमीश की अन्य पुस्तकें

शिव रचना त्रयी

भारतीय प्रकाशन क्षेत्र के इतिहास में सबसे तेज़ी से बिकने वाली पुस्तक शृंखला

मेलूहा के मृत्युंजय (शिव रचना त्रयी का भाग 1)

नागाओं का रहस्य (शिव रचना त्रयी का भाग 2)

वायुपुत्रों की शपथ (शिव रचना त्रयी का भाग 3)

राम चंद्र शृंखला

भारतीय प्रकाशन क्षेत्र के इतिहास में दूसरी सबसे
तेज़ी से बिकने वाली पुस्तक शृंखला

राम—इक्ष्वाकु के वंशज (शृंखला का भाग 1)

सीता—मिथिला की योद्धा (शृंखला का भाग 2)

रावण—आर्यवर्त का शत्रु (शृंखला का भाग 3)

कथेतर

अमर भारत : युवा देश, कालातीत सभ्यता

'अमीश के लेखन ने भारत के समृद्ध अतीत और संस्कृति के प्रति अथाह जिज्ञासा उत्पन्न की है।'

—श्री नरेन्द्र मोदी जी

(आदरणीय प्रधानमंत्री)

'अमीश का लेखन युवाओं को प्राचीन मूल्य प्रणालियों से परिचित करवाता है, साथ ही उनकी उत्सुकता को उभारता और सन्तुष्ट करता है।'

—श्री श्री रवि शंकर

(आध्यात्मिक गुरु एवं आर्ट ऑफ़ लिविंग फ़ाउंडेशन के संस्थापक)

'अमीश की पुस्तक दिलचस्प, बाँध लेने वाली, और जानकारी से भरपूर है।'

—अमिताभ बच्चन

(अभिनेता एवं सदी के महानायक)

'अमीश भारत के सबसे बड़े साहित्यिक रॉकस्टार हैं।'

—शेखर कपूर

(पुरस्कार विजेता फ़िल्म डाइरेक्टर)

'किसी भी अन्य लेखक के बनिस्बत, विचारशील और गहन अमीश नए भारत का अधिक प्रतिनिधित्व करते हैं।'

—वीर सांघवी

(वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार)

'अमीश अपनी पीढ़ी के सबसे ज़्यादा मौलिक चिन्तक हैं।'

—अर्नब गोस्वामी

(वरिष्ठ पत्रकार एवं एम.डी., रिपब्लिक टीवी)

'अमीश के पास बारीकियों के लिए पैनी नज़र और बाँध देने वाली कथात्मक शैली है।'

—डॉ. शशि थरूर

(सांसद एवं लेखक)

'अमीश के पास अतीत का एक असाधारण, मौलिक और आकर्षक नज़रिया रखने वाला गहन विचारशील मस्तिष्क है।'

—शेखर गुप्ता

(वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार)

'नये भारत को समझने के लिए आपको अमीश को पढ़ना होगा।'

—स्वपन दासगुप्ता

(सांसद एवं वरिष्ठ पत्रकार)

'अमीश की सारी पुस्तकों में उदारवादी प्रगतिशील विचारधारा प्रवाहित होती है: लिंग, जाति, किसी भी क़िस्म के भेदभाव को लेकर... वे एकमात्र भारतीय बैस्टसेलिंग लेखक हैं जिनकी वास्तविक दर्शनशास्त्र में पैठ है—उनकी पुस्तकों में गहरी रिसर्च और गहन वैचारिकता होती है।'

—संदीपन देब

(वरिष्ठ पत्रकार एवं सम्पादकीय निदेशक, स्वराज्य)

'अमीश का असर उनकी किताबों से परे है, उनकी किताबें साहित्य से परे हैं, उनके साहित्य में दर्शन रचा-बसा है, जो भक्ति में पैठा हुआ है जिससे भारत के प्रति उनके प्रेम को शक्ति प्राप्त होती है।'

—गौतम चिकरमने

(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

'अमीश एक साहित्यिक करिश्मा हैं।'

—अनिल धारकर

(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

भारत का रक्षक
महाराजा सुहेलदेव

अमीश

और

द इम्मॉर्टल राइटर्स सेंटर

अनुवाद
धीरज कुमार अग्रवाल

eka

eka

First published in English as *Legend of Suheldev* in 2020
by Westland Publications Private Limited

Published in Hindi as *Maharaja Suheldev* in 2020 by Eka,
an imprint of Westland Publications Private Limited

1st Floor, A Block, East Wing, Plot No. 40, SP Infocity,
Dr MGR Salai, Perungudi, Kandanchavadi, Chennai
600096

Westland, the Westland logo, Eka and the Eka logo
are the trademarks of Westland Publications Private
Limited, or its affiliates.

Copyright © AmishTripathi, 2020

Amish Tripathi asserts the moral right to be identified
as the author of this work.

ISBN: 9789387894044

This is a work of fiction. Names, characters,
organisations, places, events and incidents are
either products of the author's imagination or used
fictitiously.
All rights reserved

No part of this book may be reproduced, or stored in
a retrieval system, or transmitted in any form or by
any means, electronic, mechanical, photocopying,
recording, or otherwise, without express written
permission of the publisher.

विषय सूची

पढ़ना शुरू करें
नास्ति वा भाषा...
ना है कोई...
समर्पण
आभार
प्रस्तावना
अध्याय 1
अध्याय 2
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
अध्याय 12
अध्याय 13
अध्याय 14
अध्याय 15
अध्याय 16
अध्याय 17
अध्याय 18
अध्याय 19
अध्याय 20
अध्याय 21
अध्याय 22
अध्याय 23
अध्याय 24

अध्याय 25
अध्याय 26
अध्याय 27
अध्याय 28
अध्याय 29
अध्याय 30
अध्याय 31
अध्याय 32
अध्याय 33
अध्याय 34
अमीश की अन्य किताबें

ॐ नमः शिवाय

ब्रह्मांड भगवान शिव को नमन करता है।

मैं भगवान शिव को नमन करता हूँ।

नास्ति मे जातिः नास्ति मे धर्मपन्थः
नास्ति वा भाषा नास्ति मे राज्यं
एकोयं परिक्यः एकैव व्यक्तिता
भारतमातः सुता भारतमातः सुता
    जीवनं मम आत्मा वा
    कर्मं मम श्रद्धा वा
भारतमात्रे खलु भारतमात्रे खलु
यदि मोक्षप्राप्तिः यदि वा समप्रश्नं
    एका प्रत्युक्तिः को सि प्रश्नस्य
प्रेक्षेत अध्यक्षः यदि वा परमेषः
एका प्रत्युक्तिः भारतमातः सुता
    एकोयं परिक्यः एकैव व्यक्तिता
    भारतमातः सुता भारतमातः सुता

ना है कोई जाति मेरी, ना ही कोई पंथ है मेरा,
ना है मेरी भाषा कोई, ना ही कोई राज्य है मेरा,
भारत माँ की कन्या हूँ मैं, बस इतना ही परिचय मेरा।
मेरी आत्मा, जीवन मेरा,
सारी श्रद्धा, कर्म भी मेरा,
भारत माँ के लिए है सबकुछ, उन्हीं के लिए सबकुछ मेरा।
प्राप्त हो मुझे मोक्ष भी चाहे, या अगर कयामत का दिन हो,
सबसे उपर जो है बैठा, उस परमेश्वर का सवाल हो,
मुझसे पूछा जाए अगर ये,
पुत्री क्या है परिचय तेरा,
इतना ही प्रत्युत्तर होगा, एकमेव ये परिचय मेरा,
भारत माँ की कन्या हूँ मैं, बस इतना ही परिचय मेरा।

मेरे जीजा हिमांशु रॉय के लिए,
जो अब नहीं रहे।

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिससे मैं कभी इतना प्रभावित हुआ हूँ।
आपकी छत्र-छाया में मैं सुरक्षित था।
आप वो रोशनी थे जिसने मुझे राह दिखाई।
अब मौत का कोई डर नहीं।
क्योंकि अब आप उस तरफ़ हैं, मेरे भाई।
मैं सांस लेता रहूँगा। मैं आगे बढ़ता रहूँगा।
क्योंकि आप भी यही चाहेंगे, मेरे भाई।
लेकिन कभी तो मेरे क़दम भी थमेंगे...
और वो एक सुखद दिन होगा।
क्योंकि आप मेरा इन्तज़ार कर रहे होंगे।
हम फिर मिलेंगे...
फिर मिलेंगे, मेरे भाई।

आभार

मेरे लिए, पेशेवर तौर पर पिछले कुछ साल बेहतरीन रहे हैं। व्यक्तिगत रुप से बेहद ख़राब, कल्पना से भी परे। एक ऐसा समय भी आया जब मैं क़िस्मत के लगातार प्रहारों से इतना थक गया कि एक दिन सुबह पूजा करते हुए मैंने ऊपर देखा और भगवान शिव पर चिल्ला दिया कि अब मेरी परीक्षा लेना बन्द करें। मैं नहीं जानता कि जीवन का ये दौर कैसे गुज़रेगा। हमारे पूर्वजों ने कहा है कि दुख व्यक्तिगत विकास का रास्ता है। उम्मीद करता हूँ कि वे सही हों...लेकिन मैं ये जानता हूँ कि पिछले कुछ वर्षों में मुझे किसने आगे बढ़ाया है: मेरे लेखन ने। यही मेरी शरणस्थली रहा है। ये मुझे हारने नहीं देता। मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने लिखने के लिए मेरा हौसला बढ़ाकर मुझे जीने में मदद की।

मेरे दिवंगत ससुर श्री मनोज व्यास, और मेरे दिवंगत जीजा हिमांशु रॉय। ये दो इंसान हैं, जिनकी मैंने दिल से तारीफ़ की है। सम्मान, गरिमा और मर्यादा की उनकी भावना मुझे प्रेरणा देती रहती हैं।

नील, मेरा छोटा सा बेटा, मेरा जीवन है, मेरे जीवन का उद्देश्य है। दुनिया में मेरे लिए इससे बड़ा सुख कुछ नहीं है जब वो 'डैड' पुकारता हुआ दौड़कर मेरी बाँहों में आ जाता है।

भावना, अनीश, मीता और आशीष, मेरे भाई-बहनों और मेरी भाभी का धन्यवाद, उन सारी चीज़ों के लिए जो वे करते हैं। आम तौर पर वो हर अध्याय के लिखे जाने के बाद उसका पहला ड्राफ्ट पढ़ते हैं। और सबसे ज़्यादा अहम ये है कि वे मेरा हौसला बढ़ाते हैं जब मैं निराश होता हूँ। इस जीवन में यही लोग हैं जिनके साथ मैंने जन्म लिया है और मुझे इस बात की ख़ुशी है।

अपने बाकी परिवार: उषा, विनय, शरनाज़, प्रीति, डोनेटा, स्मिता अनुज, रुता, मितांश, डेनियल, एडेन, केया, अनिका और आश्ना को धन्यवाद, उनके लगातार विश्वास और प्रेम के लिए।

मेरे प्रकाशक वेस्टलैंड के सीईओ गौतम, और मेरी सम्पादकों कार्तिका, शिखा, दीप्ति और संघमित्रा का आभार। मेरे परिवार के बाहर जो लोग इस प्रोजेक्ट

के सबसे करीब हैं, वे यही हैं। दोस्त से ज़्यादा, अब ये लोग परिवार की तरह हैं। दीप्ति को विशेष धन्यवाद जो राइटर्स सेंटर की इंचार्ज हैं। मैं उनके साथ राइटर्स सेंटर में कई किताबें करने को लेकर उत्साहित हूँ। वेस्टलैंड की बेहतरीन टीम के बाकी सदस्यों: अरुणिमा, क्रिस्टीना, दिव्या, जयशंकर, कृष्णकुमार, मधु, मुस्तफ़ा, नवीन, नेहा, निधि, राजू, संयोग, सतीश, शत्रुघ्न, सतीश, श्रीवत्स, सुधा, विपिन के साथ कई और लोगों का धन्यवाद। ये प्रकाशन कारोबार की सबसे शानदार टीम है।

अमन, विजय, शार्विका, शुभांगी,पद्मा, सीमा और मेरे ऑफिस के बाकी सहकर्मियों का धन्यवाद। ये मेरे कारोबार के दूसरे कामों को संभाल लेते हैं, जिससे मुझे लिखने का काफ़ी वक़्त मिल जाता है।

हेमल, नेहा, हितेश, हर्ष, पुनीत, बेवर्ली, गीतिका, प्रकाश, हर्षद और टीम ऑक्टोबज़ का धन्यवाद। इन्होंने किताब की मार्केटिंग से जुड़ी ज़्यादातर चीज़ें तैयार कीं, जिनमें शानदार मुखपृष्ठ और सभी डिजिटल गतिविधियाँ शामिल हैं। मैं इनके साथ कई वर्षों से काम कर रहा हूँ। पुरानी शराब की तरह ये पुराने होने के साथ और बेहतर होते जा रहे हैं।

मयंक, दीपिका, स्नेहा, नरेश, विशाल, सरोजिनी, कीर्ति और मो'ज़ आर्ट टीम का धन्यवाद, जिन्होंने किताब के लिए मीडिया रिलेशन और मार्केटिंग समझौतों का काम किया है। मीडिया रिलेशंस की इतनी अच्छी समझ रखने वाले इनसे बेहतर मीडिया मैनेजर्स मैंने नहीं देखे हैं।

बेजोड़ डिज़ाइनर और उससे भी बढ़कर एक विचारक हैं आशीष मांकड़, जो मेरा मार्गदर्शन करते हैं और मेरी किताबों के आर्ट का सारा ज़िम्मा संभालते हैं।

सत्या और उनकी टीम का धन्यवाद, जिन्होंने इस किताब के अन्दरूनी कवर पर लगाने के लिए लेखक की नई तस्वीरें ली हैं। उन्होंने एक मामूली से इंसान को बेहतर रूप दिया है।

प्रीति, जिन्हें मैं प्रकाशन जगत की जादूगर कहता हूँ, उनका धन्यवाद। वो मेरी किताबों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों पर काम करती हैं।

कैलेब, क्षितिज, सन्दीप, रोहिणी, धारव, हिना, मोहन और उनकी टीमों का धन्यवाद, जो कारोबारी, क़ानूनी और मार्केटिंग से जुड़ी सलाह के साथ मेरे काम में मदद करती हैं।

संस्कृत विद्वान मृणालिनी का धन्यवाद, जो रिसर्च के काम में मेरे साथ रहती हैं।

मेरी किताबों के जोशीले पाठक आदित्य का धन्यवाद जो अब मित्र बन गए हैं और मेरी किताबों के तथ्यों की जाँच करते हैं।

लन्दन के नेहरू सेंटर में मेरी टीम, ब्रिज, नारायण, अर्चना, नवीन, सन्दीप और रविचन्द्रन को उनके स्नेह और सहयोग के लिए धन्यवाद।

सूर्या से, राजिन्दर गंजू का धन्यवाद, जिन्होंने इस किताब के अंग्रेज़ी संस्करण को टाइपसेट किया।

और अन्त में, विशेष रुप से, आप पाठकों का धन्यवाद। आपके लगातार प्रेम, समझ और प्रोत्साहन का मैं दिल से आभारी हूँ। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। भगवान शिव आप सभी पर अपना आशीर्वाद बरसाएँ।

प्रस्तावना

मैंने हमेशा कहा है कि मेरी सभी कहानियाँ भगवान शिव का आशीर्वाद हैं। ये मेरे पास कैसे आती हैं, मेरी कल्पना में कैसे विकसित होती हैं, मैं कैसे उन्हें देखता हूँ, सब कुछ उन्हीं का आशीर्वाद है। पर उन्होंने मुझे मेरी हैसियत से ज़्यादा दिया है। मैं डेढ़ से दो सालों में एक से ज़्यादा किताब नहीं लिख सकता। और इस रफ़्तार से तो शायद उनके द्वारा दिए गए सभी विचारों को किताब के रुप में लाने से पहले ही मैं दुनिया से चला जाऊँगा। मैं इन सभी कहानियों को अपने साथ लेकर नहीं जाना चाहता।

इसलिए, राइटर्स सेंटर का विचार आया। ये सुझाव मेरी टीम का था, और मुझे भी इसमें दम लगा। मैं लेखकों की एक टीम के साथ काम करता हूँ, जिसे मैं अपनी पूरी कहानी सुनाता हूँ और शोध सामग्री पढ़ने के लिए देता हूँ। फिर वो कहानी का पहला ड्राफ्ट लिखते हैं, जिसके बाद मैं उस पर काम करता हूँ। तो कहानी की शुरूआत और अन्तिम लेखन मैं ही करता हूँ, जबकि पहला ड्राफ्ट मेरी टीम लिखती है। हमने पूरी कोशिश की है कि राइटर्स सेंटर की सभी किताबें पढ़ने में मेरी बाकी किताबों की तरह ही लगें। पर हम पहले ही ईमानदारी से ये बताना चाहते थे कि ये किताबें पूरी टीम की कोशिशों का नतीजा हैं, केवल मेरी मेहनत का नहीं। राइटर्स सेंटर के लेखकों को भुगतान किया जाता है, चाहे किताब की क़िस्मत जो भी हो। और अगर वो चाहते हैं तो उनके नाम कवर पर भी दिए जाते हैं। यदि वे, किसी भी वजह से गुमनाम रहना चाहते हैं, तो फिर उनकी जगह राइटर्स सेंटर का नाम लिखा जाता है।

अब, ये किताब किस बारे में है?

पिछले 2,000 वर्षों के इतिहास के विशाल काल खंड ने भयानक हिंसा की बाढ़ देखी है। इसने विश्व की सभी प्राचीन संस्कृतियों को मिटा दिया: बहुदेववादी रोम, रहस्यमय मिस्र और ग्रीस, ज़ोरास्ट्रियन ईरान, मूर्तिपूजक मध्य अमेरिका, और दूसरी कई संस्कृतियाँ। लेकिन एक प्राचीन सभ्यता नष्ट नहीं हुई। एक स्वाभिमानी

संस्कृति ने ख़ुद को टूटने या बदलने नहीं दिया। ये कई बार पीछे हटी, पर उन चुनिन्दा सभ्यताओं में एक है जो आज भी गर्व से खड़ी हैं। और ये सभ्यता है भारत।

हमारी भूमि पर जब हमलावर आए तो हमें ऐसे नायक और नायिकाओं की ज़रूरत थी जो हमारा नेतृत्व कर सकें। हमारी रक्षा कर सकें। और हमारे पास कई वीर पुरुष और महिलाएँ थीं, जिनके पास लड़ने का साहस और संकल्प था। लेकिन अगर आप विस्तार से हमारा इतिहास पढ़ेंगे तो पाएँगे कि विदेशियों से लड़ने के लिए इन नायकों और नायिकाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती विभाजित समाज को एकजुट करना थी। हमारे भीतर एक राष्ट्रीय चेतना निश्चित तौर पर थी, जिसके सबूत सदियों पुराने विष्णु पुराण में मिलते हैं, पर हम भारतीयों की स्वाभाविक प्रवृत्ति एक-दूसरे से लड़ने की है। अन्दरूनी कलह हमारा पसन्दीदा खेल है, जिसे हम उसी समय थोड़ी देर के लिए रोकते हैं जब दुश्मन हमारे दरवाज़े पर होता है। तो ये सबसे बड़ी चुनौती थी जो हमारे सभी नायक और नायिकाओं के सामने आई —हरिहर और बुक्का राय से लेकर महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, लाचित बोड़फुकन, रानी अब्बक्का, महाराजा रणजीत सिंह, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अनगिनत बाकी महान पुरुषों और महिलाओं तक। चुनौती हमेशा यही थी कि लगातार चलने वाली इस अन्दरूनी कलह को कैसे रोका जा सके।

ये नेता कामयाब हुए जहाँ बाकी नाकाम रहे। ये हमें एकजुट करने में कामयाब रहे।

दुखद है कि इनमें से कई नायकों और नायिकाओं को हमारे इतिहास की किताबों से गायब कर दिया गया है। और अगर ये महान पुरुष और महिलाएँ हमसे, अपने वारिसों से, कुछ चाहते हैं तो बस यही कि हम उनकी कहानियाँ याद रखें। कि हम उनकी कहानियाँ साझा करें। कि हम उनकी तारीफ़ करें। और उनसे सीखें।

आज हमें, पहले से कहीं ज़्यादा ऐसी कहानियाँ, ऐसे महापुरुषों के इतिहास को सुनने की ज़रूरत है, जिन्होंने हमें एकजुट किया और हमारे देश को क्रूर विदेशी हमलावरों से बचाने के लिए हमें उनका सामना करने, उन्हें हराने और अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए प्रेरित किया।

ये किताब ऐसे ही महानायक की काल्पनिक कहानी है, जो वास्तविक घटनाओं से प्रेरित है। ग्यारहवीं सदी के तेजस्वी महाराजा सुहेलदेव की कहानी।

ये दुखद है कि आधुनिक भारत के ज़्यादातर लोगों ने देश के इस महान पुत्र का नाम तक नहीं सुना है, उसकी कहानी जानना तो बहुत दूर की बात है।

लेकिन आज, और भी ख़राब, और दिल तोड़ने वाली बात ये है कि हमारा देश बंटा हुआ है। और इसलिए इस बात पर भी मतभेद है कि वो किस वंश या समुदाय के थे। कई समुदाय दावा करते हैं कि वे उनमें से एक थे। इस महान योद्धा का जीवन खत्म होने के कई सदियों बाद लिखे गए ब्रिटिश गजट इन दावों के समर्थन में इस्तेमाल किए जा सकते हैं। मैं नहीं जानता कि सच्चाई क्या है। मेरे लिए यही सच है कि वो भारतीय थे। माँ भारती के गौरवशाली सपूत। तो मैं उनके वंश पर कुछ नहीं कहना चाहता। मैंने नहीं कहा कि वो किस वंश के थे।

इस किताब में मैंने सिर्फ इतना ही कहा है कि महाराजा सुहेलदेव स्वाभिमानी भारतीय थे, जो माँ भारती की रक्षा के लिए उस समय लड़े जब हमारे देश को सबसे ज़्यादा क्रूर विदेशी हमलावरों से ख़तरा था। उनके नेतृत्व में सभी एक साथ आए—सभी हिन्दू, बौद्ध और भारतीय मुसलमान। वे सभी अपनी मातृभूमि के लिए लड़े। और एक गौरवशाली जीत हासिल की। ये सोचकर हम उत्साहित हो सकते हैं, लेकिन भारत के इस महान सपूत से एक चीज़ सीखने को मिलती है: जब हम, भारतीयों के रूप में, एकजुट होते हैं, तो हम अजेय होते हैं।

मेरी देशभक्ति और माँ भारती के लिए मेरा प्रेम मुझे ये कहानी बताने के लिए विवश करते हैं। लेकिन इसके पीछे एक और वजह भी है।

समुदायों के अलग-अलग दावों के बावजूद, एक बात पर लगभग सभी सहमत हैं कि महाराजा सुहेलदेव *शिव भक्त* थे। और जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, मैं मानता हूँ कि कहानी कहने की मेरी कला महादेव का आशीर्वाद भी है। एक दिन मैं इस नश्वर शरीर को छोड़ दूँगा, और अपनी अगली जीवन यात्रा के पहले, हो सकता है कि मुझे भगवान शिव के सामने खड़ा होने का मौक़ा मिले। और तब, हो सकता है भगवान मुझसे जवाब माँगें। उन्होंने मुझे एक प्रतिभा दी थी: मैं कहानियाँ सुना सकता था; तो फिर मैंने उनके सबसे बड़े भक्त, महाराजा सुहेलदेव की कहानी क्यों नहीं सुनाई? मैं अपने ईश्वर के सामने शर्मिन्दा नहीं होना चाहता। मुझे लिखना होगा। मैं आपको उस समय की कहानी सुनाऊँगा जब भारत इस महानायक की अगुवाई में एकजुट हुआ और दुनिया में सबसे खूँखार और निर्दयी योद्धाओं से लैस मध्य एशिया के तुर्कों की सेना को पराजित किया। हमने उन्हें बुलाया नहीं था। हम लड़ना नहीं चाहते थे। वे आए। उन्होंने हमें लूटा। हम लड़े। हम जीते। हमने अपनी संस्कृति की रक्षा की। जब हम भारतीय एक-दूसरे के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं, तब हमें कोई नहीं हरा सकता है।

अगर बस हमें एकजुट किया जा सके।

अगर बस...

मैं उस दिन का सपना देखता हूँ जब हम सब एक स्वर में बोलेंगे:

जय सुहेलदेव! जय माँ भारती!

अध्याय 1

सोमनाथ, भारत, 1025 ईसवी

एक भारतीय योद्धा गुर्रा रहा था, उसके माथे पर नसें स्पष्ट रूप से उभरी हुई दिख रही थीं, शक्तिशाली भुजाएँ फड़क रही थीं, हाथ पूरी ताक़त से उसके तुर्क दुश्मन को मसल रहे थे। दुश्मन उसकी चौड़ी छाती पर लगातार वार किए जा रहा था, फिर उसने उसकी आँखों को ख़रोंचने की कोशिश की। लेकिन तुर्क की ताक़त लगभग ख़त्म हो चुकी थी और उसकी कमज़ोर कोशिशें उस भयंकर योद्धा पर मामूली असर डाल रही थीं, जो लगातार अपने से उलझे आदमी का गला बेरहमी से दबा रहा था।

उस तुर्क का चेहरा सुर्ख हो गया था और उसकी आँखें बाहर आ रही थीं। फिर उसकी जीभ बाहर निकली और वो बेजान हो गया। थोड़ी देर तक वो भारतीय योद्धा दुश्मन के गले को दबाता रहा, फिर उसके सिर को उठाकर पथरीली ज़मीन पर ज़ोर से पटक दिया और उसकी खोपड़ी तोड़ डाली। उसकी मौत पक्की करने के लिए। अचानक उसे थकान महसूस हुई और मरे हुए आदमी को छोड़कर वो लड़खड़ाता हुआ खड़ा हो गया।

इकहरे बदन वाला वो योद्धा खड़ा था। उसकी कसी हुई मांसपेशियाँ, चौड़े कंधे और चौड़ी छाती, पतली कमर और मांसल टांगों की वजह से उसका शरीर काफ़ी गठीला दिखता था। उसके सांवले शरीर पर कटने-फटने के अनगिनत निशान दिख रहे थे। आज उसके शरीर पर कई और नए घाव बने थे। उसने अपने हाथों और पैरों को सीधा किया और शरीर के दर्द तथा थकान को कम करने की कोशिश की।

थोड़ी दूरी पर एक घायल तुर्क को इस बीच मौक़ा दिखा। अपनी पूरी ताक़त लगाकर वो उठ खड़ा हुआ और उसने एक तलवार खींचकर उस भारतीय योद्धा पर कड़ा प्रहार किया। थकान और दर्द के बावजूद वो योद्धा अपनी स्वाभाविक फुर्ती और युद्ध कौशल के बलबूते बचने में सफल रहा। वो पीछे हटा और तलवार के वार से बाल-बाल बच गया। वार की रफ़्तार से योद्धा तो बच गया लेकिन हमलावर का

दाहिना हिस्सा उसके सामने आ गया। योद्धा ने उसके जबड़े पर ज़ोर से घूँसा मारकर उसे नीचे गिरा दिया। उस तुर्क के हाथ से तलवार छूटकर गिर गई।

तुर्क अवाक रह गया और उसने दोबारा उठने की कोशिश की। वो किसी तरह घुटनों के बल बैठ भर सका। इसी बीच योद्धा ने ज़मीन पर गिरी तलवार उठा ली और उसे ऊपर उठाकर तुर्क की गर्दन के पीछे से सीधा उसके दिल के पास आर-पार कर दिया। वो तुर्क वहीं मर गया।

योद्धा ने तलवार को टिकाकर थोड़ी सांस ली। वो बुरी तरह थका हुआ था, उसके शरीर से ख़ून बह रहा था। लेकिन वो ये जानता था कि अभी उसे रुकना नहीं है। वो उत्तर भारत के श्रावस्ती का युवराज था। वो अपने सैनिकों के साथ गुजरात के पश्चिमी तट पर बसे हुए सोमनाथ की ओर आया था, जहाँ पूरे भारत से लोग प्रसिद्ध शिव मन्दिर को तुर्क आक्रमणकारी महमूद गज़नवी से बचाने के लिए पहुँच रहे थे। उन्होंने तुर्कों की छोटी सेना के साथ युद्ध किया था। वो ये जानते थे कि तुर्कों की मुख्य सेना का आना अभी बाक़ी है। उन्हें ताक़त जुटानी थी। एक बार फिर।

श्रावस्ती के इस भारतीय योद्धा ने अपने आप से कहा—*उठो मल्लदेव, खड़े हो जाओ और आगे बढ़कर अपने दल को फिर से इकट्ठा करो।*

लेकिन वो वहीं खड़ा रहा। तुर्क सैनिक के शरीर में धंसी हुई तलवार के सहारे झुका रहा। वो ज़ोर-ज़ोर से सांस ले रहा था। अपने फेंफड़ों में ऑक्सीजन पहुँचा रहा था। अपने थके हुए शरीर को थोड़ा और वक़्त दे रहा था।

'मेरे राजकुमार...'

मल्लदेव आवाज़ की ओर मुड़ा। उसे अपने चारों तरफ अपने वफ़ादार साथी दिखे। सभी ज़मीन पर औंधे मुँह पड़े हुए थे। सभी मृत। एक को छोड़कर बाक़ी सभी मर चुके थे। मल्लदेव ने उसके घावों की ओर देखा और समझ गया कि ये भी कुछ ही देर में मौत के आगोश में चला जाएगा। लेकिन उसने अपने चेहरे से ये ज़ाहिर नहीं होने दिया।

'उठो वसीम,' मल्लदेव ने अपनी भारी और थकी हुई आवाज़ में कहा, 'क्या तुम इन कुछ ज़ख्मों की वजह से सुस्त पड़ गए हो?'

वसीम धीमे से मुस्कुराया और अपने शरीर को ऐंठते हुए ज़ोर से खांसा, इस खांसी की वजह से बलगम के साथ ख़ून उसके होंठ तक आ गया। मल्लदेव ने उसे आहिस्ते से थाम लिया और उसकी पीठ सहलाई।

जैसे ही उसकी खांसी बन्द हुई, वसीम ने धीमे से कहा, 'हमने उन तुर्कों को अच्छा सबक सिखाया...है ना?'

मल्लदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, 'पक्के तौर पर।'

'लेकिन...अभी और भी आएँगे...' वसीम ने कहा।

मल्लदेव चुप रहा। वो जानता था कि वसीम सही कह रहा है।

'महान राजकुमार...आपको अभी यहाँ से जाना चाहिए...मन्दिर के गर्भ गृह की ओर...ये हमारी आख़िरी...रक्षा पंक्ति है।' दर्द बर्दाश्त करते हुए वसीम ने ये शब्द फुसफुसाते हुए कहे। इसके बाद उसका शरीर अकड़ गया और शान्त हो गया।

मल्लदेव ने वसीम के शरीर को उठाकर गले से लगाया और फिर उसे आहिस्ते से ज़मीन पर लिटा दिया। 'मेरे मित्र, भारत माता तुम्हें आशीर्वाद दें और तुम्हारा बलिदान हमेशा अमर रहे।'

फिर मल्लदेव धीरे से उठा और धीमे से बोला, 'ॐ नम: शिवाय'। इस मन्त्र से उसे हमेशा शक्ति मिलती थी।

इसके बाद वो धीरे-धीरे लंगड़ाते हुए मुख्य मन्दिर की ओर चल पड़ा। वसीम ने सही कहा था—आराम के लिए कोई वक़्त नहीं था। उसका काम पूरा नहीं हुआ था। उसका जीवन अभी भी बचा था।

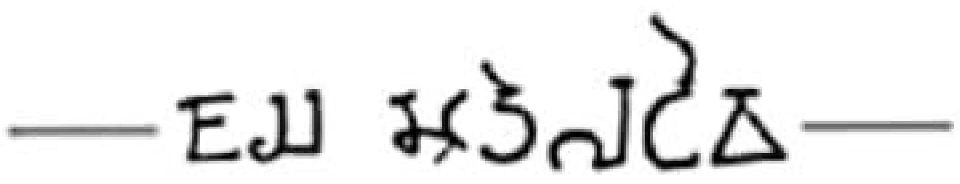

बाहर की ओर, हर दिन की तरह आज भी समुद्र की लहरें अपने आसपास की दुखद घटना से बेपरवाह ज़मीन को धोए जा रही थीं। शाम का समय था, सूरज धीरे-धीरे समुद्र के पानी के अन्दर अस्त होता जा रहा था। बादल का नामोनिशान नहीं था और आकाश लाल, नारंगी और जामुनी रंग की आभाओं से चमक रहा था। इस समय का नज़ारा बहुत ही मनमोहक था और अगर समय सही होता तो इसकी खूबसूरती का विस्तृत वर्णन किया जा सकता था। लेकिन ऐसे समय में पूरी दुनिया क्रूरता के सामने लाचार थी। दुनिया के सबसे पुराने धर्म के सबसे पवित्र स्थलों में से एक, जहाँ उनके देवी-देवताओं के मन्दिर स्थित हैं, वहीं विदेशी आक्रमणकारियों ने सभ्य और सुसंस्कृत लोगों की लाशें बिछा दी थीं।

तुर्क सेना बड़ी तेज़ी से उस मन्दिर के विशाल परिसर में अपनी पहुँच बढ़ा रही थी, वो मन्दिर के बीचोबीच मुख्य परिसर की ओर, जहाँ भगवान शिव, *सोमनाथ* (चन्द्र देव) के रूप में स्थापित हैं, अनवरत रूप से आगे बढ़ते जा रहे थे। भारतीयों के लिए तुर्क, चीनियों की तरह दिखते थे, उनका चेहरा गोल और आँखें काफ़ी छोटी थीं। लेकिन वास्तविक चीनी, तुर्कों को मध्य एशिया के निर्दयी योद्धाओं के रूप में जानते थे और उनसे दूर रहने में ही अपनी भलाई समझते थे। तुर्कों को सिर्फ एक कला सिखाई गई थी और वो थी हत्या करने की कला।

मन्दिर परिसर में कई घरों से धुआँ उठ रहा था। मृत शरीर ज़मीन पर पड़े हुए थे। सोने और चाँदी की टूटी-फूटी मूर्तियाँ ज़मीन पर बिखरी हुई थीं। तुर्क सैनिकों का एक दल, भगवान शिव के वाहन नन्दी बैल की विशालकाय मूर्ति तक पहुँचा और सोने से बने उसके सींग को देखकर ज़ोर से अट्टहास करने लगा। सैनिक उस मूर्ति से सींग निकालने की कोशिश करने लगे और जैसे ही सींग बाहर निकला, वो ख़ुश होकर ज़ोर से गरजे और भद्दे रूप से चिल्लाने लगे।

जैसे-जैसे तुर्क सेना जीतते हुए शोर-शराबे के साथ आगे बढ़ती गई, ग्रह के सबसे महान मन्दिरों में से एक मन्दिर के गर्भ गृह में किले जैसी घेराबन्दी किए हुए घायल भारतीय सैनिकों का हौसला कम होता गया।

'हे महादेव, हमारी रक्षा करें...'

'अपनी शक्ति दिखाइए...'

'उन दुश्मनों को मार गिराइए...'

'आप इस तरह हमारी परीक्षा क्यों ले रहे हैं?'

फिर एक जवाब आया—केवल एक

ठक! ठक! ठक!

गर्भगृह के दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने की भयावह आवाज़ हुई।

मल्लदेव, जो अब तक बिल्कुल चुपचाप था, ने दरवाज़े की ओर देखा। उसके आँसू, ख़ून के साथ मिलकर उसके चेहरे पर टपक पड़े। आँसू और ख़ून का ये मिश्रण उसके मुँह के अन्दर चला गया।

यह बहुत ही कड़वा था।

उसके देश के भाग्य की तरह। उसके विश्वास की तरह। उसके लोगों की तरह।

उसने विशाल शिवलिंग की ओर देखा, जो देवाधिदेव, महादेव, शिव का प्रतीक है।

उसके दर्जन भर साथी, एक-दूसरे के क़रीब आए और चिन्तित होकर एक-दूसरे को देखने लगे। ये समूह, घायल और थके हुए लोगों का था—इनमें से कई ब्राह्मण थे जिन्होंने आज तक हथियार नहीं उठाया था। ये सभी पचास हज़ार लोगों की उस सेना के बचे हुए सिपाही थे, जो उस प्रसिद्ध और समृद्ध सोमनाथ मन्दिर की रक्षा के लिए एकत्र हुए थे।

तुर्क सेना का एक अधिकारी दरवाज़े के दूसरी ओर से चिल्लाया, 'दरवाज़ा खोलो या तड़पकर मरने के लिए तैयार हो जाओ।'

मल्लदेव ने गहरी सांस ली, लेकिन कुछ नहीं कहा। उसने शिवलिंग को और ज़ोर से पकड़ा। उस विशालकाय मूर्ति से उसे शक्ति मिल रही थी।

दरवाज़े के एक ओर लूटपाट और तोड़फोड़ जारी थी, वहीं दूसरी ओर सैनिकों का एक दल अनुशासित रूप से गर्भगृह की ओर बढ़ता चला जा रहा था। वे सभी सुलतान महमूद के निजी अंगरक्षक थे, ये तेज़-तर्रार योद्धा रणभूणि में सुलतान की रक्षा करने और उसका साथ देने के लिए विशेष रूप से चुने गए थे। हरे रंग का कुर्ता पहनने वाली गज़नी की सेना से अलग पोशाक सुलतान के अंगरक्षकों की थी। शान्ति के समय में वो सफेद पोशाक पहनते थे लेकिन जब वो युद्ध क्षेत्र में जाते थे तो काले रंग का कुर्ता पहनते थे। उन कपड़ों की बाँह पर सफेद धागे से गरजते हुए शेर की आकृति बनी होती थी।

लम्बे समय से चल रहे युद्ध की वजह से उनके चेहरों पर थकान साफ़ दिख रही थी, लेकिन वो मन्दिर की रक्षा कर रहे उन सैनिकों से कहीं बेहतर हाल में थे।

तुर्क अधिकारी की ओर से इशारा मिलते ही दस लोगों के दल ने गर्भगृह के विशाल दरवाज़ों पर ज़ोर से धक्का दिया। एक धमाके की आवाज़ तो आई लेकिन ज़्यादा फायदा नहीं हुआ। दरवाज़ा अब भी सुरक्षित था।

तुर्क सैनिक पीछे हटे और फिर से निशाना साधा। इस बार एक भारी लकड़ी का सहारा लिया गया और ज़्यादा ताक़त के साथ धक्का मारा गया। दरवाज़े से हल्की चरमराहट की आवाज़ आई। ठोकर देने वाली मोटी लकड़ी को दोबारा तैयार किया गया और दरवाज़े के बीचोबीच चोट करने के लिए फिर से निशाना साधा

गया। तुर्क अधिकारी ने आदेश दिया और दरवाज़े पर एक बार फिर से ज़ोरदार चोट की गई। दरवाज़े के मज़बूत क़ब्ज़ों में से कुछ आख़िरकार टूट गए। दरवाज़े में पड़ी पतली दरार से उन भारतीयों की झलक मिल रही थी, जो अब भी अपने ईश्वर और अपनी भूमि की प्रतिष्ठा की रक्षा करने की आस लगाए हुए थे।

मल्लदेव ने अब अपना मस्तक मूर्ति के निचले भाग से स्पर्श किया और आँखें बन्द कर लीं। ईश्वर को अपना आख़िरी प्रणाम करने लगा। उसे पता था कि अब उसे दोबारा मौक़ा नहीं मिल पाएगा।

वो फुसफुसाया, 'महादेव, आज हम मर सकते हैं...लेकिन हम वापस आएँगे। हम लाखों की संख्या में वापस आएँगे...' मल्लदेव भारत भूमि के रक्षक अपने साथियों की ओर मुड़ा और ऊँची आवाज़ में कहा, 'हम वापस आएँगे! हम दोबारा एकत्र होंगे! हम अपने ईश्वर की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करेंगे! मैं सर्वाधिक पावन भगवान शिव की शपथ लेता हूँ।'

इन शब्दों से आसपास के सभी लोगों में एक अद्भुत शक्ति का संचार हुआ और वो सब उठ खड़े हुए और संकल्प लेने की मुद्रा में सीधे तन गए।

मल्लदेव ने अपना हाथ ऊपर उठाया और तलवार से दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा, 'आख़िरी दम तक!'

उसके साथी भारतीयों ने भी आवाज़ लगाई, 'आख़िरी दम तक!'

और तभी, उनमें से एक ने अद्भुत शक्ति का संचार करने वाले शब्दों का उद्घोष किया। ऐसे शब्द जो सदियों से ही ऊर्जा का संचार करते आ रहे हैं। ऐसे शब्द जो भारतीयों को उनके ईश्वर होने की याद दिलाते हैं। ऐसे शब्द जो बताते हैं कि उनमें से हर कोई महादेव है।

'हर हर महादेव!'

हम ईश्वर हैं!

ठक! ठक! ठक!

बाहर की ओर से दरवाज़े को तोड़ने का उपक्रम अब भी जारी था। बाहर चल रही तोड़फोड़ और लूटपाट के साथ तुर्कों की पागलों की तरह चिल्लाने की आवाज़ बढ़ती जा रही थी।

'हर हर महादेव!'

'हम ईश्वर की तरह मरेंगे।'

इस बीच एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ गर्भगृह का विशाल दरवाज़ा खुल गया।

'हर हर महादेव!'

'हम ईश्वर की तरह दोबारा आएँगे।'

तुर्क दुनिया के सबसे पवित्र मन्दिरों में से एक के गर्भगृह में प्रवेश कर गए और जानवरों की तरह चीत्कार मचाने लगे।

'हर हर महादेव!' मल्लदेव ने गर्जना की और इसके साथ ही वो और उसके साथी भारतीय, तुर्क सैनिकों पर टूट पड़े।

भारतीय सिपाहियों की ललकार और उनका हमला इतना ज़ोरदार था कि तुर्क सिपाहियों के पांव जस के तस ठहर गए। निष्ठुर तुर्कों ने कभी इस तरह के प्रतिकार का अनुमान भी नहीं लगाया था। शुरुआती हमले में कुछ तुर्क मारे गए लेकिन उनकी तादाद भारतीय रक्षकों के मुक़ाबले कई गुना ज़्यादा थी। तुर्क सैनिक आते रहे, आते रहे, आते रहे।

अपना बलिदान देने से पहले हर भारतीय सैनिक कम से कम पाँच तुर्क सैनिकों को मौत के घाट उतार रहा था। लेकिन वो सभी ख़त्म हो गए।

वो सभी ख़त्म हो गए।

आख़िर में सिर्फ मल्लदेव बचा। थकान से चूर और बुरी तरह घायल उसके शरीर के कई अंगों से ख़ून बह रहा था। इस हालत में भी वो लगातार गर्जना करते हुए लड़ता जा रहा था।

अकेला।

असंख्य तुर्क सैनिकों के ख़िलाफ़।

आख़िर तक उसने अपनी तलवार नहीं फेंकी। वो लड़खड़ाया नहीं। उसने दया की याचना नहीं की। वो लड़ता रहा।

मल्लदेव ने पूरी ताक़त के साथ एक दुश्मन के पेट में तलवार घुसा दी। जैसे ही दुश्मन ज़मीन पर गिरा, मल्लदेव के ख़ून से सने हाथ से तलवार भी छूटकर गिर गई। उसने फुर्ती के साथ अपनी कमर में बंधे चाकू को खींचा और एक तुर्क के गले पर तेज़ वार किया। कुछ दुश्मनों ने उसे पूरी ताक़त के साथ दीवार की ओर धकेला जिससे चाकू उसके हाथ से छूटकर गिर गया।

अब उसे दस लोग घेरकर खड़े थे और एक साथ उसके ऊपर तलवार से प्रहार कर रहे थे। तुर्क सैनिक लगातार, बिना रुके, क्रूरता से, उसके ऊपर तेज़ प्रहार किए जा रहे थे।

इसके बावजूद, मल्लदेव निहत्था होकर भी लगातार लड़ता जा रहा था। उसने अपने नाख़ून एक दुश्मन की आँख में घुसा दिए, तो दूसरे दुश्मन के गले में चुभो दिए। आवेश में आकर वो लगातार चिल्ला भी रहा था।

इस बीच एक ज़ोरदार आवाज़ आई, 'पीछे हटो!'

तुर्क सैनिक तुरन्त पीछे हट गए और आदर सहित उन्होंने अपने सिर झुका लिए। युद्ध के ज़ख्मों के निशान से भरे, बदसूरत चेहरे वाला एक विशालकाय आदमी सामने आया।

मल्लदेव दीवार से लगकर खड़ा था। उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं और शरीर ख़ून से लथपथ था। भयानक दर्द में डूबे होने के बावजूद उसने अपने सामने खड़े उस विशालकाय आदमी को ललकार भरे भाव से घूरकर देखा।

सामने सुलतान खड़ा था। यमीन-उद-दावला अबुल-कासिम महमूद इब्न सेबुक्तगिन, जिसे ज़्यादातर लोग गज़नी के महमूद के नाम से जानते थे।

महमूद ने अपना दायाँ हाथ आगे किया। उसके हाथों में ख़ून से सनी तलवार थी।

मल्लदेव लगातार महमूद की आँखों में घूरकर देख रहा था—पूरी ललकार के साथ। उसने धीरे से वो शब्द बुदबुदाए, जिसके साथ वो प्राण त्यागना चाहता था, 'ॐ नमः शिवाय।'

'जहन्नुम में जाओ,' महमूद कर्कश और डरावनी आवाज़ में गुर्राया। और उसने अपनी तलवार लहराई। एक ज़ोरदार वार से मल्लदेव का सिर धड़ से अलग हो गया।

'इस काफ़िर के गन्दे शरीर में काफ़ी ख़ून था,' महमूद ने अपने चेहरे पर पड़े मल्लदेव के ख़ून के छींटे साफ़ करते हुए कहा।

'सुलतान ज़िन्दाबाद!' तुर्क सैनिकों ने नारे लगाए।

मल्लदेव के हत्यारे ने उनके नारे के जवाब में अपना सिर हिलाकर सहमति जताई, फिर गर्भगृह के मध्य में स्थित शिवलिंग की ओर बढ़ा।

अविश्वासी आँखों का मालिक गज़नी का महमूद भी शिवलिंग की आभा को निहारता रहा। उसकी नज़रें काफी देर तक इस पर टिकी रहीं। गर्भगृह में चुप्पी छाई थी और बस आग की चटखती लपटों की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी जब मन्दिर परिसर के अन्य भागों को आग के हवाले किया जा रहा था।

इस बीच अंगरक्षकों से घिरा हुआ पन्द्रह साल का एक लड़का अन्दर आया। मन्दिर के फर्श पर फैले और जमते हुए ख़ून की फिसलन के बीच वो संभलकर चल रहा था।

यह लड़का, सालार मक़सूद, महमूद का भतीजा था। गठीले शरीर वाले मक़सूद का क़द ज़्यादा ऊँचा नहीं था; लेकिन उसके कंधे चौड़े थे और उसकी मांसल बाँहों से ऐसा लगता था कि वह घंटों तलवारबाज़ी का अभ्यास किया करता है। उसका रंग साफ़ था और उसकी गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं। उसका गोल चेहरा आकर्षक नहीं था लेकिन उसकी असामान्य बड़ी आँखें अपनी ओर खींचती थीं, जबकि तुर्कों की आँखें बड़ी नहीं होती हैं। उसकी आँखों में हल्के हरे रंग के साथ गहरे भूरे रंग की आभा दिखती थी। उस लड़के से मिलकर और उससे नज़रें मिलाकर अजीब तरह से सम्मोहित हो जाते थे। लेकिन जब वो क्रोध में होता था, तो उससे आँखें मिलाने में उम्रदराज़ लोग भी झिझकते थे।

'हुज़ूर, यह हमारे लिए बहुत खास मौक़ा है,' अपने चाचा के आगे झुकते हुए मक़सूद ने कहा, 'मैं दिल से आपको मुबारकबाद देता हूँ।'

महमूद के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आई। आमतौर पर वह सबके सामने अपने जज़्बात ज़ाहिर नहीं करता था, लेकिन अपने भतीजे के बालों पर हाथ फेरते हुए उसकी आँखों में सच्चा लगाव था। 'मक़सूद, मेरे बच्चे!' फिर उसने शिवलिंग की ओर इशारा किया। शिवलिंग का रंग बिल्कुल काला था और उसमें जड़े हुए क़ीमती पत्थरों के कारण वो अद्भुत रूप से चमक रहा था। सबसे बड़ा आश्चर्य ये था कि शिवलिंग हवा में झूल रहा था।

‘इसे देखकर तुम्हें क्या लगता है?’

‘यह क्या बुरी बला है?’ मक़सूद बुदबुदाया। ‘अल्लाह इससे हमें बचाए।’

महमूद ज़ोर से हँस पड़ा। ‘ये कोई जादू-टोना नहीं है, बल्कि बुत परस्तों की कोई चालबाज़ी है। क्या किसी को इसका राज़ पता है?’

‘शायद इसके नीचे कोई अदृश्य सहारा है, हुज़ूर?’ एक सैनिक ने कहा।

महमूद ने शिवलिंग के नीचे तलवार चलाई, वहाँ कुछ भी नहीं था।

गज़नी का प्रधानमंत्री ख्वाजा हसन, जो आमदनी और खाता-बही का भी प्रभारी था, आगे बढ़ा और बोला, ‘हुज़ूर, हमें ऊपर लटका हुआ यह छत्र हटा देना चाहिए।’

हसन, एक पढ़ा-लिखा ईरानी था और उसने इस क्षेत्र के विषय में काफ़ी अध्ययन किया था। उसे इस बात की जानकारी थी कि शिवलिंग के ऊपर लटकाया गया यह छत्र चुम्बकीय पत्थर से बनाया गया था और शिवलिंग के लिए एक प्राकृतिक चुम्बक का काम करता था, शिवलिंग में भी चुम्बक और धातु का मिश्रण था।

महमूद ने इजाज़त दी। जैसे ही छत्र से पहला पत्थर हटाया गया, मूर्ति एक ओर मुड़ गई। दूसरा पत्थर हटाते ही मूर्ति नीचे की ओर झुक गई। एक-एक कर छत्र के सारे पत्थर हटा दिए गए और आख़िर में मूर्ति ज़मीन पर आ गई।

‘मेरे बच्चे, देखा तुमने?’ महमूद ने मक़सूद से कहा। ‘यहाँ कोई जादू नहीं है, केवल शातिर चाल है।’ उसने फिर से लिंग की तरफ़ देखा। ‘तो इसी को बचाने के लिए इन मूर्खों ने अपनी जान दे दी है,’ महमूद ने मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा। ‘ये लोग आज का दिन आसानी से नहीं भूल पाएँगे। लेकिन हमें इस दिन को और यादगार बनाना होगा।’ वो अपने एक आदमी की ओर मुड़ा। ‘मुझे एक हथौड़ा लाकर दो।’

वो आदमी तुरन्त एक हथौड़ा लेकर आया और उसने घुटनों के बल झुककर दोनों हाथों से हथौड़ा अपने सुलतान के सामने पेश किया।

जैसे ही महमूद ने हथौड़ा उठाया, हसन ने उसे रोका। ‘मेरे मालिक, मुझे माफ करें लेकिन व्यापारियों का एक दल बाहर खड़ा है। वो इस बुत के लिए मुँहमाँगी क़ीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। अगर आपको सही लगे तो वो हर साल हमारे शाही ख़ज़ाने में मुहरें देने के लिए तैयार हैं।’

महमूद मज़ाकिया अन्दाज़ में मुस्कुराया। ‘मेरे प्यारे प्रधानमंत्री हसन, तुम हमेशा अपना लेखा-जोखा तैयार रखते हो! तुम्हारे हिसाब से मुझे इस बुत को छोड़ने के लिए कितनी माँग करनी चाहिए?’

प्रधानमंत्री ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘हुज़ूर, ये लोग आपकी माँग के मुताबिक कोई भी रकम देने को तैयार हैं। इस टूटे हुए बुत की कोई क़ीमत नहीं लेकिन अगर यह महफ़ूज़ रहा तो हम लम्बे समय तक इसकी वजह से कमाई कर सकते हैं। आप सोचिए कि उस रकम से आप क्या-क्या कर सकते हैं। आप अपनी सेना बढ़ा सकते हैं, नए महल या इमारतें बनवा सकते हैं और अपनी अवाम का भला कर सकते हैं।’

महमूद ने कुछ सोचते हुए अपनी दाढ़ी सहलाई। 'हाँ, बात तो सही है। अगर मैं पुराना फ़ारसी होता, जो दौलत और ऐशोआराम से मतलब रखते हैं, तो ये बात लुभा सकती थी।' उसकी नज़रें सख्त हो गईं। 'लेकिन मैं फ़ारसी नहीं हूँ, मैं एक ईमानदार तुर्क हूँ। कयामत के दिन, ऊपरवाला मुझे ढूँढ़ेगा। उस दिन वो क्या कहेगा? "वो महमूद कहाँ है जिसने सोने की चन्द मुहरों के लिए नास्तिकों को सबसे बड़ा बुत बेच दिया?"'

हसन चुपचाप पीछे खिसक गया। वो सिर झुकाए हुए था। उसे पछतावा हो रहा था। हालांकि उसके मन में कुछ अलग ही विचार चल रहे थे। *टिड्डी खाने वाले...ये अरब और तुर्क...*

महमूद अपने भतीजे सालार मक़सूद की ओर मुड़ा। 'गौर से देखो, मेरे बच्चे। एक दिन ये पाक मक़सद तुम्हारा होगा। अपने दुश्मनों को बगैर किसी रहम के कुचल देना चाहिए, चाहे वो जो भी हों। वो हर शय जिससे उन्हें प्यार है, उसे तबाह कर दो।'

मक़सूद ने हाँ में सिर हिलाया, उसकी आँखों में एक ऐसी चमक दिखी जो किसी नायक को देखते ही आती है। 'सुलतान ज़िन्दाबाद।'

महमूद ने अपना बायाँ पैर उठाकर मूर्ति के निचले हिस्से के पास रखा। ज़्यादा असरदार वार के लिए उसने अपने शरीर को पीछे खींचा और ज़ोर से गरजते हुए मूर्ति पर हथौड़ा चला दिया।

और भारत की आत्मा को तोड़ दिया।

अध्याय 2

शक्तिशाली पहलवान बल्लाल, सांस छोड़ता हुआ और अपनी बाँहें फैलाता हुआ, ज़ोर से गरजा। लेकिन उसके दुबले-पतले प्रतिद्वन्द्वी पर इस हुँकार का कोई असर नहीं हुआ और वो बल्लाल को झटकता हुआ उसके हाथों से बाहर निकल आया। ग़ुस्से में आकर बल्लाल पलटा और उस युवक को सबक सिखाने की ठानी।

बल्लाल का चेहरा थकान और ग़ुस्से से लाल हो गया था, उसका शरीर अखाड़े की मिट्टी से पुता हुआ था। ज़ोर-ज़ोर से सांसें खींचने की वजह से उसकी चौड़ी छाती ऊपर-नीचे हो रही थी।

इसके विपरीत, उसके प्रतिद्वन्द्वी को देखकर ऐसा नहीं लगता था कि वो कुश्ती लड़ रहा हो। उसका क़द ऊँचा था लेकिन वो दुबला-पतला था। उसके बाल, जो कंधों तक की लम्बाई के थे, अच्छी तरह जूड़े में बंधे हुए थे। अपने प्रतिद्वन्द्वी की तरह उसने भी लंगोट पहन रखी थी और इससे उसका गठीला शरीर साफ़ दिख रहा था।

उसकी दुबली-पतली काया के हिसाब से उसके कंधे काफ़ी चौड़े थे। कंधों से नीचे उसके शरीर की चौड़ाई काफ़ी कम होती जा रही थी, इससे उसकी कमर और पेट काफ़ी पतले दिख रहे थे। उसकी छाती और बाँहों पर गठीली मांसपेशियाँ तनी हुई थीं। उसकी टांगें पतली लेकिन मज़बूत दिख रही थीं। वह चीते की तरह चल रहा था—अलसाई और आकर्षक चाल, किन्तु एक अन्तर्निहित ऊर्जा के साथ जिससे लग रहा था कि पलक झपकते ही वह सामने वाले को धूल चटा सकता है।

हालांकि उस युवक की उम्र अभी सिर्फ़ अठारह साल थी लेकिन उसके शरीर पर चोट के कई निशान थे। उसकी हथेलियाँ कसी हुई थीं और बाएँ हाथ की बीच वाली उँगली पुरानी चोट की वजह से मुड़ी हुई थी। उसकी दाहिनी पसली के ठीक नीचे एक गहरा निशान था। यह एक पुराना घाव था जो अब भर चुका था लेकिन इसका निशान काफ़ी गहरा था।

युवक मज़ाकिया अन्दाज़ में मुस्कुरा दिया। केवल उसके ललाट पर आई पसीने की बूँदें बता रही थीं कि वो पूरी ताक़त लगा रहा है। अपने प्रतिद्वन्द्वी पर

नज़रें टिकाए हुए उसने पूरी सावधानी के साथ धीरे से अपने पैर आगे बढ़ाए, लेकिन सामने वाले की पकड़ से दूरी बनाए रखी।

अखाड़े के चारों ओर, उग्र भीड़ ज़ोरदार आवाज़ में अपने-अपने पहलवान के लिए चिल्ला रही थी और उनकी हिम्मत बढ़ा रही थी।

'मूर्ख बल्लाल, आगे बढ़! तेरे लिए मैंने अपना घोड़ा दांव पर लगाया है।' एक आदमी चिल्लाया।

'एक गधे के लिए तुम्हें अपना घोड़ा दांव पर नहीं लगाना चाहिए था, मूर्ख!' किसी दूसरे आदमी ने कहा।

'मैं तो चाहता हूँ कि कुत्ते के शरीर में रहने वाले लाखों कीड़े तुम्हारी कांख में घुसकर काटें!' पहला आदमी ग़ुस्से में चिल्लाया।

'वही कीड़े तुम बल्लाल की लंगोट में डाल दो ताकि उसके अन्दर कुछ फुर्ती आए!' ख़ुशी से भरी आवाज़ में जवाब आया।

भीड़ पूरे जोश में चिल्ला रही थी।

अपना मज़ाक़ उड़ता देखकर बल्लाल का चेहरा लाल हो गया। उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी से कहा, 'तुम सुबह से ही नाच रहे हो। एक जगह खड़े होकर पुरुष की तरह मेरा मुक़ाबला करो।'

'बुड्ढे, हिम्मत है तो मुझे पकड़ कर दिखा,' युवक ने मुस्कुराते हुए अपने प्रतिद्वन्द्वी को ललकारा।

उग्र पहलवान ने अपना सिर नीचे झुकाया और ग़ुस्साए सांड की तरह हमला किया। युवक ने उसे आगे आने दिया, आख़िरी क्षण में एक तरफ़ हट गया, ज़मीन पर गिरा और अपना दाहिना पैर अड़ाते हुए, पहलवान को गिरा दिया। अखाड़े में उसके गिरने की ज़ोरदार आवाज़ आई। वो स्तब्ध पहलवान ज़मीन पर पड़ा था, इतने में उसका प्रतिद्वन्द्वी युवक उस पर झपटा, उसे पलटा और उसकी पीठ और कंधों को ज़मीन पर पटक दिया।

भीड़ में से ज़्यादातर ने हर्षध्वनि की, लेकिन कुछ शिकायतें भी आईं। 'मूर्ख बल्लाल का सत्यानाश हो,' एक थुलथुल आदमी अपने कंधे पर रखे कपड़े से चेहरे का पसीना पोंछता हुआ चिल्लाया। उसके कंधे पर किसी ने थपकी दी तो वो चिड़चिड़ाता हुआ पीछे मुड़ा। एक दुबला-पतला आदमी खड़ा था।

वो दुबला आदमी जीत की ख़ुशी में मुस्कुराता हुआ बोला, 'मुझे मेरे पैसे चाहिए।'

'ये लो अपने पैसे। मैं चाहता हूँ कि ये पैसे कोई वेश्या तुमसे चुरा ले! मैं चाहता हूँ कि तुम कोई ऐसी शराब ख़रीद कर पियो जिससे तुम्हें भयंकर सिरदर्द हो! मैं चाहता हूँ कि तुम कोई ऐसी सड़ी हुई चीज़ ख़रीद कर खाओ जिससे तुम्हारा पेट ख़राब हो जाए!' चिल्लाते हुए उस मोटे आदमी ने कहा। उसने उस आदमी के आगे सिक्कों से भरी एक थैली उछाली। 'ये भी ले लो,' उसने कहा, और अपने कंधे पर रखे पसीने में भीगे हुए गमछे को नफ़रत से उछाला जिससे उसकी झूलती छाती दिखने लगी।

'तुम घबराओ नहीं, मैं पैसे का अच्छा इस्तेमाल करूँगा,' ख़ुशी से भरा जवाब आया। 'जब ये सारे पैसे खर्च हो जाएँगे तो मैं एक और बाज़ी के लिए आऊँगा। और बेहतर होगा कि ये कपड़ा अपने पास रखो, वरना हमारी औरतों को तुमसे ईर्ष्या होने लगेगी।'

इस दौरान, बल्लाल का युवा प्रतिद्वन्द्वी अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था। उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर के ऊपर उठाते हुए भीड़ के सभी लोगों का अभिवादन किया। इसके बाद वो ऊपर आया और एक दुबले-पतले, सफेद बालों वाले व्यक्ति के पास गया और उसके चरण स्पर्श किए, जो अखाड़े के एक कोने से इस मुक़ाबले को गौर से देख रहा था।

'नमस्कार, गुरुदेव,' उस युवक ने अपने गुरु को कहा।

उस उम्रदराज़ व्यक्ति ने प्यार से उसकी पीठ थपथपाई। 'राजकुमार सुहेलदेव, तुमने अच्छा मुक़ाबला किया। लेकिन तुमने बल्लाल को काफ़ी देर तक परेशान किया। तुम्हें पहले ही इस मुक़ाबले को ख़त्म कर देना चाहिए था।'

सुहेलदेव के चेहरे पर मोहक मुस्कान आई, जो कई स्त्रियों को आकर्षित करने की ताक़त रखती थी। 'एक बच्चा थोड़ी मस्ती भी कर सकता है, गुरुदेव!'

गुरु और शिष्य दोनों एक साथ हँस पड़े। इस बीच उनके कुछ सहयोगी, राजकुमार के लिए गीला तौलिया और उसके कपड़े लेकर आगे आए। सुहेलदेव ने गीले और ख़ुशबूदार तौलिये से अपने चेहरे और शरीर पर लगी कीचड़ को साफ़ किया। फिर उसने आसपास खड़ी कई युवतियों की प्रशंसात्मक दृष्टि को अनदेखा करते हुए कमर से अपनी धोती बांधी। सुहेलदेव के गुरु ने उसे गले में पहनने के लिए शिवलिंग के आकार का आभूषण दिया। उसने सम्मानपूर्वक उसे अपनी दोनों आँखों से लगाया, चूमा और फिर मंत्र बुदबुदाते हुए गले में पहन लिया।

'ॐ नम: शिवाय!'

अचानक, सांवले रंग का व्यक्ति, जिसके बाल सफेद थे, सुहेलदेव तक पहुँचा, वो जल्दबाज़ी में दिख रहा था।

'मेरे राजकुमार,' उसने विनम्रता लेकिन जल्दबाज़ी में कहा।

'इकबाल, क्या हुआ?' सुहेलदेव ने पूछा।

सुहेलदेव समझ गया था कि कुछ गड़बड़ है। इकबाल, सुहेलदेव के पिता का भरोसेमन्द सहयोगी था, और उसे इस समय दोपहर की नमाज़ में होना चाहिए था। कुछ अनहोनी की वजह से ही उसने नमाज़ छोड़ी होगी।

इकबाल का चेहरा उतरा हुआ था। 'राजकुमार, आपको इसी पल महल में चलना होगा।'

'चलो।' सुहेलदेव ने तुरन्त कहा।

'आपको मल्लदेव दादा को रोकना चाहिए था, मैंने आपको पहले भी कहा था!'

सुहेलदेव ने अपने पिता राजा मंगलध्वज और माँ रानी विजयलक्ष्मी की ओर ग़ुस्से में देखकर कहा। उसके अंग-अंग से क्रोध और दुख फूट रहा था।

जब मल्लदेव, सुहेलदेव का बड़ा भाई और श्रावस्ती राज्य का युवराज, सोमनाथ मन्दिर की रक्षा के लिए निकल रहा था, उस वक़्त सुहेलदेव ने कई बार उसे रोकने की कोशिश की थी। मल्लदेव ने सुहेलदेव को अपनी विजय के प्रति आश्वस्त किया था और भरोसा दिलाया था कि उसे कुछ नहीं होगा। उसने कहा था कि समूचे उत्तर भारत के कई राजा, गज़नी के महमूद को रोकने के लिए एकजुट हो रहे हैं। सुहेलदेव ने तब उसे कहा था कि भारतीय इतने बंटे हुए हैं कि कोई भी राजा आगे नहीं बढ़ेगा और महमूद जैसे बर्बर को रोकने के लिए भी एकजुट नहीं होगा। लेकिन मल्लदेव ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया था। उसके बाद सुहेलदेव ने जज़्बाती होते हुए अपने माता-पिता को कहा था कि वो अपने बड़े बेटे को बाहर जाने से रोकें। बजाय इसके, उन्होंने अपने बेटे को आशीर्वाद देकर गर्व के साथ सोमनाथ विदा किया और साथ में राज्य के चुने हुए बहादुर सैनिकों का दस्ता रवाना किया।

'मल्लदेव एक नायक है,' विजयलक्ष्मी ने सधी हुई आवाज़ में कहा। चेहरे पर दुख झलकने के बावजूद वो आकर्षक दिख रही थीं। उनके बालों में मेहन्दी की लालिमा दिख रही थी, जो वे अपने सफेद होते बालों को छिपाने के लिए लगाती थीं। जामुनी रंग की चोली के नीचे उनकी कमर दिख रही थी, जो अब मोटी होती जा रही थी। इन सब के बावजूद ऐसा कुछ नज़र नहीं आ रहा था जिससे ये अहसास हो कि वो चालीस साल की उम्र पार कर चुकी हैं। उनकी आँखों में दुख ज़रूर था लेकिन आँसू के कोई संकेत नहीं थे; उनकी आवाज़ संयत थी।

'दादा की मौत आपकी वजह से हुई है!' सुहेलदेव चिल्लाया, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। 'आप उन्हें रोक सकती थीं! लेकिन आपने नहीं रोका!'

'मल्लदेव के लिए आँसू बहाकर उसका अपमान मत करो, सुहेलदेव। उस पर गर्व करो। मौत को चुनने के उसके तरीक़े पर गर्व करो। उसके बलिदान को देश हमेशा याद रखेगा।'

'क्या आपको लगता है कि ये देश हम जैसे लोगों का, हमारे अकुलीन वंश का बलिदान याद रखेगा?'

'जो सच्चे देशभक्त हैं, वो याद करेंगे। मुझे बाक़ी लोगों की परवाह नहीं है। मुझे इस बात का गर्व है कि नेक काम के लिए मेरा एक बेटा शहीद हो गया और अगर आवश्यकता हुई तो मैं और बलिदान देने के लिए तैयार हूँ।'

राजा मंगलध्वज चुपचाप इस बातचीत को सुन रहे थे। देखने में सुहेलदेव की तरह लेकिन क़द में उससे थोड़े छोटे, लम्बे समय तक खुली धूप में रहने की वजह से उनका चेहरा काला पड़ गया था। उनके बाएँ गाल पर पुराने घाव का निशान अब भी मौजूद था जो आँख के निचले हिस्से से जबड़े तक फैला हुआ था। उनकी लम्बी मूँछें चेहरे को और रौबदार बनाती थीं। उम्र बढ़ने के साथ ही उनके कंधे थोड़े झुक गए थे और उनकी कमर की चौड़ाई भी बढ़ गई थी। लेकिन उनके अन्दर अब भी एक वीर योद्धा की झलक दिख रही थी। उनकी आँखों में सुहेलदेव की तरह ही

क्रोध और जोश के मिश्रित भाव दिख रहे थे। लेकिन वो अपने बेटे को चिन्ता और आतुरता के साथ निहारे जा रहे थे।

मंगलध्वज आगे बढ़कर सुहेलदेव के पास आए और उसे अपनी बाँहों में भरते हुए कहा, 'बेटे, तुम एक राजकुमार हो। उसी तरह का व्यवहार करो। तुम्हें रोना नहीं चाहिए बल्कि मल्लदेव की बहादुरी का जश्न मनाना चाहिए। इससे सीखना चाहिए।'

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा है!' सुहेलदेव चिल्लाया, 'जश्न? क्या हमें दादा की मौत का जश्न मनाना चाहिए?'

इसके आगे बिना एक भी शब्द बोले राजकुमार कमरे से बाहर निकल आया।

सुहेलदेव छोटी सी झील के किनारे चुपचाप बैठा था। ये झील से ज़्यादा एक तालाब था, लेकिन उसके लिए ख़ास था। यहीं पर मल्लदेव ने उसे तैराकी सिखाई थी। ये वो जगह थी जहाँ दोनों अक्सर आते रहते थे। बातें करने, कुश्ती लड़ने, पत्थर फेंकने, आपस में बहस करने, इधर-उधर की बातें करने के लिए।

कुछ ना करने के लिए।

भाईचारे के लिए।

'यह कलाई का कमाल है, सुहेल,' मल्लदेव फुसफुसाया।

दस साल के सुहेलदेव को पानी की तरंगों को देखकर आश्चर्य हो रहा था। वह अपने सोलह साल के बड़े भाई मल्लदेव के हाथों पानी की लहरों पर फेंके गए पत्थर को छह बार उछलता हुआ देखता रह गया। सुहेलदेव ने ऊँचे क़द के अपने बड़े भाई, अपने नायक को ध्यान से देखा। फिर अपने हाथ में पड़े पत्थर के टुकड़े को देखा।

पहली उँगली को एक तरफ़ दबाते हुए उसने अपनी पकड़ ठीक की और कहा, 'क्या इस तरह से, दादा?'

'हाँ,' मल्लदेव ने कहा, 'और अपनी ओर घूरती हुई लड़कियों को अनदेखा करो।'

थोड़ी दूरी पर दस साल की लड़कियों का एक झुंड सुहेलदेव को निहारते हुए खिलखिला रहा था। इस छोटी उम्र में भी सुहेलदेव काफ़ी आकर्षक था। इस वजह से लड़कियाँ उसकी ओर आकर्षित होती थीं। सुहेलदेव ने अपने भाई की ओर मुस्कुराकर देखा और फिर पानी की ओर ध्यान से देखने लगा।

पत्थर का टुकड़ा पानी की सतह पर गिरा और बुलबुले के साथ डूब गया। एक बार भी नहीं उछल पाया।

सुहेलदेव ने अपनी आँखों से आँसू पोंछे। वो अभी भी ठीक से समझ नहीं सका था। मल्लदेव के इतने सिखाने के बावजूद एक भी पत्थर ठीक से नहीं फेंक पाया था।

वो कोई भी चीज़ मल्लदेव के समान अच्छे तरीक़े से नहीं सीख पाया था। न तो युद्ध कौशल, न ही ज्ञान। न तो प्रजा की देखभाल करना और न ही माता-पिता का आदर करना।

सुहेलदेव ने आसमान की ओर देखा।

वही क्यों? वो मुझसे बेहतर थे।

मैं तो हमेशा से निकम्मा और शरारती रहा।

वही क्यों?

उनकी जगह मुझे होना चाहिए था...मुझे मरना चाहिए था।

अचानक एक आवाज़ से उसका ध्यान भंग हुआ।

सुहेलदेव पीछे मुड़ा। 'गुरुदेव,' उसने उठते हुए कहा, साथ ही इस समय दख़ल दिए जाने की वजह से अपनी नाख़ुशी को छिपाने की कोशिश की।

'बैठो, बैठो,' अपने शिष्य के पास बैठते हुए काशीनाथ ने कहा। 'बैठना अच्छा लगता है। बुढ़ापा भी एक अभिशाप है...'

सुहेलदेव ने कुछ नहीं कहा।

'मैं भी मल्लदेव को भूल नहीं पाऊँगा,' काशीनाथ ने धीरे से कहा और उन्होंने सुहेलदेव की ओर देखा। 'अब तुम युवराज होगे।'

'मैं कभी दादा की जगह नहीं ले सकता। वो...' उसका गला रुँध गया।

काशीनाथ ने प्यार से उसका कंधा थपथपाया।

'वो अद्भुत थे...'

काशीनाथ ने फिर धीमे से कहा, 'वो ऐसा था...लेकिन अब वो नहीं है। और हमें अब इसे स्वीकार करना होगा, है ना?'

सुहेलदेव फिर चुप हो गया।

'पुत्र, हर वो जीव जिसने जन्म लिया है, उसे एक दिन मरना है। लेकिन इस जन्म और मृत्यु के बीच हम जो कर्म करते हैं वो ज़्यादा महत्वपूर्ण है।'

सुहेलदेव चुप ही रहा।

'मुझे पता है कि तुम्हारा मन अभी किसी तरह की चर्चा का नहीं है। लेकिन क्या तुम इस बुज़ुर्ग की एक छोटी सी बात सुनोगे?'

सुहेलदेव ने गहरी सांस ली और दूसरी ओर देखने लगा।

'मल्लदेव हमेशा मेरे सवालों का जवाब देता था, चाहे मैं कभी भी पूछता।'

फिर सुहेलदेव ने मुड़कर अपने गुरु की ओर देखा।

काशीनाथ मुस्कुराए, 'धन्यवाद, राजकुमार। अब मेरा प्रश्न है...हमारा समुदाय महाशिवरात्रि कैसे मनाता है?'

सुहेलदेव अपने गुरु की ओर देखता रहा। उसे इस प्रश्न का अभिप्राय समझ नहीं आया क्योंकि इसका जवाब तो सब जानते थे। एक ऐसा जवाब जो उसके समुदाय के हर बच्चे को पता था।

'मेरी बात का जवाब दो,' गुरुदेव मुस्कुराते हुए बोले, 'मल्लदेव की खातिर।'

'हमारे लोग भगवान शिव के प्रति अपना समर्पण दिखाने के लिए महाशिवरात्रि के दौरान अपने कंधों पर एक विशाल शिवलिंग ढोते हैं,' सुहेलदेव

ने महाशिवरात्रि पर चली आ रही एक प्राचीन परम्परा का ज़िक्र करते हुए जवाब दिया।

'बिल्कुल सही,' गुरुदेव ने हामी भरी। 'हम भगवान शिव की पूजा अपने अलग तरीक़े से करते हैं, है ना?'

सुहेलदेव ने भी हामी भरी।

'अब मेरा अगला प्रश्न। कौन से विष्णु को हम पूज्य मानते हैं?'

सुहेलदेव की खीझ बढ़ती जा रही थी, उसे ताज्जुब हो रहा था कि काशीनाथ वो प्रश्न क्यों पूछ रहे थे जिनके उत्तर उन्हें पहले से मालूम हैं। 'विष्णु के छठे अवतार, भगवान परशुराम को,' सुहेलदेव ने आख़िरकार जवाब दिया। 'हमारे पूर्वजों ने योद्धाओं के रूप में दुर्जनों से लड़ने में उनकी मदद की थी। हम उनके दाहिने हाथ थे।'

सुहेलदेव की आवाज़ में चिड़चिड़ाहट को नज़रअन्दाज़ करते हुए काशीनाथ ने सहमति जताई और मुस्कुरा दिये। 'और भगवान परशुराम किसकी पूजा करते थे?'

'निस्सन्देह, महादेव,' सुहेलदेव ने उत्तर दिया।

'धन्यवाद। अब मुझे बताओ, हमारे समुदाय के लोग पूर्ण क्षत्रिय नहीं माने जाते हैं। तो फिर हमारे पास अपना राज्य कैसे है?' काशीनाथ ने पूछा।

'क्योंकि मेरे पितामह ने हमारे लोगों को एक सूत्र में बांधा और उन्हें एक लड़ाकू दल में बदल दिया जिससे एक राज्य का गठन हुआ।'

'हाँ। और हमें क्या एक करता है?' काशीनाथ ने नरम लहजे में पूछा। 'क्या है वो चीज़ जो हमें एक बनाती है?'

'भगवान शिव के प्रति समर्पण,' सुहेलदेव ने कहा, अब वो समझ रहा था कि उसके गुरु क्या कहना चाह रहे थे।

काशीनाथ धीमे से मुस्कुरा दिए। 'हमारे सभी लोग एक परिवार हैं क्योंकि भगवान शिव हमारे देवता हैं। मल्लदेव तुम्हारा भाई था,उसी तरह इस राज्य का हर लड़का तुम्हारा भाई है, तुम्हारे परिवार का है। मल्लदेव ये समझता था। वो अच्छी तरह जानता था कि हम नहीं कह सकते कि अपने देवता के मन्दिर को बचाना हमारी समस्या नहीं है।'

सुहेलदेव चुप रहा।

'क्या तुम जानते हो कि सोमनाथ जी के शिवलिंग के टुकड़ों का क्या हुआ?'

सुहेलदेव ने इनकार में सिर हिलाया। *नहीं।*

'महमूद उन्हें अपने साथ गज़नी ले जा रहा है, राजकुमार। उसने घोषणा की है कि वो शिवलिंग के इन टुकड़ों का इस्तेमाल उस नई मस्जिद की सीढ़ियों पर करेगा जो वो बनवाएगा। हर दिन, सैकड़ों पैर महादेव की प्रतिमा के अवशेषों पर चढ़ेंगे और उन्हें अपवित्र करेंगे।'

सुहेलदेव ने कुछ कहा तो नहीं, लेकिन उसके जबड़े सख्त हो गए और मुट्ठियाँ भिंच गईं।

उसके गुरु थोड़ी देर तक उसके साथ चुपचाप बैठे रहे, फिर उसका कंधा थपथपाया और चले गए।

सुहेलदेव दूर तक एकटक देखता रहा। झील के ठहरे हुए पानी में कहीं गहराई तक। हवा का एक छोटा सा बुलबुला सतह पर आया और फिर फूट गया। उस हवा को उसने मुक्त कर दिया, जिसे उसने कैद कर रखा था, पानी की गहराई में से निकालकर उसे मुक्त हवा का गौरव दिया।

जाने के पहले मल्लदेव के शब्द बार-बार उसके कानों में गूँज रहे थे।

'तुर्क अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक नहीं रुके। एक समय वो भी हमारा देश था। वो पवित्र सिंधु नदी तक भी नहीं रुके। एक समय वो भी हमारी नदी थी। अगर वो भारत माता की सम्पूर्ण भूमि भी जीत लेंगे तो भी नहीं रुकेंगे। वो अपमानित करना नहीं छोड़ेंगे। वो युद्ध करना नहीं छोड़ेंगे। वो मारकाट करना नहीं छोड़ेंगे। जितना हम उन्हें मनाएँगे, उनकी माँग उतनी बढ़ेगी। हम जितना आत्मसमर्पण करेंगे, उतना वो आक्रमण करेंगे। वो कभी नहीं रुकेंगे। वो तभी रुकेंगे, जब कोई भारतीय उनके सामने खड़े होने का साहस करेगा और कहेगा: बस बहुत हुआ।'

सुहेलदेव के गालों पर आँसुओं की कुछ नरम बूँदें बहने लगीं। उसने अपने गले में पहने हुए शिवलिंग के पेंडेंट को मज़बूती से पकड़ लिया।

उसे अपने भाई की उत्साहवर्धक आवाज़ क़रीब-क़रीब सुनाई दे रही थी।

'तुम्हारे अन्दर वो चीज़ है, सुहेल। मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा कर सकते हो। मेरे लिए लड़ो। भगवान शिव के लिए लड़ो। उस महान देश के लिए लड़ो जिसने हमें पाला है। भारत माता के लिए लड़ो।'

अध्याय 3

कन्नौज के सम्राट अजीतपाल ने बुरा सा मुँह बनाकर अपनी बाँह खुजाई, जहाँ एक कीड़े ने काट लिया था। एक समय उसकी राजधानी एक शक्तिशाली साम्राज्य का चमकता हुआ आभूषण थी, और यह बहुत ज़्यादा पुरानी बात नहीं थी। अजीतपाल के पूर्वज, महान मिहिर भोज के नेतृत्व में, कन्नौज का दबदबा उत्तर में हिमालय की तलहटी से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक, पश्चिमोत्तर में सतलज नदी से लेकर पूर्व में बंगाल तक था।

लेकिन अब, साम्राज्य अपने पुराने गौरव की छाया भर रह गया था, हालांकि अजीतपाल अभी भी सम्राट की उपाधि धारण करता था, जो उसके पूर्वजों ने अधिकार से हासिल की थी। लेकिन आपस में, कई लोगों ने उसे उसकी हैसियत से कम 'राजा' कहकर सम्बोधित करना शुरू कर दिया था। कुछ साल पहले ये फुसफुसाहट और तेज़ हो गई थी, जब उसने गज़नी की सेना का प्रतिरोध करने की कोशिश की थी और एक अपमानजनक हार झेलने के बाद उसके पास महमूद को अपना अधिपति स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था।

अजीतपाल ने अपने मंत्री को घूरकर देखा। 'अकुलीन वंश का ये कल का नवाब हमसे मिलने की माँग करने का साहस कर रहा है, जैसे कि हम एक समान हों। और मैं आपकी बात मानकर यहाँ चला आया।'

उसके मंत्री वृषभ ने ठंडी सांस निकलने से किसी तरह रोकी। वो एक छरहरा वृद्ध व्यक्ति था लेकिन उसके चेहरे पर अस्वाभाविक यौवन दिखता था, जो उसके अधिकतर सफेद बालों से मेल नहीं खाता था। उसके बाल थोड़े लम्बे थे और सिर के बीचोबीच बँधी उसकी शिखा उसकी ब्राह्मण जड़ों का परिचय दे रही थी। साफ़-सुथरे ढंग से कटी उसकी दाढ़ी भी ज़्यादातर सफेद थी, जिसमें बीच-बीच में काले बाल दिख जाते थे। उसके व्यक्तित्व से गरिमा टपकती थी और उसकी भूरी आँखें बुद्धिमानी और हास्य से चमकती रहती थीं। हालांकि, इस पल वो अपनी खीझ छिपाने की कोशिश कर रहा था। हफ्तों की बातचीत के बाद दूर-दराज़ के एक जंगल में गुप्त बैठक तय हुई थी।

मुलाक़ात का स्थान कन्नौज और पड़ोसी राज्य हरिद्वे की सीमा पर स्थित था। हरिद्वे को हरिद्रोही भी कहा जाता था जिसका अर्थ है हरि का शत्रु। ऐसा विश्वास था कि एक समय यहाँ हिरण्यकशिपु का शासन था, जो पौराणिक नायक और भगवान विष्णु के भक्त प्रह्लाद का पिता था। हिरण्यकशिपु विष्णु के प्रति अपने पुत्र के समर्पण से इतना नाराज़ रहता था कि उसने उसे कई बार जान से मारने की कोशिश की थी। लेकिन इसके बजाय, हिरण्यकशिपु को भगवान नरसिम्हा के हाथों अपनी जान गंवानी पड़ी थी, जो भगवान विष्णु के चौथे अवतार माने जाते हैं।

अजीतपाल ने उस स्थान पर पहुँचने के लिए शिकार पर जाने का बहाना बनाया था, और मंगलध्वज के साथ अपनी मुलाक़ात को सावधानीपूर्वक गुप्त रहस्य बना रखा था। लेकिन इसके बावजूद वो इस बारे में हमेशा बड़बड़ाता रहता था। वृषभ ने एक बार फिर उसे शान्त करने की कोशिश की। 'महामहिम, सन्देश स्पष्ट था। राजा मंगलध्वज...'

'उसे इस गढ़ी हुई उपाधि से सम्बोधित मत करें,' अजीतपाल ने बीच में उसकी बात काट दी।

'मुझे क्षमा करें, महान सम्राट। मंगलध्वज ने मुलाक़ात का आग्रह किया था और कहा था कि इससे दोनों का फायदा हो सकता है। कोई तब तक ऐसा आग्रह नहीं करता जब तक कि इसका कुछ महत्व ना हो। उसकी बात सुनने में क्या नुक़सान है?'

'ठीक है, मैं सुनूँगा, लेकिन उसके साथ एक हवा में सांस लेने से मुझे मतली आती है।' अजीतपाल के शरीर में सिहरन सी दौड़ गई, जैसे उस काम से उसकी आत्मा में घृणा भर गई हो, जो वो करने जा रहा था। उसने फिर से अपनी कलाई पर चपत मारी। 'ओफ्फ, ये कीड़े। ये मुझे ज़िन्दा खा रहे हैं। मैं क्यों इस गन्दी जगह पर आने के लिए तैयार हुआ?'

वृषभ शान्त रहा लेकिन अपनी नज़र चारों तरफ़ दौड़ाने से ख़ुद को रोक नहीं सका। विशालकाय तम्बू के अन्दर की पूरी ज़मीन पर मुलायम कालीन बिछे हुए थे, जो मखमल के बने थे और उन पर सुनहरे धागों से बूटे बने थे। अजीतपाल ऊँचे मंच पर रखे एक सिंहासन पर आराम से बैठा था।

एक समय, वो अच्छे डील-डौल वाला सुन्दर युवा था। लेकिन अब उसका शारीरिक सौष्ठव बीते समय की बात थी और इस वक़्त तम्बू में बैठे व्यक्ति का शरीर थुलथुला हो चला था। उसकी पीली त्वचा और रक्तिम आँखें साबित करती थीं कि अजीतपाल का पतन हो रहा है।

एक सेवक अजीतपाल को पूरी ताक़त के साथ पंखा झल रहा था, जबकि कई और उसे भोजन और शराब परोस रहे थे और उसकी हर सनक पूरी करने में लगे थे। मंच के नीचे दो सशस्त्र प्रहरी खड़े थे, और दो और प्रहरी तम्बू के प्रवेश द्वार पर थे। बाहर, बीस सिपाहियों का एक दल पूरे तम्बू को चारों तरफ़ से घेरकर खड़ा था ताकि किसी भी जगह से कोई घुसपैठिया छिपकर अन्दर ना जा सके।

अगर वहाँ बीच-बीच में किसी पक्षी के चहचहाने या जंगली जानवर के बोलने की आवाज़ ना आती, तो कोई कह नहीं सकता था कि वो लोग किसी जंगल के अन्दर हैं।

अजीतपाल वृषभ की चुप्पी में छिपी असहमति को समझ गया और इससे वो और चिढ़ गया। 'यहाँ गन्दा सा मुँह बनाकर खड़े मत रहिए। आपके "माननीय" मेहमान कब आ रहे हैं?'

'वो अब किसी भी क्षण यहाँ आते ही होंगे, महान सम्राट,' वृषभ ने उत्तर दिया।

'ठीक है, फिर जाइए और पता लगाइए। और किसी को बुलाकर इन आसनों को बाहर कराइए। इनकी आवश्यकता नहीं है।'

'महामहिम...' वृषभ ने आश्चर्य भरे स्वर में कहना चाहा, लेकिन अजीतपाल को घूरते देखकर चुप रह गया।

अजीतपाल के विचारों को उसकी नाराज़गी भरी चुप्पी में भी सुना जा सकता था। *वो मेरी बराबरी का नहीं है। मंगलध्वज ज़मीन पर बैठेगा, वहीं उसकी सही जगह है।*

अपने मन में गहरी शंकाओं के बावजूद, वृषभ ने राजा के सेवकों को आसन हटाने का संकेत दिया, और अपने सम्राट को नमस्कार करके भव्य रूप से सज्जित तम्बू से बाहर निकल गया। उसके सम्राट के कई ऐसे राजसी आदेश थे जिन्हें मानने पर उसे मजबूर होना पड़ा था और जिनसे उसे इससे भी ज़्यादा घृणा हुई थी।

अजीतपाल ने वृषभ के नमस्कार का जवाब देने की भी परवाह नहीं की। उसने एक सेवक को संकेत किया, जिसने तुरन्त ही व्यंजनों से भरी एक थाली उसके सामने रख दी। अजीतपाल ने प्रसन्न होकर उन्हें सूँघा, फिर अपने मुँह में उन व्यंजनों को ठूँसने लगा।

हालांकि सुहेलदेव ने मंगलध्वज के साथ आने पर सहमति जता दी थी, वो अपने *पिता* के विचार के प्रति शंकालु था। 'इससे कुछ फायदा नहीं होगा, बाबा।'

सुहेलदेव और मंगलध्वज कुछ दिनों से घुड़सवारी कर रहे थे, उनके साथ अंगरक्षकों का एक छोटा दस्ता था।

मंगलध्वज ने अपने घोड़े की लगाम को संभाला और उसे सुहेलदेव की सीध में ले आया। 'मुझे पक्का भरोसा है कि गज़नी की सेनाएँ भारत के हमारे इलाक़ों की तरफ़ जल्दी ही आएँगी। सम्भवतः हम उससे अकेले नहीं लड़ सकते। हमें सहयोगियों की ज़रूरत होगी। हाँ, यह सही है कि अजीतपाल गज़नी से हार चुका है, लेकिन उसके पास अभी भी इस क्षेत्र की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में से एक है। हो सकता है कि वो हमारे साथ गठबंधन के लिए तैयार हो जाए। हम भारतीयों ने अपने-आप को इतनी सारी चीज़ों में बांट रखा है। शायद बाहर से आने वाला ख़तरा हमें संगठित कर सके।'

'बाबा, क्या आप सच में विश्वास करते हैं कि वो हमारे और अपने वंश से परे देख सकेगा?' सुहेलदेव ने पूछा।

मंगलध्वज ने कंधे उचका दिए। 'मैं नहीं जानता। लेकिन इतिहास हमारा साथी हो सकता है। भारत के महानतम सम्राटों को याद करो। चन्द्रगुप्त मौर्य और बिन्दुसार, समुद्रगुप्त और विक्रमादित्य। इनमें से कोई भी जन्म से क्षत्रिय नहीं था। बहुत पुरानी बात नहीं है जब एक व्यक्ति की पहचान उसके कर्म से होती थी, जन्म से नहीं।'

सुहेलदेव ने अपनी आँखें गोल-गोल घुमाते हुए कहा, 'बाबा, ये बहुत, बहुत पुरानी बात है...'

'हो सकता है। लेकिन हमें भारतीयों को उन दिनों की याद दिलाने की ज़रूरत है। तब हमलावर हम पर हमला करने की हिम्मत नहीं करते थे। हम अजेय थे।'

'हाँ, क्योंकि उन दिनों हम वास्तव में विदेशियों से एक साथ मिलकर लड़ते थे। आज, हम एक-दूसरे से लड़ने में ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं।'

'हम एक बार उन दिनों को दोबारा लाने की कोशिश करते हैं। कौन जानता है, अजीतपाल हमें चौंका दे।'

सुहेलदेव ने इनकार की मुद्रा में सिर हिलाया और हल्के से हँस दिया। मंगलध्वज ने अपने बेटे की ओर घूरकर देखा, और फिर मुड़कर आगे देखने लगा। वो काफ़ी आगे देख रहा था।

अजीतपाल अपने सामने रखे व्यंजनों को बेढंगे तरीक़े से चबाता रहा। दिन का दूसरा प्रहर ख़त्म होने वाला था। संक्षेप में, दोपहर होने वाली थी और भोजन का समय अधिक दूर नहीं था, लेकिन अजीतपाल का पेट खाने और शराब से क़रीब-क़रीब भर चुका था जो वो बेचैनी और ऊब की वजह से खाता जा रहा था। उसने डकार ली, और उसके मुँह में अम्लीय स्वाद महसूस हुआ। इससे पहले से ख़राब उसकी मनोदशा और बिगड़ गई।

मैं महान मिहिर भोज का वंशज हूँ! इन मूर्ख देशवासियों को मुझे वो सम्मान देना चाहिए जिसका मैं हकदार हूँ!

यही सोचते हुए उसने एक पात्र उठाया और उसमें रखी शराब गटक गया। कुछ शराब उसकी ठोड़ी से होकर बहने लगी। खीझते हुए, उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से उसे पोंछ लिया।

'महान सम्राट, आपके माननीय अतिथि आ गए हैं,' वृषभ ने तम्बू में प्रवेश करते हुए कहा, और वो अपने साथ पूरे सम्मान के साथ मंगलध्वज और सुहेलदेव को अन्दर ले आया।

'स्वागत है,' अजीतपाल ने कहा। वो अपने अतिथियों का स्वागत करने के लिए उठा नहीं। इसके बजाय, उसने ज़मीन की तरफ़ इशारा किया। 'बैठ जाओ।'

सुहेलदेव की आँखें क्रोध से जल उठीं लेकिन मंगलध्वज ने उसे रोकते हुए उसके कंधे पर अपना हाथ रखा और आँख के इशारे से चुप रहने को कहा।

'धन्यवाद, लेकिन हम खड़े रहना बेहतर समझते हैं, महाराज,' मंगलध्वज ने विनम्रतापूर्वक कहा, जब उसने देखा कि वृषभ उसकी तरफ़ क्षमापूर्ण नज़रों से देख रहा है।

'जो तुम्हें बेहतर लगे,' अजीतपाल ने कंधे उचकाते हुए कहा। 'तुम मुझसे मिलना चाहते थे। हम यहाँ आए हैं। बोलो।'

मंगलध्वज ने ख़ुद को थोड़ी देर तक संभाला, फिर बोलना शुरू किया। 'महान सम्राट, मुझे भरोसा है कि आप मानेंगे कि गज़नी का महमूद हमारी भूमि की शान्ति और एकता के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है। आप उसके हाथों पहले ही हार चुके हैं। अब ज़्यादा वक़्त नहीं है जब वो हम बाक़ी लोगों को भी निशाना बनाएगा। उसने सोमनाथ जी मन्दिर के साथ जो किया है, उसने पूरे भारत को क्रोध से भर दिया है —'

'ये कुछ समय पहले की बात है,' अजीतपाल ने बात काटते हुए कहा। 'उसके बाद से वसन्त ऋतु बीत चुकी है और ग्रीष्म ऋतु भी समाप्त होने को है। ये बात जल्दी ही भुला दी जाएगी। वैसे भी, हम मन्दिर का पुनर्निर्माण बाद में करा सकते हैं...'

अजीतपाल शायद सोच रहा था कि दो ऋतुएँ बीतना काफ़ी लम्बा समय होता है।

मंगलध्वज चौंक गया था। अपने ईश्वर के प्रति अपमान को इतनी जल्दी भुला दिया गया था? फिर भी वो एक गठबंधन बनाने की पूरी कोशिश करना चाहता था। वो कन्नौज की शक्तिशाली सेना का समर्थन चाहता था। 'महाराज, जो आदमी अपने पड़ोसी का घर जलते देखकर चुपचाप खड़ा रहे, वो मूर्ख है क्योंकि आग उसके घर तक भी ज़रूर फैलेगी। महमूद सोमनाथ पर नहीं रुकेगा। वो भारत में भीतर, और भीतर आएगा। हममें से कोई सुरक्षित नहीं रहेगा।'

'तुम्हें मेरी सुरक्षा की चिन्ता की ज़रूरत नहीं है,' अजीतपाल ने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ कहा। 'मेरी सेना किसी भी चीज़ से निपट सकती है।'

'महाराज, हम आपके साथ गठबंधन का प्रस्ताव रखना चाहेंगे। एक बार आप अपने इरादे की घोषणा कर देंगे, तो दूसरे राज्य भी इस उद्देश्य से सामने आने की हिम्मत जुटा सकेंगे। आप कहिए, और हम सभी आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो जाएँगे। फिर हम किसी भी तुर्क को हरा सकते हैं!'

अजीतपाल बेतहाशा हँस पड़ा। 'क्या तुम सच में ऐसा सोच रहे हो? कुछ पीढ़ियों पहले, तुम्हारे पूर्वज हम कुलीन वंशियों के लिए जानवर पालते और खेती करते थे। और आज, तुम मेरे साथ, एक शुद्ध क्षत्रिय के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होने का सपना देख रहे हो? मैं मिहिर भोज का वंशज हूँ! मैं हमारे महान भगवान लक्ष्मण का वंशज हूँ!'

मंगलध्वज के स्वर में पहले जैसी ही विनम्रता थी। 'हाँ, महाराज। मिहिर भोज एक महान सम्राट थे, जिनका सभी भारतीय आज भी सम्मान करते हैं। लेकिन

कृपया याद रखें कि वो सभी भारतीयों को अपने समान मानते थे। और ये भी सच है कि आप और आपका परिवार भगवान लक्ष्मण का वंशज है। लेकिन ये ना भूलें कि भगवान लक्ष्मण के बड़े भाई भगवान राम सभी के साथ सम्मान का व्यवहार करते थे, यहाँ तक कि अकुलीन वंश के लोगों के साथ भी।'

'देखो, मैं भगवान राम नहीं हूँ!' अजीतपाल गुर्राया। 'अपनी हैसियत के मुताबिक व्यवहार करो तो मैं दया दिखाऊँगा। भूलो मत कि अतीत में तुम क्या थे।'

'इसका अतीत से क्या लेना-देना है?' सुहेलदेव बरस पड़ा। 'हम वर्तमान में रहते हैं और मेरे पिता आपके साथ एक राजा के समान बात करने आए हैं।'

अजीतपाल ने क्रोध में अपना हाथ उठाया। 'मंगलध्वज, मैं जानता हूँ कि तुम लोगों के पास ढंग से शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा नहीं है, लेकिन तुम्हें अपने मूर्ख बच्चों को पढ़ाना चाहिए कि सिर्फ कुछ झगड़ों में जीत हासिल करने और थोड़ी सी ज़मीन क़ब्ज़ा कर लेने से कोई राजा नहीं बन जाता। सच्चा राजा बनने के लिए तुम्हें क्षत्रिय रुप में जन्म लेने की ज़रूरत है।'

'अतीत में कई ऐसे महान राजा और सम्राट हुए हैं जो जन्म से क्षत्रिय नहीं थे—' मंगलध्वज ने बोलना शुरु किया।

'वो अतीत में था,' अजीतपाल ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'और जैसा तुम्हारे गुस्ताख पिल्ले ने थोड़ी देर पहले कहा था, हम वर्तमान में रहते हैं, और तुम्हें मुझसे काम निकालना है। मैं इस हास्यास्पद मुलाक़ात के लिए तुम्हारी बात मान गया था, लेकिन अपनी सीमाएँ मत लांघो। एक बात हमेशा के लिए समझ लो: मैं अपने महान परिवार की प्रतिष्ठा को एक अकुलीन मूर्ख के साथ हाथ मिलाकर नहीं गंवाऊँगा जिसने महानता का भ्रम पाल रखा है।'

सुहेलदेव ने उसे रोक रहे मंगलध्वज के हाथ को पीछे किया और चीख़कर बोला, 'हाँ, तुम्हारी महान प्रतिष्ठा एक विदेशी के आगे सिर झुकाने से बनती है, लेकिन एक हमवतन भारतीय के साथ हाथ मिलाकर तुम्हारी प्रतिष्ठा कम हो जाएगी, घमंडी मूर्ख!'

'बस!' अजीतपाल गरजा, और अपने सामने मेज़ पर रखी सभी थालियों को दूर फेंक दिया। 'धृष्ट नीच, तुम्हारी धृष्टता के लिए मैं तुम्हारी जीभ खिंचवा सकता हूँ।'

'महामहिम, ये आपके अतिथि हैं,' वृषभ ने आग्रह भरे स्वर में कहा। 'मैं आपसे विनती करता हूँ।'

अजीतपाल अपने मंत्री की ओर मुड़ा। 'यह सब आपकी गलती है! आपके कहने से मैं यहाँ आया था! आपसे तो मैं बाद में निपटूँगा!' फिर उसने मंगलध्वज और सुहेलदेव से कहा, 'तुम लोग धर्म भूले होगे, लेकिन मैं नहीं। मैं तुम्हारे घमंड को पहली और आख़िरी बार क्षमा करूँगा। मेरे इलाक़े से निकल जाओ और कभी वापस मत आना। अगर मैंने कभी तुम्हारे चेहरे दोबारा देख लिए तो मैं तुम्हें वहीं मरवा दूँगा।'

सुहेलदेव ने उत्तर देना चाहा, लेकिन मंगलध्वज ने उसका हाथ पकड़ा और उसे बाहर ले गया।

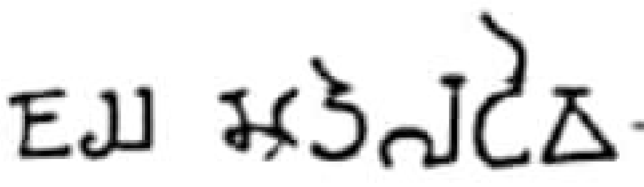

मंगलध्वज और सुहेलदेव के साथ क़रीब डेढ़ सौ लोगों का दल घर लौट रहा था। वैसे तो सभी श्रावस्ती की सेना में सैनिक थे, उनमें से किसी ने भी सैनिक की पोशाक नहीं पहन रखी थी। वो नहीं चाहते थे कि कोई उन्हें आसानी से पहचाने। कुछ के पास धनुष और तरकश थे; बाकियों के पास भाले, कुल्हाड़ियाँ और गदा थे। सभी ने अपनी कमर में तलवारें और कटारें बांध रखी थीं, और उनकी पीठ पर ढाल बंधी थी।

दल के ज़्यादातर सैनिक बीच में थे, और मंगलध्वज और सुहेलदेव उनके बीचोबीच घोड़े पर सवार थे, जबकि बीस लोगों का दूसरा दल पीछे था। दो सैनिक आगे घोड़े पर सवार थे, जिनके पीछे बीस बेहतर सैनिकों का दल था।

'भगवान महादेव इस मूर्ख अजीतपाल का सत्यानाश करें!' सुहेलदेव फुफकारते हुए बोला। 'भारत में कुछ अच्छा नहीं हो सकता जब तक कि ऐसे मूर्ख हमारी भूमि पर शासन करेंगे।'

मंगलध्वज ने उदासी से अपना सिर हिलाया। 'ऐसे भारतीयों के रहते, हमें हराने के लिए तुर्कों की ज़रूरत नहीं है। हम अपने आप को हराने के लिए काफ़ी हैं। इस तरह से बंटे रहकर हम नीचे गिरते जाएँगे।'

तभी, एक घुड़सवार सैनिक तेज़ी से वापस आया और बाक़ी लोगों को रुकने का संकेत किया। बाक़ी घुड़सवार रुक गए और जगह बना दी ताकि वो सैनिक राजा के पास पहुँच सके।

'क्या बात है?' मंगलध्वज ने पूछा।

'झील पर कुछ सैनिक हैं, स्वामी,' घुड़सवार ने उत्तर दिया। 'क़रीब पचास आदमी। वो गज़नी की पोशाक पहने हैं।'

घुड़सवार जिस झील की बात कर रहा था, वो एक अनौपचारिक पड़ाव था, जहाँ इस रास्ते के सारे कारवां अपने घोड़ों को पानी पिलाने और थोड़ा आराम करने रुकते थे। यह कुछ किलोमीटर दूर था जहाँ का रास्ता जंगल से होकर जाता था।

मंगलध्वज ने उस सैनिक के पीछे देखा। 'वरिष्ठ सैनिक कहाँ है?'

'वो उन पर नज़र बनाए है, महाराज। उसने मुझे आपको जानकारी देने के लिए वापस भेजा है।'

मंगलध्वज ने प्रशंसात्मक मुद्रा में सिर हिलाया, वो यह देखकर ख़ुश था कि मानक नियम-क़ायदों का पालन किया जा रहा है। 'चलो, चलकर देखते हैं,' उसने कहा। उसने सुहेलदेव और दो दूसरे सैनिकों को संकेत किया। 'तुम लोग हमारे साथ आओ। बाक़ी सभी, पीछे रहना। हम पर नज़र रखना, लेकिन गुप्त रूप से।'

ये छोटा दस्ता झील की तरफ़ चल दिया। वरिष्ठ सैनिक एक पेड़ के पीछे छिपा था, उसका घोड़ा थोड़ा और पीछे एक दूसरे पेड़ से बंधा था। जब वो वहाँ

पहुँच रहे थे, एक सैनिक ने हल्के स्वर में पक्षी की आवाज़ निकाली ताकि वरिष्ठ सैनिक चौंके नहीं।

वो सैनिक पीछे घूमा, घुड़सवारों को देखा, और फिर चुपचाप अभिवादन किया। मंगलध्वज और सुहेलदेव घोड़े से नीचे उतरे, उनकी लगाम सबसे छोटे सैनिक को दी, और फिर वरिष्ठ सैनिक की ओर बढ़े।

'क्या है अब्दुल?' मंगलध्वज ने धीमी आवाज़ में पूछा।

अब्दुल ने अपना सिर हिलाकर इशारा किया कि उसे कुछ नहीं पता, और फिर झील की तरफ़ संकेत किया। झील के पास एक बड़ा सा तम्बू लगा था। गज़नी सेना की हरी पोशाक पहने क़रीब पचास आदमी जलती हुई आग के चारों तरफ़ बैठे थे, जबकि एकाध आदमी पहरा दे रहे थे, हालांकि वो उतने सतर्क नहीं लग रहे थे।

'आओ चलें और पता लगाएँ कि उनका मक़सद क्या है,' मंगलध्वज ने कहा। उसने पीछे देखा। बाक़ी सैनिक थोड़ी दूर थे, लेकिन दिख रहे थे। उसने कनिष्ठ सैनिक की ओर मुड़कर कहा। 'उनके पास मेरे निर्देश के साथ जाओ। उन्हें पास रहना है लेकिन अपने आप को छिपाए रखना है। मुझे नहीं लगता कि कोई दिक्कत होगी, पर अगर उन्हें ऐसे कोई लक्षण दिखें तो हमारी सहायता के लिए तुरन्त आना होगा।'

जब बाक़ी आदमी छिप गए, मंगलध्वज, सुहेलदेव, अब्दुल और एक अन्य सैनिक तम्बू की ओर बढ़ चले, उनके घोड़े आराम से और धीमी गति से चल रहे थे। धुँधलका हो गया था, और हल्की हवा बह रही थी।

जंगल की शुरूआत झील से क़रीब दो सौ मीटर दूर से होती थी, लेकिन झील तक पहुँचने के रास्ते पर सिर्फ घास थी, और कोई बाधा नहीं।

घोड़ों के चरने के लिए—या फिर घुड़सवार दस्ते के हमले के लिए बिल्कुल सही, सुहेलदेव ने सोचा।

'वहीं रुको,' एक सन्तरी चिल्लाया जब घुड़सवार तम्बू के पास जा रहे थे। 'कौन हो तुम?'

मंगलध्वज ने अपने हाथ ऊपर किए। 'हम घोड़ों के व्यापारी हैं, और बहराइच जा रहे हैं। क्या हम आ सकते हैं?'

सन्तरी कुछ जवाब देने में हिचकिचा रहा था, तभी बेहतरीन रेशमी कपड़े पहने एक हट्टा-कट्टा आदमी तम्बू में से बाहर निकला। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं था, लेकिन उसकी घनी दाढ़ी उसके सीने तक पहुँच रही थी। उसका चेहरा गोल था और आँखें छोटी, ज़्यादातर तुर्कों के समान। उसकी पोशाक उसकी बड़ी सी तोंद पर तंग आ रही थी। 'क्या हो रहा है?'

इस तुर्क को देखकर लग रहा था कि वो किसी ऊँचे पद पर है और इससे सुहेलदेव का क्रोध भड़क उठा था।

सन्तरी ने सलाम ठोका। 'ये घोड़ों के व्यापारी हैं, हुज़ूर। वो यहाँ आने की इजाज़त चाहते हैं।'

'घोड़ों के व्यापारी?' उस आदमी ने पूछा। 'तुम्हारे घोड़े कहाँ हैं?'

मंगलध्वज आगे की ओर झुका। 'भगवान की कृपा से हमारे सभी घोड़े कन्नौज में बिक गए। हम अब अपने घर लौट रहे हैं ताकि और घोड़े ला सकें। आपकी अनुमति हो तो हम झील पर थोड़ी देर रुकना चाहेंगे।'

'क्या तू अंधा है, मूर्ख?' घमंड भरे स्वर में तुर्क बोला। 'देखता नहीं कि ये जगह भरी हुई है? आगे जा!'

'लेकिन यहाँ हम सभी के लिए पर्याप्त जगह और पानी है,' मंगलध्वज ने नरम लहजे में कहा।

'गुस्ताख, क्या तू जानता है कि किससे बात कर रहा है?' वो आदमी गरजा। 'मैं महान सुलतान, गज़नी के महमूद का दूत हूँ। नीच आदमी, यहाँ से चला जा वरना तुम सबकी खाल खिंचवा ली जाएगी।'

मंगलध्वज हड़बड़ी में आगे झुका। 'मुझे क्षमा करें, हुज़ूर। मुझे नहीं पता था कि मैं इतने बड़े आदमी से बात कर रहा हूँ। हम अभी तुरन्त चले जाएँगे। लेकिन उसके पहले, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि—'

दूत ज़ोर से चिल्लाया, 'मैं तुझसे कुछ नहीं ख़रीद रहा, गन्दे भारतीय चूहे! यहाँ से बाहर निकल जा! तू ख़ुशक़िस्मत है कि मैं तुझे ज़िन्दा छोड़ रहा हूँ। वरना तू उन सूअरों की तरह चीख़ रहा होता जिन्हें सोमनाथ मन्दिर में हमारे आदमियों ने चीर डाला था।'

सुहेलदेव ने एक गहरी सांस ली। उसने अपने घोड़े को तेज़ ऐड़ लगाई और सीधा दूत की ओर बढ़ चला। जब तक वो तुर्क चौंककर डर से चीख़ा, तब तक सुहेलदेव उछलकर घोड़े से नीचे उतरा और सीधा उसके ऊपर कूदा। दोनों नीचे गिरे और एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्था हो गए।

दूसरे सिपाही दोनों आदमियों की तरफ़ दौड़े, लेकिन तब तक मंगलध्वज और उसके साथ के सिपाहियों ने अपनी छिपी तलवारें निकाल ली थीं और उन पर हमला कर दिया। कुछ पलों बाद ही, घोड़ों के खुरों की गरजती आवाज़ें गूँजने लगीं क्योंकि श्रावस्ती के दस्ते के बाक़ी घुड़सवार मदद के लिए वहाँ पहुँच गए थे।

सुहेलदेव ने दूत पर घूँसे और लात से कई प्रहार किए, जिसने पहले तो जवाबी हमले की कोशिश की लेकिन अन्त में अपने चेहरे को हाथ से ढंककर एक भ्रूण की तरह सिकुड़ गया। थोड़ी देर बाद, मज़बूत हाथों ने आगबबूला हो रहे सुहेलदेव को, उस निहत्थे आदमी से दूर करते हुए पीछे खींचा। दूत को उसके घुटनों पर बैठाया गया।

'तम्बू की तलाशी लो,' मंगलध्वज ने अपने एक सैनिक को कहा। फिर वो दूत के पास गया। 'तुमने कहा कि तुम महमूद के दूत हो। तुम सुलतान का क्या सन्देश ला रहे थे? और किसके लिए?'

दूत ने उसकी तरफ़ थूक दिया। थूक मंगलध्वज के दाहिने जूते पर गिरा।

'इससे मुझे पूछने दें,' सुहेलदेव ने कहा।

उसने दूत के दाएँ गाल पर उल्टे हाथ से घूँसा मारा। दूत पीछे की तरफ़ झूल गया, फिर उसने खांसते हुए ख़ून और दो दांत बाहर की तरफ़ थूके।

'क्या मैं फिर पूछूँ?' सुहेलदेव ने कहा। 'मैं पूरे दिन ऐसा कर सकता हूँ।'

'कुत्ते, इसके लिए सुलतान तुम्हारा सिर क़लम करा देंगे,' दूत गरजा।

सुहेलदेव मुस्कुराया, लेकिन इस मुस्कुराहट में सिर्फ होंठ हिले थे, इसमें कोई हास्य नहीं था। 'गलत उत्तर,' उसने कहा, और दूत की नाक पर एक ज़ोर का घूँसा जड़ दिया। उस तुर्क की नाक टूटने की आवाज़ आई। नाक तुरन्त सूज गई और उससे ख़ून निकलने लगा। उसे सांस लेने में दिक्कत होने लगी और वो मुँह से सांस लेने की कोशिश करने लगा, ऐसा करने पर उसके गले से खरखराहट की आवाज़ निकलने लगी।

'हमें कुछ मिला है,' अब्दुल चीख़ा, जो दूत के तम्बू की तलाशी ले रहा था। वो लिपटे हुए क़ागज़ के कई मुट्ठे लेकर बाहर आया। 'ये इस इलाक़े के कई शासकों को सम्बोधित सीलबन्द चिट्ठियाँ हैं। इनमें से एक श्रावस्ती के लिए यानी आपके लिए भी है, महाराज।'

अब्दुल ने एक मुट्ठा मंगलध्वज को थमाया। दूत की आँखें आश्चर्य से फैल गईं जब उसने सम्बोधन सुना।

'मंगलध्वज!' तुर्क घरघराती आवाज़ में, राजा की तरफ़ घूरते हुए बोला। 'तुम्हारी औरतें और बच्चे ग़ुलामों की तरह बिकेंगे। तुम और तुम्हारे आदमी उसी तरह मारे जाएँगे, जैसे तुम्हारा कायर बेटा मारा गया था। जब सुलतान ने उसका सिर क़लम किया था तो वो कैसे चीख़ा था। हम सभी पेट पकड़कर हँसे थे।'

सुहेलदेव की आँखों के आगे एक लाल धुँधलका छा गया। उसने अपनी तलवार बाहर खींची। 'कुत्ते के बच्चे, अब तू मेरे सामने चीख़,' वो चिल्लाया और तलवार से तुर्क के पेट को काट डाला।

दूत दर्द से चीख़ा और अपना पेट पकड़कर नीचे गिर गया और तड़पने लगा। उसके कटे हुए पेट से ख़ून का फव्वारा फूट रहा था, और उसकी आँतें ज़मीन पर गिर गई थीं।

'ऐसा लगता है जैसे इस बार सच में ये पेट पकड़कर हँसा था,' सुहेलदेव ने रुखेपन से कहा, और अपनी तलवार को पोंछकर साफ़ किया। उसने अपने पिता को अपनी तरफ़ घूरते देखा। 'क्या? आपने सुना नहीं उसने दादा के बारे में क्या कहा था?'

'क्रोध का अपना स्थान होता है,' मंगलध्वज ने शान्त स्वर में कहा। 'लेकिन दुश्मन के पास की जानकारी तुरन्त प्रतिशोध की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती है।'

सुहेलदेव चुप रहा। लेकिन तेवर विद्रोही थे।

'खैर, जो हुआ वो हुआ,' मंगलध्वज ने कहा। 'देखते हैं चिट्ठियों में क्या कहा गया है।'

मंगलध्वज ने एक चिट्ठी पढ़ी, फिर कुछ सोचते हुए ऊपर की ओर देखा। वो अब्दुल की तरफ़ मुड़ा। दूसरी चिट्ठियाँ भी खोली गईं और श्रावस्ती के राजा को सौंपी गईं।

मंगलध्वज ने तेज़ी से बाक़ी चिट्ठियाँ भी पढ़ डालीं, फिर सुहेलदेव को थोड़ी दूर आने का इशारा किया।

मंगलध्वज ने शान्त स्वर में कहा। 'चिट्ठियों में ये कहा गया है कि हर राजा को ग़ज़नी के प्रति निष्ठा दिखानी होगी, उसे हर साल राजस्व का आधा भेजना होगा, और जब भी कहा जाए सैनिक सहायता देनी होगी, या फिर आक्रमण के लिए तैयार रहें। कुछ चिट्ठियों पर लगी मुहरों को देखकर लगता है कि कुछ राजाओं ने शर्तें मान ली हैं—जिनमें अजीतपाल भी है।'

'वो पाखंडी हमें प्रतिष्ठा के बारे में भाषण दे रहा था,' सुहेलदेव ने कड़वाहट से कहा। तभी उसके दिमाग़ में एक विचार आया और उसकी आँखें फैल गईं। 'अजीतपाल इस आदमी से हमारी मुलाक़ात से ठीक पहले मिला हो सकता है। शायद वो अपनी प्रजा को नहीं बताना चाहता कि उसने शर्मनाक ढंग से समर्पण कर दिया है।'

'सही कह रहे हो बेटे, लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि ग़ुस्से में तुमने क्या कर डाला है? तुमने ग़ज़नी के दूत पर उसके अंगरक्षकों के सामने हमला किया, और हमारे पास तुम्हारी सहायता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, वरना तुम मारे जाते। अगर महमूद को इसका पता चलेगा तो उसका ग़ुस्सा हम पर टूट पड़ेगा। और हम अभी उससे आमने-सामने नहीं लड़ सकते।'

'फिर हम क्या करें?'

'हमें इस छोटी भिड़न्त को जब तक हो सके, गुप्त रखना होगा।' मंगलध्वज छावनी की तरफ़ घूमा और श्रावस्ती सैनिकों के कप्तान को अपनी तरफ़ आने का इशारा किया। ग़ज़नी के कई सैनिक मारे जा चुके थे। जो बचे थे वो कैद में थे। कप्तान को मंगलध्वज का निर्देश बिल्कुल साफ़ था। 'यहाँ होने वाली घटना का कोई गवाह नहीं रह सकता है।'

कप्तान ने तुरन्त अपनी तलवार खींची और ग़ज़नी कैदियों की तरफ़ चल दिया। उसके सैनिकों ने माजरा समझ लिया और अपनी-अपनी तलवारें भी निकाल लीं। ग़ज़नी कैदी डर से रोने लगे क्योंकि वो समझ गए थे कि क्या होने वाला है। उन्होंने सम्मान और युद्धबन्दियों के प्रति दया की भारतीय परम्परा के बारे में सुना था। उन्होंने रहम की गुज़ारिश की, वादा किया कि वो सुलतान महमूद के ख़िलाफ़ हो जाएँगे। वो बुरी तरह रो रहे थे। उनकी चीख़-पुकार ज़्यादा देर नहीं चली क्योंकि उन्हें तुरन्त ही घुटनों पर बिठाकर ख़त्म कर दिया गया।

'हमारा क्या नुक़सान हुआ है?' मंगलध्वज ने पूछा, जैसे ही ग़ज़नी कैदियों को मारने का काम ख़त्म हुआ।

'कुछ सैनिक घायल हुए हैं। कोई गम्भीर बात नहीं है,' उसे बताया गया।

'उनकी मरहम पट्टी करो और यहाँ से चलो,' मंगलध्वज ने कहा। 'लेकिन उसके पहले, हमें इन लाशों से छुटकारा पाना है। इन्हें जंगल में ले जाओ और गहरे गड्ढे में दबा दो, ताकि जंगली जानवर इन तक नहीं पहुँच सकें। लाशों को दबाने के पहले उन पर नमक छिड़क देना। इससे सड़ती हुई लाशों की बदबू दबी रहेगी। उनके भंडार में नमक ज़रूर होगा, वहाँ से ले लेना। जिस ज़मीन को तुम खोदोगे, उसे पत्तियों और टहनियों से ढंक देना, ताकि कोई बता ना सके कि वहाँ की मिट्टी

से छेड़-छाड़ हुई है। जो भी काम की चीज़ें हों, सब रख लो और बेकार की चीज़ों को नष्ट कर दो। यहाँ जो हुआ, उसका कोई सबूत नहीं छोड़ना।'

मंगलध्वज ने जम्हाई ली और अपने शरीर को सीधा किया। जब सूर्योदय हुआ, उसने सूर्य को नमन किया और प्रार्थना बुदबुदाई। पहले उसने सूर्य नमस्कार के कुछ आसन करने की सोची, लेकिन फिर अपना मन बदल लिया। वो पिछले दिन की गतिविधियों के बाद अभी भी थका हुआ था, और अभी भी कई घंटों की घुड़सवारी बची थी।

जब तक उसके आदमियों ने गज़नी के दूत और उसके दल के साथ भिड़न्त के सभी निशान साफ़ किए थे, तब तक देर रात हो चुकी थी। उसके तुरन्त बाद वो घुड़सवारी करने लगे थे, ताकि उस स्थान से जितनी दूर हो सके, उतनी दूर यथाशीघ्र पहुँच जाएँ। अंधेरे की वजह से, उन्होंने अपनी गति धीमी रखी थी, लेकिन मंगलध्वज थके हुए आदमियों और जानवरों के साथ तब तक चलता रहा था जब तक वो चल सकता था, उसके बाद उसने रात के लिए पड़ाव डालने की अनुमति दी थी। वो मुश्किल से एकाध घंटे की ही नींद ले सके थे और अब उठने का समय हो गया था।

'प्रणाम, बाबा,' सुहेलदेव ने अपने पिता के चरण स्पर्श करते हुए कहा।

मंगलध्वज ने सुहेलदेव को अपने पास बैठने का संकेत किया। 'ऐसा लगता नहीं कि तुम ज़्यादा देर सोए हो।'

सुहेलदेव ने इनकार में सिर हिलाया। 'मेरे दिमाग़ में कई विचार दौड़ रहे थे।'

'क्या सोच रहे थे तुम?'

'अजीतपाल जानता है कि हम आसपास थे। एक बार जब ये बात फैलेगी कि गज़नी का दूत रहस्यमय ढंग से ग़ायब हो गया है, उसके मन में सन्देह तो ज़रूर आएगा...लेकिन एक और बात है। क्या आपने पिछली रात आदमियों को बात करते सुना था? वो रोमांचित थे। अब, उन्होंने महसूस कर लिया है कि गज़नी की सेना अजेय नहीं है। उनके सैनिकों को मारा जा सकता है, अगर हम उन पर अचानक हमला करें।'

'तो, तुम्हारे दिमाग़ में क्या है?' मंगलध्वज ने पूछा। वो भी यही सोच रहा था लेकिन वो जानना चाहता था कि उसके बेटे का क्या कहना है।

सुहेलदेव ने एक गहरी सांस भरी, मानो इस बात को ज़ोर से कहने से उसके फैसले पर अन्तिम मुहर लग जाएगी। 'बाबा, मैं आपके साथ घर नहीं लौटूँगा। हम ये बात फैलाएँगे कि मैं दूत की मौत के लिए जिम्मेदार हूँ जबकि आप पहले ही आगे बढ़ गए थे। मैं उन लोगों के साथ छिपा रहूँगा जो मेरे साथ आना चाहेंगे। मैं एक डाकू की तरह जीवन बिताऊँगा और इलाक़े में घूम-घूमकर गज़नी के आदमियों पर हमला करूँगा, जब भी मुझे इसका मौक़ा मिलेगा। मुझे भरोसा है कि कई और लोग मेरे साथ जुड़ जाएँगे। आप कह सकते हैं कि मैं आपकी इच्छाओं

के ख़िलाफ़ काम कर रहा हूँ और आप किसी तरीक़े से इसमें शामिल नहीं हैं। हम गुप्त रूप से सम्पर्क में रहेंगे।'

'यह जीवन तुम्हारे लिए बहुत कठिन होगा, बेटे।'

'कठिनाइयों से मुझे डर नहीं लगता है...मैंने दादा का प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की है, और चाहे जो हो जाए, मैं ये लेकर रहूँगा।'

'तुम गज़नी की ताक़त के सामने मुट्ठी भर लोगों के साथ खड़े हो रहे हो। यह वैसा ही होगा जैसे एक चींटी हाथी से लड़ रही हो।'

'मैं जानता हूँ, लेकिन एक चींटी भी हाथी को परेशान कर सकती है,' सुहेलदेव बोला और मुस्कुराया। 'उसे बस इतना जानना है कि कब और कहाँ काटना है।'

मंगलध्वज ने अपने बेटे की तरफ़ लम्बी और भेदने वाली नज़र डाली। आख़िरकार जब उसके शब्द निकले, तो उसका गला भर्राया हुआ था। 'नेता बनने का मतलब लड़ने या तर्क करने या भाषण देने के काबिल होना नहीं होता। इसका मतलब है यह महसूस करना कि बड़ी भलाई के लिए क्या किया जाना चाहिए। और फिर इसे करना, चाहे जो क़ीमत चुकानी पड़े...'

सुहेलदेव अपने पिता से इस तरह तारीफ सुनने का आदी नहीं था। तारीफ के ये शब्द सामान्यतः अच्छे बेटे, मल्लदेव के लिए कहे जाते थे।

मंगलध्वज ने अपने छोटे बेटे को ज़ोर से गले लगा लिया। 'मल्लदेव तुम पर गर्व करता बेटे...मुझे तुम पर गर्व है...'

दोनों बाप-बेटे लम्बे समय तक आलिंगनबद्ध रहे। फिर सुहेलदेव ने धीरे से अपने आप को पिता से अलग किया।

मंगलध्वज ने सुहेलदेव का चेहरा स्पर्श किया और फुसफुसाया, 'भगवान शिव के साथ जाओ, मेरे बेटे। भारत माता के लिए लड़ो।'

'हर हर महादेव...'

'हर हर महादेव...'

सुहेलदेव ने अपने पिता के चरण एक बार फिर स्पर्श किए, और फिर चल दिया।

उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

अध्याय 4

'वो हिरण पहले ही मर चुका है, सुहेलदेव। तुम्हें उसे मारने के लिए दोबारा छुरा भोंकने की ज़रूरत नहीं है। मुझे इसकी खाल उतारने दो।'

सुहेलदेव ने अब्दुल को भौंहें चढ़ाकर देखा। बाज़ की तरह नाक और घुँघराले बाल वाला ये सैनिक उन पचास लोगों में था जिन्होंने कुछ हफ्ते पहले ये निर्वासित जीवन जीने का रास्ता चुना था। उसके बाद से, ये दस्ता, ज़्यादातर, उस जंगली इलाक़े में रह रहा था जो कन्नौज और हरिद्वे के राज्यों की सीमाओं पर पड़ता था।

घने जंगल होने की वजह से सीमा पर कोई ख़ास निशानदेही नहीं थी। एकाध मौक़ों पर, सुहेलदेव और उसके आदमियों ने कन्नौज में छोटे-मोटे हमले किए, और फिर हरिद्वे में आ गए, जहाँ कन्नौज के सैनिक उनका पीछा नहीं कर सकते थे। इस समय के दौरान, उन्होंने एक गाँव के निवासियों को भी दोस्त बना लिया था जो सीमावर्ती इलाक़े में प्रवेश के पहले कन्नौज की अन्तिम मानव बस्ती था।

गाँव के निवासी ग़रीब लेकिन मेहमाननवाज़ थे, और दस्ते को जो भी सहायता हो सकती थी, उपलब्ध कराते थे।

'मैं जानता हूँ कि तुम मेरा काम करने की कोशिश कर रहे हो, अब्दुल,' सुहेलदेव ने कहा। 'लेकिन मैंने तुम्हें पहले बताया है, मैं किसी तरह की वरीयता नहीं चाहता। हम सभी यहाँ बराबर हैं। मैं भी वही काम करूँगा जो बाक़ी सब करते हैं।'

अब्दुल ने हल्के से मुस्कुराकर अपना सिर हिलाया। 'तुम बिल्कुल अपने बड़े भाई की तरह हो।'

सुहेलदेव की निगाहों में नरमी आ गई। अब्दुल के पिता मंगलध्वज के अंगरक्षक थे और राजा की रक्षा करते हुए जान गंवा बैठे थे। कृतज्ञ मंगलध्वज ने अब्दुल की माँ को महल में नौकरी दी थी और सुनिश्चित किया था कि अब्दुल को उनके बड़े बेटे के साथ पूरी शिक्षा मिले।

अब्दुल और मल्लदेव हमउम्र थे और अब्दुल बहुत जल्दी मल्लदेव का सबसे क़रीबी साथी बन गया था। जब अब्दुल ने संकेत दिया था कि वो सेना में जाना चाहता है, सबसे ज़्यादा ख़ुशी मल्लदेव को हुई थी।

अब्दुल ने मल्लदेव का साथ कई अभियानों में दिया था। शरीर और चरित्र दोनों से मज़बूत, अब्दुल ने जल्दी ही साबित कर दिया था कि वो एक शक्तिशाली और कुशल सैनिक है। हालांकि, हाल के एक अभियान में, वो गम्भीर रूप से घायल हो गया था। वो उस वक़्त पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हुआ था जब मल्लदेव ने सोमनाथ मन्दिर की रक्षा के लिए जाने का फैसला किया था। अब्दुल ने मल्लदेव से विनती की थी कि वो उसे घायल अवस्था में ही अपने साथ ले चले। लेकिन मल्लदेव ने इनकार कर दिया था और कहा था कि भविष्य में दूसरे युद्ध भी लड़ने होंगे। अब्दुल के घाव भरे ही थे जब मल्लदेव की मौत की ख़बर श्रावस्ती पहुँची थी। उसका मानना था कि अगर वो सोमनाथ में होता तो मल्लदेव अभी भी जीवित होता।

सुहेलदेव ने अब्दुल के कंधे को धीरे से छुआ। 'मेरे लिए दादा से मेरी तुलना होने से बड़ी प्रशंसा कुछ नहीं है। लेकिन तुम भी अच्छी तरह जानते हो कि मैं उनके जितना बड़ा नहीं हूँ। यहाँ तक कि उनके आसपास भी नहीं हूँ।'

अब्दुल ने सुहेलदेव की तरफ़ देखा, उसके चेहरे पर दुख के भाव आए। 'मुझे सोमनाथ जी में उसके साथ होना चाहिए था।'

सुहेलदेव ने ठंडी सांस ली। 'फिर तुम भी मर चुके होते।'

'जब मेरे दोस्त और साथी मर रहे हों, तो उनके साथ मरना इस जीवन से कहीं बेहतर होता।'

'अब्दुल, तुम्हारी चोट तुम्हारी गलती नहीं थी। जो भी हो, हम समय को पीछे नहीं लौटा सकते। अपने दोस्तों का शोक मनाने की बजाय, उनका प्रतिशोध लेने पर ध्यान लगाओ।'

अब्दुल ने हामी भरी और अपना चेहरा साफ़ किया, जैसे उससे उदासी को दूर कर रहा हो। 'तुम सही कह रहे हो...तुम हिरण की खाल उतारने का काम ख़त्म क्यों नहीं कर रहे? शायद हम थोड़ा मांस गाँव में अपने दोस्तों के लिए ले जाएँ और बदले में घर का बना बढ़िया खाना मिले?'

सुहेलदेव ने हामी भरी। 'मैं तुम्हें इसका एक चौथाई दूँगा। एक आदमी को साथ ले लो और जाओ।'

'हुज़ूर, हम पर रहम कीजिए,' बूढ़े ग्रामीण ने कहा, जिसके गालों पर आँसू लुढ़क रहे थे और उसने घोड़े पर सवार एक आदमी के पैर पकड़ रखे थे। 'अगर आप हमारा सारा अनाज ले जाएँगे, तो हम क्या खाएँगे? हम भूखे मर जाएँगे।'

तुर्क अफ़सर, सालिक खान ने रकाब से अपना पैर खींचा और उस बूढ़े आदमी के चेहरे पर निर्दयता से लात मारी, जिससे उसकी नाक से ख़ून बहने लगा और वो ज़मीन पर गिर गया।

'चुप रह, मूर्ख,' सालिक गुर्राया। 'तुम्हारे राजा का साफ़ आदेश है। हमारे गज़नी के महान सुलतान को उपहार दिया जाना है। और हर किसी को उसका हिस्सा चुकाना ही होगा।'

महमूद की सेना के कई तुर्कों ने उन भारतीय राज्यों में रहने की इच्छा जताई थी जिन्होंने गज़नी के सुलतान के आगे आत्मसमर्पण कर दिया था। तकनीकी रूप से वो स्थानीय भारतीय राज्यों के अफ़सर थे। लेकिन प्रभावी रूप से, वो इन इलाक़ों में महमूद के प्रतिनिधि के तौर पर काम करते थे, सैनिकों को आदेश देते थे, और सुनिश्चित करते थे कि गज़नवी निर्देशों का पालन हो। और, ये तुर्क निजी तौर पर भी लूटपाट करते रहते थे। दुनिया की सबसे समृद्ध भूमि, भारत की लूटपाट ज़्यादातर तुर्कों के लिए एक मौक़ा थी कि वो अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त सम्पत्ति जमा कर लें।

वो बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ अपने पैरों पर खड़ा हुआ। 'और क्या राजा भी हमारी तरह भूखे रहेंगे?'

'गुस्ताख मूर्ख,' सालिक अपनी तलवार निकालता हुआ गुर्राया। 'तुझे इसकी क़ीमत अपने सिर से चुकानी होगी।'

एक नौजवान आगे बढ़ा और सालिक के आगे झुक गया। 'हुज़ूर, उसे बख्श दीजिए! छोड़ दीजिए! मैं आपसे भीख माँगता हूँ...वैसे भी वो आधा पागल है...' उस नौजवान ने बूढ़े किसान को पीछे खींच लिया। 'बाबा, यहाँ से चलो। जब तक हम ज़िन्दा हैं, हमें खाने को कुछ ना कुछ मिल ही जाएगा।'

अफ़सर ने प्रशंसात्मक तरीक़े से सिर हिलाया। 'तुम समझदार हो। क्या है तुम्हारा नाम?'

'किशना, हुज़ूर,' नौजवान ने जवाब दिया, उसकी आँखें नीचे की ओर थीं।

'हम्म...ठीक है, किशना, इस मूर्ख बूढ़े को मेरी नज़रों से दूर कर दो। और समझा दो कि अपनी ज़बान क़ाबू में रखे, वरना मैं इसकी ज़बान खींच लूँगा।'

किशना जल्दी-जल्दी अपने पिता को थोड़ा खींचते हुए, थोड़ी मदद करते हुए वहाँ से ले जाने लगा। जब सालिक उन्हें जाते हुए देख रहा था, उसका सार्जेंट उसके पास आया। 'हम इनका सारा अनाज ले लें, फिर भी हमारा लक्ष्य पूरा नहीं होगा, हुज़ूर।'

'सत्यानाश! मेरी क़िस्मत ही ख़राब है जो मुझे ये इलाक़ा मिला है।' जब उसने चारों तरफ़ नज़रें घुमाईं, उसकी नज़र गाँव के मन्दिर पर पड़ी। 'मुझे यक़ीन है कि उसमें ज़रूर कुछ क़ीमती चीज़ें होंगी।'

सार्जेंट स्तब्ध रह गया। वो एक भारतीय था। 'आप मन्दिर लूटना चाहते हैं, हुज़ूर?'

सालिक ने अपने सार्जेंट को उदासीन नज़र से देखा, लेकिन उसके शब्दों में धमकी का भाव था। 'तुम्हें कोई शक है?'

'हुज़ूर...मैं...लेकिन क्या राजा इसकी अनुमति देंगे?'

'राजा को हर बात जानने की ज़रूरत नहीं है कि उनके राज्य के दूर-दराज़ के इलाक़े में क्या हो रहा है। वैसे भी, महान सुलतान महमूद ने भारत में मन्दिरों को

लूटने की परम्परा शुरू कर दी है। और अब वो राजा के अधिपति हैं, इसलिए राजा को कोई शिकायत नहीं होगी। हम सिर्फ़ परम्परा का पालन कर रहे हैं!' सालिक ये कहते हुए ज़ोर से हँस पड़ा।

सार्जेंट घबराया हुआ दिख रहा था लेकिन उसने अपना सिर झुका दिया। हमेशा की तरह, तुर्क के आगे समर्पण।

अंधेरा इसलिए नहीं जीतता कि वो शक्तिशाली है, वो जीतता है क्योंकि चिराग लड़ना छोड़ देते हैं।

वो बूढ़ा आदमी लगभग पागल ही हो रहा था, मदद के लिए पुकारते वक़्त उसकी आवाज़ कांप रही थी। 'कमीने मन्दिर को लूटने जा रहे हैं। क्या कोई उन्हें नहीं रोकेगा? क्या तुम लोग बस देखते रहोगे? कायरों!'

'बाबा, चुप हो जाओ! तुम ख़ुद को मरवाओगे। महादेव के लिए, यहाँ से चलो।' किशना भी रो रहा था, लेकिन वो अपने पिता को लगातार धक्का देते हुए मुख्य सड़क पर ले जा रहा था जो गाँव से बाहर जाती थी।

'क्या हो रहा है यहाँ?' अब्दुल ने पूछा, वो ये देखकर चौंक गया था कि क़रीब-क़रीब पूरा गाँव भाग रहा था। कुछ के चेहरे ख़ून से लथपथ थे या सूजे हुए थे, लेकिन ज़्यादातर डरे हुए दिख रहे थे, हालांकि उनको शारीरिक रूप से कोई चोट नहीं पहुँची थी।

किशना ने डरते-डरते ऊपर देखा, फिर अब्दुल को पहचानकर राहत की सांस ली। 'ये राजा के आदमी हैं...' उसने गाँव की तरफ़ देखते हुए कहा, उसके चेहरे पर डर जमा हुआ था। 'उनकी अगुवाई एक तुर्क सनकी कर रहा है। उन्होंने हमारे सामान लूट लिए हैं। और अब वो मन्दिर भी लूट रहे हैं।'

'राजकुमार के पास चलकर मदद माँगते हैं,' अब्दुल के साथी ने तुरन्त कहा।

किशना का पिता अचानक बोल पड़ा। 'तब तक काफ़ी देर हो जाएगी। कौन जानता है तब तक वो मन्दिर लूटना बन्द कर दें। क्या होगा अगर वो इसे बर्बाद कर दें? क्या होगा अगर वो यहाँ वैसा ही करें जैसा सोमनाथ जी में किया था?'

अब्दुल अपने घोड़े को मोड़ने ही वाला था। जैसे ही उसने बूढ़े के शब्द सुने, वो रुक गया।

'चलो, अब्दुल,' उसके साथी ने जल्दबाज़ी दिखाते हुए कहा।

अब्दुल ने इनकार कर दिया। 'तुम जाओ और मदद लेकर आओ। मैं मन्दिर की तरफ़ जा रहा हूँ।'

उसके साथी ने अपना हाथ अब्दुल की बाँह पर रखा, और धीमे से बोला, 'मेरी बात सुनो, अब्दुल...ये ख्याल गलत है...'

अब्दुल ने धीरे से उसका हाथ हटा दिया। 'नहीं, ये ख्याल गलत नहीं है... अल्लाह ने मुझे एक सही काम करने का छोटा सा मौक़ा दिया है। अब तुम जाओ।'

अब्दुल ने अपने घोड़े को मन्दिर की ओर दौड़ा दिया जबकि उसका साथी वापस चल दिया। कुछ ही मिनटों में, अब्दुल मन्दिर के पास पहुँच गया था। उसने थोड़ी दूरी से देखा कि कुछ आदमी मन्दिर की पेटियाँ बाहर ला रहे हैं जिनमें चढ़ावा रखा जाता था।

घने जंगल में पेड़ों की क़तार के पीछे छिपकर, अब्दुल चुपचाप घोड़े से उतरा और उसे पेड़ से बांध दिया। सुरक्षित दूरी पर। उसने अपना धनुष आगे खींचा और धीरे-धीरे मन्दिर की ओर बढ़ने लगा।

वो अब इतने क़रीब था कि सैनिकों की बात सुन सकता था। लेकिन, अंधेरे और पेड़ों की वजह से छिपा हुआ था।

'बुत और गहने भी ले आओ,' सालिक ने आदेश दिया।

अब्दुल ने चुपचाप एक तीर निकाला, धनुष पर उसे रखकर निशाना लगाया और छोड़ दिया।

एक अच्छे धनुर्धर को निशाना लगाने के लिए बहुत ज़्यादा समय नहीं लगता। तीर तेज़ी से एक सैनिक की छाती में जा धंसा। सैनिक वार की ताक़त से पीछे की तरफ़ फेंका गया, तीर उसके दिल में गहरा धंस गया था, और उसके हाथ में पकड़े गहने ज़मीन पर बिखर गए।

सैनिकों की तरफ़ से असमंजस और ग़ुस्से भरी चीख़ आने लगी।

'अपना बचाव करो!' सालिक चिल्लाया।

अब्दुल तेज़ी से दूसरी जगह पर चला गया। उस जगह से दूर जहाँ पर वो थोड़ी देर पहले था। उसने तुरन्त दूसरा तीर निकाला, धनुष पर रखा और छोड़ दिया। वो भी निशाने पर लगा और सालिक का एक और सैनिक नीचे गिर गया।

सालिक अब चीख़ने लगा था। 'यहाँ कई दुश्मन हैं! मैं निशाने पर हूँ! पास रहो! ढाल निकालो!'

सालिक एक निर्दयी आदमी था, लेकिन सैनिक शानदार था। उसने अपने सैनिकों को अच्छा प्रशिक्षण दिया था। उन्होंने तुरन्त ही एक मज़बूत बचाव रेखा तैयार कर ली। मन्दिर उनके पीछे था। सामने जंगल था। वो नीचे झुक गए। अपनी ढालों से अपना बचाव करते हुए।

अब्दुल जंगल में पेड़ों की क़तार के पीछे अलग-अलग जगहों पर दौड़ता रहा। अलग-अलग दिशाओं से तीर चलाने की कोशिश करता हुआ। कुछ निशाने पर लगे और सैनिक गिरे। लेकिन ज़्यादातर तीर रक्षक ढाल पर लगकर दूर चले गए।

सालिक को सन्देह हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है। तीरों के चलने के बीच में लगने वाला समय काफ़ी ज़्यादा है। अगर दुश्मन ज़्यादा होते तो तीर और तेज़ी से आते।

शायद दुश्मन उससे कम हैं जितना मैंने सोचा था।

सालिक ने अपने सैनिकों को स्थिर रहने का आदेश दिया। और तेज़ी से पीछे से, अंधेरे का फायदा उठाते हुए बाहर निकल गया।

कुछ ही मिनटों में वो जंगल में पेड़ों की क़तार के पीछे था। हाथ में तलवार थी। वो दुश्मन सैनिकों को ढूँढ़ने की कोशिश में था। वो सावधानी के साथ घुमावदार और लम्बा रास्ता ले रहा था ताकि दुश्मन के पीछे पहुँच सके।

शिकार अब बाज़ी पलटकर शिकारी बनना चाहता था।

छिपकर, सालिक रेंगता हुआ आगे बढ़ा, छोड़े जा रहे अन्तिम तीर की आवाज़ और हल्के क़दमों की आहट का पीछा करते हुए।

सालिक इस हरकत की तकनीक और सावधानी से प्रभावित हो गया था। *दुश्मन जो भी हों, वो अच्छी तरह प्रशिक्षित हैं।*

उसे एक हल्की आवाज़ सुनाई दी। इसे वो पहचान गया था। धनुष की डोरी खींचने की आवाज़। बस यहाँ से थोड़ी दूर आगे। सालिक आगे बढ़ा। धीरे-धीरे। छिपता हुआ।

उसकी आँखें अब अंधेरे की अभ्यस्त हो चुकी थीं। उसे एक इंसान की आकृति का अन्दाज़ा हो गया था।

ये क्या! सिर्फ़ एक आदमी! सिर्फ़ एक आदमी मेरी पूरी पलटन पर भारी पड़ रहा था!

जैसे ही एक और तीर के छूटने की आवाज़ सुनाई दी, सालिक तेज़ी से आगे बढ़ा। अब्दुल ने मन्दिर के सामने तैनात सालिक के सिपाहियों पर एक और तीर छोड़ा था। उसने ध्यान नहीं दिया कि सालिक उसके पीछे रेंगकर आ रहा था।

जब तक उसे इस बात का अहसास होता, तब तक देर हो चुकी थी। सालिक ने अपनी तलवार की मूठ से अब्दुल के सिर पर पीछे से ज़ोरदार वार किया। और अब्दुल बेहोश होकर गिर गया।

कोड़ा हवा में लहराया और अब्दुल की पीठ पर पड़ा। उसकी चमड़ी उधड़ गई और ख़ून आने लगा। उसने अपने होंठ ज़ोर से काटे ताकि चीख़ ना निकले, फिर भी कराह की आवाज़ निकलने से अपने को रोक ना सका। उसके घुटने झूल रहे थे, और वो ज़मीन पर गिर जाता अगर उसके हाथ एक पेड़ की टहनी से रस्सी के सहारे बांधे ना गए होते।

अब्दुल को सालिक के अस्थायी पड़ाव पर लाया गया था। गाँव के भंडार-घर को सिपाहियों की बैरक के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा था। और इसके पास में गाँव के मुखिया का घर था जिस पर सालिक ने अपने निजी इस्तेमाल के लिए क़ब्ज़ा कर रखा था। गाँव में सालिक और राजा के सैनिकों के अलावा कोई नहीं था। कुछ घंटों पहले सारे गाँव वाले भाग गए थे। अब्दुल को अस्थायी बैरक के सामने खुले चौराहे पर प्रताड़ित किया जा रहा था।

'च्च,च्च,' सालिक ने मज़ाक़ उड़ाते हुए आवाज़ निकाली। हाथ में शराब का प्याला लेकर उस तुर्क अफ़सर ने टहलते हुए अब्दुल की पीठ पर नज़र डाली। पीठ

ख़ून से लथपथ थी, और कई जगहों पर खुले हुए घाव के निशान थे जहाँ पर कोड़े ने चमड़ी को उधेड़ दिया था।

'कितना दर्द भरा नज़ारा है,' सालिक ने नक़ली फ़िक्र दिखाते हुए कहा। उसने शराब का घूँट लिया, और मज़ाक़ उड़ाते हुए क़रीब से अब्दुल की पीठ देखी। फिर, अचानक उसने अब्दुल की घायल पीठ पर शराब थूक दी।

चौंककर अब्दुल, दर्द से तड़पता आगे झुक गया, जब शराब ने उसकी घायल पीठ को झुलसाया। 'या अल्लाह!' वो चिल्ला पड़ा।

सालिक पल भर के लिए जम सा गया। वो स्तब्ध था। वो जल्दी से अब्दुल के आगे आया, उसके बालों को हाथ में पकड़ा और सिर को उठाकर उसकी आँखों में देखते हुए पूछा। 'तुम मुसलमान हो?!'

अब्दुल ने जवाब नहीं दिया। सालिक की ओर वो ग़ुस्से में घूर रहा था, उसके शरीर के हर रोम से ग़ुस्सा टपक रहा था।

'मन्दिर को बचाने की कोशिश में थे?! कैसे मुसलमान हो तुम?!'

अब्दुल ने नफ़रत भरी नज़रों से उसे घूरा। 'तुमसे...कहीं बेहतर...'

'मेरा विरोध करने की हिम्मत कैसे हुई तुम्हारी?!' सालिक गरजा। 'तुम एक मुसलमान हो!'

'मैं पहले...एक भारतीय हूँ...'

सालिक ने अब्दुल को ज़ोरदार थप्पड़ लगाया। 'तुम मेरे जैसे मुसलमान के बजाय काफ़िर हिन्दुओं के लिए लड़ते हो?!'

'मैं अपने भारतीय भाइयों के साथ...एक तुर्क राक्षस के ख़िलाफ़ लड़ता हूँ...'

सालिक ने अब्दुल को ज़ोर से मारा और उसकी नाक तोड़ दी। और वो तब तक मारता रहा जब तक कि वो ख़ुद थक ना गया।

और फिर उसने अब्दुल को थोड़ा और मारा। वो तभी रुका जब अब्दुल रस्सी पर बेहोश झूल गया।

सालिक अपने सिपाहियों की ओर मुड़ा। 'इस कमीने को यहाँ सारी रात लटकने दो। कल मैं देखूँगा कि इसे कैसे मारा जाए।'

पहरेदार ने अपना शरीर सीधा किया और जम्हाई लेते हुए अपने साथियों की ओर देखा, जो पहले ही अपनी जगह से हट चुके थे और ज़मीन पर लेटकर खर्राटे भर रहे थे। दस्ते में सबसे कम उम्र का होने की वजह से उसे जिम्मा दिया गया था कि वो सारी रात जागकर कैदी पर नज़र रखे।

अब्दुल अभी भी वहाँ लटका हुआ था। स्थिर।

क्या वो मर चुका है?

सिपाही ने अपना सिर इनकार में हिलाया और अपने कंधे उचकाए, मन में ही अपने सवाल का जवाब दिया। *मैं क्यों परवाह करूँ?*

उसने थोड़ी दूर बने अस्थायी बैरकों पर नज़र डाली, जहाँ उसके ज़्यादातर साथी सिपाही थे।

मैं अभी सो सकता हूँ।

ये तो वक़्त की बर्बादी है। फौज की छावनी पर हमला करने की हिम्मत किसकी होगी? उन बेचारे गाँव वालों की, जो अपने घरों तक की रक्षा नहीं कर सके?

आसपास नज़र दौड़ाकर ये पक्का करते हुए कि उसे कोई देख तो नहीं रहा था, वो ज़मीन पर बैठ गया। पेड़ के सहारे अपनी पीठ को टिकाकर उसने अपनी टांगें फैला लीं और ख़ुशी भरी सांस ली। कुछ मिनटों में ही वो झपकी लेने लगा। उसने उस आकृति की तरफ़ ध्यान नहीं दिया जो कटार खींचे हुए, चुपचाप उसकी तरफ़ रेंग रही थी। ना ही उसे उस हाथ का अहसास हुआ जो उसके काफ़ी पास आ चुका था। नींद से उसकी बेहोशी तभी टूटी जब उसके मुँह को हाथ से दबाकर बन्द कर दिया गया। लेकिन वो अभी भी पूरी तरह होश में नहीं था। जब कटार उसके गले को रेत रही थी, वो तब भी नींद में था। और उसके बाद वो कभी भी पूरी तरह जग नहीं पाया।

सालिक ने नींद में सांस खींची। किसी चीज़ के जलने की गंध उसे समझ में आ गई और वो झटके से उठा। उसने अपने नौकरों को पुकारा, अपनी तलवार निकाली और बाहर दौड़ा।

जैसे ही वो क़ब्ज़ा किए हुए घर से बाहर निकला, वो सदमे से जम गया। अस्थायी बैरकों के दरवाज़े बाहर से बन्द थे, जिनमें उसके आदमी सो रहे थे, और पूरी इमारत जल रही थी। चूँकि वो इमारत मूल रूप से भंडार-घर था, उसमें कोई खिड़की नहीं थी। उसे अब अन्दर से तड़प भरी चीख़ें सुनाई दे रही थीं, जहाँ उसके सैनिक ज़िन्दा जल रहे थे। उनमें से कुछ बन्द दरवाज़े पर धक्का दे रहे थे और उसे तोड़ने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन सालिक का दिल डूब गया जब उसने देखा कि कुछ हमलावर दरवाज़ों के सामने धनुष लेकर तैयार खड़े थे, कि अगर उसके सैनिक बाहर आएँ तो उन्हें काट डाला जाए।

चौराहे पर क़रीब सौ की तादाद में भारतीय थे। उसने उन सैनिकों की लाशें भी देखीं जिन्हें उसने रात में पहेरेदारी सौंपी थी।

ये कमीने कहाँ से आए?

सालिक ये समझ नहीं पाया कि चौराहे पर मौजूद ज़्यादातर हथियारबन्द भारतीय वही गाँव वाले थे जो कुछ समय पहले भाग गए थे। वो वापस आ गए थे। उन्हें लड़ने के लिए उकसाया गया था। एक ऐसे नेता के द्वारा जिसके बारे में उसने कभी नहीं सुना था।

सालिक ने चारों तरफ़ देखा। उसके साथ केवल चार आदमी थे। उसने फिर से अस्थायी बैरकों की तरफ़ देखा। उसके सैनिकों की तड़प भरी चीख़ें रात में गूँज

रही थीं। उसने तुरन्त अपने चारों साथियों से फुसफुसाकर कहा, 'कोई उम्मीद नहीं है। हम उनकी मदद नहीं कर सकते। हमें यहाँ से निकलना चाहिए। दो मेरे आगे रहो। दो पीछे। जल्दी चलो!'

वे लोग तेज़ी से बाईं ओर दौड़ने लगे। वो पेड़ों की ओर दौड़ रहे थे जो कुछ सौ मीटर ही दूर थे। एक बार जब वो जंगल में पेड़ों की क़तार के पीछे चले जाएँगे, तो आसानी से बच निकलेंगे। कम से कम सालिक ने यही सोचा था।

लेकिन उसकी बदक़िस्मती थी कि आग की ऊँची लपटें सभी दिशाओं में उजाला कर रही थीं। मैदान के कई हिस्सों में रात का अंधकार ग़ायब हो चुका था।

और उससे भी बड़ी बदक़िस्मती ये थी कि सालिक एक निर्दयी शत्रु के विरुद्ध था। ऐसा शत्रु जो गुरिल्ला युद्ध में माहिर था।

वो और उसके सैनिक सीधे वहाँ पहुँचे जहाँ चालीस लोग उनका इन्तज़ार कर रहे थे।

इससे पहले कि सालिक समझ पाता कि क्या हो रहा है, उसके आगे के दोनों सैनिक काट डाले गए। उसने सभी दिशाओं में अपनी तलवार घुमानी शुरू की और दुश्मनों को दूर रखने की कोशिश की। उसे अपने पीछे से तड़प भरी चीख़ें सुनाई दीं। उसे ये समझने के लिए मुड़कर देखने की ज़रूरत नहीं थी कि उसके पीछे के सैनिकों को भी मार डाला गया है।

वो अकेला था। वो दुश्मन सैनिकों को दूर रखने के लिए अपनी तलवार लहराता रहा। और चीख़ता रहा। 'मैं इतनी आसानी से नहीं मरूँगा! मैं कम से कम तुममें से दस लोगों को मारकर मरूँगा! आओ!'

लेकिन वो लोग क़रीब नहीं आए। उन्होंने दूरी बनाए रखी। हमले का दिखावा करते और फिर अन्तिम मिनट में पीछे हट जाते। सालिक तलवार लहराता रहा। वो सोच रहा था कि उसने दुश्मनों को दूर रखा है। वो सोच रहा था कि भारतीय कायरों की तरह वैसा ही बर्ताव कर रहे हैं जैसा वो हमेशा से मानता था।

लेकिन सच्चाई उसे थोड़ी देर बाद समझ आई।

वो लोग उसके साथ खेल रहे थे। उसे छेड़ रहे थे। जैसे चारों तरफ़ से घिरे हुए जानवर के साथ निर्मम शिकारी करते हैं।

अचानक, पीछे से किसी ने उसकी दाहिनी जांघ पर लम्बी तलवार से निर्दयतापूर्वक हमला किया। सालिक दर्द से चिल्लाया क्योंकि तलवार ने घुटने को पूरी तरह से काट डाला था, और उसकी टांग को बेकार कर दिया था। ख़ून की बाढ़ आ गई। वो मुँह के बल धूल में गिर पड़ा।

उसे अपने आसपास के लोगों की हँसी सुनाई दी।

जो उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे।

जो भद्दे तरीक़े से चिल्ला रहे थे।

सालिक ज़मीन पर लेटे-लेटे ही पीठ के बल पलटा। अपनी तलवार चारों तरफ़ घुमाते हुए। लेकिन उसके दुश्मनों ने फिर से दूरी बना ली थी।

सालिक ग़ुस्से में चीख़ा। 'मुझे मार डालो, काफ़िरों!'

वो अपनी तलवार घुमाता रहा, लेकिन वो केवल हवा को ही काट पा रही थी। उसके अन्दर क्रोध और हताशा भरती जा रही थी। उस पर एक पत्थर निशाना लगाकर फेंका गया जो सीधे उसकी दाहिनी कलाई पर लगा। तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर गई। एक भारतीय तुरन्त आगे बढ़ा, सालिक की तलवार उठाई और धीरे-धीरे लौटने लगा। वो लगातार हँसता जा रहा था।

'मुझे मार डालो!' सालिक चीख़ा। 'गन्दे कायरों! मुझे मार डालो!'

'सही समय आने पर...'

सालिक इस आवाज़ के लहजे से समझ गया था कि ये भारतीयों के नेता की आवाज़ थी। उस तुर्क ने अपनी गर्दन घुमाई और देखा कि अंधेरे में से एक लम्बा, दुबला-पतला आदमी निकल रहा है। लपटों की रोशनी में नज़ारा साफ़ होता गया। भारतीय नेता की त्वचा सांवली थी। लम्बे बालों का जूड़ा बना हुआ था। दाढ़ी हल्की थी। उसके शरीर पर चोट के निशान थे, जिसमें से कई ताजा थे और युद्ध के गर्व भरे आभूषण थे। उसकी चाल एक चीते के समान थी। करिश्माई। आकर्षक। डरावनी।

सालिक को महसूस हुआ कि उसका दिल बैठ रहा है। उसे ऐसा लगा कि ये मौत आसान नहीं होगी, कि उसे काफ़ी तकलीफ़ सहनी होगी, कि उसे अन्तिम क्षण तक ज़िन्दा रखा जाएगा। उसने अपने दुश्मन को ललकारने की कोशिश की। 'मैंने तुम्हारे मन्दिर के बुतों को तोड़ा है। अगर तुममें हिम्मत है तो मुझे मार डालो! अपने कमज़ोर दयनीय देवताओं का बदला लो!'

सालिक को एक हल्की हँसी सुनाई दी। उसका दिल थोड़ा और डूब गया। ये कोई साधारण शत्रु नहीं था। वो उन भारतीयों की तरह मूर्ख नहीं था जिनसे सालिक अब तक मिला था। क्योंकि भारतीयों को उनके भगवान और अंधविश्वास के नाम पर ललकारना काफ़ी आसान था। वो तुरन्त बदला लेने में यक़ीन रखते थे, बजाय इसके कि योजना बनाकर प्रतिशोध लें।

लेकिन ये दुश्मन कुछ अलग था। ये भारतीय नेता अलग था।

'ओह, मैं तुम्हें मारूँगा। लेकिन क्रोध में नहीं। मैं ये काम धीरे-धीरे करूँगा। मैं इसे आराम से करूँगा। मैं ये सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हारी आत्मा को ये मौत याद रहे। और ये दोबारा भारत आने का दुस्साहस नहीं करेगी।'

सालिक सिर्फ सोच सकता था कि उसका क्या होने वाला है। उसकी आत्मा का क्या होने वाला है। वो अपना पेशाब निकलने से रोक नहीं सका। पहली बार युद्ध में उसके साथ ऐसा हुआ था।

और तो और, इस पर उस भारतीय नेता का ध्यान चला गया। उसे वो हल्की, क्रूर हँसी फिर सुनाई दी।

'हमने तो अभी कोई शुरुआत भी नहीं की...और देखो तुम्हारा हाल...'

सालिक ने देखा कि वो नेता अपने अनुयायियों की तरफ़ मुड़ा। उसे नेता की तेज़ और साफ़ आवाज़ सुनाई पड़ी।

'मैंने तुम लोगों को क्या कहा था? ये तुर्क कायर हैं। सभी दंगाइयों की तरह ये कायर हैं। हमें उन्हें भारत की तरफ़ बुरी नज़र डालने के लिए सबक सिखाना होगा।

अगर ये भारत पर हमला करने की सोचें भी तो हमें उनके कपड़ों में उनका पेशाब निकाल देना होगा।'

सालिक को अपने आसपास के भारतीयों की हँसी सुनाई दी। उसने किसी भारतीय को इस लहजे में तुर्क से बातचीत करते पहले कभी नहीं सुना था। वो वापस नेता की ओर मुड़ा और उसे देखकर उसकी हड्डियाँ तक कांप गईं।

'अपनी आत्मा को मेरा नाम अच्छे से याद करा दो ताकि जब भी ये मेरा नाम सुने तो डर से कांप जाए।'

सालिक ने शर्म से अपने शरीर को पीछे खींचने की कोशिश की। भारतीय नेता ने उसकी छाती पर इतनी ज़ोर से लात मारी कि सांस रुक गई।

'मेरा नाम याद रखना। याद रखना श्रावस्ती का सुहेलदेव।'

अब्दुल ने अपनी आँखें खोलीं। उसके शरीर का हर हिस्सा दर्द कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी हर कोशिका को एक चक्रवात में फेंक दिया गया हो, जिसमें वो एक युग तक चोट खाती रही, और फिर हर कोशिका की एक तहस-नहस शरीर में सिलाई कर दी गई हो।

उसके कानों में चिर-परिचित आवाज़ आई। 'तुम बहुत जल्दी अच्छे हो जाओगे।'

अब्दुल ने उठने की कोशिश की। 'सुहेल...'

सुहेलदेव ने उसे बिस्तर पर लेटे रहने के लिए धीमे से धक्का दिया। 'पीठ के बल लेटे रहो।'

'कितना लम्बा समय...मुझे...'

'क़रीब-क़रीब एक पूरा दिन।'

सुहेलदेव और उसके आदमी अभी भी गाँव में थे। और वो वहीं रहना चाहते थे जब तक अब्दुल पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाए। गाँव वाले लड़ाई के अवशेषों को साफ़ करने में लगे थे। अपने घरों की मरम्मत कर रहे थे। गाँव के मन्दिर की पुनर्स्थापना कर रहे थे। राजा के आदमियों की लाशों के हर निशान को साफ़ कर रहे थे। उन्हें दिखावा करना था कि सालिक और उसके सैनिक लूट के माल के साथ गाँव से चले गए थे। और उन्हें पता नहीं था कि उसके बाद सालिक कहाँ गया।

'क्या...मन्दिर...सुरक्षित है?' अब्दुल ने पूछा, पिछली रात सालिक और उसके आदमियों की निर्ममतापूर्वक पिटाई से वो अभी भी कमज़ोर था, लेकिन उसका दिमाग़ सतर्क था। स्थानीय वैद्य कुशल था।

सुहेलदेव ने सवाल को नज़रअन्दाज़ कर दिया। उसने दृढ़ता से कहा। 'ऐसा कभी दोबारा मत करना।'

'सुहेलदेव...'

'मुझे मालूम है तुम क्या करने की कोशिश कर रहे थे। तुम्हें कुछ भी साबित करने की ज़रुरत नहीं है। ऐसा कभी दोबारा मत करना।'

'लेकिन वो तुर्क...मन्दिर की मूर्तियाँ...'

'हम नई मूर्तियाँ बनाएँगे।'

अब्दुल चुप रहा।

सुहेलदेव ने बात जारी रखी। 'हमारी आस्था हमारी शक्ति है। लेकिन तुर्कों ने हमारी आस्था को हमारी कमज़ोरी में बदल दिया है। वो जानते हैं कि हम अपनी मूर्तियों को बचाने के लिए किसी भी हद तक जाएँगे, यहाँ तक कि अपने प्राण भी न्योछावर कर देंगे। और वो इसका इस्तेमाल हम पर दबाव बनाने के लिए करते हैं। हमारे संकल्प को तोड़ने के लिए करते हैं। हमें आसानी से हराने के लिए करते हैं।'

'लेकिन...'

'मेरी बात ध्यान से सुनो। यह मेरी आस्था है। मैं जानता हूँ...भगवान हर जगह हैं। तारों में और आसमान में, पेड़ों में, नदियों में, हवा में, हम सब में। हमारी आस्था ही है जो ईश्वर को एक मूर्ति में स्थापित करती है। अगर हम सभी मर जाएँगे, तो हमारी आस्था भी मर जाएगी। अगर हमारी आस्था मर जाएगी, तो फिर मूर्तियों की पूजा कौन करेगा? याद रखो, नई मूर्तियाँ हमेशा बनाई जा सकती हैं और उनमें प्राण प्रतिष्ठा की जा सकती है। लेकिन अगर हमारी आस्था मर जाती है तो फिर सब कुछ ख़त्म हो जाता है। और हमारी आस्था केवल हमारे धड़कते हुए दिलों में रहती है। इसलिए अगर एक मूर्ति और हमारी जान में से एक को चुनने का विकल्प हो, तो मैं हमेशा ही अपनी जान को चुनूँगा।'

अब्दुल दूर देखने लगा। उसके गाल पर आँसू की एक बूँद लुढ़क आई। 'तुम...नहीं समझते।'

अब चुप रहने की बारी सुहेलदेव की थी। उसने अब्दुल को बोलने दिया।

अब्दुल के आँसू तेज़ी से बहने लगे। 'मैं दोषी...महसूस करता हूँ...मुझे कुछ करना था...मुझे लड़ना था...'

'तुम्हें किसी चीज़ के लिए दोषी महसूस करने की ज़रूरत नहीं है। तुर्कों या उनके अपराधों से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है।'

अब्दुल ने सुहेलदेव की तरफ़ पीठ कर ली।

सुहेलदेव की आवाज़ थोड़ी सी कांपी, उसके मज़बूत जज़्बात भी फूटने लगे थे। 'तुम उनमें से नहीं हो। तुम हममें से हो।'

अब्दुल के आँसू और तेज़ी से बहने लगे।

सुहेलदेव ने अब्दुल के हाथ को मज़बूती से पकड़ लिया। 'तुम हममें से एक हो। मैं तुम पर पूरा भरोसा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी तरफ़ से लड़ो। लेकिन एक युद्ध लड़ने का लक्ष्य जीतना होता है, शहीद होना नहीं।'

अब्दुल चुप रहा।

'याद है मैंने तुम्हें पहले क्या कहा था। मैंने बाबा से क्या सीखा था। गज़नी के दूत पर हमले के दिन मैंने क्या सीखा था। ग़ुस्से में कोई प्रतिशोध नहीं। हम ठंडे मन से, निर्ममतापूर्वक प्रतिशोध लेंगे।'

अब्दुल ने सुहेलदेव की तरफ़ आदर भरी नज़रों से देखा। अभी तक उसने राजकुमार के प्रति आदर केवल उसके जन्म की वजह से दिखाया था। लेकिन अब,

वो उसका आदर उसकी उभरती शख्सियत की वजह से कर रहा था। ऐसा नेता जो वो बन रहा था।

अब्दुल फुसफुसाया। 'हाँ, राजन।'

सुहेलदेव ने मुस्कुराकर अब्दुल के कंधे को छुआ। 'मुझे सुहेलदेव ही कहो।'

अब्दुल ने इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं, राजन।'

अध्याय 5

पेशावर, 1027 ईसवी

धनुर्धर ने अपने बाएँ हाथ से धनुष को थामा। दाहिने हाथ से वो धीरे-धीरे उसकी डोरी को तब तक खींचता रहा जब तक कि वो उसके होंठों तक नहीं पहुँच गई। उसने अपनी दाहिनी कोहनी ऊँची और ज़मीन के समानान्तर रखी, जिससे कि वो तीर की सीध में हो गई। इससे पक्का हो गया कि दबाव उसकी मज़बूत पीठ और कंधे की मांसपेशियों पर आएगा, उसकी कमज़ोर कोहनी पर नहीं। फिर उसने डोरी को थोड़ा और खींचकर तीर छोड़ दिया।

उसका निशाना एक नौजवान था जिसने बौद्ध संन्यासी की पोशाक पहन रखी थी। उसकी छाती पर बांस का बना कवच था जो अब काफ़ी जीर्ण-शीर्ण दिख रहा था। उसने अपने दाहिने हाथ में एक दंड पकड़ रखा था। उसका शरीर छोटा और दुबला-पतला था लेकिन मांसपेशियाँ गठी हुई थीं। उसके शरीर के किसी भी हिस्से पर अतिरिक्त चर्बी नहीं थी।

संन्यासी एक मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा रहा जब वो तीर उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। फिर लगभग अन्तिम क्षण में, उसके हाथों ने हरकत की। दंड तीर से टकराया और तीर एक तरफ़ घूमकर एक पथरीली दीवार से टकरा गया।

ऊपर से हर्षध्वनि गूँज उठी। कई नए संन्यासी, जिनमें से ज़्यादातर बच्चों से कुछ ही ज़्यादा बड़े थे, एक सुरक्षित ऊँची जगह से इस दृश्य को देख रहे थे, वो ऊँची चट्टानों पर बैठे थे जिन्होंने रेत के वृत्ताकार अखाड़े को चारों तरफ़ से घेर रखा था। करतब दिखा रहे दोनों लड़कों ने ऊपर देखा और मुस्कुरा दिए। लेकिन उनकी मुस्कुराहट तुरन्त ग़ायब हो गई जब उन्हें एक सख्त आवाज़ सुनाई दी।

'अश्वघोष! संघमणि! तुम्हें एक घंटे पहले मठ में होना चाहिए था। अश्वघोष, महन्त तुमसे मिलना चाहते हैं।'

दोनों लड़के अचानक ऐसे दिखने लगे जैसे छोटे बच्चों को शरारत करते किसी ने पकड़ लिया हो। उन्होंने जल्दी-जल्दी अपने सामान एक छोटे से अहाते में रखे, प्रशिक्षण अखाड़े से बाहर निकले और सीधी ढाल वाली पहाड़ी पर दौड़ पड़े।

पहाड़ी की बगल में आड़ी-तिरछी सीढ़ियाँ काटी गई थीं, और ये क़रीब सौ सीढ़ियाँ थीं। ये एक मुश्किल चढ़ाई थी, लेकिन जब वो ऊपर मुख्य मठ परिसर के लकड़ी के दरवाज़े तक पहुँचे, थोड़ी देर तक सांस फूलने के अलावा दोनों में से किसी के चेहरे पर थकान के कोई निशान नहीं थे।

दोनों जल्दी-जल्दी परिसर में घुसे, जो उनकी किशोरावस्था के दौरान घर और विद्यालय दोनों था। अश्वघोष अक्सर सोचता था कि वो तो पूरे इलाक़े को आँख पर पट्टी बांधकर सिर्फ़ स्पर्श के जरिए पहचान सकता है। उसे ये याद तक नहीं था कि वो कहीं और रहा हो।

मठ आयत के भीतर आयत के समान बनाया गया था। विद्यार्थियों के शयन कक्ष बाहरी आयत में थे, साथ ही भंडार घर, अन्न-भंडार और तीर्थयात्रियों के लिए कमरे भी। चार रास्ते अन्दरुनी आयत की ओर ले जाते थे, जहाँ शिक्षकों के कमरे, अध्ययन कक्ष, भोजन कक्ष और पुस्तकालय थे।

परिसर में काफ़ी जगह थी और ये साफ़-सुथरे ढंग से बना था, लेकिन इसका वास्तुशिल्प साधारण था। भवन ईंटों के बने थे और ज़्यादातर मिट्टी के रंग के थे—परिसर का डिज़ाइन उपयोगिता के आधार पर किया गया था, ना कि खूबसूरत दिखने के लिए। एकमात्र अपवाद था अन्दरुनी आयत के प्रांगण में, जहाँ एक प्रार्थना कक्ष और सफेद गुम्बद वाला एक भव्य स्तूप था। पूरा परिसर पेशावर, जिसे एक समय पुरुषपुर कहा जाता था, के चहल-पहल भरे शहर से क़रीब पचास किलोमीटर दूर स्थित था।

'महन्त कहाँ हैं?' अश्वघोष ने एक नौजवान संन्यासी से पूछा।

'प्रार्थना कक्ष में,' उसे बताया गया।

अश्वघोष ने बुदबुदाते हुए उसे धन्यवाद दिया और प्रार्थना कक्ष की तरफ़ तेज़ी से चल दिया। अश्वघोष ने लकड़ी के दरवाज़ों पर यथासम्भव हल्के हाथों से दस्तक दी, इस उम्मीद में कि महन्त प्रार्थना में लीन होंगे और आवाज़ सुन नहीं सकेंगे।

'अन्दर आओ,' महन्त ने प्रसन्नतापूर्वक पुकारा।

अश्वघोष ने खेदपूर्वक ठंडी सांस ली और कक्ष में प्रवेश किया। तीन मंज़िला, ये परिसर का सबसे ऊँचा भवन था। इसमें पद्मासन मुद्रा में बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा दूर कोने में स्थित थी, जो क़रीब दो मंज़िल ऊँची रही होगी। दीवारें बुद्ध के जीवन पर आधारित विविध दृश्यों को चित्रित करते विस्तृत, रंगीन भित्ति-चित्रों से भरी थीं। अश्वघोष जितनी बार भी इस कक्ष में प्रवेश करता था, प्रतिमा की भव्यता और भित्ति-चित्रों की सुन्दरता से अभिभूत रह जाता था।

महन्त एक प्रसिद्ध दार्शनिक और शिक्षक थे और उनका नाम था चन्द्रकीर्ति। वो प्रतिमा के सामने एक दरी पर बैठे थे। उन्होंने अश्वघोष को प्रतीक्षा करने का संकेत किया, फिर अपनी प्रार्थना दोबारा शुरु की। थोड़ी देर बाद उन्होंने हाथ जोड़कर प्रतिमा के सामने झुककर नमन किया। फिर वो अश्वघोष की ओर मुड़े, जो सम्मानपूर्वक प्रवेश द्वार के नज़दीक खड़ा था।

'यहाँ आओ, बच्चे,' उन्होंने अपने पास के स्थान को थपथपाते हुए कहा, 'मेरे साथ बैठो।'

चन्द्रकीर्ति की आयु बता पाना कठिन था। उनका सिर मुँडा था, चेहरा गुलाबी और गोल और डील-डौल तगड़ा था। उनके चेहरे पर झुर्रियाँ तो नहीं थीं, लेकिन होंठों के पास की लकीरें संकेत देती थीं कि वो कभी-कभार मज़ाक़ करने से नहीं चूकते थे। लेकिन अभी जब वो अश्वघोष की तरफ़ देख रहे थे तब उनके होंठों पर मुस्कुराहट नहीं थी।

अश्वघोष महन्त के पास गया, झुककर प्रणाम किया और उनके सामने पालथी मारकर बैठ गया। 'आप मुझसे मिलना चाहते थे, गुरुजी?'

'हाँ, अश्वघोष,' चन्द्रकीर्ति ने कहा। 'तुम्हारे शिक्षक तुम्हारे बारे में चिन्तित हैं। तुम हमेशा से हमारे अच्छे विद्यार्थियों में रहे हो। लेकिन मैंने सुना है कि तुम्हारा ध्यान युद्ध कला-कौशल में अधिक लगने लगा है, यहाँ तक कि तब भी, जब तुम कक्षा में रहते हो।'

'मुझे क्षमा करें, गुरुजी। बात बस इतनी है...'

'बात बस क्या है?'

'बात बस इतनी है कि मुझे वो पसन्द आता है...और आप भी तो कहते हैं कि हमें स्वधर्म का पालन करना चाहिए? क्या ये *मेरा स्वधर्म* नहीं है कि मैं युद्ध कला सीखूँ? मठ की भलाई के लिए?'

'ये कौशल केवल आत्मरक्षा के लिए हैं, अश्वघोष। तुम्हें यह बात बार-बार बताई जा चुकी है।'

'मैं जानता हूँ, गुरुजी, लेकिन...'

'लेकिन क्या?'

'आप इस प्रश्न से नाराज़ तो नहीं होंगे ना, गुरुजी?'

'मैं कभी नाराज़ नहीं होता।'

अश्वघोष ने थोड़ा साहस जुटाया। महन्त से कुछ ऐसा कहने के लिए जो उसने पहले कभी नहीं कहा था। 'क्या अपनी मातृभूमि की रक्षा करना आत्मरक्षा का अंग नहीं है? हम इन कौशल का अभ्यास करते हैं लेकिन कभी उपयोग नहीं करते, भले ही हमारी भूमि निर्दयी विदेशी आक्रमणकारियों के हाथों टुकड़े-टुकड़े होती रहे।'

चन्द्रकीर्ति ने ठंडी सांस ली और इनकार की मुद्रा में अपना सिर हिलाया। 'तुम बाहरी दुनिया के बारे में बहुत ज़्यादा सोचते हो। एक संन्यासी के लिए यह अच्छा नहीं है।'

'लेकिन गुरुजी, क्या यह स्वार्थ नहीं है कि हम बाहरी दुनिया से ख़ुद को काट लें और एक अच्छा जीवन जीने की कोशिश करें, जबकि हमारे चारों तरफ़ बुराई फैली है?'

'और उस बुराई से लड़ने के लिए क्या करना चाहिए जिसकी तुम बात कर रहे हो? हिंसा से? मार-काट से?'

अश्वघोष रुका। वो जानता था कि महन्त उसके उत्तर से प्रसन्न नहीं होंगे, लेकिन फिर भी उसने उत्तर दिया, 'अगर ज़रूरत पड़े तो।'

'हिंसा किसी चीज़ का समाधान नहीं है, अश्वघोष। इससे सिर्फ क्रिया-प्रतिक्रिया की शृंखला जन्म लेती है जो सभी को नष्ट कर देती है। प्रतिशोध की

इच्छा एक अग्नि है जो शिकार और शिकारी दोनों को निगल लेती है। तुम घृणा को अधिक घृणा से, या क्रोध को अधिक क्रोध से नहीं जीत सकते। अपने शत्रु को जीतने का एकमात्र रास्ता प्रेम और क्षमा है। अगर वो तुम्हारे एक गाल पर प्रहार करे, तो उसके सामने दूसरा गाल कर दो।'

'क्षमा करें गुरुजी, लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि लोग अक्सर शान्ति के प्रति प्रेम को कमज़ोरी मान लेते हैं। वो प्रेम की बात करने वालों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं और उनके प्रति आक्रामक रहते हैं। अगर मैं दूसरा गाल आगे कर दूँ और कोई मुझ पर दोबारा प्रहार करे, तो फिर मुझे क्या करना चाहिए?'

चन्द्रकीर्ति ख़ामोश रहे। उदासीन।

'मुझे क्षमा करें, गुरुजी,' अश्वघोष ने अपने हाथ जोड़कर पश्चाताप भरे स्वर में कहा। 'मैं कुछ ज़्यादा ही बोल गया।'

चन्द्रकीर्ति ने आगे बढ़कर अश्वघोष के कंधे पर हल्के से थपकी दी। 'मेरे बच्चे, तुम यहाँ एक अनाथ की तरह आए थे, जब तुम आए थे तो इतने छोटे थे कि बमुश्किल चल सकते थे। हर साल हमारे साथ कई दूसरे छोटे बच्चे जुड़ते हैं। उनमें से ज़्यादातर यहाँ के जीवन में ढल जाते हैं। लेकिन मुझे आशंका है कि बुद्ध का रास्ता तुम्हारे लिए नहीं है। शायद तुम बाहरी दुनिया के लिए बने हो।'

'ऐसा मत कहिए, गुरुजी। यह मठ एकमात्र घर है जिसे मैंने जाना है। कृपया मुझसे नाराज़ ना हों।'

घंटे की तेज़ आवाज़ गूँजी। संन्यासियों का दिन काफ़ी हद तक घंटे बजने से तय समय के आधार पर चलता था। महन्त हल्के से मुस्कुराए। 'मुझे अपने कर्तव्यों के लिए वापस जाना होगा।' जब वो उठे, तो उन्होंने अश्वघोष के सिर पर हल्की सी थपकी दी। 'बेटे, मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम एक बात पर विचार करो। क्या तुम सचमुच बुराई से लड़ना चाहते हो? या फिर तुम हिंसा में उतरने के लिए एक भरोसेमन्द बहाना ढूँढ़ रहे हो? उस मार्ग पर जाना आसान है, लेकिन वहाँ से लौटना बहुत मुश्किल।'

चन्द्रकीर्ति बाहर चल दिए, और अश्वघोष को गहरी सोच में छोड़ गए।

जब महन्त गलियारे में टहलते हुए जा रहे थे, उनके मस्तिष्क में एक पुरानी याद ताज़ा हो आई। वो रुक गए और अपनी आँखें पल भर के लिए बन्द कर लीं। उनके कानों में वो आवाज़ बिल्कुल साफ़ गूँज रही थी। आज भी। इतने वर्षों के बाद भी।

यह आवाज़ एक घबराई हुई महिला की थी। *गुरुजी, कृपया करके इसे अपने मठ में स्थान दे दें! मैं आपसे गुज़ारिश करती हूँ! वो बाहरी दुनिया में नहीं रह सकेगा!*

चन्द्रकीर्ति ने पीछे मुड़कर दूर खड़े अश्वघोष को देखा, जो अभी भी गौतम बुद्ध की भव्य प्रतिमा के सामने बैठा था।

कृपया किसी को ना बताएँ कि वो वास्तव में कौन है...स्वयं उसे भी नहीं...

चन्द्रकीर्ति ने ठंडी सांस ली। आज तक उन्होंने इस प्रण को निभाया था। लेकिन वो रहस्य अब उनकी आत्मा पर बोझ डाल रहा था।

—EJJ M3∩JCΔ—

कहार एकाएक रुके, और अपने कंधों से अपना बोझ ज़मीन पर रख दिया।

पालकी के अन्दर बैठी सामन्त महिला ने गहरे तुर्क लहजे में पूछा, 'क्या हो रहा है?'

कहारों ने उसकी बात को नज़रअन्दाज़ किया और भागने लगे। पालकी के भीतर, हमीदा ने घबराकर अपने दो छोटे बच्चों को कसकर पकड़ लिया, छह साल का लड़का और तीन साल की लड़की। दो बच्चों की माँ होने—और गर्भावस्था की दिक्कतों की वजह से तीसरे को खोने के बावजूद उसने अपना छरहरा शरीर बनाए रखा था। उसकी ख़ूबसूरत हरी आँखें, दूध की तरह सफेद रंग और लम्बे काले बाल उसे ऐसी खूबसूरती देते थे कि देखने वाला उससे अपनी नज़रें हटा नहीं पाता था।

'मैं पता लगाता हूँ कि क्या हो रहा है, अम्मी,' उसके बेटे ने कहा, जो अपने आप को माँ की पकड़ से आज़ाद करने के लिए छटपटा रहा था। 'मुझे जाने दो।'

हमीदा ने उसे और कसकर पकड़ लिया, उसकी घबराहट बढ़ गई जब उसे ऊँची आवाज़ें, चीख़-पुकार और तलवारों की टकराहट सुनाई दी। कुछ पलों बाद, वहाँ शान्ति छा गई। फिर, पालकी के पर्दे हटे।

एक बेहद शालीन आवाज़ सुनाई दी। 'कृपया बाहर आएँ, मोहतरमा।'

हमीदा डर से अकड़ गई, लेकिन अपने बच्चों का ख्याल करते हुए उसने हिम्मत जुटाई। 'मेरे सफ़र में दख़ल डालने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? तुम्हें मालूम है कि मैं कौन हूँ? इसके लिए मेरे शौहर तुम्हारा सिर क़लम कर देंगे।'

'आप कृपया बाहर आएँ। हम वादा करते हैं कि आपको या आपके बच्चों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया जाएगा।'

हमीदा जानती थी कि उसके पास कोई और चारा नहीं था। वो पालकी से बाहर निकली, और अपने बच्चों को अन्दर ही रहने दिया। घबराहट में उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

उसके साथ चल रहे सारे सिपाहियों ने अपने हथियार डाल दिए थे और एक जगह जमा होकर खड़े थे, जैसे निरीह भेड़ें खड़ी रहती हैं। जब उसने उन लोगों की तरफ़ नफ़रत से देखा, तो उन्होंने अपनी नज़रें फेर लीं, क्योंकि वो उससे आँख नहीं मिला पा रहे थे।

हमीदा उस पुरुष की तरफ़ मुड़ी जिसने उसे सम्बोधित किया था। वो एक लम्बा, दुबला पुरुष था जो उसकी तरफ़ चमक भरी आँखों से देख रहा था।

'इसका मतलब क्या है?' हमीदा ने पूछा।

इससे पहले कि वो पुरुष उत्तर देता, हमीदा का छह साल का बेटा पालकी से अपनी खिलौना तलवार लहराते हुए निकला। 'कौन मुझसे लड़ना चाहता है? सामने आओ, मैं तुम सबसे निपट लूँगा।'

'ओह...आराम से, मेरे शेर,' उस पुरुष ने लड़के के प्रहार से फुर्ती से बचते हुए कहा। 'अभी मुझे चोट लग जाती।'

‘मैं तुम्हें मार डालूँगा अगर तुमने मेरी माँ को नुक़सान पहुँचाया।’

‘अच्छी बात है, फिर मैं तुम्हारी माँ को नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा।’

लड़का चुप हो गया। और अचानक उसका ध्यान पुरुष के शानदार घोड़े पर गया। लड़के का लड़ने का जोश पल भर में ग़ायब हो गया।

‘क्या तुम घोड़े की सवारी करना चाहते हो?’ उस लम्बे पुरुष ने मुस्कुराते हुए पूछा।

‘क्या मैं कर सकता हूँ?’ लड़के ने पूछा, उसकी आँखें चमकने लगी थीं। ‘सचमुच?’

अपनी माँ की तरफ़ ना देखते हुए, जो पक्के तौर पर उसे ऐसा करने से मना करती, बच्चे ने पुरुष की बाँहें थाम लीं। वो अजनबी हँसने लगा, बच्चे को उठाया और घोड़े पर बैठा दिया। फिर उसने लगाम अपने उप-सेनापति को दी। ‘अब्दुल, उसे धीमे-धीमे घुमा लाओ। उसकी माँ की आँखों से दूर नहीं ले जाना।’

‘तुमने हमें क्यों रोका है?’ हमीदा ने पूछा। ‘तुम क्या चाहते हो?’

वो पुरुष धीमे से मुस्कुराया और हमीदा ये गौर किए बिना नहीं रह सकी कि उसमें एक लुभावना बांकपन है। ‘मोहतरमा, सच कहूँ तो मेरी ज़्यादा दिलचस्पी उन पैसों में है जो ये लोग कन्नौज के ख़ज़ाने में जमा कराने ले जा रहे थे। लेकिन साथ ही मैं ये भी कहूँगा कि आपकी खूबसूरती की कहानियों में कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है। सच कहूँ तो, वो कहानियाँ इंसाफ़ भी नहीं करतीं।’

‘तुम जानते हो मैं कौन हूँ?’ हमीदा ने पूछा। ‘फिर तुम मेरे पति को भी ज़रूर जानते होगे? और तुम्हारा क्या होगा अगर—’

उस आदमी ने फिर से मुस्कुराते हुए हमीदा की बात काट दी। ‘हाँ, मैं जानता हूँ कि आपके पति क़ासर खान हैं और वो कन्नौज के राजा के यहाँ महमूद गज़नवी के दूत हैं। मैं जानता हूँ कि आप उनके पास जा रही हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि आपके सैनिक बहुत बड़ी मात्रा में पैसे ले जा रहे हैं, जो अन्त में गज़नी भेजे जाने हैं...हम ये नहीं होने दे सकते। मैं पिछले कुछ दिनों से आपके काफिले के यहाँ से गुज़रने का धैर्यपूर्वक इन्तज़ार कर रहा था।’

हमीदा ने उसे हैरत से देखा। *पैसे के बारे में सूचना तो गुप्त थी। इसे कैसे पता लगा?*

‘मेरे कई मित्र हैं जिनके पास काफ़ी जानकारी रहती है,’ उस आदमी ने कहा, जैसे कि उसने हमीदा का मन पढ़ लिया हो। ‘लेकिन जैसा मैंने आपके बेटे से कहा है, आपको या आपके बच्चों को डरने की ज़रुरत नहीं है। बहुत जल्दी आप अपने पति के पास सुरक्षित पहुँचा दी जाएँगी।’

हमीदा ने नीचे की तरफ़ देखा, उसने राहत भरी सांस ली। ‘आपका शुक्रिया,’ उसने कहा, उसकी आवाज़ टूटने लगी थी। तभी उसके दिमाग़ में एक बात आई। ‘रुको...क्या तुम...सुहेलदेव हो?’

वो आदमी मुस्कुराया और उसने सिर झुका दिया। ‘बन्दे पर जो आरोप लगे हैं, वो सही हैं! तो आपने भी मेरे बारे में सुना है?’

‘हाँ, तुम्हारे बारे में कहानियाँ भी अतिशयोक्ति नहीं हैं,’ हमीदा ने मुस्कुराते हुए कहा। ‘दरअसल, वो भी तुम्हारे साथ पूरा इंसाफ़ नहीं करतीं।’

सुहेलदेव ने अपना सिर पीछे किया और ज़ोर से हँस पड़ा। ‘वाह, मोहतरमा। और आपने मेरे बारे में क्या कहानियाँ सुनी हैं?’

हमीदा पल भर के लिए हिचकिचाई, ‘कि तुम पहले एक राजकुमार रह चुके हो...और अब एक डाकू हो। और ये भी कि सभी तुर्कों को तुमसे दूर रहना चाहिये।’

सुहेलदेव ने मुस्कुराते हुए अपना सिर झुका दिया। ‘सिर्फ़ वही तुर्क जो हमें नुक़सान पहुँचाते हैं...बाक़ी, जैसे आप, जो हमें कोई नुक़सान नहीं पहुँचाते, उन्हें डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।’

हमीदा मुस्कुरा दी। साफ़ तौर पर, वो आकर्षित हो गई थी।

सुहेलदेव ने अपने आदमियों में से एक की तरफ़ देखा। ‘बेगम हमीदा और उनके बच्चों को, पूरे सम्मान के साथ कन्नौज की सीमा तक ले जाओ।’ हमीदा की ओर मुड़कर सुहेलदेव ने कहा। ‘अपने पति और राजा अजीतपाल को मेरा नमस्कार कह दीजिएगा।’

हमीदा मुस्कुराई। ‘मैं उन्हें बताऊँगी कि डाकू राजकुमार ने उन्हें नमस्कार भेजा है।’

***

‘क्या तुम्हें ये करने की ज़रूरत है?’ उस महिला ने पूछा।

उसने उससे ये प्रश्न पहले भी अनगिनत बार पूछा था। विनती की थी। याचना की थी। बहस की थी। लेकिन उसका पुत्र अपने संकल्प से डिगने वालों में से नहीं था, विशेषकर तब जब उसने अपना मन बना लिया हो।

लेकिन वो एक माँ थी। उसे फिर भी कोशिश करनी थी। आख़िरी बार।

‘अम्मी, हम इस बारे में बात कर चुके हैं,’ उस नौजवान ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

महिला ने ठंडी सांस ली। ‘ये सफ़र लम्बा और ख़तरनाक होगा। अल्लाह तुम्हें रास्ता दिखाए और तुम्हारी हिफ़ाज़त करे।’

उसने अपने बेटे को ज़ोर से गले लगाया, और फिर एकाएक मुड़कर चली गई, उसके चेहरे पर आँसू लगातार बह रहे थे।

कुछ घंटे बाद, देर रात में, वो नौजवान चुपचाप घर से निकल गया। उसने इसके लिए पूरी तैयारी की थी। वो सुलतान का मन जानता था। केवल कुछ लोगों पर ही उस अभियान की जानकारी के साथ भरोसा किया जा सकता था जिस पर वो जाने वाला था। बाज़ी बहुत अहम थी। उसके मिशन की कामयाबी के लिए गोपनीयता अहम थी। उसने एक भिखारी की तरह के कपड़े पहने, अपने चहेते घोड़े पर सवार हुआ और एक दूसरे घोड़े की लगाम पकड़े चल पड़ा।

पहरेदारों को उसके आने के बारे में बताया जा चुका था। उन्होंने चुपचाप सिर हिलाया और उसे गुज़रने दिया। जब वो आख़िरी पहरेदार के क़रीब पहुँचा, एक हाथ ने उसके घोड़े की लगाम को थाम लिया। ये हाथ एक गठीले सैनिक का था

जिसके दाहिने गाल पर आँसू की आकृति का पैदाइशी निशान था। लगातार धूप में रहने की वजह से उस आदमी के चेहरे पर समय से पहले झुर्रियाँ आ गई थीं। उसके काले बालों के बीच सफेद बालों की लटें दिख रही थीं।

उस सैनिक ने धीमी आवाज़ में कहा, 'हुज़ूर, मैंने सारा इन्तज़ाम ख़ुद किया है, लेकिन आप जानते हैं कि चीज़ें कितनी मुश्किल हो सकती हैं। सावधान रहिएगा।'

घुड़सवार ने इसका जवाब हल्के से सिर हिलाकर दिया। 'हाँ, ओज़गुर।'

ओज़गुर ने लगाम छोड़ दी। लेकिन साथ में ये भी कहा, 'आपका लक्ष्य पाक लेकिन मुश्किल है, हुज़ूर। मैं आपकी कामयाबी के लिए दुआ करूँगा। अल्लाह के लिए, और पाक ज़मीन के लिए।'

'अल्लाह के लिए, और पाक ज़मीन के लिए।' ये कहकर नौजवान ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई, और अंधेरे में गुम होता चला गया, चुपचाप गज़नी से बाहर निकलता चला गया।

अध्याय 6

चन्द्रकीर्ति जल्दी से अर्ध-मूर्च्छित अश्वघोष को प्रार्थना कक्ष में धकेलते हुए लाए। 'दरवाज़ा बन्द करो,' उन्होंने निर्देश दिया। वहाँ पहले से जमा कुछ संन्यासी निर्देश का पालन करने के लिए दौड़े।

अश्वघोष फर्श पर झुके हुए कंधों के साथ बैठ गया, उसकी दाहिनी भौंह के ऊपर लगी चोट से काफ़ी ख़ून बह रहा था।

'अश्वघोष,' चन्द्रकीर्ति ने कहा।

उसने ऊपर देखा।

'कितनी उँगलियाँ हैं?' चन्द्रकीर्ति ने एक उँगली को दिखाते हुए पूछा।

अश्वघोष ने अपनी दृष्टि को धुँधला बना रहे रक्त को पोंछते हुए जवाब दिया, 'एक।'

महन्त ने अपनी उँगली पहले दाहिनी ओर की, फिर बीच में और फिर बाईं ओर। अश्वघोष की आँखें इस हरकत का पीछा कर रही थीं।

'बढ़िया है,' चन्द्रकीर्ति ने कहा। 'तुम्हारी खोपड़ी को ज़्यादा नुक़सान नहीं पहुँचा है।'

उन्होंने चारों तरफ़ देखा और वहाँ जमा हुए संन्यासियों की मन में गिनती की। उनके और अश्वघोष के अलावा वहाँ दस संन्यासी थे।

'बाक़ी?' चन्द्रकीर्ति ने पूछा।

'वो यहाँ नहीं आ पाए, गुरुजी,' धम्मज्योति ने जवाब दिया, उस कमरे में महन्त के अलावा केवल वही था जो अश्वघोष के माता-पिता की सच्चाई जानता था।

चन्द्रकीर्ति ने दुख के चलते अपनी आँखें बन्द कर लीं। युद्ध की आवाज़ें अब नज़दीक आ गई थीं जहाँ मुट्ठी भर महन्त, सिर्फ दंड के सहारे, गज़नी के सैनिकों से बाहर लोहा ले रहे थे।

स्थानीय शासकों, मेसंक के राजा बालव्रत, और पुष्कलावती के राजा दैशिम ने आत्मसमर्पण कर दिया था और इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उनके साथ उनकी प्रजा के बड़े हिस्से ने भी। लेकिन तुर्क इससे सन्तुष्ट नहीं थे। अब उनके

निशाने पर मठ थे। तुर्क बौद्धों के प्रति सबसे ज़्यादा क्रूर थे—यही वो धर्म था जिससे तुर्क स्वयं इस्लाम में परिवर्तित हुए थे। और इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पहले, बौद्ध धर्म के जिस रूप का वो अनुसरण करते थे, वो मूर्ति पूजा में विश्वास करता था। मूर्ति के लिए तुर्क शब्द, 'बुत', 'बुद्ध' से ही आया था।

लेकिन अब तुर्कों के अनुसार, मूर्तियों की पूजा एक गम्भीर अपराध था जिसकी सज़ा सिर्फ मौत थी। हालांकि कई मूर्तिपूजक, जिन्होंने कभी भी मूर्ति पूजा का विरोध करने वालों की ना तो हत्या की और ना ही उन पर आक्रमण किया, ये कभी समझ नहीं सके कि आख़िर मूर्ति पूजा में ऐसा क्या था जिसने तुर्कों को ऐसा उन्मादी बना दिया था।

मठ के अन्दर हर भवन को आग के हवाले कर दिया गया था और उनसे धुआँ उठ रहा था। जो संन्यासी अन्दर छिपे हुए थे, वो लड़खड़ाते हुए बाहर निकले। वो धुएँ की वजह से कुछ देख नहीं पा रहे थे और अपने फेंफड़ों को साफ़ करने के लिए बुरी तरह खांस रहे थे। लेकिन उन्हें निर्दयता से काट डाला गया।

तुर्कों ने मठ के मुख्य खुले चौराहे पर बहुत बड़ा अलाव जला रखा था। सदियों से ध्यानपूर्वक संरक्षित और लिखित पवित्र ग्रन्थों को अलग-अलग कमरों और पुस्तकालय से निकालकर उस आग के हवाले किया जा रहा था।

हमलावर अभी तक प्रार्थना कक्ष तक नहीं पहुँचे थे। अभी तक नहीं।

'वो बहुत जल्दी यहाँ आ जाएँगे,' एक संन्यासी ने भयपूर्वक कहा। 'बुद्ध हमारी रक्षा करें।'

'बुद्ध हमें बचाएँगे, मेरे बच्चे,' चन्द्रकीर्ति ने जवाब दिया। वो बुद्ध की विशाल प्रतिमा के पास गए और उसके पैरों में गिर गए। संन्यासियों के देखते-देखते उन्होंने प्रतिमा के पैर के दाहिने अंगूठे को ज़ोर से दबाया।

संन्यासियों के मुँह खुले के खुले रह गए, जब उन्होंने देखा कि प्रतिमा के पीछे का हिस्सा दरवाज़े की तरह खुल गया, उसमें इतनी जगह थी कि दो आदमी आसानी से खड़े हो सकते थे। फर्श पर एक गुप्त दरवाज़ा था। चन्द्रकीर्ति ने झटके से उसे खींचकर खोला और सीढ़ियों की ओर इशारा किया जो नीचे की तरफ़ जा रही थीं। 'जिन संन्यासियों ने इस मठ का निर्माण किया था, वो बहुत अच्छे योजनाकार थे...ये सुरंग तुम्हें यहाँ से कई मील दूर ले जाएगी। धम्मज्योति, तुम इसके प्रभारी हो। उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाओ। शीघ्र जाओ। व्यर्थ करने के लिए समय नहीं है।'

सभी संन्यासी जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ उतर गए और वहाँ सिर्फ अश्वघोष, उसका मित्र संघमणि और महन्त रह गए।

'जल्दी करो,' चन्द्रकीर्ति ने कहा, उनकी आवाज़ शान्त थी, उन सारी चीज़ों की बर्बादी को देखने के बावजूद, जो उन्हें काफ़ी प्रिय थे।

'गुरुजी, पहले आप,' अश्वघोष ने कहा।

'गुप्त दरवाज़े को बन्द करने के लिए किसी को यहाँ रुकना होगा,' महन्त ने कहा। 'मैं कोशिश करूँगा कि तुम लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा समय मिले, अब जाओ।'

अश्वघोष ने हठ दिखाते हुए इनकार में सिर हिलाया। 'आपके बिना नहीं।'

चन्द्रकीर्ति ने हल्की सी असहमति दिखाई, फिर कंधे उचका दिए। 'ठीक है,' उन्होंने कहा। तभी उनकी आँखें फैल गईं जब उन्होंने अश्वघोष के दाहिनी कंधे के पीछे की ओर देखा। 'ओह नहीं!'

'क्या...?' अश्वघोष ने अपना सिर पीछे घुमाना चाहा।

पल भर बाद, महन्त का घूँसा उसके जबड़े पर पड़ा, और वो बेसुध हो गया। वो लड़खड़ाया और फर्श पर गिरने ही वाला था कि चन्द्रकीर्ति ने उसे थाम लिया।

'इसे ले जाओ,' चन्द्रकीर्ति ने मूर्च्छित अश्वघोष का हाथ संघमणि को थमाते हुए कहा। 'धम्मज्योति से कहना कि इसे बता दें कि ये मठ में कैसे आया था। मेरे बच्चों, अब जाओ। बुद्ध तुम्हें आशीर्वाद दें।'

'अब चलता हूँ, गुरूजी,' संघमणि ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा। उसने अश्वघोष को अपने कंधे पर लटकाया और सीढ़ियों से उतरने लगा।

महन्त ने फिर से प्रतिमा के अंगूठे को ऊपर की ओर खींच दिया और मूल स्थिति में ला दिया। रास्ता फिर से गुप्त हो गया।

चन्द्रकीर्ति बुद्ध की प्रतिमा के सामने बैठ गए। 'मैंने अपना जीवन शान्ति के प्रति समर्पित किया था और अब मैं हिंसक ढंग से प्राण त्यागूँगा। मैं नहीं जानता कि मुझे मेरे पूर्वजन्म के किन कर्मों का ऐसा फल मिल रहा है, महाप्रभु।' उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और एक गहरी सांस ली। 'मुझे अच्छी तरह से मरने का साहस दें, महाबुद्ध। बिना घृणा के। बिना क्रोध के।'

दरवाज़े पर ज़ोर से ठोकर मारने की आवाज़ आई। उन्हें सुनाई दे रहा था कि तुर्क लकड़ी के विशाल दरवाज़े पर ठोकरें मार रहे हैं, और उसे तोड़ने की हड़बड़ी में हैं। और फिर एक तुर्क की ज़ोर की आवाज़ चन्द्रकीर्ति के कानों में पड़ी।

'इस जगह को जला दो! हम अन्दर छिपे काफ़िर कुत्तों को धुएँ से बाहर निकालेंगे!'

चन्द्रकीर्ति ने प्रतिमा को नमन किया और फिर अपने पैरों पर खड़े हो गए। उधर भवन लपटों के हवाले होने लगा। वो शान्त ढंग से प्रवेश द्वार की तरफ़ गए और दरवाज़ों को खोल दिया। जब उन्होंने दहलीज़ को लांघा तो उनके लम्बे अंगवस्त्रम में आग लग गई।

चन्द्रकीर्ति थोड़ी और दूर तक गए, फिर पद्मासन में ज़मीन पर बैठ गए और मंत्रोच्चार करने लगे। उनका जलता हुआ अंगवस्त्रम उनके पीछे ही गिर गया था।

'बुद्धम् शरणम् गच्छामि।'

तेज़ चलती हवा ने महन्त के केसरिया अंगवस्त्रम की लपट को और तेज़ कर दिया, जब तक कि उसने और ऊँची होकर उनकी धोती को ना पकड़ लिया। आग तेज़ हुई और महन्त के पैरों को झुलसाने लगी। पर वो हिले नहीं। शान्त बने रहे।

'बुद्धम् शरणम्...गच्छामि।'

निर्मम हवा शान्त नहीं हुई। ये लपटों को और भड़काती रही। लपटें और तेज़ हो गईं। मांस जलने की दुर्गंध हवा में भरने लगी।

चन्द्रकीर्ति का मंत्रोच्चार और तेज़ हो गया। लेकिन उनके चेहरे पर शान्ति बनी रही। उनकी आँखें बन्द थीं। वो अपने शरीर को पहुँच रहे दर्द से विरक्त थे। उनकी आत्मा सिर्फ अहिंसा, शान्ति और करुणा के समर्थक गौतम बुद्ध पर केन्द्रित थी।

'बुद्धम्...शरणम्...गच्छामि।'

उनकी त्वचा की पतली बाहरी परत अब जलकर कई स्थानों से गिरने लगी थी। आग के भड़कने के बावजूद, महन्त का चेहरा शान्त बना रहा।

'बुद्धम्...शरणम्...'

उनकी कांपती आवाज़ बता रही थी कि उनका शरीर संघर्ष कर रहा है। उनका शान्त चेहरा उनकी आत्मा की भव्य प्रशान्ति दिखा रहा था।

'...गच्छामि...'

सैनिकों ने उनकी तरफ़ देखा, पहले भय से, और फिर बढ़ते आश्चर्य से। उनमें से कुछ अपने घुटनों पर गिर गए, उनके चेहरों पर आँसुओं की धार बह रही थी जब वो भयानक मौत के बीच भी, चन्द्रकीर्ति का महान साहस, गरिमा और आध्यात्मिक शक्ति देख रहे थे। उन्हें वो धर्म याद था जिसे वो कुछ वर्षों पूर्व तक मानते थे। वो इस मंत्र को बहुत अच्छी तरह जानते थे। क्योंकि एक समय ये तुर्क भी, शान्ति और प्रेम के इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते थे। वही शब्द जिन्हें भूलने के लिए उन्हें कहा गया था। वही शब्द जो उन्हें "बुरे मूर्ति पूजकों" के बताए गए थे।

उन पर से जादू तब हटा, जब एक तेज़ आवाज़ आई। 'तीरन्दाज़ों, उसे काट डालो।'

'बुद्धम्...'

कुछ ही पलों बाद, एक-एक करके कई तीर महन्त के शरीर में धंस गए, और वो पीछे की ओर लुढ़क गए।

...शरणम्...गच्छामि...

महन्त का शरीर मृत हो चुका था।

लेकिन उनकी अमर आत्मा पर उस दर्द और अत्याचार का कोई बोझ नहीं था जो उनके शरीर ने सहा था। आत्मा शान्ति के साथ गई। वो करुणा के साथ गई। वो प्रेम के साथ गई।

वो भगवान बुद्ध के चरण कमलों में गई।

अध्याय 7

दो वर्ष बाद, 1029 ईसवी

कव्वाली के अन्तिम सम्मोहक सुर धीरे-धीरे हल्के पड़ते गए। भीड़ चुपचाप बैठी थी, और एक अलग ही दुनिया में पहुँच गई थी। वो लोग एक भवन के आंगन में बैठे थे जिसमें सूफी सन्त शेख नूरुद्दीन और उनके अनुयायी रहते थे। ये भवन पाँचाल शहर, जिसे इसके आधुनिक नाम बरेली से भी पुकारा जाता था, में एक-दूसरे को काटती कई गलियों में से एक में था।

सूफी जिस भवन में रहते थे, वो इलाक़े के निवासियों के लिए सामुदायिक केन्द्र, मुफ्त रसोईघर और बुनियादी अस्पताल का भी काम करता था। ये एक साधारण, मिट्टी के पलस्तर वाला भवन था। दीवारें खाली थीं, और सामान के नाम पर भी कुछ ख़ास नहीं था। वहाँ रहने वाले सूफी ज़मीन पर ही चादरें बिछाते थे और सो जाते थे।

हिन्दू बहुल इलाक़े के पास स्थित इस सूफी केन्द्र को पहले स्थानीय निवासी सन्देह की नज़रों से देखते थे, लेकिन बहुत जल्दी नूरुद्दीन और उनके शागिर्दों की नेकी ने उनका दिल जीत लिया था। सूफियों के पास धन-दौलत नहीं थी, लेकिन उनके पास जो भी था उसे साझा करने में वो हिचकते नहीं थे, और इसी उदारता—और प्रेम और सहिष्णुता के आधार वाले दर्शन—ने बहुत जल्दी उनके कई दोस्त बना दिए थे।

गायक ने अपना गला साफ़ किया और दूसरा गीत शुरु कर दिया। वो अभी पहला वाक्य पूरा ही कर पाया था कि तभी दस लोगों का एक दल वहाँ घुस आया।

'इस कुफ्र को तुरन्त बन्द करो,' उस दल के नेता ने कहा, जो दुबला-पतला था, उसने पगड़ी पहनी हुई थी, नाक चोंच की तरह मुड़ी थी और उसका चेहरा ग़ुस्से से लाल हो रहा था। उसके एक साथी के पास तलवार थी; बाक़ियों के पास भाले और कुल्हाड़ियाँ थीं।

गायक रुक गया और नूरुद्दीन की ओर देखने लगा। मनमोहक सूफी सन्त खड़े हुए, अपने लम्बे और घुँघराले बालों को धीमे से पीछे की ओर किया, जो संगीत की धुन पर झूमने की वजह से बिखर गए थे। 'स्वागत है, मौलवी साहब। मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?'

मौलवी, जिसका नाम ज़ायन था, ने उन्हें तिरस्कार और नफरत भरी नज़रों से देखा। 'मैंने तुम्हें पहले भी कहा है नूरुद्दीन, इस बकवास को रोको। इससे अल्लाह और उसके सच्चे बन्दों की बेइज़्ज़ती होती है।'

'मैं उससे मिलकर बहुत ख़ुश हूँ जो सच में अल्लाह के लिए बोल सकता हो,' नूरुद्दीन ने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया। 'लेकिन मुझे ये बताइए, इसमें बेइज़्ज़ती वाली क्या बात है?'

'तुम यहाँ द्रौपदी के सम्मान में गीत गाते हो, जो...जो...'

नूरुद्दीन ने ज़ायन को बीच में ही टोका, हालांकि उसका लहजा मुलायम था। 'रानी द्रौपदी के बारे में कुछ कहते वक़्त ख्याल रखना, ज़ायन। वो यहाँ की राजकुमारी थीं, बरेली की। उनका यहाँ सम्मान किया जाता है।'

भारतीय महाकाव्य महाभारत के नायक, प्रसिद्ध पांडवों की पत्नी द्रौपदी जो सदियों पहले, इसी स्थान की राजकुमारी थीं। पांचाल की। बरेली के सभी लोग, चाहे वो किसी भी धर्म के हों, प्राचीन काल की इस महान राजकुमारी का देवी के समान आदर करते थे।

'द्रौपदी हममें से नहीं थी!' ज़ायन चिल्लाया। 'वो...वो...उसे भूल जाओ! तुम्हारी इन काफ़िर बर्बरों के साथ खुलेआम मिलने की हिम्मत कैसे हुई?'

'कौन है बर्बर?' नूरुद्दीन ने कहा। 'मुझे तो यहाँ सभी भारतीय दिख रहे हैं। उनका जो भी धर्म हो, वो सभी मेरे लिए एक समान प्रिय हैं।'

'बेहतर होगा कि तुम फैसला कर लो कि तुम्हारी वफादारी किस तरफ़ है,' ज़ायन कर्कश आवाज़ में बोला, उसकी आवाज़ में धमकी थी। 'तुम एक मुसलमान हो या तथाकथित भारतीय?'

'क्या बेवक़ूफ़ों वाला सवाल है।'

ज़ायन ग़ुस्से में लाल हो उठा। 'बेवक़ूफ़? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझे बेवक़ूफ़ कहने की?'

'मैंने तुम्हें बेवक़ूफ़ नहीं कहा। मैंने तुम्हारे सवाल को बेवक़ूफ़ों वाला कहा। क्योंकि तुम दिल से पूछ रहे हो कि क्या वो शरीर का हिस्सा है।'

'क्या?'

'मेरे दिल में अल्लाह के सन्देश हैं। लेकिन मेरे शरीर के हर हिस्से में भारत माता की मिट्टी है। मेरा शरीर इसी ज़मीन से पैदा हुआ है। और मेरी मौत के बाद, मैं इसी पाक ज़मीन में मिल जाऊँगा।'

'पाक ज़मीन?' ज़ायन ने मज़ाक़ उड़ाते हुए अपनी आवाज़ ऊँची कर कहा। 'तुम्हारे अन्दर काफ़िरों के इस घर को पाक ज़मीन कहने की हिम्मत है?'

'मौलवी साहब, तुम्हें शायद यह पता ना हो, लेकिन इस्लाम इस ज़मीन पर तुर्कों के इस्लाम स्वीकार करने के पहले से मौजूद है,' नूरुद्दीन ने जवाब दिया। 'दत्त

ब्राह्मणों के घरानों ने कर्बला की लड़ाई में हज़रत साहब के नाती, इमाम हुसैन का साथ दिया था, और कई तो वहाँ शहीद भी हुए थे। उनके वंशज अभी भी भारत में रहते हैं और हुसैनी ब्राह्मण कहलाते हैं। सिंध के हिन्दू राजा, दाहिर ने इमाम हुसैन के परिवार के कुछ सदस्यों को शरण दी थी। जब मोहम्मद बिन कासिम से लड़ते हुए राजा दाहिर की मौत हो गई, इमाम हुसैन के परिवार को भी ख़त्म कर दिया गया। तो मुझे बताओ कि तुम्हारे हिसाब से इस्लाम का सच्चा मित्र कौन है? जिन्होंने हज़रत साहब के परिवार को शरण दी जैसे भारतीय हिन्दू राजा दाहिर, या वो जिन्होंने उनका कत्ल कर दिया जैसे अरब हत्यारा मोहम्मद बिन कासिम?'

मौलवी पल भर के लिए भौंचक रह गया, फिर उसने सुर बदल लिया। 'और इस गाने-बजाने का क्या? तुम्हें पता है कि इस्लाम में संगीत की मनाही है।'

'ऐसा है क्या?' नूरुद्दीन ने पूछा। 'लेकिन पाक कुरान के सूरा अल-इस्रा की आयत 55 में साफ़ कहा गया है कि अल्लाह ने डेविड को धार्मिक गीत दिए थे। अगर संगीत की मनाही थी तो अल्लाह डेविड और उनके अनुयायियों को गाने-बजाने की अनुमति क्यों देते? कई विद्वानों ने हदीस के हवाले से कहा है कि हज़रत ने सिर्फ़ उस संगीत को नामंज़ूर किया था जिससे बुरे बर्ताव और दुराचार को बढ़ावा मिलता है, इसके अलावा संगीत से उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी।'

'तुम बुतपरस्तों को उनके नक़ली भगवानों से दूर करने की कोशिश क्यों नहीं करते?' ज़ायन ने पूछा, वो अपने शागिर्दों के सामने कमज़ोर पड़ता नहीं दिखना चाहता था।

नूरुद्दीन ने सिर हिला दिया। 'तुमने पाक कुरान पढ़ी है। तुम उस आयत को कैसे भूल सकते हो जो कहती है, "तुम अपना मज़हब मानो, मैं अपना मज़हब मानता हूँ", क्या तुमने यह नहीं पढ़ा है?'

ज़ायन के साथ आया एक नौजवान इस बहस से थक चुका था। 'क्या तुम दोनों पूरी रात बातचीत करने वाले हो?' उसने तिरस्कार भरे लहजे में कहा, फिर सूफ़ी सन्त की ओर मुड़कर, धमकी के अन्दाज़ में अपनी म्यान से आधी तलवार को बाहर खींचा। 'सुनो नूरुद्दीन, हम अब तुम्हारा कुफ्र बर्दाश्त नहीं कर सकते। हम यहाँ तुम्हारे साथ धर्मग्रन्थों पर बहस करने नहीं आए हैं। हमें अपने अल्लाह के शब्दों का सही मतलब पता है। ये तुम्हारे लिए आख़िरी चेतावनी है। अपना सामान उठाओ और यहाँ से चले जाओ वरना हम तुम्हें और तुम्हारे शागिर्दों को मार डालेंगे।'

नूरुद्दीन ने साफ़-साफ़ कहा। 'हम नहीं जाएँगे, नौजवान। और हम तुमसे लड़ेंगे भी नहीं।'

नौजवान कट्टरपन्थी अब काफ़ी उत्तेजित हो चुका था। उसने अपने बाएँ हाथ का घूँसा सूफ़ी सन्त की ओर लहराया। इससे पहले कि वो घूँसा नूरुद्दीन के चेहरे पर पड़ता, उसे एक खुली हथेली ने रोक लिया। इस चोट की आवाज़ पूरे बरामदे में गूँज गई। उस कट्टरपन्थी ने भौंहें चढ़ाईं और उस चौड़े कंधे और चौड़ी छाती वाले नौजवान को देखा जिसने उसका रास्ता रोका था। वो देखने में नूरुद्दीन का शागिर्द लगता था, लेकिन दूसरे सीधे-सादे शागिर्दों से बिल्कुल अलग। उसके

बाल लहरदार थे, गाल की हड्डियाँ ऊपर की तरफ़ थीं, और नैन-नक्श तुर्कों की तरह थे। बादामी रंग की उसकी आँखें ग़ुस्से से जल रही थीं।

'अगर तुमने सन्त को छुआ भी तो मैं तुम्हें मार डालूँगा,' उस नौजवान तुर्क ने डरावनी आवाज़ में चेतावनी दी।

'असलान, हट जाओ,' नूरुद्दीन ने नौजवान तुर्क को डांटकर कहा।

असलान ने अपने उस्ताद को नज़रअन्दाज़ किया और उस कट्टरपन्थी पर अपनी नज़रें जमाए रखीं। वो आदमी गुर्राया और फिर नज़रें फेर लीं। अपने क़दम भी थोड़े पीछे कर लिए। ऐसा लगा कि वो हार मान रहा है। लेकिन पल भर बाद ही, उसने तेज़ी से अपनी तलवार खींची और असलान पर लहरा दी।

हालांकि, असलान इस चोरी-छिपे हमले की उम्मीद कर रहा था। वो पीछे की ओर हटा, और तलवार उसकी छाती के पास से बिना कोई नुक़सान पहुँचाए गुज़र गई। जैसे ही हमलावर का वार पूरा हुआ, असलान आगे बढ़ा और उसकी कलाई पकड़कर उसे ज़ोर से मरोड़ दिया। तलवार फर्श पर गिर गई। वो आदमी अब सन्तुलन खो चुका था और आगे की ओर झुक रहा था। अपने दूसरे हाथ से, असलान ने उसे कान के ठीक नीचे ज़ोर का घूँसा मारा। वो आदमी ज़मीन पर गिर गया।

असलान ने तलवार उठा ली। उसने उसे इतनी आसानी से पकड़ा, जैसे कि वो उसकी बढ़ी हुई बाँह हो।

वर्षों पहले उसे दी गई सीख उसके दिमाग़ में दौड़ने लगी थी।

अपनी सांस पर गौर करो। क्या ये तेज़ चल रही है? इसका मतलब है कि तुम्हारा शरीर तनावग्रस्त है। इससे तुम लड़ाई में बेकार हो जाओगे। एक गहरी सांस लो। इसे रोको। फिर इसे बाहर निकालो। धीरे-धीरे। दोबारा। एक बार और। जब तक कि तुम्हारी सांस चलना सामान्य ना हो जाए। बढ़िया। अब अपने पैरों को अलग करो; दोनों पैरों के बीच उतनी ही जगह हो जितना चौड़ा तुम्हारा कंधा है; उससे ज़्यादा नहीं, उससे कम नहीं। तुम दाहिने हाथ से लड़ते हो, इसलिए अपना दाहिना पैर आगे रखो। इससे तुम ज़्यादा स्थान तक पहुँच पाओगे। लेकिन ये ध्यान रखना कि वज़न एक पैर पर असन्तुलित ना हो। पैर की धुरी पर खड़े रहो, ताकि किसी भी दिशा में आसानी से घूम सको। अपने घुटनों को थोड़ा सा झुकाकर रखो, जैसे एक लच्छेदार कमानी होती है। बहुत बढ़िया। अब, अपनी तलवार को थोड़ा सा चलाओ। अगर चाहो तो इसे एकाध बार लहराओ। इसे महसूस करो। अब अपनी स्थिति तय करो। तलवार को बाहर की तरफ़ रखो। कलाई आराम की हालत में और बाँह की सीध में रहे। अपनी बाँह को इस तरह ठीक से जमाओ कि तलवार का वज़न तुम्हारी पीठ, कंधे और ऊपरी बाज़ू पर आए। ये मांसपेशियाँ बड़ी होती हैं। उनका इस्तेमाल करके तुम लम्बे समय तक बिना थके लड़ सकोगे।

असलान ने ये पूरी प्रक्रिया कुछ क्षणों में पूरी कर ली, उसने इसका अभ्यास हज़ारों बार किया था और अब तो ये उसकी मांसपेशियों को याद हो गया था। उसकी आँखें बाईं से दाईं तरफ़ और फिर दाईं से बाईं तरफ़ तेज़ी से घूम रही थीं, ताकि किसी भी सम्भावित ख़तरे को भांपा जा सके।

हमलावर रुक गए। ये लोग उपद्रवी थे जिन्हें ज़ायन ने जमा किया था और वो उम्मीद कर रहे थे कि उनका मुक़ाबला सीधे-सादे और कमज़ोर भक्तों से होगा। लेकिन जब सामने एक योद्धा आया, तो ये लोग थोड़ा हिचकिचाए।

'चलो,' उनमें से एक नौजवान ने आख़िरकार हिम्मत बटोरी, जिसकी पीठ पर हल्का सा कूबड़ था। 'वो अकेला है। हम उसे मार सकते हैं।'

'हो सकता है...लेकिन मैं तुम लोगों में से कुछ को साथ लेकर जाऊँगा,' असलान ने चेतावनी दी। 'पहले कौन मरना चाहता है?'

'असलान, इसी वक़्त रुक जाओ,' नूरुद्दीन ने कहा। 'मैं अपने लिए कोई ख़ून-खराबा नहीं होने दूँगा।'

पल भर के लिए असलान की आँखें उस तरफ़ घूमीं जिधर नूरुद्दीन खड़ा था। कूबड़ वाले नौजवान ने इसका फायदा उठाना चाहा। वो आगे बढ़ा, और घातक हमला करने के इरादे से अपनी कुल्हाड़ी को पीछे ले गया।

घूमती हुई नज़रों ने असलान को बचा लिया। जब तक वो पूरी तरह समझता कि क्या हो रहा था, उसके दिमाग़ ने हरकत कर ली थी। उसका हाथ मानो हवा में अपने आप घूम गया। तलवार ने हमलावर के गले को चीर दिया, और उसकी गले की नस कट गई।

नौजवान के हाथ से कुल्हाड़ी छूट गई और वो घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपना गला पकड़ लिया, जैसे कि गहरे घाव को बन्द करना चाहता हो। उसकी उँगलियों के बीच से ख़ून फूटकर ज़मीन पर गिरने लगा। बिना किसी ख़ास आवाज़ किए, वो लड़खड़ाया, और ज़मीन पर फैले ख़ून पर मुँह के बल गिर गया।

ज़ायन ग़ुस्से से आग-बबूला हो उठा। मरने वाला नौजवान उसका भतीजा था। 'कायरों, इस कमीने को घेर लो! उसे मार डालो!'

'आज के लिए बहुत ख़ून-खराबा हो चुका है,' एक असरदार आवाज़ बरामदे में गूँजी। भीड़ में से एक लम्बा आदमी बाहर निकला। उसने एक दुशाला ओढ़ी हुई थी, जिसके हटने पर एक तलवार दिखाई दी। उसके साथ बीस और आदमी खड़े हो गए। उन सभी के पास हथियार थे।

वो आदमी चलकर ज़ायन के पास गया। 'उस लड़के की मौत तुम्हारी गलती है। अगर तुम ज़िन्दा रहना चाहते हो, तो उसकी लाश लेकर चुपचाप निकल जाओ। वरना मैं तुम्हें उसके पास ही सुला दूँगा।' उसने फिर ज़ायन के साथियों की तरफ़ इशारा किया। 'तुम सब इस बात का ख्याल रखना।'

ज़ायन के आदमियों ने जल्दी से अपने मृत साथी को उठाया। अब वो डरे हुए और नासमझ दिख रहे थे, जो जल्दी से भाग जाना चाहते थे। एक भीड़ आमतौर पर कायरों से बनी होती है। उनमें कोई साहस नहीं होता। साहस उनके शरीर में तुरन्त आता है, जब वो सोचते हैं कि वो ताक़तवर हैं। लेकिन ये उनके शरीर से उतनी ही जल्दी निकल भी जाता है। बस उसके लिए कुछ प्रहार काफ़ी हैं। वो जल्दी से वहाँ से भाग गए।

ज़ायन इकलौता था जो अब तक खड़ा था। उसने असलान और नूरुद्दीन की तरफ़ नफरत भरी नज़र डाली। 'अभी ये खेल ख़त्म नहीं हुआ है,' उसने फुफकारते हुए कहा।

असलान ने ज़ायन को घूरकर देखा। उसकी आँखों में ख़ून की प्यास साफ़ दिख रही थी। 'ज़ायन, अगर तुम यहाँ वापस आए तो अगली बार यहाँ से तुम्हारी लाश जाएगी।'

ज़ायन तुरन्त वहाँ से भाग निकला।

लम्बे क़द का वो अजनबी चलकर असलान के पास पहुँचा। उसके होंठों पर हल्की मुस्कुराहट थी। 'तुम एक बहादुर इंसान हो।'

'शुक्रिया,' असलान ने कहा। 'आपने मेरी ज़िन्दगी बचाकर मेरी आत्मा खरीद ली है। तो क्या मैं अपनी आत्मा के मालिक का नाम जान सकता हूँ?'

'मेरा नाम है सुहेलदेव,' लम्बे क़द के उस अजनबी ने जवाब दिया।

असलान हल्के से मुस्कुरा दिया। *आख़िरकार...हमारी मुलाक़ात हो ही गई।* लेकिन उसने अपने विचारों को ख़ुद तक सीमित रखा। 'डाकू राजकुमार...'

'तो तुमने मेरे बारे में सुन रखा है?'

'किसने नहीं सुना है?' असलान ने जवाब दिया। 'आपकी ख्याति हर तरफ़ है।'

ये सच था। सुहेलदेव के अपने पिता की छावनी से निकलने के बाद के वर्षों में, उसकी शोहरत पूरे उत्तर भारत में फैल चुकी थी। लड़ाकों के अपने छोटे से दस्ते के साथ, उसने उन राज्यों पर हमले किए थे जिन्होंने गज़नी की अधीनता स्वीकार की थी, और उनमें वो मानो अपनी मर्जी से घुसता और निकलता था। वहाँ तैनात तुर्कों को मारता था। वो काम करता था जो वहाँ की प्रजा अपने कायर शासकों से कराना चाहती थी।

वो पिछले ज्ञात स्थान से काफ़ी दूर कहीं किसी स्थान पर अचानक पहुँच जाता, वहाँ औचक आक्रमण करता और भारी नुक़सान पहुँचाकर ग़ायब हो जाता, और उसे शायद ही कभी कोई नुक़सान होता था। अगर युद्ध में उसका कोई आदमी मारा भी जाता, तो कभी भी वो लोग उसे छोड़कर नहीं जाते थे।

हर कामयाब हमले के साथ सुहेलदेव की ख्याति बढ़ती गई थी, यहाँ तक कि कुछ लोगों ने उसे अलौकिक शक्ति से लैस मानना शुरू कर दिया था। लेकिन वो कभी आम नागरिकों पर हमले नहीं करता था, इसके बजाय वो किसी भी सूचना या रसद के लिए उन्हें काफ़ी अच्छी क़ीमत चुकाता था। इसलिए, आम जनता उसे उतना ही प्यार करती थी जितना उनके शासक उससे नफरत करते थे।

असलान की आँखों में अपने लिए प्रशंसा को देखकर सुहेलदेव मुस्कुराए बिना नहीं रह सका। उसने तलवार की ओर इशारा किया जो असलान ने अभी भी अपने हाथों में पकड़ रखी थी। 'लगता है कि तुम जानते हो इसे कैसे इस्तेमाल करते हैं।'

'मैंने एक सैनिक के रूप में प्रशिक्षण लिया है,' असलान ने कहा। 'लेकिन मैंने वो ज़िन्दगी छोड़ दी है। अब मैं यहाँ रहता हूँ और महान सूफी सन्त नूरुद्दीन की सेवा करता हूँ।'

नूरुद्दीन सदमे से चुप था जब उसने देखा कि असलान ने ज़ायन के भतीजे को मार डाला। अब वो भर्राई आवाज़ में बोला। 'असलान, अब तुम यहाँ नहीं रह सकते। यहाँ क़ातिलों के लिए कोई जगह नहीं है।'

'लेकिन नूरुद्दीन साहब, मैं तो बस आपका बचाव कर रहा था,' असलान ने विरोध जताते हुए कहा।

'मैंने तुमसे बचाव के लिए नहीं कहा था,' नूरुद्दीन ने कहा। सूफी सन्त की आवाज़ शान्त थी लेकिन उसकी आँखों में दर्द और मलाल साफ़ दिख रहा था। 'मैंने तुम्हें कहा था कि मुझे कोई ख़ून-खराबा नहीं चाहिए। मैं इस बेचारे लड़के की मौत की ज़िम्मेदारी लेने के बजाय अपनी मौत पसन्द करता। तुम अभी चले जाओ।'

असलान का चेहरा बुझ गया, नूरुद्दीन मुड़ा और लम्बे डग भरता हुआ वहाँ से चला गया। उसने फर्श की तरफ़ देखा, वो अपने आप को उजड़ा महसूस कर रहा था। उसने तलवार छोड़ दी, फिर अपनी बाँह के पिछले हिस्से से आँखें पोंछीं, और धीरे से अपना सिर हिलाया। जब उसने ऊपर देखा तो पाया कि सुहेलदेव उसे सहानुभूति भरी नज़रों से देख रहा था।

'देखो, मेरे दोस्त,' सुहेलदेव ने नरम स्वर में कहा, 'तुमने हिंसा छोड़ी हो सकती है, लेकिन ऐसा लगता है कि हिंसा ने तुम्हें नहीं छोड़ा है। मौलवी पक्के तौर पर तुम पर कत्ल का मुक़दमा चलाने की कोशिश करेगा। तुम्हारे पास दो रास्ते हैं: तुम मुक़दमे का सामना कर सकते हो, या फिर ज़िन्दगी बचाने के लिए भाग सकते हो। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं दूसरा रास्ता चुनता।'

असलान ने लाचारी से अपनी बाँहें फैलाईं। 'मैं कहाँ जाऊँगा? मैं क्या करूँगा?'

सुहेलदेव ने उसकी तरफ़ थोड़ी देर तक चुपचाप देखा, जैसे किसी फैसले के गुण-दोष परख रहा हो। 'अगर तुम चाहो तो मेरे साथ चल सकते हो। तुम्हारा कौशल मैं इस्तेमाल कर सकता हूँ, और इससे ज़्यादा शर्मनाक क्या होगा कि तुम्हारे जैसा व्यक्ति कुछ धर्मांध मूर्खों की वजह से किसी पेड़ पर फांसी से झूल जाए। तुम्हारा क्या कहना है?'

अब्दुल, जो सुहेलदेव के पीछे खड़ा था, इस फैसले से साफ़ तौर पर नाख़ुश था। वो तुर्कों पर भरोसा नहीं करता था।

असलान ने अपना मन बनाने में ज़्यादा वक़्त नहीं लिया। 'आप ही मुझे रास्ता दिखाएँ, महान राजकुमार।'

सुहेलदेव ने असलान की गिरी हुई तलवार की तरफ़ इशारा किया। 'तुम्हें उसकी ज़रूरत पड़ेगी।'

असलान ने झुककर तलवार उठा ली। अब यह उसका हथियार थी। अगर किसी ने गौर किया होता तो देखता कि असलान के चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट थी। मानो उसे वही मिल गया हो जिसकी उसे ज़रूरत थी।

अध्याय 8

'हुज़ूर, इस कारोबारी हलील पर आरोप है कि ये अपने यज़ीदी पुरखों की तरह चोरी-छिपे बुतपरस्ती कर रहा है, हालांकि ये दावा करता है कि इसने इस्लाम अपना लिया है,' गज़नी के वज़ीर-ए-आज़म हसन ने कहा। 'इसके घर पर छापे में इनके झूठे भगवान का एक बुत मिला है।'

महमूद ने ज़ंजीरों में जकड़े, अपने सामने खड़े गोरे, हरी आँखों वाले व्यक्ति की तरफ़ आँख तरेरी। यज़ीदियों पर लम्बे समय तक ज़ुल्म होता रहा था क्योंकि वो मानते थे कि ईश्वर ने दुनिया की देखभाल का ज़िम्मा सात देवदूतों को दिया है, जिनका मुखिया है मलक ताउस, यानी देवदूत मयूर। यज़ीदी आस्था के मुताबिक़, मलक ताउस ने ईश्वर के ख़िलाफ़ बगावत की थी और उसे नरक में फेंक दिया गया था। वो वहाँ चालीस हज़ार वर्षों तक रहा, जब तक कि उसके आँसुओं ने नरक की आग को बुझा नहीं दिया। ईश्वर ने फिर उसे माफ कर दिया और उसकी पुरानी हैसियत बहाल कर दी। लेकिन हज़रत इब्राहीम के अनुयायी मलक ताउस और शैतान की कहानी में समानता देखते हैं, जिसे ईश्वर ने नरक में फेंक दिया था।

नतीजतन, यज़ीदियों को शैतान की पूजा करने वाला घोषित कर दिया गया और उन्हें निर्ममता से ख़त्म और बर्बाद कर दिया गया। उनके मूर्तिपूजक होने की वजह से भी वो हिंसा और ज़ुल्म के ज़्यादा बड़े शिकार बने।

'ये संगीन आरोप हैं,' महमूद ने कहा। 'क्या ये सच हैं, हलील?'

महमूद जानता था कि हलील एक कामयाब कारोबारी है और सरकारी ख़ज़ाने को काफ़ी महसूल देता है। अभी तक बादशाह के पास उसके ख़िलाफ़ कोई शिकायत नहीं पहुँची थी।

'नहीं, महान सुलतान,' हलील ने सिर झुकाते हुए कहा। 'ये सब झूठ है, और उन दुश्मनों द्वारा फैलाया गया है जो मेरी दौलत से जलते हैं। ये सच है कि मेरे अब्बा यज़ीदी तरीक़े मानते थे, लेकिन मेरी आँखें खुल चुकी हैं और मैं अब सच्चा मुसलमान हूँ।'

'हम्म, और बुत कहाँ से आया?' महमूद ने पूछा।

'इसे ज़रूर मेरे दुश्मनों ने मेरे घर में रखा होगा।'

महमूद अपने वज़ीर-ए-आज़म की तरफ़ मुड़ा। 'क्या उसके ख़िलाफ़ और कोई सुबूत है?'

'नहीं, हुज़ूर,' हसन ने जवाब दिया।

इससे पहले कि महमूद कुछ कहता, उसका भांजा बीच में ही बोल पड़ा। 'हुज़ूर, अगर आपकी इजाज़त हो तो क्या मैं इस आदमी से कुछ पूछ सकता हूँ?'

भरे हुए दरबार में सबकी नज़रें सालार मक़सूद की तरफ़ मुड़ गईं। वो सुलतान की तरफ़ देखते हुए पूरे भरोसे के साथ मुस्कुरा रहा था।

'पूछो,' महमूद ने कहा।

मक़सूद ने आभार जताते हुए अपना सिर झुकाया, और फिर वज़ीर-ए-आज़म की तरफ़ मुड़ा।

'वो बुत कहाँ है जो ज़ब्त किया गया था?' उसने पूछा। 'मैं उसे देखना चाहूँगा। और साथ में एक हथौड़ा और छेनी भी मंगाओ।'

एक नौकर जल्दी से गया और थोड़ी देर में सभी चीज़ों को लेकर आ गया। मूर्ति सोने की बनी थी और ख़ूबसूरत थी, इसकी आकृति ज़्यादातर इंसानी थी। लेकिन, इसके पंख और मोर की तरह पैर थे। इसके सिर पर, मोर पंखों का एक मुकुट था, जिसमें नीले, फिरोज़ी और हरे रंग थे, ये काफ़ी कुछ वैसा ही था जैसे भगवान कृष्ण का मुकुट होता है। मलक ताउस की मूर्ति के पेट पर एक काला सांप आभूषित था, जो काफ़ी कुछ कुँडलिनी के पौराणिक सांप जैसा था जो हिन्दुओं के अनुसार गुप्त स्त्री शक्ति का प्रतीक है। मलक ताउस की आँखों की जगह दो चमकीले हरे पन्ने लगे थे।

'शुक्रिया,' मक़सूद ने नौकर से कुछ ज़्यादा ही नरमी से कहा। फिर वो उस कारोबारी हलील की तरफ़ मुड़ा। 'तो तुम्हारे मन में इस बुत के लिए कुछ नहीं है?'

'केवल नफरत और चिढ़ है,' उस आदमी ने ज़ोर देकर कहा।

सालार मक़सूद की बादामी आँखों में ऐसे भाव थे जिन्हें देखकर हलील सहम गया और दूसरी तरफ़ देखने लगा।

थोड़ी देर तक रुकने के बाद, मक़सूद फिर बोला। 'ये हथौड़ा लो और बुत का दाहिना पंख तोड़ दो।'

'क्या?' हलील आतंकित दिख रहा था।

'तुमने सुना ना,' मक़सूद ने शान्त स्वर में कहा। 'इसे तोड़ो या फिर मैं तुम्हारा दायाँ हाथ काट दूँगा।'

हलील हिचकिचाया, फिर बिना कुछ कहे हथौड़ा उठाया और मुर्ति पर ज़ोर से वार किया। मलक ताउस का दायाँ पंख टूटकर बिखर गया।

'बहुत अच्छा,' मक़सूद ने हल्के हाथ से ताली बजाते हुए कहा। 'मुझे तुम्हारी सच्चाई देखकर अच्छा लगा। अब दोनों आँखों को निकाल दो।'

हलील का चेहरा राख की तरह हो गया।

'कुछ तो बाहर निकलेगा, मेरे दोस्त,' मक़सूद ने कहा। उसने धीमे से कहा, लेकिन उसके शब्दों में धमकी थी। 'या तो बुत की आँखें या तुम्हारी।'

हलील के हाथ कांपे, लेकिन उसने पहले मुर्ति की एक आँख निकाली, और फिर दूसरी। जब वो ये काम कर रहा था, उसके चेहरे पर आँसुओं की धार बह रही थी।

'काफ़िरों की मूर्खता देखो,' मक़सूद हँसा। 'इनका तथाकथित भगवान अपनी हिफ़ाज़त तो कर नहीं सकता, और ये सोचते हैं कि वो इन लोगों को बचा सकता है।' फिर वो कारोबारी की तरफ़ मुड़ा। 'लेकिन तुम इतने दुखी क्यों हो? क्या इस बुत की तुम्हारे लिए इतनी अहमियत है?'

हलील ने किसी तरह अपने आप को संभाले रखा। 'क्या मैं जा सकता हूँ?' उसने आख़िरकार भर्राई आवाज़ में पूछा।

'बस तुम्हें मेरा एक काम और करना है,' मक़सूद मुस्कुराया। 'इस कबाड़ को ज़मीन पर फेंको और इस पर थूको।'

ग़ुस्से में चीख़ते हुए हलील ने मक़सूद पर छेनी से हमला कर दिया। मक़सूद पीछे की तरफ़ कूदा और अपने को बचाने के लिए अपना बायाँ हाथ आगे कर दिया। छेनी ने हथेली को काट दिया और थोड़ा ख़ून बहने लगा, हालांकि कोई गम्भीर चोट नहीं लगी।

हलील के दोबारा हमला करने के पहले ही, पीछे से एक लम्बी और सुडौल आकृति आई और उसे इतनी ज़ोर से धकेला कि उसका सन्तुलन गड़बड़ा गया। जैसे ही हलील लड़खड़ाया, मक़सूद ने उसकी दाहिनी कलाई पकड़ी, जिसमें उसने छेनी थाम रखी थी, और उसे निर्दयता से मरोड़ दिया।

हलील दर्द से तड़प उठा और अपने घुटनों पर गिर गया। छेनी उसके हाथ से छूटकर फ़र्श पर गिर गई। 'रुको, रुक जाओ!' वो तड़पता हुआ विनती कर रहा था।

इसके बजाय, मक़सूद ने उसकी कलाई को थोड़ा और मरोड़ दिया। दरबार में हड्डी टूटने की तेज़ आवाज़ गूँज उठी, और वहाँ मौजूद कई लोगों के चेहरे पर शिकन आ गई जब उन्होंने देखा कि हलील की कलाई एक टहनी की तरह टूट चुकी है।

दरबार के पहरेदारों ने तुरन्त उस आदमी को गिरफ्त में ले लिया, जो अब डर और दर्द से कराह रहा था, और उसे खींचते हुए बाहर ले गए। वो लम्बा आदमी जो मक़सूद की मदद के लिए आया था, उसने उसका हाथ पकड़ा और फ़िक्रमन्द होकर देखने लगा।

'मैं ठीक हूँ, करीम,' मक़सूद ने नरम लहजे में कहा, उसकी आवाज़ में मुहब्बत और नज़ाकत थी। 'बस ख़रोंच आई है।'

'तुम्हें हकीम को दिखाना चाहिए,' करीम ने कहा, उसकी आवाज़ में फ़िक्र थी और वो मक़सूद के चोटिल हाथ को पीछे से सहला रहा था।

सुलतान महमूद ने उनकी बातचीत को रोका। 'मक़सूद, मेरे नौजवान शेर,' उसकी आश्चर्य से भरी आवाज़ दरबार में गूँज रही थी। 'तुम ख़ज़ाने से कम नहीं हो। तुम्हें मैं क्या इनाम दूँ?'

'मुझे बस अपनी खिदमत का मौक़ा दीजिए, इससे बड़ा इनाम मेरे लिए और कुछ नहीं है, हुज़ूर,' मक़सूद ने कहा।

महमूद इसके जवाब में गर्मजोशी से मुस्कुराया। उसने ताली बजाई। 'दरबार बर्ख़ास्त।' फिर उसने मक़सूद को इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। 'रात के खाने के लिए मेरे निजी महल में आओ। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।' उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और मक़सूद के पिता को देखा, जिसका निकाह सुलतान की बहन के साथ हुआ था। 'ऐसा करो, अपने परिवार को लेकर आओ। काफ़ी समय से मैं अपनी बहन से नहीं मिला हूँ और इसी बहाने तुम सब लोगों के साथ थोड़ा वक़्त बिता लूँगा। लेकिन पहले अपने इस प्यारे लड़के की बात सुनो और अपना हाथ दिखा लो।'

शाम काफ़ी बीत चुकी थी, जब मक़सूद और उसके परिवार ने सुलतान के भव्य निजी कमरों वाले महल में क़दम रखा। उनके पैर फर्श पर बिछे नरम फ़ारसी कालीनों में धंस से गए। दीवारों पर युद्ध और शिकार के दृश्यों को ब्यौरेवार दिखाने वाली क़सीदाकारी की गई थी। जिस दीवान पर सुलतान लेटा था, उसे भारत से मंगाए गए सबसे अच्छे रेशम से बुने कपड़े से ढंका गया था।

महमूद धीमे-धीमे एक चालाक से दिखने वाले आदमी से बात कर रहा था जो उसका जासूस माना जाता था। अपने मेहमानों को देखकर, उसने तुरन्त ही बातचीत ख़त्म की और अफ़सर को विदा कर दिया। महमूद ने भले ही अपनी बहन के साथ उसके पूरे परिवार को बुलाया था, लेकिन उसने अपने प्यारे भांजे के अलावा सभी को नज़रअन्दाज़ किया। 'अन्दर आओ। आराम से बैठो।' उसने मक़सूद के हाथ की तरफ़ इशारा किया जिस पर पट्टी बंधी थी। 'सब ठीक है?'

मक़सूद ने झुकते हुए जवाब दिया। 'हाँ, हुज़ूर। हकीम कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था।'

महमूद ने हामी भरते हुए कहा। 'बिल्कुल सही। तुम्हारा वो प्यारा ग़ुलाम लड़का लगातार बड़बड़ाता रहता अगर तुम हकीम के पास नहीं जाते। वो लड़का कितना ख़ूबसूरत है! कभी-कभी मुझे इच्छा होती है कि मैं उसे तुमसे अपने लिए माँग लूँ।'

मक़सूद चुप रहा लेकिन महमूद ने उसके चेहरे पर आए भाव को पढ़ लिया था।

'घबराओ नहीं,' महमूद ज़ोर से हँसते हुए बोला। 'मुझे मालूम है कि कम उम्र में मुहब्बत करना कैसा होता है।'

ग़ज़नी के सुलतान के चेहरे पर उत्कंठा भरे भाव आ गए। मक़सूद तुरन्त समझ गया कि महमूद अपने ग़ुलाम और बेहद अज़ीज़, अयाज़ के बारे में सोच रहा है। सुलतान उसे इतना पसन्द करता था कि उसे लाहौर का बादशाह बना दिया था।

कोशिश करके महमूद अपनी इस मनोदशा से बाहर निकला। 'मुहब्बत की काफ़ी बातें हो गईं।' वो मक़सूद की माँ की तरफ़ मुड़ा। 'मुझे उम्मीद है कि तुम्हारा पति तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखता होगा।'

'बहुत अच्छे से, पूछने के लिए शुक्रिया,' उसने कहा। 'भाई, तुम पिछले मुलाक़ाती से बात करने के बाद से थोड़े चिढ़े हुए लग रहे हो। सब ठीक तो है ना?'

महमूद की भौंहों पर बल पड़ गए। 'दरअसल एक भारतीय राजकुमार है जो परेशानी बनता जा रहा है। मुझे उसका इलाज जल्दी ही ढूँढ़ना होगा। उसका नाम सुहेलदेव है।'

'असलान! उठो!'

असलान एकाएक उठ बैठा। आदतन, उसका हाथ अपनी तलवार पर गया। उसने आँखें झपकीं, पल भर के लिए उसे कुछ समझ नहीं आया।

'आराम से।' सुहेलदेव ने तुरन्त अपने आप को पीछे किया। 'तुम्हें उसकी ज़रूरत नहीं है। तुम दोस्तों के साथ हो।'

असलान उसकी तरफ़ चौंककर देखने लगा, फिर उसे महसूस हुआ कि उसने अपनी म्यान से तलवार आधी बाहर निकाल ली थी। उसके बाल पसीने में भीगे हुए थे और उसकी नब्ज़ तेज़ चल रही थी। उसने एक गहरी सांस ली और अपनी तलवार अन्दर की। कोशिश करके, वो पेड़ के सहारे टिककर सीधा बैठ गया। उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना ललाट पोंछा।

धीरे-धीरे, उसकी सांस सामान्य हुई जब उसके दिमाग़ को असलियत समझ में आई। *मैं अब सुहेलदेव के दस्ते का हिस्सा हूँ। हमने इस जंगल में रात बिताई है।*

सुहेलदेव उसे उत्सुकता भरी नज़रों से देख रहा था। 'तुम ठीक तो हो ना?'

असलान ने हामी भरी। 'मैं पूरी तरह ठीक हूँ। ये बस एक ख्वाब था।'

'तुम अब जग गए हो। चलने का वक़्त हो गया है।'

अध्याय 9

भारत, 1030 ईसवी

मरे हुए और मर रहे लोगों से भरे मैदान के ऊपर सूरज डूब रहा था। उन लोगों से बेपरवाह, हज़ारों लोग लड़ रहे थे। तभी बिगुल बज उठे जो संकेत था कि आज की लड़ाई ख़त्म हो गई है। युद्ध का दिन समाप्त हुआ। और हथियार डालने का समय है।

गोवर्धन ने बिगुल की आवाज़ सुनते ही अपने हाथ रोक दिए। उसने अपने विपक्षी को लम्बे और कठोर युद्ध के बाद अभी निशस्त्र किया था और घुटनों पर ले आया था। *अब एक और मारक प्रहार का समय है,* उसने सोचा और अपनी गदा को उस आदमी के सिर पर मारने के लिए ऊपर उठाया।

'रुको, गोवर्धन,' थोड़ी दूर से महिपाल तोमर चिल्लाया। 'युद्ध का दिन समाप्त हो गया है। अपनी प्रतिष्ठा ना गिराओ। अपने राजा की प्रतिष्ठा ना गिराओ।'

दिल्ली का राजा महिपाल, गोवर्धन का दूर का रिश्तेदार था, हालांकि जब उसकी माँ ने एक बार दूर-दराज के इस रिश्ते को समझाने की कोशिश की थी, तो गोवर्धन का सिर थोड़ी देर के बाद ही घूमने लगा था। उसे बस इतना समझ आया था कि उसके पिता और महिपाल दूर के रिश्ते में चचेरे भाई हैं।

गोवर्धन ने ठंडी सांस ली। राजा अच्छा आदमी था, लेकिन कभी-कभी उसका इतना अच्छा होना मुश्किल में डाल देता था।

मिसाल के लिए उसका ये फैसला कि पश्चिम में दिल्ली से बमुश्किल बीस किलोमीटर दूर एक मैदान में दुश्मन से लड़ाई करना, जबकि सलाहकारों ने उन्हें सुझाव दिया था कि उन्हें अपनी मज़बूत दीवारों से घिरी राजधानी में ही रहकर युद्ध करना चाहिए।

महिपाल इस सुझाव पर भड़क उठा था। 'क्या? मैं अपने शहर की दीवारों के पीछे छिपा रहूँ जबकि हमलावर मेरी ज़मीन पर घूमते रहें? मेरी आँखों के सामने

गाँवों को लूटते रहें? और मैं चूड़ियाँ पहनकर बैठा रहूँ? शेर गीदड़ से छिपता नहीं है। वो अपने इलाक़े में घुसने का दुस्साहस करने वाले को टुकड़ों में चीर देता है।'

निजी तौर पर, गोवर्धन भी उदार राजा के मुक़ाबले उसके समझदार सलाहकारों से सहमत था। लेकिन राजा की सेना में एक अधिकारी होने के नाते उसके पास आदेश मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। महिपाल वास्तव में चाहता था कि तुर्कों से दिल्ली के काफ़ी बाहर लड़ाई की जाए, लेकिन जिस रफ़्तार से तुर्क सेना आगे बढ़ी थी, उससे वो चौंक गया था और मजबूरी में उस मैदान पर लड़ना पड़ रहा था जहाँ वो नहीं लड़ना चाहता था।

आख़िरकार तुर्कों को बिना किसी वजह के ही इतिहास की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में नहीं गिना जाता है। निर्मम, तेज़ी से आगे बढ़ने वाले, कड़ी मेहनत करने वाले। केवल अपनी बर्बरता और क्रूरता से दुश्मनों का हौसला तोड़ देने में काबिल।

लेकिन राजपूत सेना ने मज़बूती से मुक़ाबला किया था और तुर्कों को रोक दिया था। गोवर्धन ने भी पूरा दिन दुश्मन सेना से लड़ते हुए बिताया था, जिसका अन्त गज़नी के उस सैनिक के साथ निर्मम लड़ाई में हुआ था, जो अब उसकी दया पर था।

वो आदमी एक मज़बूत प्रतिद्वन्द्वी था और उसे ज़िन्दा छोड़ना मूर्खता थी क्योंकि वो अगले दिन तरोताज़ा होकर फिर लड़ने आ जाता। लेकिन क्षत्रिय प्रतिष्ठा कहती थी कि युद्ध का दिन ख़त्म होने के बाद हथियार का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

तभी उसके दिमाग़ में एक विचार आया।

घबराया हुआ तुर्क ज़मीन पर पड़ा था, उसकी हथेलियाँ खुली पड़ी थीं। गोवर्धन ने अपनी गदा नीचे की और उस आदमी की मदद करने के बहाने उसके पास पहुँचा। जब उसने ऐसा किया, तब अपना पैर उस आदमी के दाहिने हाथ पर रख दिया। फिर वो आगे की ओर बढ़ा और अपने पैर से उसकी हथेली को मसल दिया, और ये सुनिश्चित किया कि कुछ पलों तक उसके शरीर का पूरा वज़न उसके दुश्मन की उँगलियों और कलाई पर आ जाए।

सालों से गोवर्धन को ये बताया गया था कि उसका नाम बिल्कुल सही रखा गया है। क्योंकि वो एक पहाड़ की तरह दिखता है : विशालकाय चट्टान की तरह और रोबदार। वो ज़्यादातर पुरुषों से ऊँचा था, और क़रीब-क़रीब उतना ही चौड़ा था जितना वो लम्बा था, चौड़े कंधे और छाती, मोटी कमर और गठीली बाँहें, जांघें और पिंडलियाँ। उसका वज़न उसके प्रतिद्वन्द्वी के लिए काफ़ी ज़्यादा साबित हुआ, जो दर्द से चीख़ उठा जब उसकी उँगलियों और कलाई की हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। लेकिन उसकी चीख़ उस शोर में गुम हो गई जो हज़ारों सैनिकों के युद्ध के मैदान से लौटने की वजह से पैदा हो रहा था।

'इससे तुम मुसीबत से बचे रहोगे,' गोवर्धन ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा। फिर वो आराम से नीचे झुका और तुर्क के सिर पर थपकी दी। वो मुड़ा और लौटने लगा। तोमर छावनी की तरफ़ जाने का रास्ता लम्बा था।

जब वो चल रहा था तो अपने साथ चल रहे दिल्ली के दूसरे सैनिकों को देखते हुए मुस्कुराता जा रहा था। तोमर सेना के लिए आज का दिन अच्छा था। उन्होंने गज़नी की सेनाओं को आगे बढ़ने से रोक दिया था।

गोवर्धन के चेहरे पर थोड़ी देर के लिए उदासी आई जब उसे याद आया कि कैसे उसका घोड़ा मारा गया था, उसी आदमी के भाले के वार से, जिसे उसने अभी धूल चटाई थी। फिर उसने कंधे उचकाए। हालत इससे भी बुरी हो सकती थी। वो अभी भी ज़िन्दा था, और गम्भीर रूप से घायल भी नहीं था, जो कि सुबह उसके साथ युद्ध में गए ज़्यादातर सैनिकों के लिए कहा जा सकता था।

जब उसने अपने निजी तम्बू में प्रवेश किया, उसके नौकर ने उसका कवच उतारने में मदद की, फिर ठंडे पानी की एक बाल्टी उसे थमाई। गोवर्धन ने उसे अपने शरीर पर डाल लिया, अपने कपड़े उतारने की ज़रूरत भी नहीं समझी। राहत और ख़ुशी के मिले-जुले भावों से वो हाँफने लगा जब पानी उसकी दुखती मांसपेशियों पर से गुज़र रहा था। नौकर ने उसे एक सूखा कपड़ा दिया, जिससे उसने शेर की तरह अपने बालों को पोंछ लिया। फिर उसने पहले अपनी मोटी मूँछ को संवारा, फिर उसे तुरन्त ही अच्छी तरह घुमा लिया।

दूत के आने की घोषणा हुई। गोवर्धन ने उसे अन्दर बुलाया। दूत ने सिर झुकाकर कहा, 'महाराज महिपाल आपको बुला रहे हैं, सेनापति।'

'महाराज को कहो कि मैं तुरन्त हाज़िर होता हूँ।'

गोवर्धन ने जल्दी-जल्दी साफ़ कपड़े पहने और राजा के तम्बू की तरफ़ चल दिया। वो उम्मीद कर रहा था कि वो लोग तुर्क सेनापति, करीम की नई रणनीतियों पर चर्चा करेंगे, जो दरअसल भारत में तुर्कों के प्रधान सेनापति, सालार मक़सूद का प्रेमी था।

रणनीतियाँ आश्चर्यजनक रूप से अच्छी थीं। इसमें महमूद की तरह आक्रमण की शैली नहीं थी। ये शैली थी कि दुश्मन की लड़ने की क्षमता को नष्ट कर दिया जाए। ये जीतने और शासन करने के लिए बेहतर थी, बनिस्पत सिर्फ हमला करने और लूटने के लिए। उसने ये भी सुना था कि करीम की ये बेहतर रणनीतियाँ उन युद्धों में देखी गई हैं जो दिल्ली के रास्ते में उसने जीते थे। और ये रणनीतियाँ हर जगह एक जैसी भी नहीं थीं। वो हर इलाक़े और लड़े जा रहे हर युद्ध के साथ बदल जाती थीं। वो उस ज़मीन और दुश्मन के हिसाब से ढाली जाती थीं जिसके ख़िलाफ़ लड़ना है। यह काफ़ी कुछ ऐसा था कि करीम और उसका मालिक, सालार मक़सूद भारत के अलग-अलग समुदायों की संस्कृति, बारीक़ियों और अनुमानित रणनीतियों को अच्छे से समझ रहे थे। ये तो तोमर सेना का बड़ा आकार था जिसने आज के दिन उन्हें इस लड़ाई में टिकाए रखा था; ऐसा दिन जो बेनतीजा ख़त्म हुआ था। लेकिन अगले दिन तोमर सेना को कुछ अलग करना ही होगा, अगर वो युद्ध में जीतना चाहती है। गोवर्धन की उम्मीद थी कि चर्चा इसी मुद्दे के इर्द-गिर्द होगी।

लेकिन जैसे ही गोवर्धन ने राजसी तम्बू के पर्दे हटाए, उसके चेहरे पर निराशा छा गई। राजा के चहेतों ने उसे घेर रखा था, वो हँसी-ठहाके लगा रहे थे और जश्न

शुरू हो गया था। शराब बह रही थी और बड़े-बड़े थालों में स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जा रहे थे।

ये सोचते हैं कि युद्ध एक जलसा है, गोवर्धन ने खट्टे मन से सोचा।

तम्बू में उपस्थित अधिकतर पुरुषों के समान, उसका बचपन ख़ुशहाल नहीं रहा था। जब वो बहुत छोटा था, तभी उसके पिता एक युद्ध में मारे गए थे, और उसकी पैतृक सम्पत्ति उसके चाचा ने हथिया ली थी। गोवर्धन और उसकी माँ को प्रतिदिन अपमान का घूँट पीना पड़ता था, और अपने समृद्ध सम्बन्धियों की दया पर जीवित रहना पड़ता था।

गोवर्धन को जैसे ही मौक़ा मिला वो सेना में शामिल हो गया। उसने अगले दस साल तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए बिताए, जब तक कि उसे एक हज़ार लोगों की कमान, और अपनी एक छोटी रियासत नहीं मिल गई। उसके थोड़े समय बाद ही उसके चाचा की मौत हो गई, लेकिन गोवर्धन अपने ग़रीबी भरे बचपन के दिनों की कड़वाहट को भूल नहीं पाया था। साथ ही, वर्षों की मुश्किलों ने उसका स्वभाव ऐसा बना दिया था कि वो जीवन की सच्चाइयों के प्रति शंकालु हो गया था। वो राजा महिपाल और उसके सामन्तों के समान नहीं था, जो प्रतिष्ठा, उदारता और शिष्टता के क्षत्रिय सिद्धान्तों में दृढ़ विश्वास करते थे।

'आओ, आओ गोवर्धन,' महिपाल ने कहा। 'तुम आज बहुत अच्छा लड़े।' दाढ़ी, मध्यम क़द और मज़बूत काठी के शरीर का मालिक महिपाल ख़ुशी से दमक रहा था। 'कल, माँ भवानी के आशीर्वाद से, हम महमूद के पिल्लों को दुम हिलाते हुए गज़नी वापस भेज देंगे।'

'उसके काफ़ी आदमी मारे गए, महाराज,' गोवर्धन ने नम्रता से कहा। 'हमसे ज़्यादा, मुझे पूरा विश्वास है।'

'हम कल इसे ख़त्म कर देंगे। सामने से हमारा एक आक्रमण तुर्कों के लिए काफ़ी होगा।'

'महाराज, उसकी घुड़सवार सेना अभी भी ख़तरनाक हैं। और मुझे सन्देह है कि उसके पास और भी सेना है जो—'

महिपाल ने गोवर्धन को बीच में रोकते हुए, तिरस्कारपूर्वक अपना हाथ हवा में हिलाया। 'वो कोई भी कोशिश करे, हम तैयार रहेंगे। आओ, हम कल के लिए रणनीतियों पर चर्चा करें।'

दिल्ली का राजा एक मेज की तरफ़ बढ़ा जिस पर हाथी दांत की कई छोटी आकृतियाँ व्यवस्थित थीं, जो घुड़सवारों, पैदल सेना, तीरन्दाज़ों, और अन्य सैन्य इकाइयों को दर्शाती थीं। उसके दरबारी और सेनापति भी पीछे गए। उन सभी के हाथों में शराब के प्याले थे।

कई घंटे बीतने के बाद जब गोवर्धन अपने तम्बू में वापस लौटा, तो उसका सिर घूम रहा था। वहाँ काफ़ी लम्बी चर्चा हुई थी, साथ में शराब के कई दौर चले थे, और उसके बाद सत्र आख़िरकार समाप्त हुआ था।

'मेरे शेरों, जाकर अच्छी नींद लो,' महिपाल ने चहकते हुए कहा था जब सारे आदमी बाहर निकल रहे थे। बड़ी मात्रा में शराब पीने के बावजूद राजा के पैर और

उसकी आवाज़ दोनों स्थिर थे। ये पहली बार नहीं था, जब गोवर्धन को महिपाल तोमर की शराब को पचाने की इस क्षमता पर अचरज हुआ था।

गोवर्धन अपने तम्बू में पहुँचा और बिस्तर पर गिर गया। उसने अपने कपड़े नहीं बदले। ना ही अपना मुँह धोया। उसने बस अपनी आँखें बन्द कीं और उसे लगा कि उसका दिमाग़ सुन्न हो गया है।

हर तरफ़ अंधकार है।

और फिर वहाँ उजाला हो गया।

वो एक मैदान में था।

उसने चारों तरफ़ देखा।

मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?

कुछ तो गड़बड़ थी। रोशनी अजीब तरह से गिर रही थी। जैसे कि सूर्य टिमटिमा रहा हो।

क्या बकवास है?

अचानक वो दौड़ने लगा। मैदान से होते हुए। चारों तरफ़ फैली लम्बी घास के बीच से दौड़ने लगा। उस रफ़्तार से भी तेज़ जितना एक इंसान के लिए मुमकिन थी। आवाज़ की रफ़्तार से।

और फिर वो अचानक रुक गया।

एक साफ़ मैदान।

कई लाशें एक कतार में वहाँ रखी थीं। उसके आदमियों की लाशें। जिनका अन्तिम संस्कार किया जा रहा था।

पृष्ठभूमि में उसे विलाप सुनाई दिया। धुआँ उसकी आँखों में चुभ रहा था। लपटों की गर्मी से उसके शरीर से पसीना निकल रहा था।

फिर उसे एक ऐसी चिता दिखाई दी जो जल नहीं रही थी। उस पर एक लाश थी। घायल। ये उस तुर्क की लाश थी जिसके साथ उसने युद्ध का दिन ख़त्म होते समय लड़ाई की थी। वही जिसका हाथ उसने कुचला था। तुर्क के चकनाचूर हाथ से ख़ून बहता जा रहा था। अचानक, तुर्क ने अपनी आँखें खोलीं। उसका मुँह हिलने लगा, जैसे कि वो कुछ बोल रहा हो। लेकिन कोई आवाज़ नहीं आई।

आख़िर ये सब हो क्या रहा है?

तभी, तुर्क की चिता में आग लग गई। उसकी गर्मी गोवर्धन को और झुलसाने लगी। उसे थोड़ा और क़रीब खींच लिया गया। धुआँ अब दम घोंट रहा था।

और फिर उसे तुर्क की आवाज़ सुनाई दी। साफ़। डरावनी। *अब तुम्हारी बारी है, काफ़िर।*

गोवर्धन एकाएक जग गया, उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। जब उसने अपने चारों तरफ़ देखा, उसे अचानक समझ आया कि वहाँ वाक़ई में धुआँ है और अब वो उसके तम्बू में फैल रहा है। वो अपने बिस्तर से कूदा, अपनी गदा उठाई और तम्बू से बाहर दौड़ पड़ा।

उसके सामने का जो दृश्य था, वो नारकीय था। आसमान में अभी भी अंधेरा था लेकिन हर तरफ़ रोशनी थी। उन तम्बुओं की रोशनी जिन्हें जला दिया गया था।

घोड़े डर कर इधर-उधर भाग रहे थे, और उन आदमियों को कुचल रहे थे जो उन्हें रोकने की कोशिश कर रहे थे। युद्ध के नारे और चीख़-पुकार वहाँ गूँज रही थी, कुछ आदमी दूसरों पर हमले कर रहे थे, और उन्हें कुचल रहे थे। एक आदमी ज़ोरों से चीख़ता हुआ उससे आ टकराया। जब उस आदमी का सन्तुलन लौटा, गोवर्धन ने देखा कि उसका चेहरा ख़ून से लथपथ था। उसकी दाहिनी आँख से ख़ून निकल रहा था और आँख की पुतली क़रीब-क़रीब पूरी बाहर आ गई थी, बस एक पतली नस और कुछ पेशियों के सहारे लटक रही थी।

तभी, गोवर्धन को महसूस हुआ कि उसकी दाहिनी तरफ़ से कोई घुड़सवार तेज़ी से आ रहा है। वो ऐन वक़्त पर घूमा और अपने ऊपर हुए तलवार के हमले को रोका। तलवार उसकी गदा से टकराई और चिंगारियाँ निकल पड़ीं। तुर्क घुड़सवार ने अपने घोड़े को रोका। उसने मारक हमला करने के लिए अपनी तलवार दोबारा उठाई। लेकिन उसके पहले ही गोवर्धन ने अपनी गदा हवा में घुमाई। गोवर्धन के ऊँचे डील-डौल और भीमकाय शरीर की ताक़त के सहारे, गदा उस तुर्क घुड़सवार से टकराई, उसकी पसलियाँ टूट गईं और उसकी दर्द भरी चीख़ निकल गई। कुछ क्षणों बाद, गोवर्धन के एक आदमी ने उस तुर्क के गले के आर-पार भाला निकाल दिया। वो ज़मीन पर गिर गया। गोवर्धन ने घोड़े के भागने के पहले ही उसकी लगाम संभाली और कूदकर उस पर सवार हो गया।

'यहाँ क्या हो रहा है?' गोवर्धन ने उस भालाधारी सैनिक से पूछा।

'तुर्क बदमाशों ने हम पर तब हमला किया जब हम सो रहे थे, स्वामी,' उस सैनिक ने युद्ध के भारी शोर के बीच चीख़ते हुए कहा। 'उन्होंने हमारे सन्तरियों को ज़रूर मार गिराया होगा।'

गोवर्धन ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। उसे कुछ अनिष्ट की आशंका हुई। *सत्यानाश। ये तो तबाही है। मुझे महाराज को यहाँ से निकालना होगा।*

'मैं महाराज के तम्बू की तरफ़ जा रहा हूँ,' गोवर्धन चीख़ा। 'जितने आदमी हो सकते हैं, उन्हें इकट्ठा करो और वहाँ पहुँचो। अभी!'

गोवर्धन ने घोड़े को ऐड़ लगाई और महिपाल के तम्बू की तरफ़ तेज़ी से बढ़ने लगा। तुर्क पैदल सैनिकों ने उसे दो बार रोकने की कोशिश की। बिना रुके, उसने अपनी गदा से उन्हें दूर भगाया और घोड़े पर सवार रहा।

जब वो महिपाल के तम्बू के पास पहुँचा तो देखा कि राजा बख्तरबन्द होकर तैयार है। उसका पसन्दीदा घोड़ा भी पहले से वहाँ खड़ा है। क़रीब पचास घुड़सवार तम्बू की निगरानी कर रहे थे। गोवर्धन ने अपना घोड़ा रोका और कूदकर नीचे उतरा।

'भगवान का शुक्र है कि आप सुरक्षित हैं, महाराज,' गोवर्धन ने कहा। 'हमें तुरन्त यहाँ से निकलना होगा!'

महिपाल ने उसे घूरकर देखा। 'युद्ध के मैदान से भाग जाएँ? क्या तुम पागल हो? मैं एक तोमर हूँ!'

गोवर्धन ने अविश्वसनीय दृष्टि से उसे देखा। 'महाराज, दुश्मन ने रात में हमला किया है। उसने नियम तोड़े हैं, आपने नहीं। ऐसी परिस्थितियों में अपनी जान बचाने

में कोई शर्म नहीं है। और भी युद्ध आएँगे। लेकिन आपको जीवित रहना होगा। अगर आप ना रहे तो दिल्ली बर्बाद हो जाएगी!'

महिपाल पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। 'तुम कैसे क्षत्रिय हो, गोवर्धन? मैं घर लौटूँगा एक नायक की तरह, जीवित या मृत। अब या तो मेरे साथ आओ, या रास्ते से हट जाओ!' वो अपने घोड़े पर सवार हुआ, फिर दूर एक झंडे की तरफ़ अपनी तलवार से इशारा किया। 'सैनिकों, उनका कायर सेनापति करीम वहाँ छिपा है। मैं कहता हूँ कि हम सीधे उस पर हमला करें और इस लड़ाई को हमेशा के लिए ख़त्म कर दें। कौन है मेरे साथ?'

सभी सैनिकों ने अपनी तलवारें उठाकर तेज़ आवाज़ में गर्जना की।

महिपाल गरजा, 'जय भवानी!'

'जय भवानी!'

दिल्ली का राजा तुर्कों की तरफ़ तेज़ी से छलांग लगाता बढ़ने लगा। उसके बहादुर सैनिक भी उसके पीछे पूरे जोश में चलने लगे।

यह आत्महत्या है, गोवर्धन ने निराश होकर सोचा। थोड़ी देर के लिए, उसने सोचा कि वो घोड़े पर सवार होकर भाग जाए। लेकिन, वो जितना भी व्यावहारिक रहा हो, क्षत्रिय कर्तव्य के सिद्धान्त उसके अन्दर भी समाए हुए थे।

फिर एक अन्तिम आक्रमण ही सही, उसने दुखी मन से सोचा, और रकाब में पैर डालकर घोड़े पर सवार होने लगा। जब वो ऐसा कर रहा था, अचानक उसकी नज़र एक तुर्क तीरन्दाज़ पर पड़ी जो उस पर निशाना लगा रहा था। उसी पल, एक भारतीय सैनिक ने पीछे से तीरन्दाज़ पर कटार से हमला किया और कटार को उसके दिल के आर-पार कर दिया। तीरन्दाज़ के धनुष से अनायास ही तीर छूट गया, जिससे गोवर्धन बाल-बाल बचा। लेकिन जब वो तीर घोड़े के सिर के पास से गुज़र रहा था, घोड़ा बिदक गया और उसने अपने असावधान सवार को दूर फेंक दिया। गोवर्धन पीठ के बल ज़मीन पर गिरा और उसे अपनी आँखों के आगे तारे नाचते दिखाई दिए, जब उसका सिर ज़मीन पर टकराया।

और फिर आँखों के आगे अंधेरा छा गया।

'सेनापति, सेनापति, क्या आप ठीक हैं?'

गोवर्धन को आवाज़ सुनाई तो दी लेकिन ऐसा लग रहा था कि जैसे वो दूर से आ रही हो। धीमी। दूर, बहुत दूर से आती हुई।

उसे अजीब सी अनुभूति हो रही थी कि वो किसी कुएँ की पेंदी में फंसा हुआ है।

मैं यहाँ कैसे आया?

उसने ऊपर की तरफ़ तैरने की कोशिश की लेकिन उसकी बाँहों ने साथ नहीं दिया।

'सेनापति, क्या आप मुझे सुन सकते हैं?'

कोई मुझे तलाश रहा है...काश वो मुझे सोने देते...

तभी उसे महसूस हुआ कि उसका कंधा बुरी तरह हिलाया जा रहा है। उसी पल, वो पूरे होश में आया और देखा कि वो सीधा बैठा है, उसे एक सैनिक ने संभाल रखा है और दूसरा चिन्तित होकर उसे देख रहा है।

'मैं...ठीक...हूँ...' उसने टरटराती हुई आवाज़ में कहा।

उसने सैनिक की तरफ़ देखकर सिर हिलाया, फिर अपनी आँखें भींच लीं जब उसे अपने सिर के पीछे एकाएक तेज़ दर्द महसूस हुआ।

'आराम से, सेनापति...आप बुरी तरह गिरे थे,' सैनिक ने कहा। ये वही सैनिक था जिसने उस तुर्क घुड़सवार को मारा था जिसका घोड़ा गोवर्धन ने ले लिया था।

तभी उसे याद आया कि युद्ध चल रहा है। 'कहाँ...है...'

'मेरे साथ हमारे क़रीब तीस आदमी हैं,' सैनिक ने घुड़सवारों के एक दल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। 'हम यहाँ आपके आदेश के अनुसार पहुँचे हैं। महाराज और उनके सैनिक तुर्कों पर आक्रमण करने गए हैं। हम क्या करें, स्वामी?'

'हम भी...निस्सन्देह उनके साथ ही जाएँगे,' गोवर्धन ने कहा और खड़े होने की कोशिश करने लगा। वो अभी भी थोड़ा अस्थिर था। 'मुझे दूसरा घोड़ा दो।'

जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले, उसे दूर से जीत की गर्जना सुनाई दी। थोड़ी देर बाद, दुख भरे विलाप भी गूँजने लगे।

गोवर्धन ने उस दिशा में देखा जिधर महिपाल आक्रमण करने गया था, और उसके सीने में जैसे एक तेज़ चुभन हुई। उसकी आँखों से आँसू फूट पड़े। 'नहीं... प्रभु राम, दया करो...'

महाराज महिपाल तोमर का कटा हुआ सिर एक भाले पर रखा हुआ था और गज़नी के सैनिक ख़ुशी से चीख़-चिल्ला रहे थे। दिल्ली के राजा का मुँह दुख और पीड़ा से खुला हुआ था। उसकी खुली आँखों में अभी भी क्रोध की ज्वाला भड़क रही थी। भाले पर टंगी उसकी गर्दन से ख़ून टपक रहा था।

इस वीभत्स दृश्य को देखकर कुछ भारतीय सैनिकों ने अपने हथियार फेंक दिए थे और समर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर कर लिए थे। गज़नी के सैनिकों ने उन्हें निर्दयता से काट डाला।

तुर्कों की तरफ़ से ज़ोर की आवाज़ें आ रही थीं। 'कोई क़ैदी नहीं! कोई क़ैदी नहीं! सभी काफ़िरों को मार डालो!'

तुर्क किसी भी जगह युद्ध के नियम-क़ायदे नहीं मानते थे। उन्हें सिर्फ़ जीत से मतलब होता था।

गोवर्धन सम्मोहित सा खड़ा उस दृश्य को देख रहा था, उसका दिमाग़ उस दृश्य को समझने की कोशिश कर रहा था जो उसकी आँखें दिखा रही थीं। उसे अपने कंधे पर एक हाथ महसूस हुआ और वो नींद से जागा।

'सेनापति...' उस आदमी ने अनिश्चितता भरे स्वर में कहा।

गोवर्धन ने उसकी ओर, फिर अपने सभी सैनिकों की ओर देखा। सभी उसकी तरफ़ निहार रहे थे और उसके अगले आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

विकल्प स्पष्ट था। *मृत्यु या अपमान।*

एक सैनिक बोल पड़ा। 'हमें क्या करना है, स्वामी?'

नहीं। वास्तव में तो विकल्प भिन्न था। *आज की मौत, या फिर किसी और युद्ध के लिए ज़िन्दगी। आज मरो, या बाद में बदला लो।*

'यहाँ से निकलो,' आख़िरकार गोवर्धन ने कहा, और देखा कि उसके सैनिकों ने भी राहत महसूस की।

और वो घोड़े पर सवार होकर दूर जाने लगे। अपने नेक राजा के कटे हुए सिर से दूर, जो पराजित हुआ था प्रतिष्ठा के साथ। कपटी तुर्कों से दूर, जो जीते थे धोखाधड़ी के साथ।

लेकिन गोवर्धन के पीछे चल रहे ज़्यादातर घुड़सवारों के मन में एक ही विचार था। *इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता कि तुर्क कैसे जीते। वो जीते थे। यही मायने रखता है।*

अध्याय 10

सराय का मालिक उसका इन्तज़ार कर रहा था। कई घंटों की तेज़ घुड़सवारी के बाद, वो नौजवान काफ़ी थक गया था और उसने ख़ुद को अपने कमरे में बन्द कर लिया और फिर सारा दिन सोता रहा। रात में वो तरोताज़ा होकर उठा, और फिर अपने सफ़र पर निकल पड़ा। अगले कुछ दिनों तक वो ऐसा ही करता रहा।

हालांकि शुरूआत में वो बेहद सतर्क था, लेकिन उसके सफ़र की एकरसता और उसके घोड़े की स्थिर चाल ने उसे थोड़ा ढीला कर दिया था। उसने एकाध बार जम्हाई ली, फिर उसे महसूस हुआ कि उसकी पलकें बन्द हो रही हैं और उसकी ठोड़ी छाती की तरफ़ झुक रही है...

'रुको, उधर कौन जा रहा है?'

नौजवान अपनी नींद से जगा, और उसे अपनी असावधानी पर खीझ भी आई। इस बारे में कुछ भी करने के लिए अब काफ़ी देर हो चुकी थी।

'मैं चैन की तलाश में आया हूँ, भाई,' नौजवान ने शान्त लहजे में कहा।

'धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहो और अपने हाथ वहाँ रखो जहाँ से मैं उन्हें देख सकूँ।'

नौजवान घुड़सवार ने ऐसा ही किया। जब वो आवाज़ के स्रोत के पास पहुँचा तो उसे दो अलाव दिखाई दिए। उनके इर्द-गिर्द क़रीब अस्सी लोग जमा थे। दो शख़्स उस समूह से निकले और घुड़सवार के पास आए। उनमें से एक का चेहरा गोल था, आँखें छोटी थीं और गाल की हड्डियाँ ऊँची थीं, और साफ़ तौर पर वो एक तुर्क था। दूसरा सांवले रंग का लम्बा-चौड़ा शख़्स था और लगातार चारों तरफ़ देख रहा था। सतर्क। सावधान।

तुम कौन हो सकते हो, नौजवान घुड़सवार ने सांवले रंग वाले शख़्स के बारे में सोचा। तुम भारतीय दिखते हो। लेकिन उसने अपने विचार मन में ही रखे।

तुर्क दिखने वाले शख़्स ने उस नौजवान अजनबी की तरफ़ घूरकर देखा। रात के अंधेरे में नौजवान घुड़सवार का चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा था, लेकिन ये तो स्पष्ट था कि वो अच्छे डील-डौल, चौड़े कंधे और मज़बूत बाँहों वाला नौजवान था।

'कौन हो तुम?' तुर्क दिखने वाले शख़्स ने नौजवान घुड़सवार से पूछा, उसके लहजे से साफ़ हो गया कि वो तुर्क है।

नौजवान घुड़सवार ने अपने हाथ फैला दिए। 'मैं अल्लाह की तलाश करता हूँ, भाई। मैं एक पीर की तलाश में हूँ जो मेरे रूहानी सफ़र में मुझे रास्ता दिखाए। मैंने सुना है कि भारत में कुछ महान सूफ़ी सन्त रहते हैं। शायद मेरी तलाश मुझे वहीं तक ले जाए।'

'भारत, हुँह?' तुर्क ने पूछा। 'ये एक दिलचस्प मेल है। आग के पास बैठे हुए कुछ भाई वहीं से हैं। हाल ही में वो सच्चे धर्म में शामिल हुए हैं और उस महान मस्जिद को देखने के लिए ग़ज़नी जा रहे हैं जो महान सुलतान ने बनवाई है।'

'अच्छा, फिर तो उन्हें काफ़ी अच्छा लगेगा,' नौजवान घुड़सवार ने जवाब दिया। 'वो इमारत वाक़ई में ख़ूबसूरत है।'

'क्या तुम हमारे साथ रात के खाने के लिए आना चाहोगे? तुम रात में रुककर सुबह आगे जा सकते हो।'

नौजवान घुड़सवार एक पल के लिए भी नहीं हिचकिचाया। इस काम में ख़तरा बहुत ज़्यादा था। 'आपकी पेशकश के लिए शुक्रिया। लेकिन मैं आगे बढ़ते रहना चाहूँगा।'

तुर्क उस नौजवान घुड़सवार को काफ़ी देर तक देखता रहा। अन्त में, उसने सहमति में सिर हिलाया। 'ठीक है, हम तुम्हें नहीं रोकेंगे।' फिर, जब वो नौजवान घुड़सवार वापस जाने लगा, तो उसने पुकारकर पूछा। 'तुमने अपना नाम क्या बताया था?'

नौजवान घुड़सवार ने भारत में अपने मिशन के लिए पहले से अपना नक़ली नाम सोच रखा था। उसे इस बारे में सही सलाह मिल चुकी थी। 'असलान...मेरा नाम असलान है।'

'हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा नाम असलान है।'

असलान जग गया और देखा कि सुहेलदेव उसके पास खड़ा है, उसके चेहरे पर एक लम्बी मुस्कान है।

'फिर से ख्वाब देख रहे हो?'

असलान ने बिना कुछ कहे हामी भरते हुए सिर हिलाया, उठा और हाथों से अपने कपड़े झाड़ने लगा। पूरी तरह होश में आते हुए। क्या उसने कुछ खुलासा कर दिया था? फिर, लापरवाही का दिखावा करते हुए, उसने उस पतले कम्बल को समेटना शुरू कर दिया जिस पर वो लेटा हुआ था। उसकी खुरजी तकिये का काम करती थी।

सुहेलदेव उसे लम्बे समय तक आँकता रहा। 'तुम पक्के तौर पर इस मिशन पर फिर से जाना चाहते हो?'

असलान सुहेलदेव के दस्ते को लम्बी अवधि के लिए बीच-बीच में छोड़कर चला जाता था। उसने सुहेलदेव को बताया था कि वो तुर्कों की जासूसी कर रहा है, जो अपने विजय अभियान पर उत्तर भारत की ओर लौट गए थे। उनकी नई रणनीतियों पर कोई भी ख़ुफ़िया जानकारी सुहेलदेव के लिए बहुत क़ीमती थी।

और असलान आम तौर पर फ़ायदेमन्द जानकारी के साथ लौटता था। इसलिए असलान के इस तरह से दस्ते को छोड़कर जाने से राजकुमार को आपत्ति नहीं थी। लेकिन इस तरह के मिशन में ख़तरे तो होते ही हैं।

'हमने पहले भी इस बारे में चर्चा की है,' असलान ने कहा। 'मैं एक तुर्क हूँ। मैं उनकी भाषा और रीति-रिवाज जानता हूँ। आपके लिए उनकी जासूसी करना मेरे लिए आसान है। आप घबराएँ नहीं, मैं ठीक रहूँगा। मैं अब निकलूँगा और थोड़े समय बाद आपसे मिलूँगा।'

'ठीक है। लेकिन सावधान रहना, मेरे दोस्त।'

असलान मुस्कुराया। 'सावधान मेरे नाम में ही जुड़ा है।'

'फिर तो ये ख़ामोश शब्द है?'

असलान ज़ोर से हँस पड़ा। उसने मुस्कुराते हुए सुहेलदेव को गले लगाया। 'आप भी अपना ख्याल रखें, राजकुमार।'

अध्याय 11

वो महिला उसके पास चलकर गई, और थोड़ा झुक गई, ताकि उसका वक्ष-अन्तराल साफ़-साफ़ दिखने लगे। फिर वो फुसफुसाकर बोली, 'मुझे तुमसे अकेले में बात करनी है।'

'धन्यवाद, लेकिन मुझे नहीं करनी,' गोवर्धन ने ग़ुस्से में लाल होते हुए तुरन्त कहा।

चाहे उसकी शख़्सियत जो भी इशारा देती हो, गोवर्धन महिलाओं के मामले में बिल्कुल अनाड़ी था। और ये महिला, वैसे तो अपने यौवन की पहली लालिमा गुज़ार चुकी थी, लेकिन अभी भी बेहद आकर्षक थी। हालांकि उसके चेहरे पर थोड़ा खुरदुरापन था, और उसका शृंगार भी गोवर्धन की पसन्द के हिसाब से ज़्यादा ही भड़कीला था।

'मूर्ख, मैं तुम्हारे आदमियों की और तुम्हारी ज़िन्दगी बचा सकती हूँ!' वो धीमी आवाज़ में फुफकारते हुए बोली। 'मेरे तम्बू में आओ!' फिर उसने गोवर्धन के बालों को सहलाया और तेज़ आवाज़ और छेड़छाड़ वाले अन्दाज़ में इतनी ज़ोर से कहा कि उसके चारों तरफ़ लोग सुन सकें, 'मेरे साथ आओ, मेरे शेर...शर्मीले ना बनो...'

वो औरत उठी और अपने कूल्हे मटकाते हुए, धीरे-धीरे अपने तम्बू की ओर चल पड़ी, जाते-जाते उसने गोवर्धन पर एक लुभावनी नज़र डाली। गोवर्धन उठा और उसके पीछे चल दिया, उसके कान पीछे से आती उत्साहवर्धक चीख़ों और भद्दे मज़ाक़ की वजह से जलने लगे थे।

बस कुछ घंटे और, उसने अपने को याद दिलाया। *कल सुबह, हम सिरत में होंगे।*

सिरत मनोहरगढ़ की राजधानी थी, जो मेरठ से सटा एक छोटा राज्य था। तोमर सेना की करारी हार के बाद, गोवर्धन और उसके आदमियों ने वहाँ जाने का निर्णय लिया, इस उम्मीद में कि वो इसके राजा जयचन्द की सेवा में हाज़िर होंगे, जो महिपाल तोमर का दामाद था। जब वो लोग मनोहरगढ़ की सीमा पर पहुँचे थे, गोवर्धन ने वहाँ के पहरेदारों को ये बता दिया था।

पहरेदारों के कप्तान ने सहानुभूतिपूर्वक सिर हिलाया था। 'मुझे विश्वास है कि महाराज आपको देखकर ख़ुश होंगे,' उसने कहा और गोवर्धन को आगे बढ़ने दिया था।

वो लोग सिरत शहर से अब कुछ घंटों की ही दूरी पर थे। उन्होंने रात में आराम करने और अगली सुबह फिर से सफ़र करने का फैसला किया था। पता नहीं कहाँ से यायावर गवैयों और नर्तकियों का एक दल आया और उन्होंने उसी स्थान के पास अपना शिविर लगा लिया था जहाँ गोवर्धन के सैनिक रात में रुके थे।

उनके बुलावे पर, गोवर्धन और उसके आदमियों ने रात के खाने पर गवैयों का न्योता स्वीकार कर लिया था।

और अब वो एक नर्तकी के तम्बू में खड़ा था।

'आओ और यहाँ बैठो,' नर्तकी ने बिस्तर पर अपने पास की जगह पर थपकी देते हुए कहा।

'मैं यहाँ ठीक हूँ, शुक्रिया,' उसने रुखाई से कहा।

महिला ने ठंडी सांस ली। 'बेवक़ूफ़। मैं तुम्हें छेड़ने नहीं जा रही। जैसा मैं कहती हूँ, वैसा करो।'

गोवर्धन ने सावधानी बरतते हुए उसकी बात मान ली। उसने तम्बू के कपड़े के पीले पड़ चुके रंग पर गौर किया। वो नर्तकी की तरफ़ मुड़ा तक नहीं। गोवर्धन के गाल चुकन्दर की तरह लाल हो रहे थे।

'ये बेहतर है,' महिला ने ज़ोर से कहा। फिर वो उसके क़रीब झुकी और काफ़ी धीमी आवाज़ में कहा। 'जयचन्द के पास मत जाओ। वो गज़नी का साथी है। वो तुम्हें तुर्कों के हवाले कर सकता है।'

'लेकिन वो महाराज महिपाल का दामाद है,' चौंककर गोवर्धन ने विरोध जताया।

'धीरे बोलो!' महिला ने कड़े लहजे में फुसफुसाते हुए कहा।

गोवर्धन ने तुरन्त अपनी आवाज़ नीची की। 'माफ़ करना...लेकिन वो महाराज महिपाल का दामाद है।'

'हाँ, और क्या तुमने उसे उस युद्ध में अपने साथ लड़ते हुए देखा जहाँ राजा महिपाल की मृत्यु हुई थी? वो तटस्थ रहा और फिर जीतने वाले के साथ मिल गया। अफ़वाह ये है कि उसकी पत्नी उससे इतनी नाराज़ है कि वो उसके साथ एक बिस्तर पर सो तक नहीं रही।'

'तुम्हें इतनी सारी जानकारी कैसे है?'

महिला हँस पड़ी। 'ओह, तुम चौंक जाओगे ये जानकर कि "मूर्ख महिलाओं" के सामने ताक़तवर पुरुष कितनी बातों का खुलासा कर जाते हैं...ख़ासकर जब वो बेहद ख़ुश रहते हैं।'

'और तुम मुझे ये सब क्यों बता रही हो?'

'क्योंकि हममें से कुछ अभी भी अपने देश से प्रेम करते हैं। हम चुपचाप सच्चे देशभक्त की मदद करते हैं। एक सच्चे नेता की। इकलौता वो जो लड़ने का इच्छुक है और जीतने की क्षमता भी रखता है।'

गोवर्धन तुरन्त समझ गया कि वो महिला किसके बारे में बात कर रही है। *श्रावस्ती के सुहेलदेव की।*

गोवर्धन आगे झुक गया। 'क्या तुम उसे जानती हो? क्या तुम मेरा सम्पर्क उससे करा सकती हो?'

महिला पीछे की तरफ़ झुकी, और एक बटुए में कुछ ढूँढ़ने लगी जो उसके बिस्तर की बगल में लटका था। उसने उसमें से एक छोटा सा शिवलिंग निकाला और गोवर्धन को थमाया। 'सिरत से क़रीब बीस मील दूर एक गाँव है। वहाँ के मुखिया के घर जाओ। बेहतर हो कि रात में जाओ। अपने साथ एक या दो से ज़्यादा आदमी मत ले जाना। तुम्हारे साथ सभी सैनिकों का घोड़े पर सवार होकर गाँव में जाना सन्देह पैदा कर देगा। उसे ये शिवलिंग दिखाना। कहना कि उर्वशी ने तुम्हें ये दिया है। और उसे कहना कि वो तुम्हें महादेव के सच्चे भक्त से मिला दे।'

गोवर्धन ने सम्मान के साथ, दोनों हाथों से वो शिवलिंग लिया और उसे पूज्य भाव से अपने ललाट से स्पर्श कराया।

'धन्यवाद,' उसने कहा। फिर उसके चेहरे पर थोड़े से लज्जा के भाव आए। 'काश मैं तुम्हें कुछ पुरस्कार दे पाता, लेकिन मेरे पास ऐसी कोई क़ीमती चीज़ नहीं है।'

'अगर तुम उस आदमी के साथ जुड़ जाओ जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया है और कम से कम बीस तुर्कों को मार गिराओ, तो समझना कि मेरा क़र्ज़ तुमने चुका दिया है।'

गोवर्धन के मन में कई सवाल थे। तुर्कों ने उर्वशी के साथ क्या किया था? क्या वो ऐसा कुछ कर सकता था जिससे उसकी मदद हो सके? वो वास्तव में कौन थी? लेकिन उर्वशी की भाव-भंगिमा से साफ़ था कि बातचीत ख़त्म हो चुकी है।

गोवर्धन उठ गया। थोड़ी देर तक वो अजीब चुप्पी के साथ खड़ा रहा। और फिर तम्बू से बाहर निकल गया।

'उठो और चमक बिखेरो,' मार्गदर्शक ने गोवर्धन को हिलाते हुए कहा।

गोवर्धन ने अपनी आँखें भींच लीं और उन्हें हाथ से छिपाने लगा जब उगते हुए सूर्य की किरणें पेड़ों की घनी छाया के बीच से रास्ता बनाते हुए उस तक पहुँचने लगीं।

उसके चारों तरफ़, पक्षी चहचहाते हुए शोर मचा रहे थे और जंगल एक और सुबह के लिए जाग चुका था।

सावधान रहने के लिए इतना सब कुछ, गोवर्धन ने सोचा, उसे अपने आप से निराशा हुई।

उसने उर्वशी के दिशा-निर्देशों को माना था, हालांकि उसके कुछ आदमियों को डर था कि कहीं ये कोई चाल ना हो। उसके मन में भी कुछ सन्देह थे, फिर भी

उसके अन्दर से आवाज़ आ रही थी कि विश्वास भरा उसका ये क़दम बेकार नहीं जाएगा।

तो, तीन अलग-अलग गाँव, एक मुखिया, एक साहूकार, और एक किसान के बाद वो उस आदमी से मिला जो दाहिने पैर से थोड़ा लंगड़ाकर चलता था। वो जंगल में से निकला था जो उस स्थान से थोड़ी दूर पर उत्तर दिशा में था, जहाँ गोवर्धन और उसके आदमियों को शिविर डालने के लिए कहा गया था। दक्षिण में कुछ किलोमीटर तक क़रीब दो सौ एकड़ में गन्ने के खेत थे, जबकि जंगल की सीध में पास ही में एक नदी बह रही थी।

'तुम्हारा नाम क्या है?' गोवर्धन ने उस आदमी से पूछा।

'तुम्हें अभी ये जानने की ज़रूरत नहीं है,' उस आदमी ने उत्तर दिया। 'लेकिन मैं तुम्हें बता दूँगा अगर मुलाक़ात सार्थक रहेगी।'

यहाँ से, वो रहस्यमयी आदमी उसे जंगल में ले गया, लेकिन रास्ता इतना घुमावदार और उलझाने वाला था कि थोड़ी देर के बाद गोवर्धन के साथी सिपाही भी रास्ते का अन्दाज़ा लगाने में असमर्थ हो गए। कई पेड़ों, ख़ासकर बरगद, की टहनियाँ ऐसी लगती थीं जैसे किसी की बाँहें उन तक पहुँच रही हों, और उन्होंने ज़्यादातर रास्ते पर छाया कर रखी थी, जिससे पहले से घबराए हुए आदमी और ज़्यादा घबरा जाते थे। गोवर्धन और उसके साथियों से झाड़ियाँ लिपट रही थीं, जो सावधानीपूर्वक अपना रास्ता बना रहे थे, और ये भी ध्यान रख रहे थे कि जंगली जानवरों और ज़हरीले कांटों से दूर रहें। कई स्थानों पर, रास्ता ऊँची घास-फूस से ढंका था, और उन्हें काटकर गुज़रना पड़ रहा था।

अचानक, मार्गदर्शक एक मैदान में आकर रुक गया जहाँ कुछ बड़े-बड़े पत्थर रखे थे, और नदी घने जंगल में बह रही थी। मार्गदर्शक ने ऐलान किया कि इसी स्थान पर वो सभी इन्तज़ार करेंगे। और इन्तज़ार काफ़ी लम्बा हो गया। दरअसल, पूरी रात।

'मैं कितनी देर तक सोया रहा? गोवर्धन ने मार्गदर्शक से पूछा।

उस आदमी ने कंधे उचका दिए। 'कुछ घंटे। ऐसा लगता है तुम लम्बे समय तक शान्ति से सोए नहीं हो।'

'हमारा मित्र नहीं आया?' गोवर्धन ने पूछा। उसने पानी की अपनी थैली उठाई और थोड़ा पानी पिया। थोड़ा पानी उसकी घनी दाढ़ी से नीचे टपकने लगा जो उसने पिछले कुछ महीनों में बढ़ा ली थी।

'शायद तुम्हारे खर्राटों ने उसे डरा दिया,' मार्गदर्शक ने चुटकी लेते हुए कहा। 'चलो, तुम्हारे शिविर में वापस चलते हैं।'

गोवर्धन के साथियों ने उसकी तरफ़ उम्मीद भरी नज़रों से देखा जब उसने शिविर में प्रवेश किया। उसने थके हुए अन्दाज़ में अपना सिर हिला दिया। 'हम आज रात दोबारा कोशिश करेंगे,' उसने कहा और नदी की तरफ़ चल दिया।

उसने अपने चेहरे पर पानी के छींटे डाले और वो नदी से पानी पीने ही वाला था कि उसे एक घोड़े की हिनहिनाहट सुनाई दी।

गोवर्धन ने तुरन्त ऊपर देखा और पाया कि नदी के उस पार कई घुड़सवार हैं। धातु की ज़ंजीरों से बने कवच के नीचे उन्होंने चमकीले पीले अंगरखे और सफेद धोती पहन रखी थी, जिस पर लाल कमरबन्द बंधे थे—ये मनोहरगढ़ की सेना की पोशाक थी। चूँकि वो लोग गन्ने के खेतों से होकर आए थे, वो तब तक नहीं दिख रहे थे जब तक कि वो नदी के पास नहीं आ गए।

पल भर के लिए, एक-दूसरे को देखकर दोनों पक्ष सकते में आ गए। फिर, जैसे ही एक घुड़सवार ने अपना धनुष कंधे से उतारकर उस पर एक तीर रखा, गोवर्धन लड़खड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ।

'भागो!' गोवर्धन ने अपने आदमियों से चीख़कर कहा। 'भागो!'

वो भागकर अपने घोड़े की तरफ़ गया और इस बीच मनोहरगढ़ के सैनिक ने अपना तीर छोड़ दिया, जो भाग रहे गोवर्धन से कुछ फीट दूर ज़मीन में जा धंसा।

'जंगल,' मार्गदर्शक बदहवास होकर चीख़ा। 'जंगल में चलो।'

गोवर्धन अपने घोड़े पर कूदकर सवार हुआ, मार्गदर्शक को खींचकर अपने पीछे बैठाया और घोड़े को ऐड़ दी। अपने पीछे, उसे कई तीरों के चलाए जाने की आवाज़ सुनाई दे रही है। गोवर्धन के एक सैनिक की चीख़ सुनाई दी जब एक तीर उसकी पीठ में धंस गया। एक और तीर एक घोड़े की गर्दन में धंस गया और उसकी गले की नस को चीर डाला। घुड़सवार ने किसी तरह लुढ़ककर अपने को संभाला और पीछे से आ रहे गोवर्धन के एक और सैनिक ने उसे तुरन्त पकड़ लिया।

दुश्मन के घुड़सवार नदी के पार आ रहे थे। और जंगल में गोवर्धन और उसके आदमियों का पीछा कर रहे थे।

तभी एक धनुष की टंकार सुनाई दी और पीछा कर रहे सैनिकों में से एक अपने गले में धंसे तीर को पकड़े, घोड़े से नीचे गिर पड़ा। गोवर्धन ने घूमकर देखा और स्तब्ध रह गया।

एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी। 'बेहिचक निशाने लगाओ!'

पेड़ों की ऊँचाई से कई तीर दाग़े जाने लगे और शिकारी अचानक शिकार में बदल गए। आश्चर्यचकित गोवर्धन के देखते-देखते, आदमी अचानक ज़मीन में से प्रकट होने लगे और मनोहरगढ़ के सैनिकों पर हमले करने लगे।

ये लोग पत्तियों में छिपे हुए थे, गोवर्धन को समझ में आ गया। *ये पूरे वक़्त यहीं मौजूद थे!*

मार्गदर्शक अचानक गोवर्धन के घोड़े से उतरा और अपनी तलवार निकालकर लड़ाई के लिए दौड़ पड़ा।

'चलो, साथियों, अपने दोस्तों की मदद करें,' गोवर्धन चिल्लाया और वो भी इस युद्ध में कूद पड़ा। उसने इस दौरान गौर किया कि एक लम्बा आदमी निर्देश देता जा रहा है। मनोहरगढ़ के एक घुड़सवार ने भी उस आदमी को देखा और उसकी तरफ़ दौड़ लगा दी। जब उसका घोड़ा उस आदमी के क़रीब पहुँचा, घुड़सवार ने उस पर अपनी तलवार से हमला किया। उसके शिकार ने अपनी तलवार से उसके हमले को रोका तो ज़रूर, लेकिन उस हमले की ताक़त से उसका सन्तुलन बिगड़ गया और वो एक घुटने पर गिर गया।

घुड़सवार ने उलटे हाथ का वार करने के लिए अपनी तलवार उठाई। इसके पहले कि वो वार पूरा कर पाता, गोवर्धन ने अपनी गदा उसकी तरफ़ उछाल दी। गदा सीधे उसके माथे पर लगी। हालांकि लोहे की टोपी ने उस सैनिक के सिर को बचा लिया, लेकिन प्रहार इतना भयंकर था कि वो स्तब्ध रह गया। जब वो अपने घोड़े की ज़ीन पर लड़खड़ा रहा था, गोवर्धन ऊपर आया, उसे गर्दन से पकड़ा और घोड़े से नीचे धकेल दिया। लम्बे अजनबी ने उसकी गर्दन पर एक वार करके उसे ख़त्म कर दिया।

गोवर्धन घोड़े से नीचे उतरा, अपनी गदा उठाई और चारों तरफ़ देखने लगा कि क्या किसी और को मदद की ज़रूरत है। लेकिन ज़रूरत नहीं थी। ज़्यादातर दुश्मन सैनिक या तो मारे जा चुके थे या भाग गए थे। जब वो मुड़ा तो उसने पाया कि वो लम्बा आदमी उसकी तरफ़ आ रहा है।

'सहायता के लिए आपका धन्यवाद,' उस आदमी ने कहा।

'मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए,' गोवर्धन ने कहा। 'आप राजकुमार सुहेलदेव हैं ना?'

सुहेलदेव मुस्कुराया। 'बिल्कुल ठीक, महाराज।'

गोवर्धन चौंक गया। 'आप मुझे कोई और समझ रहे हैं।'

सुहेलदेव ने अपनी एक भौंह ऊपर उठाई। 'क्या सचमुच? फिर, आपका नाम क्या है?'

'गोवर्धन,' विशालकाय व्यक्ति ने जवाब दिया।

सुहेलदेव मुस्कुराया। 'पहाड़ के समान? आपके लिए यह अच्छा नाम है।'

गोवर्धन ने अपनी आँखें घुमाईं। 'ऐसा कहने वाले आप पाँच हज़ारवें व्यक्ति होंगे।'

'इसका मतलब है कि आपको पाँच हज़ार समझदार, बुद्धिमान लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है!'

गोवर्धन दिल खोलकर हँस पड़ा।

सुहेलदेव अपने आदमियों की तरफ़ मुड़ा। 'मनोहरगढ़ के ज़िन्दा बचे सैनिकों को अभयदान देना, अगर वो हमारे साथ आना चाहें। हमारा झगड़ा सिर्फ उनके राजा से है, उनसे नहीं।'

सुहेलदेव के सैनिकों ने उसका अभिवादन किया और आदेश पालन के लिए वहाँ से चले गए।

सुहेलदेव गोवर्धन की तरफ़ मुड़ा। 'मेरा अन्दाज़ा है कि आपने बुरी ख़बर नहीं सुनी है। इसलिए आप चौंक गए जब मैंने आपको "महाराज" कहा।'

'क्या बुरी ख़बर?'

सुहेलदेव ने गहरी सांस ली और गोवर्धन के कंधे पर थपकी दी। 'महाराज महिपाल तोमर को मारने के बाद, तुर्कों ने दिल्ली में नरसंहार मचा दिया। वहाँ बचे सभी पुरुषों को मार डाला गया, और महिलाओं और लड़कियों को ग़ुलामों की तरह बेच दिया गया। मन्दिरों को लूटा गया, घरों को जलाया गया और कलाकारों के काम करने के स्थानों को नष्ट कर दिया गया।'

'लेकिन क्यों?' गोवर्धन ने पूछा, उसके चेहरे पर दहशत थी। 'मैं सैनिकों को मारे जाने की बात तो समझ सकता हूँ, लेकिन निर्दोषों के साथ ऐसा क्यों?'

'तुर्क इसे सम्पूर्ण युद्ध कहते हैं,' सुहेलदेव ने कहा। 'ना सिर्फ वो अपने दुश्मन सैनिकों को मारते हैं, वो पूरे शहर को ख़त्म कर देते हैं। वो सभी पुरुषों, यहाँ तक कि बच्चों को भी मार डालते हैं। सभी महिलाओं को या तो ग़ुलाम बना लिया जाता है या फिर बदसुलूकी के लिए उनके सैनिकों को दे दिया जाता है। उनका मानना है कि इससे उनके दुश्मन दोबारा कभी उनके ख़िलाफ़ खड़े नहीं होंगे क्योंकि युद्ध करने की क्षमता ही ख़त्म हो जाएगी। सैनिक अपने आप तो नहीं लड़ते ना? उन्हें दूसरों के सहयोग की ज़रूरत होती है, जैसे किसानों की जो उन्हें भोजन देते हैं, और लोहारों की जो उन्हें हथियार देते हैं। अगर आप उन सभी को नष्ट कर देंगे, तो फिर दुश्मन दोबारा उठेगा कैसे?'

'यह बर्बरता है।'

'हाँ, लेकिन तुर्कों को अपने लिए ऐसा दर्जा पसन्द है। खैर, नरसंहार के दौरान, तोमर वंश से जुड़े हर पुरुष को ख़त्म कर दिया गया था। महाराज महिपाल के बेटों, भाइयों, भतीजों, चचेरे भाइयों—यहाँ तक कि छोटे बच्चों को भी नहीं छोड़ा गया। अब महाराज महिपाल के सिर्फ दो पुरुष सम्बन्धी जीवित हैं जो दिल्ली के सिंहासन पर दावा कर सकते हैं। पहला है जयचन्द, जिसका दावा अप्रत्यक्ष है, उसकी पत्नी के माध्यम से। और फिर दूसरा सम्बन्धी वो है जिसके साथ महाराज का ख़ून का रिश्ता है। आप।'

'लेकिन...लेकिन, मैं तो महाराज का दूर का रिश्तेदार हूँ।'

'आप उनके एकमात्र जीवित उत्तराधिकारी हैं। तुर्क ये बात जानते हैं और जयचन्द भी। वो आपको मारना चाहते हैं, महाराज। आपकी हत्या के आदेश जारी कर दिए गए हैं।'

'आपको ये सब कैसे मालूम है?' गोवर्धन ने पूछा।

सुहेलदेव ने गोवर्धन के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। वो उस आदमी की तरफ़ देखकर मुस्कुराया जो गोवर्धन को पिछली रात जंगल में लेकर आया था, और वो आदमी उनकी तरफ़ आया। 'मुझे विश्वास है कि अब्दुल ने आपका अच्छा ख्याल रखा होगा?'

गोवर्धन ने हामी भरने के लिए गर्दन हिलाई ही थी कि वो मार्गदर्शक का नाम सुनकर चौंक गया। सुहेलदेव और अब्दुल उसके हाव-भाव देखकर ज़ोर से हँस पड़े।

'चिन्ता मत कीजिए, महानुभाव,' अब्दुल हँसता हुआ बोला। 'अगर मैं आपको नुक़सान पहुँचाना चाहता, तो मैं पिछली रात ही आपका गला आसानी से काट सकता था।'

गोवर्धन चुप रहा।

'क्या आपके मन में कोई प्रश्न है?' अब्दुल ने पूछा। 'पूछ लीजिए। मैं जानता हूँ कि आप पूछना चाहते हैं।'

'ठीक है...तुम अपने साथी मुसलमानों के ख़िलाफ़ क्यों लड़ रहे हो?'

‘क्योंकि मैं एक भारतीय हूँ और तुर्क मुसलमान भारत के दुश्मन हैं,’ अब्दुल ने साफ़ शब्दों में कहा। ‘आपने अभी-अभी मनोहरगढ़ के कुछ सैनिकों को मार गिराया। क्या मैंने आपसे पूछा कि आपने अपने साथी हिन्दुओं के ख़िलाफ़ क्यों लड़ाई की? आप भारत माता की भलाई के लिए लड़े, है ना?’

गोवर्धन मुस्कुराया और इस तर्क को स्वीकार कर लिया। अब्दुल भी मुस्कुराया, गोवर्धन का कंधा थपथपाया और वहाँ से चला गया। गोवर्धन उसे जाते हुए देखता रहा।

सुहेलदेव चलकर गोवर्धन के पास गया। ‘मैं इसकी परवाह नहीं करता कि मेरे भारतीय सैनिक कहाँ से आते हैं। जब तक वो तुर्कों से लड़ने के इच्छुक हैं, वो हममें से एक हैं। आप इस बात को मानते हैं या नहीं, महाराज?’

‘कृपया मुझे महाराज ना कहें,’ गोवर्धन ने झिझकते हुए कहा। ‘जब तक मेरे महाराज महिपाल तोमर के हत्यारे जीवित हैं, मैं किसी और के दिल्ली के राजा बनने की सोच तक नहीं सकता। और वैसे भी, मैं राजा नहीं बनना चाहता। मैं एक सैनिक हूँ और बस मैं ये चाहता हूँ कि एक अच्छे नेता का अनुसरण करूँ।’

सुहेलदेव चुप रहा।

‘मैं किसी ऐसे का अनुसरण करना चाहता हूँ जो ना सिर्फ तुर्कों से लड़ने का इच्छुक हो, बल्कि ये भी जानता हो कि उन्हें हराया कैसे जाए,’ गोवर्धन ने अपनी बात आगे बढ़ाई। ‘कोई ऐसा आदमी जो समझता हो कि तुर्क क्या सोचते हैं और उन्हें हराने के लिए किसी भी सीमा तक जाने का इच्छुक हो। महाराज महिपाल महान व्यक्ति थे, लेकिन इस दुश्मन के लिए वो बहुत सज्जन साबित हुए, और उन्होंने अपनी जान गंवा दी। जयचन्द तुर्कों से लड़ने की हिम्मत नहीं रखता और ना ही यहाँ के ज़्यादातर दूसरे राजा। दरअसल, मैं मानता हूँ कि पूरे उत्तर भारत में तुर्कों को केवल एक आदमी हरा सकता है, और मैं उसे अपने सामने देख रहा हूँ।’

सुहेलदेव के चेहरे पर गम्भीरता आ गई और उसने गोवर्धन की आँखों में झांककर देखा। ‘आप एक क्षत्रिय राजवंशी हैं। क्या आप मेरा आदेश मान सकेंगे?’

‘कुछ क्षणों पहले, आपने ही कहा था कि आप किसी भी आदमी की पृष्ठभूमि की परवाह नहीं करते। आप सिर्फ ये देखते हैं कि क्या वो अपनी मातृभूमि के लिए लड़ना चाहता है या नहीं।’

सुहेलदेव हल्के से मुस्कुरा दिया।

‘मैं पराजित पक्ष की ओर से लड़-लड़कर थक चुका हूँ,’ गोवर्धन ने कहा। ‘मैं चाहता हूँ कि उन दोगले तुर्कों को हराया जाए।’

सुहेलदेव के चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान आ गई। उसने गोवर्धन को उसके कंधों से पकड़ा। ‘मेरे दस्ते में आपका स्वागत है, बहादुर गोवर्धन। जय माँ भारती!’

‘जय माँ भारती!’

गोवर्धन और सुहेलदेव के आदमी जंगल में अपनी मौजूदगी के सारे निशान मिटा रहे थे। मनोहरगढ़ के मारे गए सैनिकों का उचित ढंग से अन्तिम संस्कार किया जा रहा था। जो ज़िन्दा बच गए थे, उन्होंने पहले ही सुहेलदेव के प्रति स्वामिभक्ति की शपथ ले ली थी। अब कुछ ही घंटों में दस्ता यहाँ से बाहर निकलने वाला था।

अब्दुल सुहेलदेव के पास आया और फुसफुसाकर कहा, 'असलान लौट आया है।'

'क्या तुमने किसी को उसके पीछे लगाया था?'

अब्दुल ने हामी भरी। 'सलीम ख़ुद को छिपाकर उस पर नज़र बनाए हुए था। उसने असलान पर ज़्यादातर समय निगाह रखी। लेकिन बीच-बीच में असलान ग़ायब हो जाता था। असलान बहुत सावधान है और वो कई एहतियात बरतता है। जब सलीम उस तक दोबारा पहुँच सका, तो असलान हम तक वापस लौट रहा था। सलीम को उसके पहले यहाँ तक पहुँचने के लिए छोटे रास्ते का इस्तेमाल करना पड़ा।'

पल भर बाद, असलान उन दोनों तक धीमे-धीमे दौड़ता हुआ पहुँचा।

सुहेलदेव उसकी ओर मुड़ा। 'क्या ख़बर है?'

'मुझे लगता है तुर्क एक असहाय गाँव पर हमला करने वाले हैं, जहाँ तक पहुँचने में कुछ घंटे लग सकते हैं,' असलान ने कहा। 'मैंने कुछ सैनिकों को एक छोटी बस्ती पर हमले के आदेश पर चर्चा करते सुना, हालांकि वो ये नहीं जानते थे कि क्यों।'

'क्या तुम पर उनमें से किसी की नज़र पड़ी?' सुहेलदेव ने पूछा। 'यह चाल हो सकती है।'

'मैंने अपने आप को उनके शिविर के पास झाड़ियों में छिपा रखा था,' असलान ने जवाब दिया। 'लेकिन मैं सन्तरियों को आपस में बात करते सुन सकता था।'

सुहेलदेव और अब्दुल ने एक-दूसरे की तरफ़ नहीं देखा। लेकिन अब्दुल ने तुरन्त एक तेज़ सांस ली। और सुहेलदेव ने एक लम्बी, गहरी सांस छोड़ी। असलान समझ गया था कि ये उन दोनों के बीच गुप्त संवाद का कोई तरीक़ा है। उसने अपने चेहरे पर कोई भाव नहीं आने दिए।

चलो ठीक है। मेरी कहानी उससे मिलती है जो उस सलीम ने तुम्हें बताई है। क्या तुम वाक़ई में सोचते हो कि दुनिया के बेहतरीन योद्धाओं के साथ प्रशिक्षण के बाद, मैं इस बात पर गौर नहीं करूँगा कि मेरा पीछा किया जा रहा है?

असलान ने बस इतना कहा, 'हमें तुरन्त चलना चाहिए अगर हम उन ग़रीब लोगों की मदद करना चाहते हैं। हो सकता है कि हम देरी से पहुँचें।'

ये लोग मुझ पर कब तक सन्देह करते रहेंगे? ये कब समझेंगे कि मेरा असली मक़सद क्या है?

अध्याय 12

गिद्ध बेमन से हवा में उड़ गए और अपने भोजन में दख़ल डालने के लिए चीख़ कर नाराज़गी जताने लगे। झुलसे हुए मांस और जलती हुई झोपड़ियों की दुर्गंध मिलकर मतली लाने वाली गंध पैदा कर रही थी। मैदान में हर तरफ़ शरीर के टुकड़े बिखरे हुए थे। वहाँ इतनी लाशें थीं कि कहीं-कहीं ये बताना मुश्किल हो रहा था कि बिखरे हुए हाथ-पैर किस शरीर के हिस्से हैं।

'अल्लाह रहम करे,' असलान अपनी नाक और मुँह पर कपड़ा बांधते हुए फुसफुसाया।

सुहेलदेव और उसके आदमी गोवर्धन से मुलाक़ात वाली जगह से जितनी जल्दी हो सकते थे, बस्ती की तरफ़ निकल आए थे, लेकिन वो काफ़ी देर से पहुँचे थे। जलती हुई झोपड़ियाँ आयताकार ख़ाके में बनाई गई थीं। एक ऊबड़-खाबड़ रास्ता उनके बीच से गुज़र रहा था जो शायद आम रास्ता रहा हो। ज़्यादातर लाशें इसी रास्ते पर क़तार से बिछी हुई थीं।

जब वो नरसंहार के इस वीभत्स दृश्य से गुज़र रहे थे, तो सुहेलदेव के दस्ते में हाल ही में शामिल एक नौजवान आगे झुका और ज़ोर से उल्टी कर दी। अपना पूरा पेट ख़ाली करने के बावजूद, वो थोड़ी देर तक सूखी उल्टी करता रहा।

असलान उस लड़के के पास गया और उसे धीरे से थपथपाया। वो लड़का लज्जित होकर दूर देखने लगा।

'मैं शर्मिन्दा हूँ,' वो बड़बड़ाया।

'कोई बात नहीं,' असलान ने कहा। 'तुम अभी भी इंसान हो...जो कम से कम उन राक्षसों के लिए नहीं कहा जा सकता जिन्होंने ये किया है।'

'मुझे लगता है कि एक आदमी अभी भी ज़िन्दा है,' गोवर्धन ने एक बूढ़े आदमी—या उसके शरीर के बचे हुए हिस्से—की ओर इशारा करते हुए कहा, जो नरसंहार की मुख्य जगह से थोड़ी दूर मुँह के बल पड़ा हुआ था। उसकी दाहिनी बाँह और बायाँ पैर काट डाले गए थे। ढेर होने के पहले ज़मीन पर उसके घिसटने की वजह से ख़ून की लकीर बनी हुई थी।

'जाओ, उसे जाकर देखो,' सुहेलदेव ने कहा, और अपने चारों तरफ़ नज़रें घुमाईं कि कोई ख़तरा तो नहीं है।

असलान और गोवर्धन उस बूढ़े आदमी की तरफ़ लपके, उनके पीछे कुछ दूसरे घुड़सवार भी गए। वो घोड़े से उतरे और बुरी तरह से घायल उस आदमी के पास पहुँचे। असलान घुटने के बल बैठा और उस आदमी को धीरे से घुमाया।

उस गोरे बूढ़े आदमी के बाल पूरी तरह सफेद थे, और उसका चेहरा झुर्रियों से भरा और मुरझाया हुआ था। उसके पूरे वजूद पर उस भयंकर अत्याचार की छाप थी जिससे वो गुज़रा था।

'पानी...' वो फटी आवाज़ में बोला, सूरज की रोशनी की वजह से उसकी आँखें बन्द थीं। 'मुझे थोड़ा...पानी दो...भगवान राम के लिए।'

असलान ने उस आदमी के होंठों पर अपना पानी का थैला लगा दिया। उसने थोड़ा पानी पिया और कृतज्ञता से सिर हिलाया।

'धन्यवाद...' वो बूढ़ा आदमी फुसफुसाया, और पहली बार अपनी आँखें खोलीं। अचानक, उसके चेहरे पर आतंक के भाव आ गए। 'नहीं...नहीं...दया...दया...' वो चीख़ा, उसकी अचानक चीख़ से सभी आदमी सन्न रह गए।

गोवर्धन आगे की ओर झुका और बूढ़े आदमी से नरमी से बोला। 'डरो नहीं, मेरे दोस्त...'

गोवर्धन ने गौर नहीं किया था कि पल भर के लिए असलान के चेहरे पर घबराहट के भाव पसर आए थे।

क्या ये लोग मेरा चेहरा पहचानते हैं?

गोवर्धन उस बूढ़े आदमी के साथ नरमी से बात करता रहा, साथ ही उसे अपनी पानी की थैली से पानी भी पिलाया। 'इसका नाम असलान है। वो तुर्क है, लेकिन हम लोगों का साथी है।'

असलान, हालांकि, इस तरफ़ ध्यान नहीं दे रहा था। *अल्लाह, मेरी पहचान बचाए रखना। तब तक बचाए रखना जब तक मैं अपने मक़सद में कामयाब ना हो जाऊँ।*

बूढ़े आदमी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और ऐसा लगा कि वो फिर से बेहोश हो गया है। उसकी सांसें धीमी चल रही थीं।

असलान गोवर्धन की तरफ़ झुका और बहुत धीमे से फुसफुसाकर कहा, 'मुझे नहीं लगता कि ये बूढ़ा आदमी बच पाएगा। उसका बहुत ख़ून बह चुका है...वो बहुत ज़्यादा तकलीफ़ में है...क्या हमें...क्या हमें इस पर मेहरबानी करनी चाहिए?'

गोवर्धन इसका जवाब देने ही वाला था कि उसे अपनी आँख के कोने से कोई चीज़ हिलती हुई दिखाई दी। वो असलान और ख़ुद को बचाने के लिए झपटा और अपनी ढाल बाहर निकाल ली।

पल भर बाद, एक तीर उस ढाल पर आ लगा।

असलान ने भी तुरन्त अपनी ढाल आगे कर ली। 'अपने आप को बचाओ, गोवर्धन!'

'हम पर हमला हुआ है,' गोवर्धन चिल्लाया और अपनी ढाल की आड़ में हो गया। 'सब लोग नीचे झुक जाओ! ढाल निकाल लो!'

सैनिकों ने तुरन्त बचाव की तैयारी कर ली। कुछ और तीर उनकी दिशा में उड़ते हुए आए, लेकिन ढाल से टकराकर दूर छिटक गए। सुहेलदेव, जो गोवर्धन की चेतावनी भरी चीख़ सुनते ही अपने घोड़े से नीचे कूद गया था, ने गौर किया कि तीर गाँव के बाहर की तरफ़ बनी एक झोपड़ी से आ रहे थे। वो तेज़ी से मुख्य रास्ते के पास बनी कई झोपड़ियों में से एक के पीछे छिप गया।

अगर मैं झोपड़ियों की तरफ़ से जाऊँ तो मैं उस तीरन्दाज़ के पीछे पहुँच जाऊँगा।

वो खेतों में से दौड़कर जाने लगा, ये ध्यान रखते हुए कि बहुत ज़्यादा शोर ना हो।

इधर से जाना ठीक रहेगा।

सतर्कतापूर्वक उसने ऊँची दर्भ घास के पीछे से झांककर देखा। उससे क़रीब पचास फीट आगे, उसे एक झोपड़ी के पीछे एक तीरन्दाज़ घुटनों के बल दिखा। तीरन्दाज़ के पास एक छोटा लेकिन बेहतरीन धनुष और तरकश में कुछ तीर थे। थोड़ी-थोड़ी देर में वो एक तीर चलाता, फिर झोपड़ी के पीछे छिप जाता, फिर अगला तीर निकालता, धनुष पर उसे चढ़ाता और अगले मौक़े का इन्तज़ार करता।

तीरन्दाज़ ने अपने सिर और चेहरे को एक नीले कपड़े से ढंक रखा था। उसके ऊपरी शरीर पर चमड़े का एक जर्जर कवच था। उसकी साधारण क़द-काठी से वो एक किशोर से ज़्यादा नहीं लग रहा था।

सुहेलदेव को अपने भीतर क्रोध भरता महसूस हुआ। *एक अदना सा छोकरा, और इसने मेरे पूरे दस्ते को पीछे धकेल दिया है।*

उसने अपनी कटार निकाल ली और तेज़ी से तीरन्दाज़ की तरफ़ बढ़ा। चुपके-चुपके। कम से कम शोर करते हुए। जब वह कुछ ही फीट दूर था, तीरन्दाज़ को एकाएक ख़तरे का आभास हुआ। जैसे ही सुहेलदेव उसकी तरफ़ कूदा और उसके धनुष को एक तरफ़ किया, वो अपने पैरों पर घूम गया। तीर हवा में निकला तो ज़रूर लेकिन किसी को नुक़सान नहीं हुआ।

पल भर बाद, सुहेलदेव ने तीरन्दाज़ को गर्दन से पकड़ा और उसे ज़मीन पर धकेल दिया। उसे जकड़ते हुए, सुहेलदेव उसके ऊपर चढ़ गया और उस पर कटार से हमला करने के लिए अपनी दाहिनी बाँह पीछे ले गया...

और फिर वो जम सा गया।

जैसे ही तीरन्दाज़ ज़मीन पर गिरा, उसके चेहरे को ढंकने वाला कपड़ा नीचे गिर गया...और सुहेलदेव के सामने तीखे नैन-नक्श वाली एक युवती थी। भरे-पूरे मुँह पर एक तीखी नाक थी। लेकिन उसके चेहरे की सबसे लुभावनी ख़ासियत थी उसकी आँखें। बड़ी-बड़ी, काली, गहरी और कमल की आकृति वाली। और वो आँखें इस वक़्त क्रोध से जल रही थीं।

वाह...

सुहेलदेव को अपने सीने के अन्दर कुछ मुड़ता सा महसूस हुआ जब वो मुँह बाए उसे देखता रहा। पल भर बाद, वो मीठा सा दर्द तेज़ पीड़ा में बदल गया, जब उस युवती ने उसके अंडकोष पर घुटने से प्रहार किया।

सुहेलदेव दर्द से घुरघुराने लगा। उसके हाथ से कटार छूट गई और वो आगे की ओर झुक गया, स्वाभाविक तरीक़े से उसके हाथ उसके चोटिल अंग को ढंकने के लिए पहुँच गए।

बिजली की तेज़ी से युवती ने उसे बगल में धकेल दिया। जैसे ही वो ज़मीन पर गिरा, युवती ने सुहेलदेव की कटार उठाई और उस पर चढ़ बैठी, अब हालात विपरीत थे।

युवती जंगली जानवर की तरह चीख़ी और उसने सुहेलदेव की छाती पर कटार का प्रहार किया। भयंकर दर्द के बावजूद, सुहेलदेव ने ऐन मौक़े पर युवती की कलाई पकड़ ली। युवती ने अपने दूसरे हाथ से सुहेलदेव की आँखों पर झपट्टा मारा। सुहेलदेव ने दूसरा हाथ भी पकड़ लिया और दोनों एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्था हो गए। युवती सुहेलदेव के मुक़ाबले छोटे क़द की थी, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से मज़बूत थी।

अचानक, उस युवती की गर्दन को एक बाँह ने जकड़ा और उसे पीछे की तरफ़ खींच लिया। वो हाँफने लगी और कटार नीचे गिर गई। एक झटके से सुहेलदेव की पकड़ से अपने हाथों को छुड़ाकर युवती ने उस बाँह को जकड़ लिया, वो अपनी गर्दन पर पड़ रहे दबाव से छुटकारा पाने की जी-तोड़ कोशिश कर रही थी।

'सब ठीक है...उसे छोड़ दो,' दर्द से जूझते हुए सुहेलदेव के मुँह से आवाज़ निकली।

अब्दुल, जिसने युवती को पीछे से मौत की तरह जकड़ रखा था, ने सुहेलदेव की बात नज़रअन्दाज़ कर दी। युवती लगातार पैर चला रही थी, घूमने की कोशिश कर रही थी और अब्दुल को अपनी कुहनी से मार रही थी। वो हाँफ रही थी और मुँह से लम्बी सांस ले रही थी। अपनी गर्दन पर पड़ रहे दबाव के ख़िलाफ़ जूझ रही थी।

'अब्दुल, छोड़ दो उसे!' सुहेलदेव की आवाज़ में पहले से ज़्यादा कठोरता थी।

अब्दुल ने आख़िरकार आदेश मान लिया। फेंफड़ों में हवा पहुँचते ही युवती खांसने लगी। उसने अपनी गर्दन सहलाई, और अब्दुल की ओर एक हिकारत भरी नज़र डाली।

युवती की तरफ़ घूमते हुए सुहेलदेव ने पूछा, 'कौन हो तुम और यहाँ क्या कर रही हो?'

युवती गरजी, 'मुझे मार दो और काम ख़त्म करो!'

'हम तुम्हें मारना नहीं चाहते।'

'तुम इन ग़रीब गाँववालों को पहले ही मार चुके हो। मुझे भी इज़्ज़त के साथ उनके पास पहुँचा दो...'

सुहेलदेव ने ठंडी सांस ली। 'तुम्हें कुछ ग़लतफहमी हुई है...हमने इन गाँववालों को नहीं मारा। हम यहाँ मदद के लिए आए हैं।'

'फिर सुखिया काका डर से चीख़ क्यों रहे थे?'

'मैं नहीं जानता। हम चलकर उनसे क्यों नहीं पूछते?' सुहेलदेव एहतियात बरतते हुए खड़ा हुआ। फिर वो ज़ोर से चीख़कर बोला ताकि उसके आदमी सुन लें, 'सब ठीक है, हम बाहर आ रहे हैं। कोई वार नहीं करेगा।'

युवती ने अपना धनुष उठाया और उस तरफ़ चलने लगी जहाँ उस बूढ़े घायल आदमी के पास असलान और गोवर्धन घबराए हुए दुबके बैठे थे।

'क्या बहादुर युवती है,' अब्दुल ने सुहेलदेव से फुसफुसाकर कहा। 'अच्छा हुआ कि मैं सही समय पर आ गया।'

सुहेलदेव ने अब्दुल की तरफ़ देखकर भौंहें चढ़ाईं। 'मैंने उस पर क़ाबू पा लिया था।'

'सच में?' धीरे से हँसते हुए अब्दुल ने कहा। 'उसे तुम क़ाबू पाना कहते हो?'

इस दौरान, युवती असलान के पास पहुँच चुकी थी, और उसके पीछे थे सुहेलदेव और अब्दुल। जब उसने असलान का चेहरा देखा तो वो चौंक गई।

'तुर्क!' उसने थूका, और अपने धनुष को कंधे से उतारा।

'रुको,' सुहेलदेव ने तुरन्त कहा। 'हमला मत करो! वो हमारा साथी है।'

युवती ने थोड़ी देर तक सुहेलदेव की तरफ़ देखा, फिर असलान की तरफ़। अन्त में, वो एक नतीजे पर पहुँची और अपना धनुष नीचे कर लिया। वो फिर से घायल आदमी की तरफ़ मुड़ी।

असलान ने उसकी तरफ़ देखा और उदासी से अपना सिर हिला दिया। 'मुझे आशंका है कि वो मर चुके हैं। मुझे लगता है कि उनकी धड़कन रुक चुकी है। इतनी भयंकर चोटों के बाद, वैसे भी मौत तय थी।'

युवती ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढंका और ज़मीन पर बैठ गई। उसके कंधे धीरे-धीरे हिल रहे थे।

सुहेलदेव उसके पीछे आया। 'मुझे तुम्हारे नुक़सान का दुख है,' उसने नरमी भरे स्वर में कहा।

युवती ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसका चेहरा अभी भी उसके हाथों से ढंका था। उसके कंधे धीरे-धीरे हिल रहे थे। कोई चीख़-पुकार नहीं। कोई तेज़ आवाज़ नहीं। दुख से भरी हुई। फिर भी मज़बूत। हिम्मती। साहसी।

सुहेलदेव ने धीरे से युवती के कंधे को छुआ। उसने कंधे उचकाकर उसके हाथ हटा दिए।

अपनी आँखें पोंछते हुए, उसने ज़मीन पर पड़े हुए बूढ़े आदमी को देखा। *मैं माफ़ी चाहती हूँ। मैं माफ़ी चाहती हूँ, सुखिया काका।*

इस तहस-नहस गाँव में सुहेलदेव और उसके दस्ते को आए हुए कुछ घंटे बीत चुके थे। उन्होंने मृतकों के लिए दाह-संस्कार की व्यवस्था की थी।

युवती उदासीन खड़ी थी, वो उस चिता को देख रही थी जिस पर उस बूढ़े का शव जल रहा था। सुहेलदेव उस युवती के साहस की सराहना किए बिना नहीं रह सका। उसे पता चल गया था कि उसका नाम तोशानी है। वो यमुना नदी के दक्षिण में बसे आदिवासी कबीले से थी और कन्नौज की सेना का हिस्सा थी। जब उसके राजा ने ग़ज़नी के महमूद के आगे हथियार डाल दिए थे, तब उसने सेना छोड़ दी। अब वो शिकार करके अपना गुज़ारा करती थी और अपने शिकार को बेचने के लिए वो चर्मकारों के इस गाँव में आई थी। गाँववालों ने उससे जानवर खरीदे, पर सुखिया ने साथ में उसकी उस चोट का इलाज भी किया था जो उसे शिकार के दौरान लगी थी और जानलेवा हो सकती थी। किसी भी अच्छे योद्धा की तरह वो उन लोगों के प्रति कृतज्ञ थी, जिन्होंने उसकी जान बचाई थी। गाँववालों को धन्यवाद स्वरूप भेंट करने के लिए वो शिकार करने जंगल की ओर चली गई थी। और इसी नेक सोच की वजह से वो उस बर्बादी से बच गई थी, जो तुर्कों ने उस बदक़िस्मत गाँव में मचाई थी। क्योंकि वो उस समय वहाँ थी ही नहीं जब मध्य एशिया के बर्बरों ने आक्रमण किया था।

'ये लोग चर्मकार हैं?' सुहेलदेव ने पूछा। उसने गाँव में कहीं-कहीं ऐसे औज़ार देखे थे।

युवती की आवाज़ में कड़वाहट थी। '*थे*। जब लाशों को हटाना होता है और चमड़े की चीज़ें बनानी होती हैं तो लोगों को इनकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन वो नहीं चाहते कि ये लोग उनके पास रहें...इसलिए इन्हें अपने ही कुनबे के साथ रहना पड़ता है...ये आक्रमणकारियों के लिए आसान शिकार थे...और...अपनी सभी तक़लीफों के बावजूद, ये लोग सबसे ज़्यादा नेक थे, मुझे मिले अभी तक के लोगों में सबसे ज़्यादा उदार...मुझे यहाँ उनके साथ होना चाहिए था।'

'फिर तुम भी मृतकों में शामिल होतीं।'

'बिल्कुल,' अपनी निगाहें फिर से जलती हुई चिताओं की तरफ़ करते हुए तोशानी ने कहा।

सुहेलदेव ने चारों तरफ़ नज़रें दौड़ाईं। एक विचार उसे परेशान कर रहा था। *तुर्कों को चर्मकारों के इस गाँव में दिलचस्पी क्यों थी?*

असलान ने तुर्कों के घोड़ों के पैरों के निशान ध्यान से देखे थे। वो अभी भी ताज़े थे। वो बहुत ज़्यादा दूर नहीं जा सकते थे। पैरों के निशान से ये भी साफ़ था कि ये तुर्कों की एक छोटी टुकड़ी रही होगी।

सुहेलदेव ने अपने अगले क़दम का फैसला कर लिया था। उसने तोशानी की तरफ़ देखा। 'इस नरसंहार का प्रतिशोध लेना ही चाहिए। तुर्कों को क़ीमत चुकानी होगी। उनके ख़ून के साथ। राज़ी हो?'

तोशानी सुहेलदेव की तरफ़ मुड़ी। आँखें ग़ुस्से से जल रही थीं। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। लेकिन उसका उत्तर स्पष्ट था।

'फिर हमारे साथ चलो। तुम मुझे अपना ख़ून दो, और मैं तुम्हें तुम्हारा प्रतिशोध दूँगा।'

तोशानी चुप रही। धनुष पर उसकी पकड़ सख्त हो गई और उसने लगभग अदृश्य सहमति दे दी।

अध्याय 13

वो भारतीय चीख़ा, जब तीर उसके दाहिने कंधे में आ धँसा। धीरे-धीरे, उसकी चीख़ धीमी होती गई। 'मुझे जाने दो...' उसने विनती की, उसके चेहरे पर आँसुओं की धार बह रही थी।

थोड़ी दूर पर खड़े एक तुर्क तीरन्दाज़ ने ज़ोर से गाली दी, जबकि दूसरे तुर्क सैनिक ठहाका लगाकर हँसने लगे। कुल मिलाकर वो तीस सैनिक थे। उनमें से चार को पहरेदारी का काम सौंपा गया था, लेकिन उनका ध्यान भी अस्थायी शिविर में हो रहे तमाशे पर लगा हुआ था।

सैनिकों ने एक खुले मैदान में अपने तम्बू पहले ही लगा रखे थे। ऊँची-ऊँची दर्भ घास—जो हिन्दुओं और बौद्धों में पवित्र मानी जाती है, और औषधीय गुणों के लिए भी प्रसिद्ध है—शिविर के चारों तरफ़ फैली हुई थी। कुछ जगहों पर तो इसकी ऊँचाई सात फीट से भी ज़्यादा थी।

तम्बू दो समानान्तर पंक्तियों में लगे थे, और सेनापति का तम्बू दोनों पंक्तियों के समापन-बिन्दु पर बीच में था। दोनों तरफ़ के तम्बुओं के बीच की ख़ाली जगह में, सैनिकों ने शाम के अपने मनोरंजन की व्यवस्था की थी, और ये मनोरंजन था उनके चार बन्दी। तीन बंधे हुए एक कोने में पड़े थे, जबकि चौथे को प्रताड़ित किया जा रहा था।

'ये हवा खेल को बिगाड़ रही है,' तीरन्दाज़ ने कहा। भारतीय के बाएँ कंधे पर कोयले से निशान बनाया गया था और उसका निशाना ग़लत लगा था। 'रोशनी भी अब काफ़ी कम हो गई है। सूरज क़रीब-क़रीब डूब चुका है।'

'या शायद तुम्हारा निशाना ही घटिया है,' एक साथी तुर्क ने उसका मज़ाक़ उड़ाया।

'देखते हैं कि तुम इससे बेहतर कर पाते हो या नहीं,' किसी और ने चुनौती दी।

तुर्क तीरन्दाज़ एक बार फिर आगे बढ़ा और ज़मीन पर खिंची उस रेखा पर आकर खड़ा हो गया, जो एक खम्भे से बंधे, असहाय नग्न भारतीय से क़रीब सौ मीटर दूर थी। शाम गर्म थी लेकिन वो बन्दी बुरी तरह कांप रहा था।

'मैं इस बाज़ी की शर्तें बदल रहा हूँ,' एक तुर्क ने ऐलान किया। 'एक के दस मिलेंगे अगर तीर निशाने पर लगता है।'

सैनिकों के बीच गरमा-गरम बहस छिड़ गई। कुछ का कहना था कि अब शर्तें नहीं बदली जा सकतीं। कुछ का कहना था कि बदली जा सकती हैं, क्योंकि भारतीय बन्दी बंधे होने के बावजूद इधर-उधर हिल रहा है और तीरन्दाज़ का काम मुश्किल हो गया है।

'बन्द करो इसे!' गठीले बदन और काले-सफेद बाल वाले एक शख्स ने दख़ल दिया, जिसके दाहिने गाल पर आँसू के आकार का पैदाइशी निशान था। 'हमें उन्हें ज़िन्दा लाने का आदेश मिला है।'

'ये ठीक है, ओज़गुर,' रूखेपन से प्रभारी अधिकारी ने कहा। 'आदेश में कहा गया है ज़िन्दा, ये नहीं कि कितना ज़िन्दा। आधा-मुर्दा भी चलेगा।' वो तीरन्दाज़ की तरफ़ मुड़ा। 'तुम खेल जारी रखो।'

तीरन्दाज़ नाटकीय तरीक़े से झुका। 'शुक्रिया हुज़ूर।' फिर वो अपने लक्ष्य की तरफ़ मुड़ा और ज़ोर से बोला, ताकि उसकी आवाज़ सभी सुन लें। 'घबराओ नहीं। इस बार मैं बाएँ कंधे पर निशाने से चूकूँगा नहीं।'

जैसे ही उस बन्दी ने तीरन्दाज़ के शब्दों को सुना, वो और बुरी तरह से विनती करने लगा और तड़पकर सुबकने लगा। उसके पैरों के बीच से पेशाब की धार बह निकली।

तुर्क ठहाका लगाकर हँसने लगे लेकिन तीरन्दाज़ की भौंहें चढ़ गईं। 'इस कमीने के रोने से मैं ध्यान नहीं लगा पा रहा हूँ,' उसने शिकायत की। फिर वो धूर्तता से मुस्कुराया जब उसके दिमाग़ में एक विचार आया। उसने एक चाकू निकाला और भारतीय बन्दी की तरफ़ बढ़ा। 'अपनी जीभ बाहर निकालो,' उसने आदेश दिया।

बन्दी ने अपना मुँह बन्द कर लिया और अपने सिर को बुरी तरह हिलाने लगा, उसकी आँखें फैल गई थीं और उनमें विनती का भाव था।

'ठीक है,' तुर्क ने कहा। 'मैं इसे ख़ुद कर लूँगा।'

उसने उस आदमी के पेट में घूँसा मारने के लिए अपनी मुट्ठी पीछे की। और तभी, उसके चेहरे पर सदमे के भाव पसर गए। उसने अपने सीने की तरफ़ देखा और पाया कि उसमें एक तीर धंसा है। उसने बोलने के लिए अपना मुँह खोला, फिर खांस पड़ा, क्योंकि उसके गले में ख़ून भर आया था।

वो तुर्क अपने साथियों की तरफ़ मुड़ा, एक क़दम आगे बढ़ा और फिर नीचे गिर पड़ा। उसके साथी इस घटना से अनजान हँस रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे। अचानक सभी की बातचीत बन्द हो गई जब उनकी नज़रें बुरी तरह से घायल तीरन्दाज़ पर पड़ीं।

ख़तरा आ चुका था। गुप्त रूप से। चुपचाप।

उस ख़ामोशी को ऊँची रणहुँकार ने तोड़ा।

'हर हर महादेव!'

छावनी के चारों तरफ़ फैली लम्बी घास में से अचानक सुहेलदेव और उसका दस्ता बाहर निकल आया। तुर्कों को थोड़ी दूरी से देखने के बाद, वो नीचे झुक गए थे और, बिना किसी शोर के दर्भ घास में से रेंगते हुए, छावनी के बिल्कुल पास तक आ गए थे।

तोशानी, जिसके तीर ने उस तुर्क तीरन्दाज़ को मार गिराया था, ने कुछ और तीरों से सैनिकों को शिकार बनाया, और फिर एक हँसिया लेकर लड़ाई में कूद पड़ी।

गोवर्धन भी ख़ून की प्यासी आँखों के साथ युद्ध में कूद पड़ा था। तुर्क सैनिकों ने उस भयानक विशालकाय मनुष्य को देखकर उससे दूर रहना ही बेहतर समझा। सिवाय एक नौजवान के, जिसकी अभी दाढ़ी आनी ही शुरू हुई थी। उस लड़के ने गोवर्धन पर तलवार से हमला किया। गोवर्धन ने अपनी गदा से तलवार का वार बचाया, फिर उस लड़के को अपने कंधे से धक्का देकर ज़मीन पर गिरा दिया। लेकिन वो लड़का फिर से कूदकर खड़ा हो गया। उसने अंधाधुंध तलवार चलाना शुरू किया, पहले बाएँ से दाएँ, फिर दाएँ से बाएँ।

बहादुर। लेकिन बेवक़ूफ़ और अनुभवहीन।

वो लड़का अपनी तलवार लहराता रहा, और गोवर्धन उसकी पहुँच से दूर रहा। ये सोचकर कि गोवर्धन उससे पीछे हट रहा है, वो नौजवान थोड़ा और असावधान हो गया। उसने गोवर्धन के सिर की तरफ़ ज़ोर से तलवार लहराई, और अपने-आप को जवाबी हमला झेलने के लिए बिल्कुल असुरक्षित कर लिया। पल भर बाद, वो दर्द से चीख़ उठा जब गोवर्धन की गदा उसकी पसली में टकराई। कुछ टूटने की तेज़ आवाज़ आई, और लड़का लड़खड़ाकर गिर गया। उसने अपनी चोटिल पसली को पकड़ा और आँखें भींचकर सांस खींचने की कोशिश करने लगा।

अब ये थोड़ी देर तक कुछ नहीं कर पाएगा।

तभी गोवर्धन ने, फटी आँखों से, देखा कि उस लड़के ने अपनी तलवार ज़मीन में धंसाई और उसके सहारे से खड़े होने की कोशिश करने लगा।

गोवर्धन ने लम्बी सांस ली। वो साहस की प्रशंसा करता था, भले ही वो किसी दुश्मन ने क्यों ना दिखाया हो। लेकिन ये समय अच्छी भावनाओं में बहने का नहीं था। उसने लड़के के कंधे पर अपनी गदा दे मारी, और उसकी गले की हड्डी—और उसकी हिम्मत दोनों तोड़ दीं।

लड़का अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश करता हुआ विनती करने लगा। 'रहम! रहम!'

गोवर्धन ने मारक प्रहार करने के लिए अपनी गदा को पीछे किया। जब उसने लड़के की आँखों में देखा तो वो हिचकिचा गया, उसे एकाएक लगा कि एक खोया हुआ बच्चा अपने माता-पिता के पास लौटने को तड़प रहा है। गोवर्धन ने अपनी गदा नीचे कर दी, और अपना हाथ आगे किया, ये इशारा करते हुए कि उसने दुश्मन के आत्मसमर्पण को स्वीकार कर लिया है। बिल्कुल उसी समय, अब्दुल आगे बढ़ा और उस नौजवान तुर्क के दिल में कटार घोंप दी। जब वो मर रहा था, तो तुर्क गोवर्धन की तरफ़ ऐसे देख रहा था जैसे उसने कोई वादा तोड़ दिया हो।

'क्या है ये?' गोवर्धन ने विरोध जताया। 'उस बेचारे ने हथियार डाल दिए थे।'

'हमारे पास बन्दियों को रखने के लिए जगह नहीं है।'

'लेकिन वो लड़ने की हालत में नहीं था,' गोवर्धन ने कहा। 'वो अब ख़तरा नहीं था।'

'अभी नहीं था,' अब्दुल ने कहा। 'लेकिन वो थोड़े दिनों में स्वस्थ हो जाता। और फिर वो हमसे दोबारा लड़ता। ये युद्ध है, कोई खेल नहीं। प्रतिष्ठा के तुम्हारे सिद्धान्त यहाँ काम नहीं करेंगे।'

गोवर्धन ने आगे कुछ बोलने के लिए मुँह खोला, फिर चुप रह गया। उसे याद आया कि उसने स्वयं तुर्कों के प्रति राजा महिपाल के व्यवहार को कुछ अधिक ही सैद्धान्तिक अनुभव किया था।

मुझे लगता है कि महाराज ने मुझ पर मेरी सोच से अधिक प्रभाव डाला था।

अब्दुल मुस्कुराया। 'तुम सीख रहे हो।'

गोवर्धन गुर्राया और चारों तरफ़ देखने लगा। अचानक हुए हमले की वजह से ज़्यादातर तुर्क सैनिक लड़ाई के शुरुआती क्षणों में ही मारे जा चुके थे। लेकिन कुछ अभी भी लड़ रहे थे, हालांकि उनके हारने की सम्भावनाएँ ही ज़्यादा थीं।

एक तुर्क सैनिक ने सुहेलदेव के एक आदमी को धक्का देकर ज़मीन पर गिरा दिया था और अपने बाएँ हाथ से उसका गला घोंट रहा था। उसने अपने दाहिने हाथ में रखे छुरे को ऊपर उठाया ताकि अपने दुश्मन को ख़त्म कर दे। तभी वो दर्द से चीख़ उठा जब तोशानी एकाएक उसके पीछे पहुँची और हँसिये से उसकी कुहनी के ठीक नीचे ज़ोर से वार किया, जिससे उसकी त्वचा, मांसपेशी और नसें कट गईं और हड्डी दिखने लगी। उस सैनिक की सुन्न उँगलियों से छुरा छूट गया। लेकिन तोशानी का काम ख़त्म नहीं हुआ था। उसने फिर से अपना हँसिया लहराया, इस बार उसने हँसिये के फलक को उस आदमी के सिर के पिछले हिस्से में धंसा दिया। वो ज़मीन पर लड़खड़ाकर गिर पड़ा, हँसिया उसकी खोपड़ी में धंस गया था।

तोशानी अपना हँसिया निकालने के लिए नीचे झुकी, और ये उसकी ख़ुशक़िस्मती थी, क्योंकि उसी समय पीछे से एक दूसरे तुर्क सैनिक ने अपनी तलवार उस जगह पर लहराई थी, जहाँ पल भर पहले तोशानी की गर्दन थी। उसका सिर काटने की बजाय, तलवार हवा में लहराकर रह गई। हवा में तलवार के लहराने की आवाज़ ने तोशानी को ख़तरे से सावधान कर दिया। इससे पहले कि वो अपने बचाव में कुछ करती, गोवर्धन चीख़ता हुआ उसकी मदद करने कूद पड़ा। तुर्क इस नए ख़तरे का मुक़ाबला करने के लिए घूमा और उसी वक़्त गोवर्धन की गदा लहराई। ये तुर्क की दाहिनी आँख से टकराई और उसे ख़ून से लथपथ कर दिया।

तुर्क दर्द से चीख़ पड़ा, तलवार उसके हाथ से गिर गई और स्वाभाविक रूप से उसके हाथ उसकी कुचली हुई आँख पर चले गए। तब तक तोशानी ने अपना हँसिया उठा लिया था, और उसने उस तुर्क की गर्दन की नस काटकर उसकी तकलीफ़ों का अन्त कर दिया।

इस बीच, असलान और सुहेलदेव उस आग के पास एकाध सैनिकों से लड़ रहे थे जो खाना पकाने के लिए जलाई गई थी। एक सैनिक की पीठ आग की तरफ़ थी। असलान के वार से बचने के लिए जैसे ही वो पीछे हटा, उसके अंगरखे के किनारे ने आग पकड़ ली। जब उसे आग की लपट झुलसाने लगी तो वो ज़ोर से चीख़ा और पागलों की तरह उसे बुझाने की कोशिश करने लगा।

असलान ने उसकी गर्दन पर वार किया और उसकी पीड़ा समाप्त कर दी। उसकी लाश ज़मीन पर गिर गई, जो अभी भी जल रही थी। असलान ने पास ही में पानी का एक घड़ा देखा। उसने लाश पर वो पानी डालकर आग बुझा दी। सुहेलदेव, जिसने अपने दुश्मन को ख़त्म कर दिया था, कौतूहल से भरा उसके पास आया।

'वो पहले ही मर चुका है,' सुहेलदेव ने कहा। 'तुम आग क्यों बुझा रहे हो?'

'इस्लाम में विश्वास रखने वालों के लिए दाह-संस्कार वर्जित है,' असलान ने कहा। 'इंसान का शरीर अल्लाह का तोहफ़ा है। चाहे ज़िन्दा हो या मुर्दा, इसे पूरी इज़्ज़त बख़्शी जानी चाहिए।'

'तो...एक सच्चे मुसलमान की तरह, क्या तुम्हें आग में जलकर मरने से डर लगेगा?' सुहेलदेव ने अपना सिर एक तरफ़ उठाते हुए, विचारमग्न होकर पूछा।

'मुसलमान हो या ग़ैर-मुसलमान, किसी के लिए भी ऐसी मौत डरावनी है,' असलान ने रुखेपन से कहा। 'ओह, एक तुर्क सैनिक भाग रहा है।'

वो पीछा करने के लिए लम्बी घास में दौड़ पड़ा। सुहेलदेव के दस्ते के दूसरे लोगों की नज़र से दूर। तुर्क सैनिक जितना तेज़ भाग सकता था, भाग रहा था लेकिन असलान आसानी से उसके पास तक पहुँच चुका था। उसने तुर्क सैनिक को छावनी से काफ़ी दूर तक भागने दिया, फिर झपट्टा मारा और उसे पीछे से पकड़ लिया। दोनों ज़मीन पर गिर पड़े। तुर्क अपने चेहरे पर गुर्राहट के भाव लाता हुआ उछलकर खड़ा हो गया, उसकी तलवार हमला करने के लिए तैयार थी, लेकिन तभी वो एकाएक रुक गया जब उसने देखा कि ये तो असलान है।

'हुज़ूर!' उसके चेहरे पर अविश्वास के भाव थे। 'आप इन लोगों के साथ क्या —'

'अपनी आवाज़ धीमी रखो, ओज़गुर,' असलान फुसफुसाते हुए बोला, और अपने हाथ से तुर्क के मुँह को ढंक दिया।

ओज़गुर ने समझने वाले अन्दाज़ में सिर हिलाया। असलान ने अपना हाथ हटा लिया।

'तुम पहले से कहीं ज़्यादा बूढ़े और भद्दे हो गए हो,' असलान ने कहा, हालांकि उसकी आवाज़ की गरमाहट उसके शब्दों को झुठला रही थी।

ओज़गुर खुलकर हँस पड़ा। 'मैंने पिछली बार आपको गज़नी में देखा था, हुज़ूर। क्या आप अभी भी अपने मिशन पर—'

'हाँ,' असलान ने उसे बीच में रोक दिया। 'अब मेरी बात ध्यान से सुनो...'

असलान ओज़गुर के पास झुक गया और दोनों ने फुसफुसाकर आपस में कुछ बातचीत की, वो इस बात का ख्याल रख रहे थे कि वो लम्बी घास में भली-भांति छुपे रहें।

जब बातचीत ख़त्म हो गई, असलान ने उसके कंधे थपथपाए। 'चलो, अब तुम्हें जाना चाहिए। मैं दोबारा तुमसे तब मिलूँगा जब मुझे ज़रूरत होगी। लेकिन अभी के लिए, तुम्हें करीम के साथ रहना होगा। समझे?'

'हाँ, हुज़ूर।'

'और जाने से पहले, मेरे चेहरे पर घूँसा जड़ो।'

ओज़गुर डर गया। 'मैं ऐसा नहीं कर सकता, हुज़ूर!'

'ये मेरा हुक्म है,' असलान ने कहा। 'घूँसा जड़ो, या फिर मैं अब छुरा घोंपने के लिए कहूँगा।'

'लेकिन, हुज़ूर...'

'ये हुक्म है, ओज़गुर! और ध्यान रखना कि घूँसा ज़ोरदार हो।'

ओज़गुर ने थूक निगला, फिर असलान के दाहिने गाल पर एक ज़ोरदार घूँसा जड़ दिया। वहाँ से चमड़ी कट गई और ख़ून बहना शुरू हो गया।

ओज़गुर ने पछताते हुए उससे माफी माँगी लेकिन असलान ने उसे भरोसा दिलाते हुए वहाँ से जाने का इशारा किया। जब ओज़गुर वहाँ से भाग गया, तभी असलान ने आँखें भींचीं और उस जगह को छुआ जहाँ उसे घूँसा पड़ा था।

'नालायक़, उसने सच में हुक्म को गम्भीरता से ले लिया,' वो अपने आप में बुदबुदाया।

* * *

'उम्मीद है कि तुमने उसे पकड़ लिया होगा,' सुहेलदेव ने असलान के चोटिल गाल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, जो अब सूज गया था और लाल पड़ गया था।

'मैंने उसे क़रीब-क़रीब पकड़ ही लिया था लेकिन वो कमीना किसी तरह बच निकला।' असलान ने बचाए हुए बन्दियों की तरफ़ इशारा किया। 'उनकी कहानी क्या है? क्या आपको पता चला कि वो बस्ती क्यों उजाड़ी गई थी?'

'ऐसा लगता नहीं कि उन्हें ज़्यादा कुछ मालूम है। उन्होंने बस इतना बताया कि तुर्कों को शायद साफ़-साफ़ निर्देश मिले थे। चमड़े के सामान बनाने वाले सारे औज़ार नष्ट कर दो और ज़्यादातर कारीगरों को मार डालो। उनमें से जो सबसे अच्छे हैं, उन्हें पकड़कर तुर्क सेनापति के सामने हाज़िर करो। और उनसे इस इलाक़े के दूसरे चर्मकारों के गाँवों के बारे में भी बार-बार पूछा गया। ये बात अजीब है।'

असलान ने कुछ नहीं कहा। वो सुहेलदेव की तरफ़ देखता रहा। उसे दिख रहा था कि राजकुमार का दिमाग़ घूम रहा है। *क्या वो पता लगा लेगा?*

'जब तक...' सुहेलदेव ने बोलना शुरू किया, फिर रुक गया।

'जब तक क्या?' असलान ने पूछा।

'तुर्क सम्पूर्ण युद्ध में यक़ीन करते हैं ना? दुश्मन की युद्ध करने की क्षमता को ख़त्म कर देने में।'

'हाँ...और...?'

'दिल्ली को बर्बाद करने के बाद, उन्होंने कोई नया युद्ध अभियान नहीं छेड़ा है। वो दिल्ली में ही रुके हुए हैं। इसे समझना बहुत आसान है। इस वक़्त गर्मी अपने चरम पर है। उनके लिए ये बहुत गर्म मौसम है, क्योंकि उन्हें मध्य एशिया की ठंड में रहने की आदत है। और वो वर्षा ऋतु में भी लड़ना नहीं चाहेंगे। भारतीय बारिश में किसी के लिए भी लम्बे समय तक युद्ध करना असम्भव है। इसलिए, वो जाड़े का इन्तज़ार कर रहे हैं। तुर्क अपने अगले युद्ध अभियान को तभी शुरु करेंगे।'

असलान ने दिखावा किया कि उसे ये बात समझ नहीं आई। 'इसका चमड़े से क्या सम्बन्ध है?'

'मैं ये भी बताता हूँ। सभी भारतीय सेनाओं में धातु के बख़्तर केवल अफ़सरों और अमीर सैनिकों के पास हैं। साधारण सैनिक मोटे चमड़े के बख़्तर इस्तेमाल करते हैं। चर्मकारों के बिना, साधारण सैनिकों के पास बख़्तर नहीं रहेंगे। वो तुर्क हथियारों के आसान शिकार बन जाएँगे।'

असलान उसकी बातों से प्रभावित हो रहा था। 'फिर...'

'यही नहीं, जाड़ों के दौरान धातु के बख़्तरों को चमड़ों से ढंका जाता है; वरना वो इतने ठंडे होंगे कि उन्हें इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। तो चर्मकारों के बिना धातु के बख़्तर भी बेकार हो जाएँगे। भारतीयों ने युद्ध के दौरान हमारे चर्मकारों का महत्व सही मायने में कभी नहीं समझा है। वो हमेशा मौजूद रहते थे। लेकिन अगर चर्मकार ही नहीं रहेंगे, युद्ध करने की हमारी क्षमता काफ़ी घट जाएगी। और चूँकि चर्मकारों के सारे गाँव अलग-थलग हैं, लम्बे समय तक किसी का इस पर ध्यान ही नहीं जाएगा कि उन्हें एक योजना के तहत बर्बाद किया जा रहा है।'

असलान हल्के से मुस्कुराया। अब उसे पक्का यक़ीन हो गया था। उसे जिसकी तलाश थी, वो मिल चुका है। उसने वो भारतीय नेता ढूँढ़ निकाला था जो सही मायने में तुर्कों के लिए ख़तरा था। वो करिश्माई नेता राजकुमार सुहेलदेव था। इस बात में कोई सन्देह नहीं था। वो अपने नेतृत्व में सभी वंशों और धर्मों के लोगों को लड़ने के लिए साथ लाने में काबिल था। पक्के तौर पर। एक शानदार योद्धा और रणनीतिकार था। निश्चित रुप से। लेकिन सबसे अहम बात ये थी कि वो अपने दुश्मन के दिमाग़ को समझ चुका था।

इस आदमी से तुर्कों को डरना चाहिए। यही आदमी है जिसे मुझे निश्चित रुप से...

असलान के विचारों को तोशानी की आवाज़ ने भंग किया।

'क्षमा करें, राजकुमार, मैं चाहती थी...'

'सुहेलदेव।'

'मैं समझी नहीं?'

'सुहेलदेव, राजकुमार नहीं।'

तोशानी मुस्कुराई। 'सुहेलदेव, मैं आपको धन्यवाद देना चाहती थी। इन दिनों हमारे भारतीय राजा और राजकुमार तो अपने नागरिकों की परवाह नहीं करते, दूसरों की बात ही छोड़ दें। ये गाँववाले आपकी प्रजा नहीं हैं। फिर भी आपने मदद की। आपने इनमें से कुछ लोगों को बचाया है। और इससे बढ़कर, मुझे अपने रक्षक दल में शामिल कर, इनका क़र्ज़ चुकाने में मेरी मदद की है।'

'धन्यवाद देने की कोई ज़रूरत नहीं है। जो मैंने किया वो मेरा कर्तव्य था। वो मेरा धर्म था।'

'तो फिर आज से आपकी तरफ़ से लड़ना मेरा धर्म है। मैं—'

उनकी बातचीत में अचानक अब्दुल ने बाधा डाली, जो उन तक दौड़ता हुआ आ रहा था। 'हमें यहाँ से निकलना होगा, राजन!'

'क्या हुआ?' सुहेलदेव ने पूछा।

अब्दुल ने दूर इशारा किया। कुछ दूरी पर, कई प्रकाश-पुंज साफ़ दिखाई दे रहे थे। वो छावनी की तरफ़ आ रहे थे, और बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। 'पास ही में तुर्कों के ढेरों सैनिक हैं! देखने में लगता है कि कम से कम एक पलटन है!'

सुहेलदेव ने उन्हें गाली दी। फिर पूरी ताक़त से अपने सैनिकों को सम्बोधित करके चीख़ा, 'यहाँ से निकलो!'

अध्याय 14

सुहेलदेव जानता था कि हालात मुश्किल हैं। उसके साथ सारे सैनिक नहीं थे। वो तुर्कों के एक छोटे दल पर भारी पड़े थे क्योंकि उन पर अचानक हमला किया था। लेकिन अभी हालात अलग थे।

हम उनसे बचकर निकल नहीं सकते। बहुत जल्दी, हमारे घोड़े थक जाएँगे। एक बार अगर वो हम तक पहुँच गए तो फिर सब ख़त्म हो जाएगा। हम तादाद में उनसे बहुत कम हैं।

जब सुहेलदेव अपने सिर और शरीर को थोड़ा झुकाकर, छलांग लगाते हुए अपने घोड़े की सवारी कर रहा था तो हवा उसके बालों को सहला रही थी। दल के बाक़ी सदस्य उसके साथ चल रहे थे।

उनके पीछे, प्रकाश-पुँज भले ही क़रीब नहीं आ रहे थे, लेकिन उनकी चमक फीकी भी नहीं पड़ रही थी। तुर्कों की घुड़सवार सेना और उनके बीच का अन्तर क़ायम था।

सुहेलदेव की ज़िन्दगी, और उसके सभी साथियों की ज़िन्दगी, अब एक कच्चे धागे से लटकी थी।

उसकी आँखें अब्दुल की ओर घूमीं, जो समूह की अगुवाई कर रहा था। अब्दुल की एक ख़ासियत थी कि अगर वो एक बार किसी रास्ते से गुज़र जाता था तो वो फिर उसे कभी नहीं भूलता था। सुहेलदेव के सबसे भरोसेमन्द सैनिक के रूप में, उसने कई इलाक़ों की टोह ली थी और उनसे वो भली-भांति वाक़िफ़ था। सुहेलदेव का भरोसा उसकी इसी जानकारी का इस्तेमाल करके बचाव का रास्ता ढूँढ़ने पर था।

अचानक, अब्दुल रुक गया। दस्ते में कई दूसरे लोगों की तरह, उसने मशाल थाम रखी थी। उसने मशाल उठाई और दूसरों को इशारा करते हुए उसे हिलाने लगा।

‘इस रास्ते से...इस रास्ते से चलो,’ अब्दुल चिल्लाया। ‘दो क़तारें बनाओ और पास-पास रहना!’

बाक़ी लोगों ने अपने घोड़ों को ऐड़ लगाई और आस-पास चलने लगे। तुर्कों और उनके बीच की दूरी कम होती जा रही थी।

सुहेलदेव ने अपने ऊपर हावी होने की कोशिश कर रही घबराहट को दूर करने के लिए अपने दांत पीसे। उसके गुरु के शब्द उसके कानों में गूँजने लगे।

घबराहट बेकार है। इससे कोई फायदा नहीं होता। शान्त रहो। सांस लो।

सुहेलदेव ने गहरी सांस ली। धीरे-धीरे।

अपने दिल की धड़कनों को धीमा होने पर मजबूर किया।

लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करने लगा।

उसने अपने बगल में देखा। चाँद की हल्की सी रोशनी में उसे दिखा कि नदी की धारा से थोड़ी दूरी पर गन्ने का खेत काफ़ी दूर तक फैला हुआ है।

सांस लो।

ध्यान केन्द्रित करो।

अचानक, उसे एक उपाय सूझा।

इससे काम निकल सकता है।

'नदी से कितनी दूर हैं हम?' सुहेलदेव ने पूछा।

'मुश्किल से दो सौ मीटर,' अब्दुल ने कहा। 'ध्यान से सुनो तो तुम्हें इसके बहने की आवाज़ आएगी।'

सुहेलदेव ने अपने कान खड़े किए और फिर मुस्कुराया। 'हाँ...बहुत अच्छा। अब, सभी को नदी के पार ले जाओ। तोशानी को भी साथ ले जाना। मेरे साथ दस लड़ाके रहने दो।'

तोशानी तुरन्त बोल पड़ी। 'मैं रुकूँगी। मैं दस में से एक हो सकती हूँ।'

सुहेलदेव ने उसे घूरकर देखा। 'अभी बहस करने का वक़्त नहीं है।'

'तो फिर बहस मत कीजिए,' उसने पलटकर जवाब दिया। 'मैं यहाँ मौजूद लोगों में शायद सबसे अच्छी तीरन्दाज़ हूँ। आप ये बात जानते हैं।'

सुहेलदेव ने इसका विरोध करने के लिए अपना मुँह खोला, फिर इरादा बदल लिया। 'ठीक है।'

उसने जल्दी-जल्दी उन लोगों के नाम लिए जिन्हें वो अपने साथ रोकना चाहता था, जिनमें असलान और गोवर्धन भी शामिल थे।

'मशाल अपने साथ रखना,' उसने उन्हें कहा। फिर उसने अब्दुल की तरफ़ देखा और सिर हिलाकर इशारा किया। 'अब जाओ। भगवान शिव की इच्छा होगी तो हम अपने छिपने की जगह पर फिर मिलेंगे।'

अब्दुल ने सुहेलदेव के हाथ को थोड़ी देर के लिए लेकिन मज़बूती से पकड़ा। 'अल्लाह आपकी मदद करें, हुज़ूर,' उसने कहा। फिर वो तेज़ी से निकल गया।

सुहेलदेव ने अपने साथ बचे लड़ाकों की तरफ़ देखकर कहा। 'गन्ने में आग लगा दो।'

असलान और गोवर्धन ने एक-दूसरे की तरफ़ हैरत भरी नज़रों से देखा लेकिन आदेश का पालन किया। बाक़ी लड़ाकों ने भी ऐसा ही किया। सुहेलदेव ने

स्वयं एक मशाल ली और एक लम्बी डंठल के पास ले गया। लपट उठी, फिर टिमटिमाने लगी, जैसे कि बुझने वाली हो।

'जल जा, जल जा,' सुहेलदेव बुदबादुया।

जैसे कि आग ने उसकी बात सुन ली हो, अचानक लपटें ऊपर उठीं और पूरे डंठल को अपने में समा लिया। तभी हवा का एक झोंका चला और आग को और भड़का दिया। आग डंठल से डंठल तक, और फिर पूरे खेत में फैलती चली गई। सुहेलदेव के चेहरे पर सन्तोष के भाव आए।

'धन्यवाद, महादेव,' वो अपने ललाट से पसीना पोंछते हुए फुसफुसाया।

जल्दी ही लम्बे-लम्बे गन्नों से भरा पूरा खेत जलने लगा। आग की एक ऊँची दीवार। सुहेलदेव और अन्य साथी क़रीब पचास मीटर दूर खड़े थे। लेकिन इतनी दूरी से भी वो गर्मी महसूस कर सकते थे।

'हमने सिर्फ़ उस हिस्से में आग क्यों लगाई?' गोवर्धन ने पूछा। 'तुर्क हम पर दूसरी तरफ़ से अभी भी हमला कर सकते हैं।'

सुहेलदेव मुस्कुराकर रह गया। 'देखते रहो...' फिर वो बाक़ी लोगों की तरफ़ मुड़ा। 'धनुष तैयार रखो। जो भी आग से गुज़रने की कोशिश करे, उसे मार गिराओ।'

सभी अपने घोड़ों से उतरे और इन्तज़ार करने लगे। धनुष की डोरियों पर तीर चढ़ाकर तैयार। पैर फैलाकर। सांसें स्थिर और शान्त। युद्ध के लिए तैयार।

कुछ मिनटों बाद, उन्हें तुर्क जत्थे की पहली लहर अपनी तरफ़ गरजती-दौड़ती सुनाई दी।

अचानक, तुर्कों की तरफ़ से चीख़-पुकार, पानी की छप-छप और घोड़ों की घबराहट भरी हिनहिनाने की आवाज़ आने लगी।

असलान, गोवर्धन और तोशानी ने सवालिया नज़रों से सुहेलदेव की तरफ़ देखा।

'दूसरी तरफ़ का घास का मैदान दबाव पड़ने पर अचानक रेतीली दलदल में बदल जाता है,' सुहेलदेव ने समझाया। 'इस इलाक़े में केवल एक ही सुरक्षित रास्ता है—वो खेत जिसे हमने अभी जला डाला है। अगर वो हमें पकड़ना चाहते हैं, तो उन्हें इस आग के मैदान को पार करना होगा।'

'और मुसलमान, ज़िन्दा या मुर्दा, जलने से डरते हैं,' असलान ने कहा। उसने ये शब्द बस फुसफुसाकर ही कहे थे, लेकिन सुहेलदेव ने सुन लिए थे।

सुहेलदेव असलान की तरफ़ मुड़ा। उसका चेहरा पत्थर की तरह सख्त था। 'बिल्कुल सही। जिस पल तुमने मुझे ये बात बताई थी, मैं जानता था कि ये किसी दिन हमारे काम आएगी। वो मूर्तियों में हमारे विश्वास और आस्था का इस्तेमाल हमारे ख़िलाफ़ करते हैं। हम उनके विश्वास का इस्तेमाल उनके ख़िलाफ़ करेंगे।'

ठीक तभी, एक तुर्क घुड़सवार आग से होता हुआ आगे आया, उसके कपड़े आग पकड़ चुके थे। तोशानी ने कुशलता से एक तीर उसके घोड़े की काठी की पट्टी पर चलाया। तीर ने पट्टी को काट डाला और उस जानवर को मामूली सी खरोंच भर आई। काठी घोड़े के शरीर से अलग हो गई और तुर्क घोड़े की पीठ से लुढ़क

गया। ज़मीन पर कई बार पलटने के बाद, वो गोवर्धन के पास आकर रुका। उस विशालकाय मनुष्य ने थोड़ा सा झुककर, अपनी गदा से तुर्क के सिर को एक-दो बार छुआ, और फिर पूरी ताक़त से उसके सिर पर दे मारा। तुर्क की खोपड़ी बिखर गई। उसे उसकी तकलीफ़ से छुटकारा मिल गया। तुरन्त।

दूसरा घोड़ा आग से बाहर निकला। तोशानी ने दूसरा तीर चलाया, जो घुड़सवार की दाहिनी आँख में लगा। वो चीख़ा और अपने घोड़े से गिरकर, आग में चला गया। लपटों ने उसके शरीर को तुरन्त अपनी चपेट में ले लिया, वो चीख़ता हुआ पागलों की तरह भागा और फिर ज़मीन पर गिर गया।

कुछ और तुर्क आग की लपटों से रास्ता बनाते हुए बाहर निकले और तुरन्त मार गिराए गए। तभी सब कुछ थम गया। सुहेलदेव को ऊँचे स्वर में तुर्की आवाज़ें और ज़्यादा घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ें सुनाई दीं। वो असलान की तरफ़ मुड़ा, जो नाख़ुश दिख रहा था। सुहेलदेव ने अन्दाज़ा लगाया कि वो नाख़ुश है क्योंकि उसके साथी मुसलमान ज़िन्दा जलाए जा रहे थे। लेकिन श्रावस्ती के राजकुमार को इसकी परवाह नहीं थी। उसे अपने लोगों की जान बचानी थी। और युद्ध में सभी दांव-पेंच न्यायसंगत थे।

असलान को ये बात नहीं मालूम थी, लेकिन सुहेलदेव ने थोड़ी तुर्क भाषा सीखी थी। दुश्मन को जानना महत्वपूर्ण था। सुहेलदेव को ये समझ तो आ रहा था कि सैनिक चीख़ रहे हैं और आग से गुज़रने से इनकार कर रहे हैं। तुर्क आमतौर पर मौत से नहीं डरते थे। वो बहादुर योद्धा थे। लेकिन वो *इस प्रकार* की मौत से डरते थे।

हालांकि सुहेलदेव मोटे तौर पर समझ गया था कि क्या हो रहा है, उसने असलान की परीक्षा लेनी चाही। 'वो क्या कह रहे हैं, असलान?'

असलान ने तुरन्त जवाब दिया। 'तुर्क सेनापति अपने सैनिकों को आग बुझाने के लिए कह रहा है।'

उसने सच कहा था।

सुहेलदेव अपने घोड़े पर चढ़ा और काठी के क़रीब पहुँचकर ऊँचाई से देखने की कोशिश करने लगा। 'इसमें थोड़ा समय लगेगा। वो आसानी से नदी तक नहीं पहुँच सकते। और ये आग काफ़ी बड़ी है।' उसने पीछे की तरफ़ देखा। 'हमारा बाक़ी दस्ता अब तक उस पार जा चुका होगा। मुझे लगता है कि हमें भी अब जल्दी निकल लेना चाहिए।'

उसके साथी तुरन्त अपने-अपने घोड़े पर सवार हो गए।

'चलो चलें!'

वो हड़बड़ी में नदी तक पहुँचे। जब वो वहाँ पहुँचे तो उन्हें अपने सामने लकड़ी का एक पतला सा पुल दिखा। नाव के अलावा—और इस वक़्त कोई नाव थी नहीं—नदी पार करने का यही इकलौता रास्ता था।

चाँद की हल्की रोशनी में पुल के नीचे नदी मुश्किल से दिख रही थी। ऐसा लगता था कि जैसे नदी धीमे-धीमे बह रही हो, लेकिन पुराने तजुर्बे से सुहेलदेव

जानता था कि ये सिर्फ नज़र का धोखा था। नदी की धारा तेज़ थी और वो आसानी से किसी आदमी, या घोड़े को बहाकर ले जा सकती थी।

सुहेलदेव ने पुल की तरफ़ इशारा किया। 'जल्दी करो! जैसे ही हम पार जाते हैं, पुल को नष्ट कर दो!'

उसने पीछे की तरफ़ देखा और समझ गया कि खेतों में लगी आग धीरे-धीरे बुझ रही है। तुर्क जल्दी ही यहाँ तक पहुँचने का रास्ता बना लेंगे।

राजकुमार जानता था कि उनके पास समय कम है। 'चलो! चलो! चलो!'

वो तेज़ी से पार निकल गए। असलान दूसरी तरफ़ पहुँचने वाले शुरुआती लोगों में था। उसने पुल के खम्भों पर जल्दी से प्रहार करना शुरू कर दिया। 'मेरी मदद करो,' वो गोवर्धन की ओर देखकर चिल्लाया। 'हम इसे ऐसे करेंगे कि जैसे ही अन्तिम आदमी पुल पर से गुजरे, ये टूट जाए।'

अन्तिम आदमी सुहेलदेव था, जिसने तब तक इन्तज़ार किया जब तक कि दूसरे सभी लोग पार नहीं चले गए। उसने अपने घोड़े को पुल पर चढ़ाया जब उसके साथियों ने उसे चीख़कर आगे बढ़ने को कहा।

घोड़े को दौड़ाते हुए ही, सुहेलदेव ने अपने एक आदमी के हाथ में रखी मशाल की तरफ़ इशारा किया। उसने गोवर्धन को आदेश दिया कि वो पुल में आग लगा दे—आग पुल को तेज़ी से नष्ट कर देगी। वो तेज़ी से आगे बढ़ा, उसके घोड़े के खुर लकड़ी के पुल पर तेज़ी से टाप दे रहे थे।

'ह्याह!' वो चीख़ा और अपने घोड़े को तेज़ ऐड़ लगाई, जब उसने देखा कि गोवर्धन जलती हुई मशाल लेकर पुल के खम्भों की तरफ़ जा रहा है।

'जला दो इसे!' सुहेलदेव ज़ोर से चिल्लाया।

उसके सभी सैनिक पार जा चुके थे। सुहेलदेव लगभग दूसरी तरफ़ था।

तभी, अचानक, उसका शरीर सख्त हो गया।

बुझ रही आग को पार करके इकलौता तुर्क तीरन्दाज़ तेज़ी से आगे आया और उसने एक ज़हरीला तीर चला दिया था। अंधेरे में चलाए गए इस तीर के किसी को निशाना बनाने की उम्मीद बहुत कम थी।

लेकिन सिर्फ और सिर्फ बदक़िस्मती थी कि तीर सुहेलदेव को लग गया। पूरी ताक़त से वो तीर उसकी पीठ में जा धंसा।

राजकुमार काठी पर झूल सा गया। लगाम पकड़े रहने और घोड़े पर सवार रहने से तीर के उसके शरीर में और धंसने की आशंका थी। लेकिन प्रशंसनीय रूप से, उसने लगाम पकड़े रखी। उसे ऐसा करना ही था। वो अभी भी पुल के पार नहीं गया था। ऐसा लग रहा था कि समय धीमा हो गया है क्योंकि वो अपने आप को दाहिनी तरफ़ झुकता महसूस कर रहा था। उसकी नज़रें धुँधली पड़ रही थीं। ज़हरीले तीर से बना घाव अपना असर दिखा रहा था।

लेकिन उसने लगाम थामे रखी। तीर ने उसके शरीर के घाव को गहरा कर दिया।

वो जानता था कि अब उसकी ताक़त ख़त्म होने वाली है। लेकिन वो डटा रहा। उसे पुल पार करना था।

उसे अपने घोड़े के पैरों की आवाज़ बदलती सुनाई दी। अब ये आवाज़ लकड़ी पर घोड़े के नाल की तेज़ टाप नहीं थी। ये आवाज़ नदी के किनारे की ज़मीन पर घोड़े के पैर की हल्की थाप थी। उसे पीछे मुड़कर कुछ जाँचने की ज़रूरत नहीं थी। वो जानता था कि वो दूसरी तरफ़ आ चुका है। उसने पुल पार कर लिया था।

पुल जला दो!

उसका ये आदेश उसके मुँह में ही रह गया। उसे तीर लगे मुश्किल से कुछ क्षण हुए थे, लेकिन सुहेलदेव को ये युगों के समान लग रहा था।

मैंने पुल पार कर लिया है! इसे जला दो!

समय थोड़ा और धीमा हो गया। फिर वो हवा में गिर रहा था। वो गिरता रहा, उसे ऐसा लगा कि वो कब से गिरता जा रहा है। वो ज़मीन पर धमाके के साथ गिरा, उसका सिर नदी के सख़्त किनारों से टकराया।

और फिर आँखों के आगे अंधेरा छा गया।

अध्याय 15

तोशानी ने जब सुहेलदेव को ज़मीन पर गिरते देखा तो वो सन्न रह गई।

वो चीख़ उठी, 'सुहेलदेव!'

वो नदी के दूसरी तरफ़ से जलते हुए पुल पर आ रहे तुर्क तीरन्दाज़ की तरफ़ मुड़ी। उसने अपना धनुष खींचा, चीख़ती हुई आगे दौड़ी, एक तीर निकाला और उसे निशाने पर लगाया।

इतनी दूर से चलते हुए लक्ष्य को भेदना आसान नहीं है। क्योंकि निशाना वहाँ नहीं लगाना है जहाँ वो लक्ष्य है, बल्कि वहाँ लगाना है जहाँ वो लक्ष्य कुछ क्षण बाद होगा। और तोशानी के काम को तेज़ हवा और मुश्किल बना रही थी जो तीर की दिशा को भटका सकती थी। और इससे भी बुरा ये था कि रोशनी बहुत कम थी, क्योंकि वहाँ चाँद का हल्का उजाला था, जिसे आग की लपटों की रोशनी डांवाडोल कर रही थी।

लेकिन तोशानी कोई साधारण तीरन्दाज़ नहीं थी।

उसने तुरन्त ही दूरी, तीर के जाने के रास्ते, हवा की दिशा, और जलते हुए पुल पर दौड़ रहे घुड़सवार तीरन्दाज़ की गति का अन्दाज़ा लगा लिया।

और उसने तीर चला दिया।

तीर नदी के पार तेज़ी से उड़ता हुआ सीधे तुर्क के सीने में लगा और उसके दाहिने फेफड़े में घुस गया। तुर्क दाहिनी ओर झुक गया, उसका घोड़ा अभी भी दौड़ रहा था।

गोवर्धन और असलान इस असाधारण तीरन्दाज़ी को देखते हुए दंग खड़े रहे। उन्होंने इतनी दूरी से ऐसा सही निशाना आज तक नहीं देखा था।

'सुहेलदेव को संभालो!' तोशानी चिल्लाई।

गोवर्धन सुहेलदेव के निढाल शरीर की तरफ़ दौड़ा, और देखा कि नदी के दूसरी तरफ़ कई और तुर्क जमा हो गए हैं।

लेकिन तोशानी का काम ख़त्म नहीं हुआ था। सुहेलदेव को निशाना बनाने वाला तीरन्दाज़ अभी भी अपने घोड़े पर था। असहाय। लेकिन अभी भी जीवित।

तोशानी ने तुरन्त दूसरा तीर निकाला, धनुष पर रखा और चला दिया। ये तीर तुर्क के बाएँ कंधे में लगा।

एक और। इसने तुर्क के पेट को चीर डाला।

तुर्क अपने घोड़े से गिर पड़ा।

लेकिन तोशानी रुकी नहीं। उसने एक और तीर चलाया। ये तीर उड़ता हुआ एक बार फिर तुर्क के सीने पर लगा, इस बार निशाना उसका दिल था।

लेकिन तोशानी अब भी नहीं रुकी थी।

उसने एक और तीर चलाया, जिसने तुर्क के गले को भेद दिया।

लेकिन वो अभी भी नहीं रुक रही थी।

उसने एक और तीर खींचा, उसे अपने धनुष पर रखा और उसे छोड़ने ही वाली थी कि असलान ने उसकी बाँह पकड़ ली।

'मुझे लगता है वो मर चुका है, तोशानी।'

तोशानी असलान की ओर मुड़ी, उसकी आँखों में देवी माँ के समान गुस्सा था। असलान भयभीत होकर एक क़दम पीछे हट गया।

उसने धीमे स्वर में कहा। 'मुझे लगता है वो मर चुका है...'

तोशानी पीछे मुड़ी। उसने देखा कि विशालकाय गोवर्धन ने सुहेलदेव को अपने कंधे पर ऐसे उठा रखा है जैसे वो एक बच्चा हो। वो भीमकाय योद्धा अब पेड़ों की सुरक्षित क़तार की तरफ़ दौड़ रहा था। जहाँ वो नदी के दूसरी तरफ़ खड़े तुर्क तीरन्दाज़ों की नज़र से दूर रहेंगे।

तोशानी, असलान और सुहेलदेव के दस्ते के दूसरे तीरन्दाज़ नदी के किनारे पर जमे रहे। वो दूसरी तरफ़ तुर्कों को जमा होते देख रहे थे। वो निशाना लगाने को तैयार थे अगर उनमें से कोई जलते हुए पुल को पार करने की मूर्खता करता। पुल कभी भी ध्वस्त हो सकता था। तुर्क ये बात जानते थे।

थोड़ी देर बाद, सुहेलदेव के आदमियों ने जीत की हुँकार भरी जब पुल टूटकर छपाक की तेज़ आवाज़ के साथ नदी में समा गया।

तुर्क सेनापति ने अपने एक सैनिक को आदेश दिया कि वो नदी में अपना घोड़ा उतारे और तैरकर उस पार जाए। वो सैनिक बलि का बकरा था। दूसरे तुर्क सैनिक चुपचाप खड़े रहे। इन्तज़ार करते रहे कि क्या नदी को तैरकर पार करना सुरक्षित है।

तोशानी ये देखकर तारीफ किए बिना नहीं रह सकी कि उस तुर्क सैनिक ने कोई बहस नहीं की। उसे अपनी जान पर ख़तरे की परवाह नहीं थी। वो तुरन्त अपने घोड़े को नदी में उतारने को तैयार हो गया। घोड़ा डरते-डरते पानी में उतरा। उसकी हिम्मत बढ़ गई जब नदी की धार तेज़ नहीं लगी। वो नदी में अन्दर तक चलता चला गया। उसने क़रीब एक तिहाई रास्ता पार किया होगा, जब घोड़े की चाल में घबराहट महसूस होने लगी। तुर्क ने घूमकर पीछे देखा। अपने सेनापति की तरफ़। आख़िरी बार। घोड़ा डरकर हिनहिनाया, जब नदी की धार उसे बहाकर ले जाने लगी, उसका सवार उसकी पीठ पर ही था।

‘अब वो थोड़ी देर वहीं रुके रहेंगे,’ असलान ने कहा। फिर उसने पीछे देखा। गोवर्धन और कई दूसरे सैनिक क़रीब पचास मीटर दूर पेड़ों के घने जंगल में ग़ायब हो गए थे।

‘चलो चलें!’

‘उसे एक अच्छे वैद्य की ज़रूरत है,’ तोशानी ने कहा।

सुहेलदेव का दस्ता, जंगल में अभी के लिए सुरक्षित था। तुर्कों को नदी पार करने के लिए काफ़ी घूमकर आना पड़ता। कम से कम पूरी रात का सफ़र। इसलिए, उन्होंने सुहेलदेव को नीचे लिटा दिया था और असलान तीर को बाहर निकालने की कोशिश करने वाला था।

‘क्या तुम्हें यहाँ कोई वैद्य दिखता है?’ असलान ने पूछा। ‘देखो, मैंने युद्ध के मैदान के ढेरों घाव देखे हैं और सूफ़ियों के साथ रहकर मैंने उन्हें ठीक करने की थोड़ी जानकारी भी हासिल की है। इस वक़्त, मेरे मुताबिक़ मैं ही उसकी मदद कर सकूँगा।’

तोशानी ने भौंहें चढ़ाईं, उसे भरोसा नहीं हुआ था। ‘ध्यान से मेरी बात सुनो, तुर्क। अगर उसे कुछ होता है तो...’

असलान ने अपनी आँखें बन्द कीं और एक गहरी सांस ली। जब वह बोला, तो उसकी आवाज़ शान्त और नपी-तुली थी, लेकिन उसमें एक ठंडापन था। ‘तोशानी, मैं एक तुर्क ज़रूर हूँ लेकिन कोई राक्षस नहीं हूँ। और ना ही मैं कोई देवदूत हूँ। मैं किसी की ज़िन्दगी की ज़मानत नहीं दे सकता। लेकिन मेरा यक़ीन करो, मैं इस बात की पूरी कोशिश करूँगा कि सुहेलदेव को कोई नुक़सान ना हो। वो मेरा भी दोस्त और नेता है।’

गोवर्धन ने बीच में दख़ल दिया। ‘क्या यहाँ कोई वैद्य है जिस पर हम भरोसा कर सकें? आसपास कोई है क्या?’

सुहेलदेव के सैनिकों में से एक ने इनकार में सिर हिलाया। ‘एक वैद्य है तो, लेकिन यहाँ से उसके गाँव पहुँचने में एक दिन तो लग ही जाएगा।’

‘ठीक है फिर,’ गोवर्धन ने कहा। ‘किसी भी तरीक़े से सुहेलदेव अपनी पीठ में उस तीर के साथ एक दिन तक सफ़र नहीं कर सकता।’ गोवर्धन असलान की तरफ़ मुड़ा। ‘तुम अपना काम करो, जो भी ठीक समझो।’

असलान ने हामी भरी और अपने घोड़े की तरफ़ दौड़ा। उसकी काठी के थैले में कुछ औज़ार थे।

इस बीच, गोवर्धन ने सैनिकों को चारों तरफ़ नज़र रखने के निर्देश दे दिए। कहीं कोई तुर्क नदी पार करने में कामयाब हो जाए।

असलान तुरन्त लौट आया। उसकी पीठ पर एक थैली थी। गोवर्धन और तोशानी सुहेलदेव के पास झुककर बैठ गए, जिसे पेट के बल लिटाया गया था। उसकी पीठ से तीर बाहर की तरफ़ एक कोण बनाता हुआ झांक रहा था।

असलान सुहेलदेव के पास घुटनों के बल बैठ गया। उसने धीरे से तीर को छुआ और उस जगह पर देखा जहाँ वो धंसा था।

'क्या हमें तीर अभी बाहर निकाल देना चाहिए?' गोवर्धन ने पूछा।

असलान ने इनकार में सिर हिलाया। 'पहले मुझे देखने दो कि कहीं ये हड्डी में तो नहीं फंसा है। अगर ऐसा होगा, और तीर की नोक का कोई हिस्सा पीछे रह गया, तो वो सुहेलदेव की धीमी और दर्दनाक मौत का कारण बन जाएगा।'

असलान ने तीर को पकड़ा और हल्के से घुमाया। बस थोड़ा सा। सुहेलदेव के मुँह से कराह निकली। तोशानी ने आवाज़ सुनकर आँखें मींच लीं, लेकिन असलान के चेहरे पर सन्तोष के भाव आए।

'तीर आसानी से हिल रहा है,' असलान ने कहा। 'ये अच्छी बात है।'

उसने कपड़े के एक साफ़ टुकड़े को रोगाणुनाशक घोल में डुबाया, जिसे वो आम तौर पर अपनी काठी के थैले में रखता था, और फिर उसे मोड़कर पट्टी बना ली। उसने इसे गोवर्धन को थमा दिया। फिर उसने चिमटी निकाली और तोशानी को थमाई।

'मैं चाहता हूँ कि तुम घाव को थोड़ा फैलाओ और खुला रखो। तीर जितनी आसानी से बाहर आए, उतना बेहतर।' तोशानी का चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया, लेकिन उसने दुखी मन से हामी भरी और चिमटी को घाव में धंसा दिया। सुहेलदेव ने कराह भरी और थोड़ा हिला।

'बस थोड़ी देर और,' तोशानी ने सान्त्वना भरे लहजे में सुहेलदेव के सिर को हल्के से सहलाते हुए कहा। 'बहुत जल्दी ये ठीक हो जाएगा।'

सुहेलदेव तोशानी की आवाज़ सुनकर तनावमुक्त हो गया। असलान ने संडसी बाहर निकाली। बहुत आराम से, उसने उसे घाव के अन्दर नीचे की तरफ़ किया, और धीरे-धीरे नीचे करता रहा जब तक कि वो तीर के सिरे तक नहीं पहुँच गया। उसने संडसी की मदद से तीर की नोक को मज़बूती से पकड़ लिया। जब उसे यक़ीन हो गया कि तीर की नोक अब नहीं फिसलेगी, उसने उसे बाहर खींच लिया।

तीर हल्की सी आवाज़ के साथ बाहर आ गया। ख़ून तेज़ी से बहने लगा। असलान ने दवा वाली पट्टी को घाव पर अच्छे से दबा दिया, ताकि ख़ून का बहना रुक जाए।

'ना हड्डी को नुक़सान पहुँचा है और ना ज़्यादा ख़ून बहा है। वो ख़ुशक़िस्मत है।' असलान ने घाव को रोगाणुनाशक कपड़े से साफ़ किया। फिर उसने अपनी थैली में हाथ डालकर एक छोटा बटुआ निकाला। उसने इससे घाव की सिलाई करने की सूई और गिलोय के पौधे के रेशे निकाले। 'मैंने तुम लोगों की थोड़ी आयुर्वेदिक तकनीक भी सीखी है। गिलोय के रेशे सिलाई के लिए सबसे अच्छे होते हैं। उनमें रोगाणुरोधक गुण भी होते हैं।'

गोवर्धन ने सुहेलदेव के कंधे नीचे दबाकर रखे ताकि वो ना हिले, और असलान ने उसके घाव पर टांका लगाना शुरू किया।

'क्या तुम छोटा टांका लगा सकते हो?' तोशानी ने कहा। 'घाव का निशान काफ़ी बड़ा रह जाएगा।'

असलान मुस्कुराया और सुहेलदेव के घाव पर टांका लगाने के अपने काम पर ध्यान केन्द्रित किए रखा। 'मैं शल्य चिकित्सा का विशेषज्ञ नहीं हूँ, तोशानी। सुहेलदेव के लिए घाव का बड़ा निशान एक खुले घाव से कहीं बेहतर है।'

तोशानी ने बहस नहीं की। असलान का तर्क अटूट था।

घाव पर टांका लगाने के बाद, असलान ने उसे सावधानी से जाँचा। वो सन्तुष्ट दिख रहा था। उसने अपनी थैली में हाथ डाला और एक बोतल बाहर निकाली। 'अब मुझे बस घाव को एक बार और साफ़ करने की ज़रूरत है।'

गोवर्धन ने हवा को सूँघा। 'ये तो शराब है। तुम तो शराब पीते नहीं हो। फिर तुम इसे अपने पास क्यों रखते हो?'

'ऐसे मौक़ों के लिए,' असलान ने कहा। 'ये बहुत शक्तिशाली शराब है। ये पीने के लिए नहीं है। ये एक बहुत अच्छी रोगाणुनाशक है। अब उसे पकड़ कर रखना। इससे काफ़ी जलन होगी।'

उसने घाव को जल्दी से शराब से धोया। सुहेलदेव के मुँह से अनायास कराह निकली, लेकिन गोवर्धन ने उसके कंधे को मज़बूती से नीचे की तरफ़ दबाए रखा, ताकि वो ज़्यादा ना हिले और उसके घाव वापस खुल ना जाएँ।

'बढ़िया है, इससे किसी ख़तरनाक संक्रमण से बचाव होगा,' असलान ने कहा। फिर वो तोशानी की ओर मुड़ा। 'थैली में से लम्बे कपड़े का दूसरा टुकड़ा इस्तेमाल करके घाव पर अच्छे तरीक़े से पट्टी बांध देते हैं।'

तोशानी ने हामी भरते हुए गर्दन हिलाई। जब उनका काम ख़त्म हो गया, वो असलान से बोली। 'वो ठीक तो हो जाएगा ना?'

असलान ने कंधे उचका दिए। 'मेरे पास जो चीज़ें थीं उनकी मदद से मैं जो कर सकता था मैंने कर दिया है। सुहेलदेव जवान और मज़बूत है। इंशाअल्लाह, वो बहुत जल्दी पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगा।'

'धन्यवाद,' उसने कहा। वो पल भर के लिए हिचकिचाई, फिर अटकते हुए उसने कहा। 'मुझे माफ कर दो, मैंने बदतमीज़ी से बात की थी।'

'कोई बात नहीं...हम दोनों ही उसके बारे में चिन्तित थे। और तुम सही कह रही थीं...हमें उसे एक अच्छे वैद्य के पास ले जाने की ज़रूरत है।'

जब तनाव थोड़ा कम हो गया, तो गोवर्धन मज़ाक़ किए बिना नहीं रह सका। 'मेरी बदक़िस्मती थी कि मुझे शराब छिपाने की तुम्हारी जगह का पता नहीं था। वरना ये लम्बे समय तक नहीं टिकती!'

असलान धीमे से हँस पड़ा। 'इसलिए तो मैंने इसे गुप्त रखा था!'

सुहेलदेव धीरे-धीरे जगा। उसकी पलकें बोझिल थीं। दर्दनाशक जड़ी-बूटियों और उससे भी कड़ी विषनाशक दवाओं का असर उस पर दिख रहा था। उसका पूरा शरीर दुख रहा था।

उसकी अधखुली आँखों से धीरे-धीरे रोशनी अन्दर गई। जब उसकी आँखें रोशनी की अभ्यस्त हुईं, तो उसने अपने पास देखा। वहाँ कोई था। कुर्सी पर बैठा हुआ। सोया हुआ। दिन का उजाला पीछे चमक रहा था; उस व्यक्ति के सिर के चारों तरफ़ एक प्रभामंडल की तरह। उसे किसी दिव्यात्मा का रूप देता हुआ।

क्या...?

जब उसने अपनी पलकों को तेज़ी से बार-बार झपकाया, तो उसकी आँखें थोड़ी और अभ्यस्त हुईं। और उसे अब काफ़ी साफ़ दिखने लगा। वो एक झोपड़ी में एक चारपाई पर लेटा हुआ था। वहाँ और कोई नहीं था। सिवाय एक युवती के जो कुर्सी पर बैठी सो रही थी। उसके हाथ में एक ठंडी पट्टी थी। साफ़ था कि वो उसकी देखभाल कर रही थी। और उसकी आँख लग गई थी। शायद, थकान के कारण।

तोशानी...

वो मुस्कुराया। या कम से कम वो मुस्कुराना चाहता था। उसे समझ नहीं आया कि मुस्कुराहट उसके चेहरे पर आई या नहीं।

एक बार फिर उसे नींद आ गई।

सुहेलदेव की आँखें खुलीं। रोशनी मद्धिम थी। दीवार में बने एक ताखे में बस एक दीया जल रहा था।

रात हो गई है। मैं कितनी देर से सोया हुआ हूँ?

वो खांसा और फिर एक हल्की सी करवट ली। उसे कमरे के दूर कोने से किसी के उठने की आवाज़ सुनाई दी। जब वो शख़्स क़रीब आया, सुहेलदेव ने उसे पहचान लिया। वो तोशानी थी।

दर्दनाशक दवाओं का असर कम हो रहा था। लेकिन, असहनीय दर्द के बावजूद, सुहेलदेव का दिल रुमानी अन्दाज़ में धड़कने लगा था।

और रुमानी अन्दाज़ से बच पाना मुश्किल भी था।

इकलौते दीये की मद्धिम सी रोशनी। खुले दरवाज़े से छनकर आती चाँद की रोशनी। दूर से आती गाँव के पहरेदार के गीत गाने की आवाज़। भगवान कृष्ण और देवी राधा के बीच दैवीय प्रेम का गीत।

ये पहली बार था जब सुहेलदेव ने तोशानी को अच्छी तरह देखा था, उसके बाल खुले थे और चेहरा साफ़ किया हुआ था। सुहेलदेव को वो पहली नज़र में ही आकर्षक लगी थी, हालांकि उस वक़्त वो पसीने और धूल से ढंकी थी। लेकिन इसके पहले उसे अहसास नहीं हुआ था कि तोशानी का चेहरा आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर है।

सांस लेना मुश्किल हो गया।

वो मुस्कुराया। या कम से कम ऐसी कोशिश की।

तोशानी के चेहरे पर चिन्ता के भाव आए। 'तुम मुँह क्यों बना रहे हो? क्या दर्द बहुत ज़्यादा है? क्या मैं और दर्दनाशक दवाओं के लिए कहूँ?'

नहीं। मैं मुँह नहीं बना रहा हूँ। मैं मुस्कुराने की कोशिश कर रहा हूँ।

लेकिन उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकला।

'सुहेल?'

...सुहेल...सुहेलदेव नहीं...मुझे अच्छा लगा...

उसे फिर से नींद आ गई।

सुहेलदेव जागा, उसने जल्दी-जल्दी पलकें झपकाईं। रोशनी बहुत ज़्यादा थी। सूरज पक्के तौर पर चढ़ आया होगा। वो थोड़ा हिला।

तोशानी पलक झपकते ही उसके सामने थी।

वो मुस्कुराया।

तोशानी भी मुस्कुराई। 'अब बेहतर महसूस हो रहा है?'

हाँ! चेहरे पर भाव सही से आ गए हैं...

'पानी...' वो फुसफुसाया। उसकी आवाज़ फटी हुई सी निकली।

तोशानी पीछे बैठे एक दूसरे सैनिक की तरफ़ मुड़ी। वो उठा, मिट्टी के मटके से एक प्याले में थोड़ा पानी डाला, और सुहेलदेव को पीने में मदद की।

'थोड़ा-थोड़ा पानी पियो, बड़ा घूँट नहीं,' तोशानी ने सलाह दी।

थोड़ा पानी उसके मुँह के दोनों छोर और उसकी छाती पर टपककर आ गया। तोशानी ने उसे साफ़ कर दिया। धीरे से।

उग्र तोशानी को अपने लिए ऐसी सुशील और ध्यान रखने वाली लड़की के रूप में देखकर सुहेलदेव को थोड़ा आश्चर्य हुआ।

सुहेलदेव अपने सैनिक की तरफ़ मुड़ा। 'गोवर्धन...को बुलाओ...'

सैनिक ने अभिवादन किया और झोपड़ी से बाहर चला गया।

अचानक, तुर्कों के साथ युद्ध की कुछ धुँधली तस्वीरें सुहेलदेव को याद आने लगीं। 'हमारे पक्ष...को कोई नुक़सान?'

'नहीं,' तोशानी ने जवाब दिया। 'सभी बच गए। किसी को गम्भीर चोट नहीं आई।'

बढ़िया।

तभी तोशानी शरारत भरे अन्दाज़ में मुस्कुराई। 'तुम्हारे अलावा किसी और को गम्भीर चोट नहीं आई। शायद तुमने घोड़ा थोड़ा धीरे दौड़ाया।'

सुहेलदेव धीरे से हँसा। *आह, इसी स्त्री को मैं पहचानता हूँ।*

गोवर्धन ने झोपड़ी में प्रवेश किया। 'भगवान राम की कृपा है कि आप पूरी तरह ठीक हैं।'

सुहेलदेव ने धीमे से कहा, 'जय श्री राम...'

गोवर्धन और तोशानी ने दोहराया, 'जय श्री राम।'

'लेकिन,' गोवर्धन ने अपनी बात आगे बढ़ाई, 'आपको गाँव के वैद्य का धन्यवाद देना चाहिए जिसने आपका इलाज किया, और इस युवती का जिसने आपका बहुत अच्छा ख्याल रखा। वो आपके साथ इस दौरान मौजूद रही, जबकि बाक़ी लोगों ने एक-एक करके आराम कर लिया।'

सुहेलदेव की आँखें तोशानी की तरफ़ घूमीं। उसके चेहरे पर एक शर्मीली मुस्कुराहट थी। और सुहेलदेव के चेहरे पर झिझक भरी मुस्कुराहट। अजीब सी ख़ामोशी वहाँ पसरी रही। कोई शब्द नहीं।

बदक़िस्मती से, गोवर्धन हालात की नज़ाकत को समझने वालों में से नहीं था। वो बोलता जा रहा था, जैसे कि उसे कुछ समझ ना आया हो। 'आप एक-दो दिनों तक सोए रहे। पहले असलान ने आपका इलाज किया। सच में, उसने आपकी जान बचाई। हमें बाद में पता चला कि तीर ज़हरीला था और भारी नुक़सान पहुँचा सकता था अगर वो शरीर के अन्दर रहता। फिर हम आपको गाँव के इस वैद्य के पास लाए, जिसने हमें छिपने के लिए ये ख़ाली झोपड़ी दी। वो गन्दी सी गंध वाले किसी लेप के साथ आता और कुछ-कुछ घंटों के बाद आपके घाव पर उसे लगाता था। साफ़ तौर पर, इसका असर हुआ है!'

'अब्दुल...कहाँ हैं?' सुहेलदेव ने पूछा। 'वो...चिन्तित होगा।'

'मैं यहीं हूँ, हुज़ूर,' अब्दुल ने कहा, वो झोपड़ी के दरवाज़े पर खड़ा था। 'अब मैं चिन्तित नहीं हूँ।'

'मेरे दोस्त...' सुहेलदेव फुसफुसाया।

अब्दुल झोपड़ी के अन्दर आ गया। 'गोवर्धन ने एक दूत मेरे पास भेजा था और जितनी जल्दी हो सकता था, यहाँ आ गया। आपको सफ़र के लिए तन्दुरुस्त होने तक कुछ और दिनों का आराम करना होगा। उसके बाद हम यहाँ से निकलेंगे। असलान भी तब तक लौट आएगा।'

सुहेलदेव की भौंहें चढ़ीं। 'वो...कहाँ...'

'वो अपने एक और खुफिया मिशन पर गया है,' अब्दुल ने कहा। 'जब उसे यक़ीन हो गया कि हम यहाँ सुरक्षित रहेंगे, तब वो तुरन्त निकल गया था। उसने कहा था कि वो जल्दी लौट आएगा।'

सुहेलदेव ने अब्दुल की तरफ़ देखा। लेकिन कहा कुछ नहीं। कम से कम बोलकर तो नहीं कहा।

असलान ने गाँव पर हमले के बारे में हमें सही जानकारी दी। उसने नदी की लड़ाई में मेरी जान बचाई। अब समय आ गया है कि मैं उस पर पूरी तरह से भरोसा करने लगूँ। वो एक तुर्क हो सकता है। लेकिन वो हममें से एक है।

लेकिन सुहेलदेव ये भी जानता था कि अब्दुल ने शायद असलान के पीछे एक आदमी भेजा होगा। और उनके अस्थायी शिविर के चारों तरफ़ कड़ी पहरेदारी का इन्तज़ाम किया होगा। वो जानता था कि असलान पर भरोसा किए जाने के बारे में, अब्दुल से बहस करने का कोई मतलब नहीं है।

उसने बात वहीं रहने दी।

अध्याय 16

गंगा के मैदानी रिहायशी इलाक़ों से दूर, गहरे जंगल में, तुर्कों की एक छोटी पलटन जमा हुई थी। बेहतरीन, अजेय, दुर्दान्त सैनिक इकलौती सैन्य छावनी की पहरेदारी कर रहे थे। उनका सेनापति सालार मक़सूद अभी-अभी आया था। हमेशा की तरह, जल्दबाज़ी में। वो अपने प्रेमी से मिलने के लिए तुरन्त तम्बू में घुस गया था। और बाहर सैनिक सावधान होकर इन्तज़ार कर रहे थे।

उस छोटी सी सैन्य छावनी के ज़्यादातर हिस्से को एक बिस्तर ने घेर रखा था जिस पर मक़सूद आराम से लेटा था, उसका सिर करीम की गोद में था। करीम ने अपना हाथ मक़सूद के चौड़े कंधों पर धीरे-धीरे, मुस्कुराते हुए फेरा। मक़सूद ने भी मुस्कुराहट से जवाब दिया, और अपना हाथ करीम के चेहरे पर फिराने लगा।

'मैं तुम्हारी आँखों में अपने आप को हमेशा के लिए भुला सकता हूँ,' करीम फुसफुसाया।

'तुम मेरी ज़िन्दगी का उजाला हो, मेरे महबूब।'

करीम झुका और उसने हल्के से मक़सूद को चूम लिया। धीमे से। प्यार से भरपूर। जब वो दोनों अलग हुए, करीम ने एक गहरी सांस ली।

'बहुत हुआ मक़सूद,' करीम ने कहा। 'अब घर चलते हैं। गज़नी वापस चलते हैं।'

मक़सूद ने अपना सिर इनकार में हिलाया। 'मैं नहीं चल सकता। तुम जानते हो। यह तो ख़ुद सुलतान का हुक्म है।'

'यह इतना अहम क्यों है?'

'क्योंकि यह है।'

'नहीं, यह नहीं है। अहम बस तुम और मैं हैं। तुमने सुलतान के लिए पहले ही काफ़ी किया है। उन्हें बता दो कि यह नहीं हो सकता। यह नामुमकिन है। और फिर...'

'मैं ऐसा नहीं कर सकता।'

'मक़सूद...'

'मैं नहीं कर सकता, करीम। इतिहास में हम तुर्कों को तभी याद रखा जाएगा जब हम दो देशों में से किसी एक को जीतकर वहाँ राज करेंगे। भारत या चीन। ये दुनिया के सबसे ज़्यादा आबादी वाले और अमीर देश हैं। हमें इस ज़िन्दगी के बाद जन्नत और हूरें तभी मिलेंगी, अगर हम बुतपरस्तों की इस ज़मीन के मालिक बनेंगे, उनकी नापाक तहज़ीब को मिटा देंगे, और उन्हें सच्चे मज़हब में ले आएँगे। एक बार भारत या चीन इस्लाम की तलवार के आगे झुक गए, तो फिर पूरी दुनिया हथियार डाल देगी और दार-उल-इस्लाम बन जाएगी। अल्लाह ने हमें यही काम दिया है।'

'मक़सूद, तुम सोचते हो कि अल्लाह ने तुम्हें लाखों लोगों को मारने का हुक्म दिया है? सच में? अल्लाह ऐसा कभी नहीं कर सकते। मुहब्बत ही केवल—'

मक़सूद ने अपने हाथ से करीम के मुँह को ढंक दिया। धीरे से। 'मेरे महबूब, मैंने तुम्हें पहले भी बताया है। इन बातों को ज़ोर से नहीं बोला करो। ये कुफ्र हैं। इनमें से कोई शब्द भी अगर सुलतान के कानों तक पहुँच गया तो हम...'

करीम ने एक और गहरी सांस ली और दूर देखने लगा। वो मक़सूद से गहरी मुहब्बत करता था। और अपनी मुहब्बत के लिए, वो अपनी सूफ़ी विचारधारा, अपने विश्वास को मिटाने को तैयार था। 'लेकिन अगर सुलतान जीतना और राज करना चाहते हैं, तो इसके लिए वो तुम्हें भारत का सफ़र क्यों कराना चाहते हैं? तुम्हारी पहचान छिपाकर? यह ख़तरनाक है। मैं उन दांव-पेंचों का इस्तेमाल कर रहा हूँ जो तुमने मुझे बताए हैं। और हम जंग में फतह हासिल कर रहे हैं। लेकिन मैंने तुम्हें पहले बताया है कि हमारी फौज में काफ़ी कम लोग हैं। हम भारतीय फौजों को हरा सकते हैं, लेकिन हमारे पास भारतीय नागरिकों को हराने के लिए काफ़ी सिपाही नहीं हैं। गज़नी से और तुर्कों को यहाँ भेजने की ज़रूरत है। एक बड़ी फौज के साथ, हम जीत सकते हैं और राज कर सकते हैं। सुलतान को यह बताने की ज़रूरत है।'

मक़सूद ने इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं, करीम। हम तुर्क भयानक लड़ाके हैं। दुनिया में सबसे अच्छे। लेकिन हमारी फौज, गज़नी में हमारे सारे सिपाहियों समेत, इतनी बड़ी नहीं है कि पूरे भारत पर *राज* कर सके। यहाँ भारतीय बहुत बड़ी तादाद में हैं। हम बस इतने ताक़तवर हैं कि हमला कर सकें, लूट-पाट कर सकें और फिर गज़नी के अपने राज्य में महफ़ूज़ लौट सकें। अगर हम राज करना चाहते हैं तो हमें भारतीय प्रतिरोध को हमेशा के लिए तोड़ना होगा।'

'उनके प्रतिरोध को हमेशा के लिए रोकना? यहाँ करोड़ों भारतीय हैं। तुम कैसे हमेशा के लिए...'

'दक्षिण भारत की ज़मीन को भूल जाओ। वहाँ ज़्यादातर उग्र, विद्रोही हिन्दू हैं। लेकिन उत्तर भारत के ज़्यादातर, ख़ासकर कुलीन हिन्दू निर्बल और अहिंसक बन गए हैं। वो शाकाहार और महिला अधिकारों का जश्न मनाते हैं। वो कमज़ोर हैं। हम पहले उत्तर भारत को जीत सकते हैं, अपने शासन को मज़बूत कर सकते हैं, और फिर दक्षिण जा सकते हैं।'

'लेकिन उत्तर भारत में भी तो काफ़ी लोग हैं। यह इतनी बड़ी ज़मीन है, और —'

मक़सूद ने करीम को बीच में रोक दिया। 'तुम समझते नहीं हो। मैंने यहाँ कई साल बिताए हैं, उनके साथ घुल-मिलकर, उनके बारे में जानकारी हासिल कर... सिर्फ एक मक़सद के साथ: उनकी अजीब तहज़ीब को समझना। जो मैंने समझा है कि उत्तर भारत एक नहीं है। सही मायने में तीन हैं।'

'तीन?'

'हाँ। एक उत्तर भारत है कुलीन वंश के हिन्दुओं का। हमने अपने हमलों में उनके साम्राज्यों को एक-एक करके चुना है। युद्ध में प्रतिष्ठा के उनके बेवक़ूफ़ी भरे नियम-क़ायदे इस बात को पक्का कर देते हैं कि वो हमें हरा नहीं सकते। और वंश को लेकर उनका घमंड ये पक्का कर देता है कि आम लोग उनके लिए नहीं लड़ते।'

'और दूसरा?'

'दूसरा है बौद्धों का उत्तर भारत। भारत में ज़्यादातर बौद्ध व्यापारी समुदाय से हैं। और उनकी सबसे बड़ी तादाद पंजाब, अफगानिस्तान और बंगाल में केन्द्रित है। उन्हें हराना सबसे आसान है। वो अहिंसा, प्रेम और सहानुभूति में विश्वास करते हैं। और वो वास्तव में सोचते हैं कि चूँकि हम तुर्क कुछ साल पहले तक बौद्ध थे, हम उनके साथ निर्दयी नहीं होंगे।' ये कहकर, मक़सूद भद्दे तरीक़े से हँस दिया।

करीम को ये पसन्द नहीं आया। क्योंकि उसके माता-पिता बौद्ध थे, जिनसे उसे उसके बचपन में छीन लिया गया था।

मक़सूद तुरन्त समझ गया कि उसने क्या कर दिया है, और बात एकदम आगे बढ़ा दी। 'तीसरा समूह है अकुलीन वंश के हिन्दुओं का उत्तर भारत; किसानों, खेतिहरों, कारीगरों आदि का। और हमारी हुकूमत का असली विरोध यहीं से होगा। मैंने यही समझा है।'

'लेकिन अगर वो लोग अकुलीन वंश के हैं, तो वो संगठित नहीं होंगे। उनके प्रतिरोध का कोई नेतृत्व नहीं होगा जिसे तोड़ने की ज़रूरत पड़े।'

'सच पूछो तो, वो लोग हमारी सोच से कहीं ज़्यादा संगठित हैं। कुछ अकुलीन वंशों ने अपने राज्य बना लिए हैं। और उनमें से कई ऐसे हैं जो ऐसे प्रतिरोध का नेतृत्व कर सकते हैं। मैं एक ख़ास नेता पर नज़र रख रहा हूँ। मैं उसके बारे में जानकारी जुटा रहा हूँ।'

'क्या तुम उसे...'

'ख़त्म नहीं कर सकते?' मक़सूद ने पूछा। 'मैंने इस बारे में सोचा है। ऐसे कई मौक़े भी थे। लेकिन अगर हम उसे धोखे से ख़त्म करेंगे, तो हम उसे शहीद बना देंगे, एक प्रेरणा, जो प्रतिरोध को और ताक़तवर कर देगी। दूसरा नेता खड़ा हो जाएगा। हम ऐसा नहीं होने दे सकते। हमें उसे सही वक़्त पर, सही जगह पर मारना होगा। हमें इस नेता को आमने-सामने की जंग में हराना होगा। साफ़-सुथरे ढंग से। जहाँ हम उसकी मिसाल सबके सामने रख सकते हैं। हमें उसे आमने-सामने की लड़ाई के लिए ललकारना होगा। और फिर हमें उसके एक-एक अनुयायी को मार डालना होगा। ताकि हम हर उस शख़्स में एक ईश्वर का डर पैदा कर सकें जो अकुलीन वंश के उस भारतीय नेता जैसा बनना चाहता है। शायद हम उसकी कटी-फटी लाश

को पूरे उत्तर भारत में जगह-जगह दिखाएँगे। शायद उसे सबके सामने यातना देंगे। इससे प्रतिरोध ख़त्म होगा। फिर हम क़यामत के दिन तक हुकूमत करेंगे।'

करीम शान्त रहा। अगर मक़सूद के लिए उसका प्यार गहरा नहीं होता, तो वो अब तक आतंकित हो चुका होता। वो समझ नहीं सका कि कैसे कोई आदमी एक पल इतने प्यार और परवाह से भरा हो सकता है, और अगले ही पल इतना बड़ा राक्षस। *मुझे ओज़गुर की बात सुननी चाहिए। मक़सूद की भलाई के लिए। शायद तब हम...*

'तुमने मुझसे उसका नाम नहीं पूछा, मेरे महबूब...' मक़सूद ने करीम के बालों से खेलते हुए कहा।

'माफ़ करना,' करीम ने नरमी से कहा। 'मेरा ध्यान भटक गया था। कौन है वो आदमी जिस पर तुम्हारा ग़ुस्सा बरसेगा?'

'श्रावस्ती का सुहेलदेव।'

करीम ने उसकी बात खारिज करने के अन्दाज़ में अपना हाथ लहराया। 'अभी के लिए सुहेलदेव को भूल जाओ। तुम कुछ घंटों में चले जाओगे। मुझे कुछ ऐसा दो जो मुझे याद रहे।'

और करीम नीचे झुक गया मक़सूद को चूमने के लिए।

वैद्य पट्टियाँ बदलने के बाद चला गया। सुहेलदेव को इस प्रक्रिया से नफ़रत थी, क्योंकि इसमें बहुत दर्द होता था। इससे वो अपने आप को कमज़ोर महसूस करता था। एकाएक उसका शरीर पूरी तरह नाज़ुक लगने लगा था। इतना नाज़ुक कि हवा से सम्पर्क भी उसे ऐसा लगता था कि कोई उसे पंजे मार रहा है। औषधीय मरहम से थोड़ी राहत मिलती थी। लेकिन इतना काफ़ी नहीं था।

तोशानी पुरानी पट्टियों को ठिकाने लगाकर कमरे में दोबारा आई। पट्टियाँ बदलने की इस प्रक्रिया से सुहेलदेव की नफ़रत की दूसरी वजह तोशानी थी। वो उसके सामने अपने को कमज़ोर और असहाय दिखाकर शर्मिन्दगी महसूस करता था। वो अपनी चोट के बजाय हर चीज़ की बात करता। 'म्म्म...घेरे...के बारे में...'

'घेरे के पहरेदार सतर्क और ताक़तवर हैं,' तोशानी ने कहा। 'अब्दुल उसका इन्तज़ाम देख रहा है। उनके बारे में भूल जाओ। तुम्हारा दर्द कैसा है?'

'मैं ठीक हूँ...मैं ठीक हूँ...मुझे लगता है मैं...कल से घुड़सवारी कर सकता हूँ।'

तोशानी मुस्कुराई। 'हाँ, तुम पक्के तौर पर कर सकते हो।' उसने एक प्याला आगे बढ़ाया। 'लेकिन अभी के लिए, इसे पियो।'

'यह क्या है?'

'इसे वैद्य ने बनाया है। इससे तुम्हें अच्छी नींद आएगी। और घाव को जल्दी भरने में मदद मिलेगी।'

सुहेलदेव ने चुपचाप उस जोशांदे को पी लिया। उसने अपने हाथ के पिछले हिस्से से धीरे से अपना मुँह पोंछा और बुदबुदाया, 'हाँ, मैं...घुड़सवारी कर सकता हूँ...'

'बिल्कुल, तुम कर सकते हो।'

'घेरे के...पहरेदार...'

'चिन्ता मत करो। सो जाओ।'

'हाँ...अब्दुल...ख्याल रखेगा...'

सुहेलदेव की आँखें धीरे-धीरे बन्द होने लगीं और उस पर नींद हावी होने लगी।

अध्याय 17

ओज़गुर ने चारों तरफ़ घबराते हुए देखा। उसे पक्का यक़ीन था कि उसने अपने मालिक का घोड़ा देखा था। वो पिछले दो दिनों से उसका पीछा कर रहा था। उसकी रफ्तार से मेल करने की पूरी कोशिश कर रहा था। उसका मालिक बहुत तेज़ी से चला गया था!

जैसे ही ख़बर आई थी ओज़गुर तुरन्त निकल गया था। करीम ने उसे उसी वक़्त निकल जाने का हुक्म दिया था।

पेड़ों और घनी लम्बी घास ने काफ़ी हद तक रोशनी को रोक रखा था। अभी दोपहर बीती नहीं थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि शाम हो चुकी है। पत्तियों से छनकर प्रकाश की किरणें आ रही थीं, और इस सुनसान जगह को एक ख्वाबी अहसास दे रही थीं।

हालांकि, इस जगह की खूबसूरती ओज़गुर के लिए कोई मायने नहीं रखती थी, जो लगातार अपने दोनों तरफ़ देखता जा रहा था।

कहाँ हैं वो?

अचानक, उसे एक उँगली अपनी कमर में चुभती महसूस हुई।

एक शान्त लेकिन मज़ाकिया आवाज़ सुनाई दी। 'पिछले पाँच मिनटों में मैं तुम्हें क़रीब दस बार मार सकता था।'

ओज़गुर ने इस आवाज़ को सुनकर राहत की सांस ली और मुड़ा। 'मेरे मालिक सालार म—'

ओज़गुर के शब्द बीच में ही कट गए क्योंकि उसके मुँह को बन्द कर दिया गया था। उसके मालिक ने चेतावनी भरे लहजे में फुफकारा।

'मैंने तुम्हें कितनी बार बताया है, ओज़गुर? मेरा असली नाम मत लिया करो जब मैं तुर्कों के साथ नहीं रहता। पेड़ों के भी कान होते हैं।'

पछताते हुए ओज़गुर ने सालार की दाढ़ी छूई। 'मुझे माफ कर दें, हुज़ूर। मुझे माफ कर दें।'

'भारत में, मेरा नाम असलान है। यही नाम तुम इस्तेमाल करोगे। हमेशा।'

'हाँ, हुज़ूर असलान।' ओज़गुर के घूँसे का निशान अभी भी असलान के चेहरे पर दिख रहा था और तुर्क सैनिक ने उसे देखकर अपनी आँखें मींच लीं। 'मुझे माफ करें। मैंने आपका हुक्म मानने में ज़रूरत से ज़्यादा जोश दिखा दिया था।'

असलान ने उसकी माफी को ज़्यादा तवज्जो नहीं दी। 'इसके बारे में फिक्र मत करो। तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे थे? ऐसी क्या अहम ख़बर है?'

'हुज़ूर करीम ने मुझे भेजा है, एक ज़रूरी सन्देश के साथ, हुज़ूर असलान।'

'क्या सन्देश है?' असलान ने पूछा।

'हुज़ूर...' ओज़गुर हिचकिचाता दिख रहा था।

'बताओ, ओज़गुर! मुझे जल्दी बताओ। मुझे सुहेलदेव की छावनी तक वापस पहुँचना है।'

'हुज़ूर...हुज़ूर करीम को अभी-अभी ये ख़बर मिली है कि...'

असलान अधीर हो रहा था। 'अल्लाह के लिए, ओज़गुर। इतना समय मत लो! क्या ख़बर है?'

ओज़गुर ने एक गहरी सांस ली। 'गज़नी से एक सन्देश आया है कि सुलतान नहीं रहे।'

'क्या?!' असलान चौंक पड़ा। 'सुलतान की मौत हो गई? तुम्हें पक्का पता है?'

'हुज़ूर करीम ने इसे ख़ुद पक्का किया है। यह सच है।'

'लेकिन उनकी सेहत तो हमेशा अच्छी रहती थी। क्या हुआ?'

'कोई नहीं जानता। आपने जो कहा वो सच है: सुलतान महमूद को कभी ज़ुकाम तक नहीं होता था। वो जंग के घावों से भी बहुत जल्दी उबर जाते थे। लेकिन वो अचानक मर गए। गज़नी में ही। हम पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि क्या हुआ। कोई ब्यौरा तो नहीं है, हालांकि कई अफवाह ज़रूर हैं—किसी गद्दार के हाथ से लेकर किसी खुफिया बीमारी तक। मैंने कुछ लोगों को कहते सुना है कि *काफिरों* ने भारतीय मन्दिरों पर सुलतान के हमले का बदला लेने के लिए काला जादू इस्तेमाल किया होगा।'

असलान ज़मीन पर गिर पड़ा, वो इस भयानक ख़बर को सुनकर सन्न था। यह ऐसा था कि जैसे दुनिया की धुरी अचानक टेढ़ी हो गई हो। सुलतान महमूद की शख्सियत उनकी ज़िन्दगी से भी बड़ी थी। एक बड़ी शख्सियत जिसके अनुयायी उसे नायक की तरह पूजते थे और जिसके दुश्मन उससे डरते और नफ़रत करते थे। अचानक उसके बिना इस दुनिया की सोचना नामुमकिन था।

ओज़गुर अब मुख्य मुद्दे पर आया जो करीम ने उसे असलान को बताने के लिए कहा था। 'मेरे हुज़ूर, आपको अब गज़नी लौटना होगा। हुज़ूर करीम ने कहा है कि —'

असलान ने ओज़गुर की बात काट दी। 'अब मैं वहाँ क्या करूँगा? सुलतान के जाने के साथ...'

अब असलान को टोकने की बारी ओज़गुर की थी। 'हुज़ूर, सुलतान के बेटों के बीच गृह युद्ध छिड़ने की अफवाह है। भारत में मौजूद तुर्क फौजों को गज़नी वापस बुलाया जा रहा है। हमें हुक्म दिया गया है कि हम सच्चे वारिस के पक्ष में लड़ें।'

असलान ने अपना सिर हिलाया। 'सुलतान की मौत। गज़नी में गृह युद्ध। वाह, रातों-रात दुनिया ही बदल गई है।'

'क्या आप गज़नी लौट रहे हैं, मेरे हुज़ूर?'

असलान चुप रहा।

'मुझे हुज़ूर करीम को आपके फैसले के बारे में बताना है,' ओज़गुर ने कहा।

'मैं आऊँगा,' असलान ने कहा। 'लेकिन तुरन्त नहीं।'

'मेरे हुज़ूर? लेकिन क्यों? आपको गज़नी में अहम किरदार अदा करना है। आपको पक्के—'

'मेरा असली भविष्य गज़नी में नहीं है। यहाँ भारत में है।'

ओज़गुर चुप रहा।

'मैं सुहेलदेव के साथ अपना काम ख़त्म करूँगा और फिर गज़नी लौटूँगा। तुम करीम को यह बता सकते हो।'

'हाँ, मेरे हुज़ूर,' ओज़गुर ने उसे सलाम करते हुए कहा।

'विदा, मेरे दोस्त। अल्लाह तुम्हारे साथ रहे।'

'और आपके साथ भी, मेरे हुज़ूर।'

ओज़गुर के जाने के बाद, असलान ज़मीन पर थोड़ी देर के लिए पड़ा रहा। अन्त में, एक ठंडी सांस लेकर, वो उठा और धीरे-धीरे दौड़कर वहाँ पहुँचा जहाँ उसने अपना घोड़ा छोड़ा था। घोड़े ने उसे प्यार से सूँघा। उसने अनमने ढंग से घोड़े को थपथपाया, काठी पर सवार हुआ और उसे ऐड़ लगाकर चलाने लगा। सुहेलदेव के छिपने की जगह पहुँचने में कई दिन लगने थे।

सुहेलदेव अपने घाव भरने की धीमी रफ्तार से परेशान हो गया था। दर्द अब सहन होने लगा था, लेकिन उसे अभी भी कमज़ोरी थी। वो अब अपने बिस्तर से उठने के काबिल हो गया था। वो थोड़ी देर तक खड़ा हो सकता था। और बहुत धीमी रफ्तार से टहल भी सकता था।

सुहेलदेव जैसे स्वाभाविक रुप से चुस्त व्यक्ति के लिए, बिस्तर पर लम्बे समय तक पड़े रहना बहुत बड़ी यातना थी। शुरुआत में उसके पास कोई विकल्प नहीं था क्योंकि उसका शरीर बेहद कमज़ोर था। लेकिन जैसे-जैसे उसका घाव भर रहा था और उसकी ताक़त लौट रही थी, उसके लिए बस यूँ ही पड़े रहना बहुत पीड़ादायक हो गया था। पागल बना देने वाली गर्मी अलग परेशान कर रही थी।

उसके कान खड़े हो गए जब उसे छत पर बारिश की बूँदें टपकने जैसी आवाज़ सुनाई दी। इसके बाद कुछ और बूँदें आईं। फिर अचानक, तेज़ बारिश होने लगी।

'बारिश!' सुहेलदेव बच्चों की तरह ख़ुश हो गया।

उसने धीरे-धीरे बिस्तर से अपने पैर खींचे। उसके पास बैठे वैद्य ने मदद करनी चाही, लेकिन सुहेलदेव ने उसे मना कर दिया। अपने हाथों की मदद से वो अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

वैद्य ने उसकी ओर सवालिया निगाहों से देखा।

'मैं जल्दी लौट आऊँगा,' सुहेलदेव ने कहा। 'मुझे थोड़ी देर बारिश देखने दो।'

वैद्य ने अनिच्छा से हामी भरी। 'ठीक है। लेकिन भीगना नहीं। किसी भी हाल में तुम्हारा घाव संक्रमित नहीं होना चाहिए।'

सुहेलदेव ने चेहरा बनाया, लेकिन सिर हिलाकर हामी भर दी। उसे कुछ दिनों पहले झोपड़ी से हटाकर अगले गाँव के एक धनी व्यापारी के घर में ले आया गया था। ताकि उसकी बेहतर तरीक़े से देखभाल हो सके। बड़े, हवादार, रौशन कमरे, मेहराबदार दरवाज़े और सुन्दर भित्तिचित्रों से सजी दीवारों वाला ये घर, सुहेलदेव के पिछले घरों की तुलना में बहुत बेहतर था।

घर आयताकार बना हुआ था, और इसके बीच में एक खुला आंगन था। वास्तुशास्त्र की पारम्परिक भारतीय शैली। भारतीय मौसम के हिसाब से उपयुक्त क्योंकि इससे घर में ताज़ी हवा और प्राकृतिक रोशनी की कमी नहीं होती थी। आंगन का फर्श मिट्टी की ईंटों से ढंका था, और इसके बीच में चम्पा का पेड़ था। आंगन घर के लोगों के लिए यादगार मौक़ों पर एक साथ जमा होने की जगह भी था।

सुहेलदेव अपने कमरे से बाहर निकलकर बीच के आंगन से लगे गलियारे में आ गया, जिसके ऊपर छत थी। उसने आसमान की तरफ़ देखा। बारिश को नीचे आते हुए। शामियाने के किनारों से दूर रहने की सावधानी बरतते हुए, अपने आप को ऊपर से हो रही बारिश से सुरक्षित रखते हुए। उसने गहरी सांस ली। मिट्टी की सोंधी सुगंध को अपने अन्दर समाया। इंसान की जानकारी में सबसे पोषक सुगंधों में से एक।

सुहेलदेव के मस्तिष्क ने भी वैसी ही प्रतिक्रिया दी, जैसी पहली बारिश को देखकर ज़्यादातर भारतीयों का मस्तिष्क देता है।

ख़ुशी। आनन्द। आध्यात्मिक प्रसन्नता। रूमानियत। प्रेम। जीवन की वापसी पर प्रेम।

वो अपने आप को मुस्कुराने से रोक नहीं सका, मन ही मन उसने महादेव को धन्यवाद दिया, उसे जीवित रखने और एक और वर्षा ऋतु का आनन्द देने के लिए।

उसने अपनी आँखें बन्द कीं। बारिश के संगीत की मादकता को अपने मन और अपनी आत्मा पर छाने देने के लिए।

उसे एक पुरानी धुन याद आ गई, जिसे उसने बचपन में सुना था। इस गीत में बारिश के प्रेम का वर्णन था, और प्रेम की उस बारिश का जो मौसम की देन था।

उसने धुन गुनगुनानी शुरू कर दी। धीमे-धीमे।

और तभी, जैसे कि उसे प्रेम के देवता, कामदेव निर्देशित कर रहे हों, सुहेलदेव की आँखें खुलीं और बिना किसी विशेष कारण के वह पीछे मुड़ा।

और सन्न रह गया।

थोड़ी दूरी पर, आंगन के दूसरे छोर पर, तोशानी खड़ी थी।

उसने शामियाने के नीचे खड़े रहने की ज़रूरत नहीं समझी थी। वो खुले आंगन में आ गई थी। ऊपर से होती बारिश में खड़ी। आँखें बन्द। चेहरा आसमान की तरफ़। पूरा शरीर भीगा हुआ। कपड़े शरीर से चिपके हुए।

सुहेलदेव ने गुनगुनाना बन्द कर दिया था। लेकिन वो धुन उसके मन में बज रही थी। पहले से कहीं तेज़ आवाज़ में।

प्रभु कामदेव, दया करो...

सुहेलदेव ने तोशानी को केवल एक योद्धा की पोशाक में देखा था। अभी तक। एकाएक उसे अहसास हुआ कि तोशानी का अंग-प्रत्यंग उसके चेहरे की तरह आकर्षक है। उसकी बाँहें और कंधे पूर्ण विकसित और पुष्ट थे, लेकिन वो स्थूल नहीं, बल्कि लचीले थे। उसके पतले शरीर की तुलना में उसके वक्ष आश्चर्यजनक रूप से बड़े थे, जिस पर सुहेलदेव का ध्यान आज तक नहीं गया था क्योंकि वो हमेशा चमड़े का कवच पहने रहती थी। पतली कमर और पुष्ट कूल्हों के साथ मिलकर उसके वक्ष तोशानी को आकर्षक और सुडौल बना रहे थे। ऐसा लग रहा था कि बारिश की बूँदें उसे प्यार से सहला रही हों जब वो उसके चुस्त, मज़बूत और युवा तन पर फिसल रही थीं।

सुहेलदेव उसे देखता रहा। उसका मुँह खुला रह गया। सांस धीमी चलने लगी। ऐसा लगा कि समय रुक सा गया हो। तोशानी ने निश्चित रूप से सुहेलदेव की नज़रें महसूस की होंगी, क्योंकि उसने अपनी आँखें खोलीं और उसकी ओर मुड़ी। उनकी नज़रें मिलीं, और तोशानी ने भी पलटकर उसे घूरा।

दूसरी तरफ़ देखो। दूसरी तरफ़ देखो।

लेकिन सुहेलदेव की आँखें अब उसके नियन्त्रण में नहीं थीं। वो अपने आप को मोड़ नहीं सका।

तोशानी की नज़रें भी दूसरी तरफ़ नहीं घूमीं। वो वहाँ बस खड़ी रही। बारिश में। सुहेलदेव को ताकती हुई। उसे अपनी तरफ़ देखने देते हुए।

कोई शब्द नहीं बोला गया। किसी शब्द की ज़रूरत भी नहीं थी।

एक मुस्कुराहट। हल्की। फीकी।

वो मेरी ओर देखकर मुस्कुराई। वो...

'हुज़ूर!'

सुहेलदेव को इस व्यवधान से नाराज़गी महसूस हुई। वो मुख्य दरवाज़े की ओर मुड़ा। वहाँ अब्दुल था। सुहेलदेव फिर तोशानी की ओर मुड़ा। वो जा चुकी थी।

सत्यानाश!!

'हुज़ूर,' अब्दुल ने सुहेलदेव की तरफ़ तेज़ी से आते हुए कहा। 'असलान लौट आया है।'

‘महादेव शिव रक्षा करें,’ सुहेलदेव फुसफुसाया, चेहरे पर आश्चर्य के भाव थे।

सुहेलदेव अब अपने कमरे में, वैद्य के निर्देशानुसार, बिस्तर पर लेटा था। बिस्तर के पास आरामदायक कुर्सियों पर गोवर्धन, तोशानी, अब्दुल और असलान बैठे थे। तोशानी ने अपने कपड़े बदल लिए थे। ना सुहेलदेव और ना उसने, उस चीज़ की बात छेड़ी थी, जो थोड़ी देर पहले बारिश में हुई थी। यहाँ तक कि अपनी आँखों से भी नहीं।

ये सभी बातें भुला दी गई थीं। सभी का ध्यान दूसरी चीज़ पर था। हर कोई उसकी मौत की ख़बर से भारी आश्चर्य में था जिसे वो शैतान समझते थे: गज़नी का सुलतान यमीन-उद-दावला अबुल-कासिम महमूद इब्न सेबुक्तगिन।

‘उसकी मौत कैसे हुई?’ गोवर्धन ने पूछा।

‘शायद किसी को नहीं मालूम,’ असलान ने कहा। ‘मेरे स्रोत कनिष्ठ सैनिक हैं, अधिकारी नहीं, इसलिए उन्हें इसका ब्यौरा नहीं मालूम।’

‘मुझसे उस कमीने को अपने हाथों से मारने का मौक़ा चूक गया,’ गोवर्धन गुर्राया। ‘मैंने सोमनाथ जी का प्रतिशोध लेने का मौक़ा गंवा दिया।’

असलान ने कुछ नहीं कहा। वो गोवर्धन को देखता रहा। उसका चेहरा भावहीन था। ये पढ़ पाना नामुमकिन था कि वो क्या सोच रहा था।

‘क्या उसे तकलीफ़ हुई?’ अब्दुल ने पूछा।

असलान ने हामी भरी। ‘मैंने सुना कि उसे काफ़ी तकलीफ़ हुई थी।’

अब्दुल ने भगवान का शुक्रिया अदा करने के लिए अपने चेहरे पर अपनी हथेली फेरी। ‘अल्लाह वक़्त लगा सकता है, लेकिन वो हमेशा इंसाफ़ करता है। वो हमेशा उन राक्षसों को सज़ा देता है जो इसके हकदार हैं।’

असलान अभी भी ख़ामोश रहा।

तोशानी ने सुहेलदेव की तरफ़ देखा, क़रीब-क़रीब वो जान गई थी कि वो क्या सोच रहा होगा। वो असलान की तरफ़ मुड़ी और नरम लहजे में पूछा, ‘तुर्क फौजें अब क्या कर रही हैं?’

‘वो सभी गज़नी लौट रहे हैं,’ असलान ने कहा। ‘दरअसल, सुलतान के वारिसों के बीच गृह युद्ध छिड़ गया है।’

‘तो, क्या भारत तुर्कों के आतंक से मुक्त हो गया है?’ तोशानी ने पूछा।

इससे पहले कि असलान जवाब दे पाता, सुहेलदेव ने कहा। ‘सिर्फ अभी के लिए...’

असलान ने अपनी भौंहें चढ़ाईं, एक बार फिर वो सुहेलदेव की चतुराई से प्रभावित हुआ। सही मायने में, वो तुर्कों के लिए एक ताक़तवर दुश्मन होगा।

‘हाँ,’ असलान ने कहा। ‘राजकुमार सही कह रहे हैं। कुछ साल भले लगें, लेकिन तुर्क निश्चित रूप से लौटेंगे।’

अब्दुल ने असलान को घूरा। ‘ये चेतावनी है या धमकी?’

'अब्दुल...' सुहेलदेव ने अपने शब्दों के बजाय अपने लहजे से अब्दुल को धैर्य रखने की सलाह दी।

'ये धमकी नहीं है, अब्दुल,' असलान ने कहा। 'सिर्फ सच्चाई का बयान है। तुम चाहो तो इस पर यक़ीन ना करो। हो सकता है कि इससे तुम्हें आश्चर्य हो, लेकिन राजकुमार सुहेलदेव की तरक्की में मेरा भी स्वार्थ है।' असलान झूठ नहीं कह रहा था। 'वैसे भी, मैं अब ज़्यादा दिनों तक तुम्हें परेशान करने के लिए नहीं रहूँगा।'

'तुम कहाँ जा रहे हो, मेरे दोस्त?' गोवर्धन ने पूछा।

असलान उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। 'अभी मेरी ज़रूरत नहीं है। कम से कम तब तक नहीं, जब तक तुर्कों का गृह युद्ध ख़त्म नहीं हो जाता। मैं सोच रहा हूँ कि मैं सूफी रास्ते पर लौट जाऊँ। एक उस्ताद की तलाश करूँ। अमन की बातें फिर से सीखूँ।'

सुहेलदेव ज़ोर से हँस पड़ा। 'तुम पैदाइशी लड़ाके हो, असलान। मुझे नहीं लगता कि तुम सूफी रास्ते के लिए बने हो।'

'सूफी रास्ता तुम्हें पुरानी चीज़ें भुलाता है और फिर तुम्हें नए सिरे से गढ़ता है, मेरे दोस्त।'

सुहेलदेव ने असलान के हाथ थपथपाए। 'फिर भगवान शिव तुम्हें रास्ता दिखाएँ। मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा।'

असलान ने सिर झुकाया और सुहेलदेव के हाथ को मज़बूती से पकड़ा। 'शुक्रिया, मेरे राजकुमार।'

'क्या तुम्हें कोई अन्दाज़ा है कि गृह युद्ध कौन जीतेगा, असलान?' तोशानी ने पूछा। 'महमूद का कौन सा बेटा आने वाले वक़्त में हमारा दुश्मन होगा?'

सुहेलदेव ने फिर से दख़ल दिया। 'जितना मैंने सुना है, महमूद के बेटे उतनी अहमियत नहीं रखते। सबसे ज़्यादा अहमियत है उसके चहेते सेनापति की। वो जिस पक्ष का साथ देगा, सम्भवतः युद्ध वही जीतेगा।'

असलान ने कुछ नहीं कहा। *सुहेलदेव को कितनी जानकारी है? तुर्कों के बारे में उसकी जानकारी के स्रोत क्या हैं? क्या वो मेरे अलावा किसी और को भी जानता है?*

'ये सेनापति कौन है?' गोवर्धन ने पूछा।

'भारत में प्रधान तुर्क सेनापति, सालार मक़सूद,' सुहेलदेव ने ये कहकर असलान की तरफ़ देखा। 'मैं सही कह रहा हूँ, मेरे दोस्त?'

नाम ने असलान के दिल पर सुहेलदेव के अनुमान से कहीं ज़्यादा चोट की। लेकिन प्रशंसनीय रूप से, असलान ने अपने चेहरे पर ताज्जुब के जज़्बात नहीं आने दिए।

अध्याय 18

सन्तरी ने अपनी दाहिनी बाँह ऊपर उठाई, जिसकी मुट्ठी भिंची हुई थी। ये संकेत था रुकने का। अब्दुल और गोवर्धन, जो उसके ठीक पीछे थे, तुरन्त रुक गए और अपने पीछे आ रहे लोगों को रुकने का संकेत दिया।

असलान के सूफी रास्ते की तलाश में जाने के बाद से कुछ हफ्ते बीत चुके थे। सुहेलदेव अब अपनी चोट से क़रीब-क़रीब पूरी तरह उबर चुका था। अब वो घोड़े पर सवारी कर सकता था। और उसने फैसला किया था कि उन्होंने एक जगह पर काफ़ी वक़्त बिता लिया है। भले ही तुर्क फौज का बड़ा हिस्सा गज़नी लौट रहा था, कई तुर्क अभी भी ग्रामीण इलाक़ों में फैले हुए थे। एक जगह पर अभी भी, लम्बे समय तक रुकना सुहेलदेव के दस्ते के लिए जोखिम भरा था। इसलिए, उसने आदेश दिया था कि वो लोग एक दूसरे गाँव में चलें, जो उनका एक सुरक्षित ठिकाना था। जहाँ कुछ दिनों की घुड़सवारी के बाद पहुँचा जा सकता था। उसका पूरा दस्ता उसके साथ था।

सुहेलदेव ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और उलझन में घिरा अब्दुल और गोवर्धन के पास पहुँचा। उसने अपनी दाहिनी हथेली उठाकर इशारा किया, उसका अंगूठा और तर्जनी सीधी थी जबकि बाक़ी तीन उँगलियाँ ऊपर की ओर मुड़ी हुई थीं। *क्या हुआ?*

गोवर्धन ने एक उँगली अपने होंठों पर लगाई, फिर अंगूठे से सन्तरी की ओर इशारा किया। *हमें शान्त रहना होगा। उसे कुछ दिखा है।*

दल जंगल में एक उबड़-खाबड़ रास्ते से गुज़र रहा था। रास्ता एक मैदान में जाकर खुलता था। सन्तरी रास्ते के बिल्कुल किनारे पर था और घने पेड़ों की ओट से मैदान की तरफ़ देख रहा था।

सुहेलदेव उस सन्तरी के पास गया, इस बात का ख्याल रखते हुए कि कोई शोर ना हो। पल भर की हिचकिचाहट के बाद, अब्दुल और गोवर्धन भी पीछे-पीछे आ गए। सुहेलदेव के पास आने पर सन्तरी ने उसकी ओर देखकर गर्दन हिलाई, फिर मैदान की तरफ़ इशारा किया।

दो युवा संन्यासी फटे कपड़ों में वहाँ बैठे हुए थे। ज़मीन पर। वो थके-माँदे लग रहे थे। भूखे। क़िस्मत और मौसम के हाथों हारे हुए।

उन्हें चार लोगों ने घेर रखा था, जिनके हाथों में तलवारें थीं। चारों बदमाशों ने फटे-पुराने, बिना मेल खाते कपड़े पहन रखे थे। उनके लम्बे बाल बिखरे हुए और दाढ़ी घनी थी। उनसे आती दुर्गंध से साफ़ था कि वो हफ्तों से नहाए नहीं थे। उनके चेहरे-मोहरे बताते थे कि वो तुर्क थे। शायद वो लोग गज़नी फौज से निकाले गये थे।

एक संन्यासी ने लकड़ी का दंड हाथ में पकड़ा हुआ था। दूसरे के हाथ में कोई हथियार नहीं था, हालांकि उसके बगल में ज़मीन पर एक पुराना धनुष रखा था जो कभी भी टूट सकता था।

'मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है...हमारे पास कोई क़ीमती चीज़ नहीं है,' दंडधारी संन्यासी ने कहा। 'तुम्हें हमें छोड़ देना चाहिए।'

'यहाँ हमारा हुक्म चलेगा,' उन चार तुर्कों में से एक ने कहा। 'अपने कपड़े उतारो।'

'तुम बड़ी भूल कर रहे हो,' संन्यासी ने चेतावनी दी।

वो डाकू ज़ोर से हँस पड़ा। 'चलो देखते हैं। यहाँ हम चार लड़ाके हैं जिनके सामने तुम दो रोते हुए अहिंसक डरपोक बच्चे हो। हमारे पास हथियार हैं, तुम्हारे पास खिलौने हैं। और गलती हम कर रहे हैं?'

'हाँ,' उस संन्यासी ने शान्त स्वर में कहा। 'तुम्हारी तादाद हमारे लिए बहुत ज़्यादा है। और मैंने तुम्हें पहले भी बताया है कि हमारे कपड़ों में कोई सोना नहीं छिपा है।'

'वो मूर्ख युवक स्वयं और अपने दोस्त को मरवाएगा,' गोवर्धन ने फुसफुसाते हुए कहा। 'क्या हम वहाँ चलें?'

'थोड़ी देर बाद,' सुहेलदेव ने जवाब दिया। वो उस युवा बौद्ध संन्यासी के आत्मविश्वास को देखकर प्रभावित था।

'आख़िरी चेतावनी...जो कहा गया है, वो करो...' तुर्क डाकुओं के सरदार ने अपनी तलवार को धमकाने वाले अन्दाज़ में उठाते हुए कहा, '...वरना मैं तुम दोनों बुतपरस्तों को उसी चरण कमल के पास पहुँचा दूँगा जिन्हें तुम प्यार करते हो।'

संन्यासी ने इतनी तेज़ी से हाथ चलाया कि सुहेलदेव और उसके साथियों को भी कुछ समझ नहीं आया। उसने अपने दंड से तुर्क सरदार के पेट पर ज़ोरदार प्रहार किया। उस आदमी के शरीर से जैसे धमाके के साथ हवा बाहर निकल गई। जैसे ही वो इस वार की ताक़त से ऊपर उछला, संन्यासी ने अपना दंड ऊपर उठाया, और सीधे उस आदमी के जबड़े पर दे मारा। कुछ चटकने की ज़ोर की आवाज़ पूरे मैदान में गूँज गई और वो आदमी ज़मीन पर गिरने के पहले ही ठंडा हो गया।

पल भर के लिए दूसरे डाकू सन्न रह गए, फिर ग़ुस्से से गरजते हुए संन्यासी पर हमला करने दौड़े। संन्यासी ने दंड से दोबारा प्रहार किया, इस बार प्रहार नीचे की तरफ़ झाड़ू लगाने के अन्दाज़ में था। एक तुर्क को अचानक अपने पैर शरीर से

बाहर जाते महसूस हुए। वो चौंककर चीख़ा जब वो सिर के बल ज़ोर से ज़मीन पर गिरा। और वो ज़मीन पर पड़ा रहा। बेहोश।

तीसरे आदमी ने अपनी तलवार उठाई और ज़ोर से उसके सिर के पीछे वार किया, उसकी खोपड़ी को तोड़ने की कोशिश में। संन्यासी ने फुर्ती से अपना दंड ज़मीन के समानान्तर सीधा किया और उसके वार को रोक लिया। तुर्क के वार की ताक़त से तलवार दंड में धंस गई। जब वो इस हताशा में गुर्राते हुए अपनी तलवार बाहर खींचने की कोशिश कर रहा था, संन्यासी ने दंड को छोड़ भर दिया। तुर्क का सन्तुलन बिगड़ा और वो आगे की ओर लड़खड़ा गया। संन्यासी ने तेज़ी से अपने हाथ को कलारीपयट्टू शैली में ऊपर लहराया। गर्दन पर हुए उस प्रहार से तुर्क बेहोश हो गया।

चौथा तुर्क पीछे से संन्यासी पर हमले की कोशिश कर रहा था। संन्यासी, इस लड़ाई के दौरान भी, चारों तरफ़ नज़रें रख रहा था। वो बिजली की गति से अपने पैरों पर घूम गया। तुर्क ने संन्यासी की गर्दन पर ज़ोर से वार किया और उसका सिर काटने की कोशिश की। बस, उसका लक्ष्य वहाँ नहीं था। डाकू का मुँह खुला रह गया जब उसने देखा कि संन्यासी ने अपने आपको पीछे की तरफ़ इतना मोड़ लिया कि उसकी पीठ क़रीब-क़रीब ज़मीन की सीध में आ गई। तलवार उसके ऊपर से बिना नुक़सान पहुँचाए गुज़र गई।

'भगवान महादेव की शपथ...' सुहेलदेव फुसफुसाया, वो इस अद्भुत युद्ध कौशल को देखकर हतप्रभ था।

इसके पहले कि तुर्क डाकू अपने आप को संभालकर दूसरा वार करता, संन्यासी ने स्वयं को सीधा किया और अपनी खुली हथेली से अपने विपक्षी के पेट की नस पर वार किया। संन्यासी की पीठ के सीधा होने से मिली ताक़त के साथ, इस वार का वैसा ही असर हुआ जैसा किसी लच्छेदार कमानी को छोड़ने से होता है। डाकू पीछे की तरफ़ गिरा और एक ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन से जा टकराया। वो ज़मीन पर गिरकर, पानी से बाहर निकली मछली की तरह छटपटाने लगा।

दूसरा डाकू, जो ज़मीन पर गिरकर थोड़ी देर के लिए बेहोश हो गया था, होश में आ चुका था। उसने अपनी तलवार तक पहुँचने की कोशिश की, जो उसके पास ज़मीन पर पड़ी हुई थी। तभी वो जम सा गया जैसे ही एक तीर तलवार से बमुश्किल एक इंच दूर ज़मीन में आ धंसा।

'अगला तीर तुम्हारी कलाई पर लगेगा,' दूसरे संन्यासी ने चेतावनी दी, जिसने अपने धनुष पर एक और तीर पहले ही चढ़ा लिया था।

'तीर नहीं चलाना,' उस आदमी ने जल्दी से अपना हाथ पीछे खींचते हुए फटी आवाज़ में कहा।

'समझदार हो,' दूसरे संन्यासी ने कहा। फिर उसने आवाज़ ऊँची की। 'और तुम लोग, जो पेड़ों के पीछे हो...बाहर आ जाओ...धीरे-धीरे...अपने हाथ ऐसे रखना ताकि मुझे दिखते रहें।'

सुहेलदेव और उसके दोस्तों ने एक-दूसरे की तरफ़ ताज्जुब से देखा। फिर सुहेलदेव ज़ोर से हँस पड़ा। खिलखिलाते हुए ही, वो अपने घोड़े को मैदान में ले आया।

'शाबाश!' सुहेलदेव ने उस संन्यासी से कहा, जिसने अकेले चार लोगों को बिना किसी परेशानी के पछाड़ दिया था। 'शाबाश!'

सुहेलदेव के कुछ आदमी तुरन्त घोड़े से उतरे और तुर्क डाकुओं को बांधना शुरू कर दिया।

'और तुम कौन हो?' दंडधारी संन्यासी गुर्राया।

'मैं? मैं बस अच्छे योद्धाओं की प्रशंसा करने वाला व्यक्ति हूँ। लेकिन तुम कौन हो? कहाँ जा रहे हो? कहाँ से आ रहे हो?'

'हम काफ़ी दूर से, पुरुषपुर के पास एक गाँव से आ रहे हैं,' तीरन्दाज़ संन्यासी ने कहा। उसके साथी ने उसे देखकर आँख तरेरी, वो इस बात से नाराज़ था कि उसने अजनबियों को ये जानकारी दे दी।

'क्या तुम लोग वहाँ के प्रसिद्ध बौद्ध मठ के संन्यासी हो?' अब्दुल ने पूछा।

दोनों संन्यासियों ने तुरन्त घूमकर उसकी ओर देखा। उन्होंने कुछ नहीं कहा। लेकिन उनके हाव-भाव से उत्तर स्पष्ट था।

अब्दुल ने नरम लहजे में बात आगे बढ़ाई। 'हमने कुछ समय पहले इसकी बर्बादी की ख़बरें सुनी थीं। हमने ये भी सुना था कि...मेरा मतलब है...कि महन्त...'

'हाँ...' तीरन्दाज़ संन्यासी फुसफुसाया, उसकी आवाज़ में दर्द साफ़ महसूस हो रहा था। 'महन्त नहीं रहे। उन्होंने हमें बचाने की कोशिश में जान दे दी...वो... हमने सुना कि वो तब भी जीवित थे जब उन्होंने महन्त को आग के हवाले कर दिया...'

'कमीने,' अब्दुल गुर्राया। 'असहाय लोगों पर इस ढंग से हमला। यह अल्लाह के क़ायदों के ख़िलाफ़ है।'

बौद्ध संन्यासी के हाव-भाव तुरन्त बदल गए। 'तुम मुसलमान हो?'

सुहेलदेव ने अब्दुल की तरफ़ से जवाब दिया। 'वो पहले एक भारतीय है। बिल्कुल तुम्हारी तरह।'

संन्यासियों ने कुछ नहीं कहा।

अब्दुल का लहजा नरम ही रहा। फिक्र से भरा। 'क्या केवल तुम्हीं लोग बचे हो?'

धनुर्धर संन्यासी ने जवाब दिया। 'मठ से हममें से ग्यारह लोग बच निकले थे। एक की मौत रास्ते में हो गई। बाक़ी आठ बूढ़े थे जो रास्ते के अलग-अलग मठों से जुड़ गए। लेकिन हम दोनों नहीं। क्योंकि हमारी रगों में पानी नहीं, ख़ून बहता है। बूढ़े संन्यासियों ने हमें बताने की कोशिश की थी कि प्रतिशोध वो अग्नि है जो इसके धारक को जला देती है। उन्होंने हमें क्षमाशील बनने की सलाह दी थी। लेकिन मैं कोई साधु नहीं हूँ। मैं प्रतिशोध चाहता हूँ। मैं प्रतिशोध के लिए जलूँगा। मैं उन राक्षसों को नष्ट करूँगा जिन्होंने हमारे पूज्य महन्त को मार डाला।'

'लेकिन क्या तुम सचमुच उन्हें मारना चाहोगे?' सुहेलदेव ने पूछा। 'मुझे बताया गया है कि तुम संन्यासी मानते हो कि कोई भी हिंसा पाप है। क्या किसी को मारने से तुम्हारे मोक्ष के रास्ते में बाधा नहीं आएगी?'

संन्यासी की आँखें ग़ुस्से से जल रही थीं। 'मोक्ष के बारे में बाद में सोचेंगे। पहले बुराई को रोकना ज़रूरी है।'

'और ये रुकेगी। मैं भगवान शिव और भगवान बुद्ध की शपथ लेता हूँ। मेरे साथ आओ। मेरे योद्धाओं के दल से जुड़ जाओ। और मैं वादा करता हूँ कि भगवान बुद्ध के अपमान का प्रतिशोध हम लेंगे। हम तुम्हारे मठ पर किए गए अपराधों का प्रतिशोध लेंगे। हम तुम्हारे महन्त का प्रतिशोध लेंगे।'

दंडधारी संन्यासी ने सुहेलदेव की तरफ़ उत्सुक निगाहों से देखते हुए पूछा। 'आप कौन हैं?'

'मैं श्रावस्ती का सुहेलदेव हूँ।'

दोनों संन्यासियों की तो जैसे सांस रुक गई। सुहेलदेव के बारे में किसने नहीं सुना है? तुर्कों का काल। उन्होंने अपने हथियार छोड़ दिए, और अपने घुटनों पर बैठ गए।

उनमें से एक ने बोला। ज़ोर से और साफ़-साफ़, ताकि इस बात के साक्षी ईश्वर भी हों। 'महान राजकुमार, हम आपके प्रति निष्ठा का वचन देते हैं। हम महान बुद्ध के नाम की शपथ लेते हैं।'

सुहेलदेव अपने घोड़े से उतरा, संन्यासियों के पास गया और उन्हें ऊपर उठाया। 'और मैं, श्रावस्ती का सुहेलदेव, तुम्हारे प्रति निष्ठा का वचन देता हूँ। हम भाइयों की तरह साथ युद्ध करेंगे। हम अपनी भूमि को अपवित्र करने वाले विदेशी गिरोहों को पराजित करेंगे।'

संन्यासियों ने सम्मानपूर्वक अपने हाथ जोड़ लिए।

'मैं तुम दोनों को क्या कहकर पुकारूँ?' सुहेलदेव ने पूछा।

दंड से लड़ने वाले संन्यासी ने कहा। 'मेरा नाम अश्वघोष है और ये है मेरा मित्र संघमणि।'

'तुम लोग मूल रूप से भारत के किस हिस्से से हो?'

'मैं बंगाल से हूँ,' संघमणि ने कहा, 'और अश्वघोष बर्मा से है।'

'ठीक है, अश्वघोष और संघमणि, हमारे पास अतिरिक्त घोड़े हैं। तुम हमारे साथ चल सकते हो। लेकिन पहले...' सुहेलदेव कहते-कहते रुक गया और उसने थोड़ी दूर पर अपने आदमियों की निगरानी में हाथ-पांव बंधे चार तुर्कों की ओर इशारा किया।

सुहेलदेव का एक आदमी आया और उसने दोनों संन्यासियों को तलवारें थामने को कहा। अश्वघोष और संघमणि हिचकिचाते दिख रहे थे।

मारने की बात करना वास्तव में मारने की तुलना में कहीं आसान है।

सुहेलदेव ने दृढ़ता से, लेकिन बिना किसी कठोरता के कहा। 'हम दुश्मनों और मौत से रोज़ लड़ते हैं। हमारा दस्ता बचा रहेगा अगर हम एक-दूसरे की रक्षा के लिए

दुश्मनों को मारेंगे। मैं ये जानना चाहता हूँ कि तुम दोनों उस काम को करने से नहीं हिचकिचाओगे, अगर जीवन दांव पर लगा हो।'

संघमणि ने तलवार थाम ली, लेकिन उसे म्यान से बाहर नहीं निकाला। अश्वघोष तो तलवार थामने तक में हिचकिचाता रहा।

सुहेलदेव एक बार फिर से बोला। 'इसे चार तुर्कों की हत्या के रूप में ना देखो। इसे इस तरह देखो कि तुम उन अनगिनत भारतीयों की जान बचा रहे हो जो इन हत्यारों द्वारा भविष्य में मारे जाएँगे। *अहिंसा परमो धर्मः* का मंत्र सही है। लेकिन इसी के साथ एक मंत्र यह भी है कि *धर्म हिंसा तथैव च।'*

जो हिंसा धर्म की रक्षा करती है वो न्यायोचित है।

'अपने देशवासियों की रक्षा करना धर्म है। अपनी मातृभूमि के लिए लड़ना धर्म है।'

अश्वघोष और संघमणि ने तलवारें म्यान से बाहर निकाल लीं।

उन्होंने वो किया जो करने की ज़रुरत थी।

अध्याय 19

'चलो आगे बढ़ो! तुम अगर मेरे दल में रहते तो इससे कहीं बेहतर करते।'

तोशानी सुहेलदेव और गोवर्धन की तरफ़ देख रही थी, और वो दोनों बगलें झांक रहे थे। पिछले कई सालों तक सुहेलदेव के आदमियों ने लगातार युद्ध किए थे, और अब तुर्क फौजों के भारत छोड़ने के बाद से वो बेचैन हो रहे थे। इसलिए, राजकुमार ने कुछ युद्ध क्रीड़ाएँ आयोजित की थीं ताकि उनका दिमाग ना भटके, उनका मनोबल बढ़े और उनका भाईचारा मज़बूत हो।

सबसे पहली स्पर्धा थी तीरन्दाज़ी की, जिसमें दो दलों का नेतृत्व संघमणि और तोशानी कर रहे थे। तोशानी ने शानदार निशाने लगाए थे, और उसे जमा लोगों से काफ़ी तारीफ मिली थी। लेकिन सुहेलदेव और गोवर्धन दोनों का प्रदर्शन औसत से कमज़ोर रहा था, और उनका दल बुरी तरह हार गया था। तोशानी इससे ख़ुश नहीं थी, और उन दोनों का हौसला बढ़ाने की कोशिश कर रही थी, जो इसे केवल एक खेल मान रहे थे।

'तुम दोनों प्रशिक्षित योद्धा हो ना। क्या तुम लोगों को धनुष का प्रयोग करना सिखाया नहीं गया?'

सुहेलदेव ने झेंपते हुए अपना गला साफ़ किया। 'सच पूछो तो ये मेरा प्रिय शस्त्र नहीं है। मैं पास जाकर मारना पसन्द करता हूँ।'

'मैं भी,' गोवर्धन ने उसके सुर में सुर मिलाया।

तोशानी ने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए जीभ चटकाई। 'मैं तुम दोनों को कम से कम एक दर्जन बार मार सकती हूँ, इसके पहले कि तुम मेरे पास आकर मुझे छू भी सको। चलो आओ, थोड़ा अभ्यास करते हैं। तुम दोनों के बिना भी थोड़ी देर तक ये क्रीड़ा जारी रह सकती है।'

सुहेलदेव और गोवर्धन ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा, लेकिन वो जानते थे कि अगर एक बार तोशानी ने अपना मन बना लिया है तो फिर उससे तर्क-वितर्क करना व्यर्थ है। वो चुपचाप उसके पीछे पास के एक मैदान में चल दिए जिसका इस्तेमाल तीरन्दाज़ी के अभ्यास के लिए किया जाता था।

अब्दुल ने उन्हें जाते देखा और अपने कुछ आदमियों को देखकर सिर हिलाया। उनमें से पाँच ने तुरन्त एक सुरक्षित दूरी से उनका पीछा करना शुरू कर दिया। भले ही शान्ति काल हो, अब्दुल सुरक्षा के नियम-क़ायदों का पूरी तरह से पालन करने पर ज़ोर देता था।

'अगर तुर्क मुझे अभी देख लें, तो मुझसे बिल्कुल नहीं डरेंगे,' सुहेलदेव ने गोवर्धन से फुसफुसाते हुए कहा। 'एक छोकरी से धमकाया जाता हुआ।'

गोवर्धन ने अपने दोस्त की तरफ़ देखकर एक आँख दबा दी।

'मैंने सुना तुम्हें,' तोशानी ने तपाक से बोला।

दोनों आदमी तुरन्त चुप हो गए।

'ठीक है, अब मुझे दिखाओ कि तुम निशाना कैसे लगाते हो,' तोशानी ने तीरन्दाज़ी वाले मैदान में पहुँचने के बाद कहा। 'पहले तुम,' उसने सुहेलदेव से कहा, और एक लक्ष्य की ओर इशारा किया, जो क़रीब डेढ़ सौ मीटर दूर एक बिजूका था।

सुहेलदेव ने सिर हिलाकर हामी भरी और सावधानी से एक तीर चलाया जो बिजूका की जांघ पर खरोंच मारने के बाद पीछे मैदान में जा गिरा।

'बुरा निशाना नहीं था, है ना?' उसने चमकते चेहरे से तोशानी की तरफ़ देखा। उसके चेहरे के भाव बदल गए जब उसने तोशानी को अपनी ओर भावहीन होकर घूरते हुए देखा। 'क्या हुआ! ये डेढ़ सौ मीटर दूर है! मैंने निशाना लगाया ना?'

'तुमने सब कुछ गलत किया,' तोशानी ने कहा। 'ताज्जुब इस बात का है कि तुम्हारा तीर लक्ष्य के क़रीब कैसे पहुँच गया। तुम धनुष को कसकर पकड़ते हो। तुमने धनुष की डोरी को काफ़ी पीछे तक नहीं खींचा। तुमने जिस कोण पर तीर छोड़ा, वो गलत है। तुमने निशाना लगाने में बहुत समय लगाया, जिससे तुम्हारे कंधों पर दबाव बढ़ा। तुमने अपने पैरों को सन्तुलित नहीं रखा। और जब तुम तीर छोड़ते हो तो तुम्हारे हाथ कांपते हैं!'

'क्या मैंने कुछ सही भी किया?'

'चुप रहो!'

सुहेलदेव चुप हो गया।

'दोबारा कोशिश करो।'

सुहेलदेव ने एक बार फिर धनुष उठाया। इस बार, तोशानी उसके पीछे खड़ी हुई और उसकी बाँह को थामकर सही तरीक़ा दिखाया। सुहेलदेव अचानक उसकी नज़दीकी से विभोर हो गया। तोशानी के एक हाथ का उसकी कमर और दूसरे का उसके कंधे पर स्पर्श, उसकी पीठ पर तोशानी के वक्ष का हल्का सा दबाव, तोशानी के पैरों का उसके पैरों को लुभावने अन्दाज़ में छूना, उसकी मादक ख़ुशबू...

'क्या तुमने कुछ सुना जो मैंने कहा?' तोशानी ने नाराज़गी से पूछा।

'क्या...क्या...'

'महान राजकुमार!' सुहेलदेव का एक आदमी भागता हुआ आया।

सुहेलदेव ने एक गहरी सांस ली, और अपने आप को संभालने की कोशिश की। तोशानी पीछे हट गई।

'हाँ?' सुहेलदेव ने पूछा, उसकी आवाज़ में सामान्य से ज़्यादा सख़्ती थी।

'महान राजकुमार, गुरुदेव आपसे मिलने आए हैं।'

सुहेलदेव के चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ गई। 'गुरुदेव!' उसने ख़ुशी से कहा। फिर उसने तोशानी की तरफ़ देखा। '...हम निश्चित रूप से दोबारा अभ्यास करेंगे।'

अब्दुल की नज़र उस पर पड़ी। अकेला, क्षितिज को देखता हुआ जबकि आकाश का नारंगी रंग घोषणा कर रहा था कि सूर्य अब बहुत जल्दी अस्त होने वाला है। उसका मुँडा हुआ सिर नीचे की ओर था, उसकी ठोड़ी उसके दाहिने घुटने पर टिकी थी। एक बाँह ने घुटने के ठीक नीचे के स्थान को घेर रखा था; दूसरा हाथ उसके दंड के पास था।

वो ऐसा काफ़ी समय से करता आ रहा है, अब्दुल ने लम्बी सांस ली। *बेहतर होगा कि पता किया जाए कि उसके मन में क्या है, इसके पहले कि वो हर जगह इसे अपनी आदत बनाकर स्वयं को ख़तरे में डाल ले।*

चुपचाप, बिना किसी शोर के, अब्दुल उसके पास जाकर बैठ गया। उसने कुछ कहा नहीं। ये अब्दुल की ख़ासियत थी: उसे समझ आ जाता था कि दूसरे व्यक्ति को सहज रहने देने के लिए क्या करने की ज़रूरत है। वो इन्तज़ार करता रहा।

आकाश और गहराने लगा। अब ये गुलाबी होता जा रहा था। सूर्य देव भारत की इस भूमि पर आज का काम समाप्त कर रहे थे, और सुदूर पश्चिम में अपनी ऊर्जा ले जा रहे थे।

अश्वघोष ने चुप्पी को तोड़ा। 'क्या तुम कभी अपनी पहचान से लड़ते नहीं हो, अब्दुल? क्या तुम कभी ऐसा महसूस नहीं करते कि तुम अपने दो हिस्सों के बीच इस भयानक स्थान पर फंस गए हो; तुम दोनों के होना चाहते हो और फिर भी तुम किसी के नहीं हो पाते?'

अब्दुल ने उसे गौर से देखा। *अल्लाह कसम, मैं कभी-कभी भूल जाता हूँ कि अश्वघोष, आख़िरकार, है तो बच्चा ही।* वो इस बात का ख्याल रख रहा था कि उसके चेहरे पर हमदर्दी ना दिखे।

'हाँ...और नहीं,' उसने धीरे-धीरे कहा, और अपनी नज़रें फिर दूर क्षितिज पर कर लीं जहाँ अश्वघोष देख रहा था।

अब्दुल ने आगे कुछ और नहीं कहा। उसने कोई सवाल भी नहीं पूछा। गलत समय पर पूछे गए सवाल आम तौर पर लोगों को रक्षात्मक मुद्रा में ले आते हैं, और वो अपने आप को समेट लेते हैं।

'मैं हमेशा सोचता हूँ कि तुम कैसे करते हो इसे...' अश्वघोष ने कहा। 'अपने भाईचारे और मातृभूमि...तुम्हारे धर्म और देशभक्ति के बीच के स्थान में झूलते रहना...क्या तुम्हें कभी भी खीझ नहीं आती कि तुम्हें एक को दूसरे के आगे रखने की ज़रूरत ही क्यों पड़ी?'

अश्वघोष अब मुड़कर अब्दुल का चेहरा देख रहा था।

अब्दुल की नज़रें उसकी सवालिया निगाहों से मिलीं। *बेचारा लड़का...सच में इसकी आत्मा बहुत पीड़ित है...उसका दिल अभी भी किसी को जान से मारने को सही नहीं ठहरा पा रहा...शायद अगर उसे पता होता...*

लेकिन अब्दुल ने इस सोच को अलग रख दिया।

'हाँ, इस पर खीझ आती है। खीझ आती है कि मेरे कुछ देशवासी, जिनमें मेरे कुछ दोस्त भी शामिल हैं, मानना शुरू कर चुके हैं कि मुसलमान कुदरती तौर पर हिंसक समुदाय है जो अपने धर्म की सीख को लेकर अंधा और पागल है। इस बात पर खीझ आती है कि हर बार इस ज़मीन के लिए मेरी वफादारी पर सवाल उठाया जाता है। हाँ, इस पर बहुत खीझ आती है।'

अश्वघोष ने सिर हिलाया। उसने यही उम्मीद की थी। 'क्या इसलिए तुम इस देश की आज़ादी के लिए, अपने भाइयों के ख़िलाफ़ इतनी उग्रता से लड़ते हो?'

'तुर्क मेरे भाई नहीं हैं,' अब्दुल ने कड़वे लहजे में कहा। 'भले ही वो मुसलमान हैं, वो मेरे भाई नहीं हैं। भाईचारे का मतलब है एक परिवार होना। क्या तुम सोचते हो कि तुर्क वास्तव में एक परिवार के समान व्यवहार करते हैं? मुझे बताओ, कौन अपने परिवार की सिर्फ इसलिए हत्या कर देता है कि उसकी माँग पूरी नहीं हुई? वो मुसलमान नहीं है, वो सिर्फ सत्ता का भूखा आदमी है जो पूरी ताक़त अपने हाथ में रखना चाहता है। धर्म वो पर्दा है जिसकी आड़ में वो ऐसा करता है। इससे उन नादान मुसलमानों को अपने साथ करना आसान हो जाता है, जो इस फन्दे में फंस जाते हैं। क्योंकि वो ये नहीं सोचते कि आस्था के ये स्व-घोषित "सच्चे अनुयायी" अपने भाइयों से झूठ बोलेंगे। हाँ, यहाँ कुछ "व्यावहारिक लोग" भी हैं—जिनमें गैर-मुसलमान भी शामिल हैं—जो मानते हैं कि यह सब सत्ता के लिए है। उनमें से कई धर्म बदलकर तुर्कों के साथ आ गए हैं, "आस्था" के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ इसलिए कि वो विजेता के साथ रहें। वो उम्मीद करते हैं कि शायद इस तरह वो तुर्कों का भरोसा जीतकर अपनी भी कुछ सत्ता जमा लेंगे। लेकिन ये एक निर्मम मज़ाक़ है। सत्ता का भूखा आदमी धूर्त होता है। वो इन "व्यावहारिक लोगों" को नचाता है और सुनिश्चित करता है कि फैसले लेने की सारी ताक़त केवल उसके पास रहे। वो हमेशा चीज़ों की परिभाषा तय करेगा, नियम-क़ायदे तय करेगा; अपनी सनक पर उनमें बदलाव करेगा और उम्मीद करेगा कि बिना कोई सवाल पूछे उन्हें माना जाए। उसके अनुयायी हमेशा प्यादे रहेंगे। वो हमेशा ग़ुलाम रहेंगे, उसकी दया पर, क्योंकि यही वो सोच है जो उसे ख़ुश करती है।'

'लेकिन वो अपने भाइयों को ग़ुलाम कैसे बना सकता है? वो कैसे हमेशा उसके प्यादे बने रह सकते हैं? ख़ास तौर पर जब...मैं नहीं कह रहा कि ऐसा होगा... लेकिन मान लो कि जब सभी धर्म परिवर्तन करने और मुसलमान बनने का फैसला कर लेते हैं? फिर दबाने के लिए कोई नहीं होगा, मारने के लिए कोई मूर्तिपूजक नहीं होगा, है ना?' अश्वघोष उत्सुक था।

'तुम पूरे ध्यान से मेरी बात नहीं सुन रहे हो। सत्ता का भूखा तुर्क किसी को भी अपना भाई बनाने लायक़ नहीं मानता है। वो सभी ग़ुलाम हैं—"भाई" केवल

एक चिप्पी है जो इसे ख़ुशगवार सोच बनाती है। क्या केवल मुसलामानों का देश उसकी भूख को शान्त करेगा? निस्सन्देह नहीं! सत्ता का भूखा ये आदमी तब भी नहीं रुकेगा जब सभी धर्म परिवर्तन कर लेंगे। वो जिसे चाहेगा, मुसलमानों के उस समुदाय को शिकार बनाएगा, और सामाजिक नियम-क़ायदों को बदलकर उन्हें परेशान करेगा। क्या तुम सोचते हो कि केवल मुसलामानों वाले तुर्कों के अपने देश में अमन है? नहीं! अब जब उनके देश में सभी मुसलमान हैं, वो अब नारा दे रहे हैं "कौन *सच्चा* मुसलमान है?"। जिन्हें वो सताना चाहते हैं, उन पर "सच्चा मुसलमान" नहीं होने का आरोप लगाया जाएगा, और जिसे वो बिना किसी शक के, अल्लाह की चाहत के रूप में पेश करेंगे। ये खेल कभी रुकता नहीं है।'

'लेकिन...लेकिन कोई ये भी तो कह सकता है कि भारत में तुम भी तो एक प्यादे हो...क्योंकि तुम्हें किसी विश्वास के लिए मारने को नहीं कहा जा रहा है, लेकिन एक राष्ट्र के लिए मारने को कहा जा रहा है।'

अब्दुल के चेहरे से मुस्कुराहट अब ग़ायब हो गई। *और वो असली मामला अब समझ गया।*

'मुझे इस बात का जवाब दो, आकाश पर किसका नियंत्रण है?'

अश्वघोष की भौंहें चढ़ीं। 'इसका मेरे सवाल से...'

'थोड़ी देर के लिए मेरे सवालों का जवाब दो...आकाश पर किसका नियंत्रण है?'

'ईश्वर। या तो सार्वभौमिक नियम। मूल रुप से, दैवीय शक्ति।'

अब्दुल मुस्कुराया। 'जवाब उलझा है। लेकिन मैं इसे सही मान लेता हूँ। अब मुझे बताओ कि उस पृथ्वी पर किसका नियंत्रण है जिस पर हम रहते हैं? यहाँ सबसे बड़ी शक्ति कौन है?'

'मैं...मैं नहीं जानता।'

'इसे इस तरह सोचो। जब कोई आदमी तकलीफ़ में होता है, दर्द में होता है, मौत के क़रीब होता है, वो किसे पुकारता है?'

'अपनी माँ...'

अब्दुल ने अश्वघोष के कंधे को छुआ। 'तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए वहाँ होती है, भले ही वो शारीरिक रूप से मौजूद नहीं है। उसके लिए रोने भर से तुम्हें शक्ति मिलती है। तुम्हें ज़िन्दा रहने के लिए वो मिलता है जिसकी तुम्हें ज़रूरत है। इस ग्रह में सबसे बड़ी शक्ति माँ है।'

अश्वघोष चुप रहा।

'भगवान राम ने कहा था कि माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। हज़रत मोहम्मद ने कहा था कि जन्नत तुम्हारी माँ के पैरों में है। तुम्हें उतना प्यार और कौन कर सकता है, जितना तुम्हारी माँ करती है?'

ख़ामोशी।

अब्दुल की आवाज़ जज़्बाती हो उठी। 'और कुछ विदेशी आते हैं और कोशिश करते हैं कि...कि तुम्हारी अपनी माँ...अगर तब तुम उसके लिए नहीं लड़ते, अगर तुम अपनी माता के लिए नहीं लड़ते, तो फिर तुम किस तरह के मनुष्य हो?'

'लेकिन मेरा धर्म अहिंसा का उपदेश देता है। यह गलत है...'

'अश्वघोष, इसे याद रखो—भारत तभी सुरक्षित रहेगा अगर यहाँ रहने वाले लोग भारत को किसी भी दूसरी चीज़ से ऊपर रखेंगे। और मेरा मतलब है किसी भी चीज़ से। अगर मुझे अपने धर्म और भारत के बीच चुनना होगा, तो मैं भारत को चुनूँगा। हर बार, बार-बार। जब तक यहाँ ऐसा सोचने वाले पर्याप्त हिन्दू, बौद्ध, मुसलमान और ईसाई हैं, हमारा देश सुरक्षित रहेगा।'

'लेकिन एक आँख के बदले आँख की नीति तो पूरी दुनिया को अंधा बना देगी। यही मुझे मेरे महन्त ने सिखाया था।'

'अश्वघोष, इस सिद्धान्त को मानने वाले अगर तुम अकेले हो तो केवल तुम अंधे होगे। और वो तुम्हें अंधा नहीं बना रहे हैं। वो तुम्हारी माता को अंधा बना रहे हैं। अहिंसा का स्थान एक सभ्य समाज में होता है। हाँ। लेकिन तब नहीं जब आप बर्बरों का सामना कर रहे हों जो आनन्द के लिए हत्या करते हैं। अहिंसा को अंधश्रद्धा की चीज़ नहीं बनाओ। याद रखो, जब तुम्हें लड़ना पड़े, तो तुम्हें लड़ना है।'

अश्वघोष चुप रहा। वो सोच में डूबा नीचे ज़मीन पर देखता रहा।

अब्दुल की आवाज़ में नरमी थी। 'अपनी माँ की रक्षा करने के लिए, हिंसा का सहारा लेना भी, बुरा कर्म नहीं माना जाएगा।'

अश्वघोष अब्दुल की तरफ़ मुड़ा। उसकी आँखें नम थीं। 'शायद तुम जानते हो कि माँ का होना कैसा होता है। मैं नहीं जानता।'

अब सही समय आ गया था।

'तुम्हारे मित्र संघमणि ने मुझे तुम्हारे जीवन की कहानी बताई थी। दरअसल, ये उसे एक पुराने गुरु ने बताई थी जिसने तुम्हारे साथ मठ छोड़ा था। अपने मित्र से पूछना कि तुम मठ में कैसे आए। तुम जीवित हो क्योंकि तुम्हारी माँ ने तुम्हारी जान बचाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया था। क्योंकि उन्होंने तुम्हारी रक्षा के लिए वो सब किया, जो वो कर सकती थीं जब तुम एक शिशु थे।' अब्दुल ने ज़मीन से थोड़ी सी मिट्टी उठाई और उसे अश्वघोष के हाथ पर गिरा दिया। फिर उसने आकाश की ओर संकेत किया। 'और अब, वो वहाँ ऊपर हैं, अपने सयाने बेटे को देख रही हैं, और कह रही हैं कि एक पुरुष बनो और हम सबकी माता की रक्षा करो।'

अश्वघोष ने रोना शुरु कर दिया।

अब्दुल ने अश्वघोष के हाथ को मज़बूती से पकड़ लिया। 'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

अध्याय 20

सुहेलदेव अपने घोड़े से उतरा और तेज़ क़दमों से अपने सैन्य शिविर की तरफ़ चल पड़ा। एक प्रहरी ने उसे नमस्कार किया और तुरन्त पर्दे बगल कर दिए।

'महान राजकुमार, वो आपका अन्दर इन्तज़ार कर रहे हैं।'

सुहेलदेव ने प्रहरी को देखकर मुस्कुराते हुए उसके कंधे थपथपाए और तम्बू में चला गया। तम्बू में दूसरे छोर पर एक लम्बा व्यक्ति चुपचाप खड़ा था जिसके बाल सफेद हो चुके थे। बढ़ती आयु ने उसके कंधों को थोड़ा सा झुका दिया था, लेकिन उसका शरीर दुबला-पतला और गरिमामय बना रहा था।

'गुरुदेव!' सुहेलदेव ने प्रसन्नतापूर्वक कहा। वो काशीनाथ के पास गया और सम्मान के साथ उनके चरण स्पर्श करने झुका।

काशीनाथ ने सुहेलदेव को ऊपर उठाया और उसे ज़ोर से गले लगा लिया। 'मेरे राजकुमार...'

सुहेलदेव मुस्कुराया, और अपने गुरु को मज़बूती से थामे रहा।

'मेरे राजकुमार, तुम्हारा भाई मल्लदेव आज तुम पर गौरवान्वित होगा। उस पर गौरवान्वित होगा जो तुम आज बन चुके हो। तुम्हें पता है, श्रावस्ती में बच्चे खिलौने वाली तलवार लेकर तुम्हारा रूप धर गज़नी के सैनिकों और उनके दुष्ट सहयोगियों से लड़ने का खेल खेलते हैं।'

'मैंने यह सब अकेले नहीं किया है, गुरुदेव। मेरे पास बहादुर योद्धाओं का ऐसा दल है जो इस भूमि के लिए उतना ही समर्पित है जितना मैं। और मुझे हज़ारों आम लोगों का समर्थन है जो हमारी हर आवश्यकता पूरी करते हैं। उनकी सहायता के बिना हम इतने लम्बे समय तक चल नहीं सकते थे। मनोहरगढ़, कन्नौज और दूसरे राज्यों के राजाओं ने गज़नी के साथ गठबंधन किया होगा, लेकिन उनके लोगों ने हमें सहयोग दिया है। वो सच्चे देशभक्त हैं। यहाँ तक कि इन राज्यों के दरबारों में मेरे कुछ दोस्त भी हैं, जो आधिकारिक रूप से हमारे शत्रु हैं!'

काशीनाथ धीरे से हँसे। 'मैं किसी दिन तुम्हारे उन दोस्तों के बारे में जानना चाहूँगा...लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि तुमने देश में हर

तरफ़ एक अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी है। और भगवान शिव और माँ भारती के आशीर्वाद से ये अग्नि तुर्कों को नष्ट कर देगी।'

'ॐ नमः शिवाय,' सुहेलदेव अपने गले में बंधे लघु शिवलिंग को स्पर्श करते हुए फुसफुसाया। 'जय माँ भारती।'

काशीनाथ की आँखें भर आईं जब उन्होंने अपने सामने खड़े इस व्यक्ति को निहारा। ये छोटा राजकुमार एक शरारती बच्चा था। अल्हड़ स्वभाव और नियम-क़ायदों की परवाह ना करने वाला वो छोटा बच्चा इस रूप में तुर्कों को पराजित करने की ज़िम्मेदारी उठाने वाला बन जाएगा, ऐसी कल्पना तक काशीनाथ ने नहीं की थी। लेकिन समय और भगवान शिव के मन में क्या है, कौन जानता है? उन्होंने युवा राजकुमार के कंधे थपथपाए और बुदबुदाए, 'ॐ नमः शिवाय। जय माँ भारती।'

सुहेलदेव एक क़दम पीछे हटा, नमस्कार की मुद्रा में अपने हाथ जोड़े और कहा, 'मैं सीधा ये प्रश्न पूछने के लिए क्षमा चाहता हूँ, गुरुदेव, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप इतनी दूर केवल मुझे और मेरे लोगों को बधाई देने आए हैं। मैं अन्दाज़ा लगा सकता हूँ कि कोई विशेष समाचार है। क्या है वह?'

काशीनाथ ने लम्बी सांस ली। साफ़ था कि वो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रख रहे थे। जैसा किसी अच्छे मंत्री को करना चाहिए। 'अब घर लौटने का समय आ गया है, राजकुमार...'

'क्या हुआ?'

'तुम्हारे पिता...'

सुहेलदेव ने तुरन्त काशीनाथ की बाँहें पकड़ लीं, उसके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें थीं। 'क्या हुआ?'

'कर्कट रोग। अचानक इसका पता चला। यह बहुत तेज़ी से फैल गया है...'

सुहेलदेव सन्न रह गया और कोई प्रतिक्रिया भी नहीं दे सका। वो कुछ महीने पहले ही अपने पिता से गुप्त रूप से मिला था। उस समय वो पूरी तरह से स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त दिख रहे थे।

काशीनाथ का स्वर नरम था। 'तुम्हें तुरन्त श्रावस्ती लौटना होगा। राजगद्दी को इस तरह नहीं...'

बुद्धिमान काशीनाथ ने बाक़ी शब्दों को अपने मुँह से नहीं निकलने दिया। वो जानते थे कि, पिछले महीने, जब मंगलध्वज को इस बात का अहसास हो गया था कि उसके अन्तिम दिन नज़दीक हैं, इलाक़े के कई राज्यों को अविलम्ब सन्देश भेजे गए थे। कई तो स्वयं काशीनाथ लेकर गए थे। मंगलध्वज ने उन राज्यों से सम्पर्क किया था जो श्रावस्ती के नेतृत्व में राज्यसंघ बनाने के इच्छुक थे। और उस संयुक्त सेना का नेतृत्व करने के लिए उस व्यक्ति से बेहतर कौन हो सकता था जिसने इतने सालों तक ग़ज़नी की ताक़त का सामना बहादुरी से किया था? सुहेलदेव।

लेकिन काशीनाथ ने सुहेलदेव से यह सब नहीं कहा। अभी इसका सही समय नहीं था। पहले पुत्र को पिता की चिन्ता करने देना चाहिए। बाद में, राजकुमार को बताया जाएगा कि उसे राजा के लिए किन कर्तव्यों का निर्वाह करना है।

—EJJ ЖЗᘏCΔ—

सुहेलदेव को अपने पिता की बीमारी का समाचार मिले कुछ दिन बीत चुके थे। वो अगले ही दिन अपने साथियों के साथ वहाँ से निकल पड़ा था। श्रावस्ती के रास्ते में, सुहेलदेव और उसके दस्ते ने एक झील से थोड़ी दूरी पर पड़ाव डाला था।

अस्थायी शिविर की जगह सोच समझकर चुनी गई थी। वो एक शहर से इतनी नज़दीक थी कि ज़रूरत का सामान घटने पर आसानी से मिल जाए, वहीं इतनी नज़दीक भी नहीं थी कि अवांछनीय लोग वहाँ पहुँचें। जब वो लोग अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले क्षेत्रों से बाहर होते थे, तो गुमनामी और बुद्धिमानी ही उनके साथी थे। इस जगह के नज़दीक पानी का एक स्रोत भी था। जंगल और शिविर के बीच एक खुला मैदान था, ताकि किसी अचानक हमले से बचा जा सके। लेकिन अतिरिक्त सुरक्षा के लिए, महत्वपूर्ण स्थानों पर सन्तरी तैनात किए गए थे। शिविर के दूसरी तरफ़ खुला मैदान था ताकि ज़रूरत पड़ने पर तुरन्त निकला जा सके। चूँकि ये एक अस्थायी शिविर था, चीज़ों को पूरी तरह बाहर निकाला नहीं गया था। हथियार, धन और ज़रूरी दस्तावेज़ बक्सों में बन्द करके घोड़ों और बैलों पर बंधे थे, ताकि तुरन्त भागना पड़े तो वो ज़रूरी संसाधनों को ना खोएँ। और, इन घोड़ों और बैलों पर चौबीस घंटे सन्तरियों का पहरा रहता था।

ज़रूरत पड़ने पर सुहेलदेव सावधान और चौकन्ना रहता था। और इस सावधानी ने ये सुनिश्चित किया था कि तुर्कों से लड़ाई के पिछले कुछ सालों के दौरान उसके काफ़ी कम सैनिकों ने जान गंवाई थी।

'यह खूबसूरत जगह है,' गोवर्धन ने कहा।

वो और सुहेलदेव एक साथ रात का भोजन कर रहे थे। वो दोनों शिविर से थोड़ी दूर चलकर आ गए थे, झील के पास। वे आसपास की खूबसूरती को निहार रहे थे जब सूर्य क्षितिज के ऊपर धीरे-धीरे अस्त हो रहा था। उनके हथियार म्यान में थे और उनके पास रखे थे। किसी हमले की सूरत में इस्तेमाल के लिए तैयार।

एक असली योद्धा कभी भी खूबसूरती में इतना नहीं खो जाता है कि वो युद्ध के अपने प्रशिक्षण को भूल जाए। एक असली योद्धा हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहता है।

सुहेलदेव चुप रहा।

गोवर्धन ने सुहेलदेव के कंधे को सहानुभूति के साथ छुआ। 'तुम ठीक हो ना, मेरे दोस्त? क्या तुम चाहते हो...'

सुहेलदेव ने इनकार में सिर हिलाया। 'इस बारे में बात करने से मुझे कोई फायदा नहीं होगा। इससे मुझे और दुख होगा। कुछ और बातें करते हैं।'

गोवर्धन ने सहमति में सिर हिलाया। *उस बारे में बात करने का क्या फायदा जिसके लिए हम कुछ कर नहीं सकते। बेहतर है कि उसे भूला जाए और किसी दूसरी चीज़ पर ध्यान लगाया जाए। वो अपने पिता के बारे में तब सोच सकता है जब वो उनसे मिलेगा।*

गोवर्धन ने विषय बदल दिया। 'क्या तुम्हें पता है कि इस ख़ूबसूरत जगह को सूफ़ी भी काफ़ी पसन्द करते थे?'

सुहेलदेव मुस्कुराया। 'हाँ...दुख की बात है कि सूफ़ी यहाँ से चले गए। तुर्कों ने सिर्फ़ हिन्दुओं पर अत्याचार नहीं किए। उन्होंने सूफ़ियों को भी सताया।'

पीछे से एक आवाज़ आई। 'हाँ, वो उन्हें नापाक मुसलमान कहते थे।'

सुहेलदेव और गोवर्धन तुरन्त पीछे घूमे। और गोवर्धन का हाथ, स्वाभाविक रूप से उसकी तलवार तक चला गया।

'निश्चिन्त रहो, गोवर्धन,' काशीनाथ खुलकर मुस्कुराए। 'मैं दोस्त हूँ।'

सुहेलदेव ने आदर के साथ काशीनाथ के पैर छुए और व्यंग्यपूर्वक कहा, 'दोस्त जिसके क़दमों की आहट भी सुनाई नहीं दी।'

काशीनाथ धीरे से हँस दिए और सुहेलदेव के पास बैठ गए। उन्होंने भोजन करने के गोवर्धन के आग्रह को मना कर दिया। 'मैं पहले ही खा चुका हूँ।'

गोवर्धन ने खाना फिर शुरु कर दिया। बीच में ही उसने पूछा, 'तो, तुर्क सूफ़ियों से इतनी नफ़रत क्यों करते हैं?'

'यह एक अच्छा सवाल है,' काशीनाथ ने कहा। 'हमारे आधुनिक भारतीय शासकों की एक दिक्कत ये है कि उनके भीतर वैसी जिज्ञासा नहीं है जो हमारे पूर्वजों में थी। जब आप जिज्ञासु होंगे, तभी आप जीवन के दूसरे तरीक़ों को समझने की कोशिश करेंगे। विशेषकर उनके, जो आपके शत्रु हैं। क्योंकि अगर आप अपने शत्रुओं को नहीं समझते, तो आप उन्हें हरा कैसे सकते हैं? इससे भी ज़्यादा ज़रूरी, जब तक आप अपने समाज के बारे में जिज्ञासु और समझदार नहीं होंगे, आप अपनी कमज़ोरियों को दूर करने और अपनी ताक़त को बढ़ाने के बारे में कैसे जानेंगे?'

सुहेलदेव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। 'स्वयं को जानो। और अपने विपक्षियों को जानो।'

काशीनाथ ने सुहेलदेव का कंधा थपथपाया और मुस्कुराए। 'तो तुम्हें मेरे कुछ सबक याद हैं।'

'मुझे आपके *सारे* सबक याद हैं, गुरुदेव,' सुहेलदेव ने धीमे से कहा, और फिर अपने मुँह में अगला निवाला रखा।

'लेकिन आपने अभी तक मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया है, गुरुदेव,' गोवर्धन ने कहा। 'तुर्क सूफ़ियों से इतनी नफ़रत क्यों करते हैं?'

'हर समुदाय, हर जीवन शैली की कुछ ताक़त और कुछ कमज़ोरियाँ होती हैं। ये तुर्कों के इस्लाम और हम भारतीयों के हिन्दू धर्म के बारे में भी सच है।'

'इससे भी मेरे सवाल का जवाब नहीं—'

'धीरज रखो, मेरे दोस्त,' काशीनाथ ने मुस्कुराते हुए गोवर्धन का हाथ थपथपाया। 'मुझे मेरी बात ख़त्म करने दो। तुर्कों के इस्लाम की ताक़त ये है कि वो सामाजिक रूप से सबको साथ लेकर चलता है; लेकिन इसकी कमज़ोरी ये है कि वो धर्मशास्त्र की दृष्टि से असहिष्णु है। दूसरी तरफ़, हम भारतीयों का हिन्दू धर्म

धर्मशास्त्र की दृष्टि से उदार है और सबको साथ लेकर चलता है, जबकि सामाजिक रूप से हम असहिष्णु हैं।'

'वाह...' गोवर्धन ने अपनी आँखें फैलाते हुए और गहरी सांस लेते हुए कहा। 'इतने भारी-भरकम शब्द। आपने मुझे इनमें गुम कर दिया।'

काशानीथ पीछे की ओर झुके और ज़ोर से ठहाका लगाकर हँस पड़े।

'गुरुदेव, मैं एक साधारण योद्धा हूँ,' गोवर्धन भी उनके साथ हँसते हुए बोला। 'आप अपने शब्दों को भी साधारण रखने की कृपा करें!'

'ठीक है, ठीक है। जब मैं कहता हूँ धर्मशास्त्र की दृष्टि से, तो इसका मतलब है कि हमारी ईश्वर में आस्था रखने वाली अलग-अलग शैलियाँ। जब मैं सामाजिक कहता हूँ तो इसका मतलब है उन समूहों, वर्गों और समुदायों के प्रति हमारा रवैया, जो हमारे अपने धर्म का पालन करते हैं। इसलिए, जब मैं ये कहता हूँ कि तुर्क सामाजिक रूप से सबको साथ लेकर चलते हैं, तो मेरा मतलब है कि कम से कम धार्मिक रूप से, वो सभी तुर्क जो इस्लाम का पालन करते हैं, वो उनके ईश्वर की दृष्टि में समान हैं। इस वजह से, उनके समुदाय में ज़बरदस्त एकता और उद्देश्य की शक्ति है। वो अपने शत्रुओं के विरुद्ध एकजुट होकर लड़ेंगे।'

'और उनकी कमज़ोरी?'

'उनकी कमज़ोरी है कि वो धार्मिक रूप से असहिष्णु हैं। उनका मानना है कि *केवल* उनका ईश्वर ही सच्चा ईश्वर है और बाक़ी सभी ईश्वर झूठे हैं। वो मानते हैं कि *केवल* उनका धर्म ही सच्चा धर्म है। और तुर्क मुसलमान जिस तरह से दूसरे धर्मों को देखते हैं, उनमें ही वर्ग-विभेद है। ईसाई और यहूदी धर्म मानने वालों को ज़िन्दा रहने दिया जा सकता है, लेकिन उन्हें अधीनस्थ नागरिक *धिम्मियों* की तरह रहना होगा। लेकिन अन्य धर्मों, विशेष रूप से मूर्तिपूजकों को अधर्मी माना जाता है। इसलिए वे न केवल भारत में हिन्दू मन्दिरों को नष्ट करते हैं, बल्कि उनका मानना है कि ईरान में पारसियों के अग्नि मन्दिरों, और तुर्क देशों तथा चीन में बौद्ध विहारों को भी नष्ट किया जाना चाहिए...'

'तो यह उनकी कमज़ोरी है,' सुहेलदेव ने कहा।

'बिल्कुल। अगर तुम दुनिया में घूम-घूमकर ख़ुद से असहमत लोगों से लड़ते फिरोगे, तो कभी ना कभी तुमसे लड़ने के लिए बाक़ी सभी एकजुट हो जाएँगे। उनकी धार्मिक असहिष्णुता के साथ यही दिक्कत है। वो हर किसी को अपना शत्रु बना लेते हैं। और इसी दिक्कत को सूफ़ी दूर करेंगे।'

'वो कैसे?' गोवर्धन ने पूछा।

'मैं उस पर थोड़ी देर में आता हूँ,' काशीनाथ ने कहा। 'लेकिन उसके पहले, हमें आज के हिन्दू धर्म की ताक़तों और कमज़ोरियों को भी समझना ज़रूरी है। धर्मशास्त्र की दृष्टि से, हिन्दू धर्म बहुत उदार है। चूँकि हम कई देवताओं की पूजा करते हैं और मूर्तिपूजा में विश्वास रखते हैं, हमें इस बात से समस्या नहीं होती कि कौन किस देवता की पूजा करता है। हम हर वस्तु में ईश्वर को देखते हैं, इसलिए हमारे लिए ईसाइयों के ईसा मसीह में भी ईश्वर की उपस्थिति देखना आसान है। या मुसलामानों के अल्लाह को पूजना। और ऐसा करते हुए, हम अपने हिन्दू धर्म को

छोड़ते भी नहीं हैं। क्या तुमने कभी सुना है कि किसी हिन्दू राजा ने किसी दूसरे के मन्दिर या पूजास्थल पर आक्रमण किया है और उसे तोड़ा है?'

गोवर्धन ने इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं, कभी नहीं।'

'बिल्कुल। यह ना के बराबर है। शायद ही किसी ने सुना हो। ऐसा क्यों है? क्योंकि हम हिन्दू विश्वास करते हैं कि हर वस्तु में देवत्व है। इसलिए, किसी दूसरे के पूजास्थल को तोड़ना पाप है। यही नहीं, ऐसे मौक़े भी आए हैं जब किसी हिन्दू राजा ने दूसरे हिन्दू राज्य को पराजित किया, और फिर पराजित राजा के मुख्य मन्दिर में जाकर वहाँ की राजसी मूर्ति चुरा ली। फिर उस राजसी मूर्ति को पूरे सम्मान के साथ विजयी राजा के व्यक्तिगत मन्दिर में स्थापित कर दिया गया। एक विजयी राजा ऐसा क्यों करता है? क्योंकि वो मानता है कि ऐसा करने से वो पराजित राजा के ईश्वर का भी आशीर्वाद प्राप्त कर सकेगा। दरअसल, हिन्दू धर्म में हमें देवियों से भी कोई दिक्कत नहीं है, जिसकी तुर्कों के इस्लाम में अनुमति नहीं दी जा सकती।'

'और हमारी कमज़ोरी है हमारी जन्म आधारित वंश व्यवस्था,' गोवर्धन ने साफ़ शब्दों में कहा।

'हाँ,' काशीनाथ ने कहा। 'तुर्कों ने दूसरों पर अत्याचार किए हो सकते हैं। लेकिन हमने तो अपने लोगों पर अत्याचार किए हैं। हमने अपने लोगों को वंशों में बांट दिया है। ये हमारा पाप है। और इस वंश व्यवस्था की वजह से, हम लगभग लगातार ही एक-दूसरे से लड़ते रहे हैं। आन्तरिक रूप से विभाजित हम लोग आसानी से विदेशी आक्रमणकारियों के शिकार बन जाते हैं। एक समय था जब भारत को अविजित भूमि समझा जाता था। और एक समय था जब हम उस बुरी वंश व्यवस्था को नहीं मानते थे जैसी आज मौजूद है। यह एक संयोग नहीं है। चूँकि हमने अपने आप को जन्म के आधार पर अलग-अलग समुदायों और वंशों में नहीं बांटा था, किसी भी विदेशी के लिए हम पर विजय प्राप्त करना लगभग असम्भव था। क्या तुमने सिकन्दर के बारे में सुना है?'

'नहीं,' गोवर्धन ने कहा। 'कौन है वो?'

'यूरोपीय लोगों और पारसियों में वो इतिहास का महानतम विजेता माना जाता है। हालांकि, हम भारतीयों की नज़र में वो महान नहीं है क्योंकि उसे भारत की सीमाओं के भीतर, पश्चिमी पंजाब के कुछ छोटे राजाओं ने ही रोक दिया था। उसने तो उस समय के हमारे मुख्य भारतीय साम्राज्य, नन्द, से युद्ध भी नहीं किया था और फिर भी उसे बेइज़्ज़त होकर पीछे हटना पड़ा था। अतीत में हमें पराजित करना लगभग असम्भव था। लेकिन अब चूँकि हमने अपने आप को अलग-अलग वंशों में बांट लिया है, विदेशी हमें एक-एक करके हराते हैं। हमें हराना बहुत आसान हो गया है।'

सुहेलदेव ने एक गहरी सांस ली और झील की तरफ़ देखते हुए उस बारे में सोचने लगा जो काशीनाथ ने कहा था। 'हमें अपनी सामाजिक समस्या सुलझानी होगी। और मुसलमानों को अपनी धार्मिक समस्या सुलझानी होगी।'

काशीनाथ ने भौंहें चढ़ाईं। 'सभी मुसलमानों को नहीं। भारतीय मुसलमानों में वो समस्या नहीं है जो तुर्कों की है। भारतीय मुसलमान धार्मिक रूप से उदार हैं। क्या अब्दुल मूर्तियों से नफ़रत करता है? क्या इक़बाल सिर्फ हिन्दुओं का अपमान करने के लिए गायों को मारता है?'

सुहेलदेव ने इनकार में सिर हिलाया। *नहीं।*

'कई तरीक़ों से भारतीय मुसलमान भारतीय हिन्दुओं की तरह हैं। वो धार्मिक रूप से उदार हैं। उन्हें दूसरे धर्मों और देवताओं का सम्मान करने से भी कोई दिक्कत नहीं है। और भारतीय मुसलमान भी तो वंशों में बंटे हुए हैं। मैं जिस समस्या की बात कर रहा था वो तुर्कों के इस्लाम की है। और अरब के इस्लाम की भी। और इसी धार्मिक असहिष्णुता को सूफी दूर करेंगे।'

'वो कैसे?' गोवर्धन ने पूछा।

'एक बहुत छोटे बदलाव के ज़रिए। सूफियों का कहना है कि उनका धर्म, इस्लाम, *उनके लिए* सच्चा धर्म है। और *मेरे लिए* मेरा हिन्दू धर्म सच्चा धर्म है। वो अपनी आस्था की सच्चाई के लिए अपने विश्वासों को बदल नहीं रहे हैं। वो दूसरी आस्था के लोगों के लिए उनके विश्वासों के साथ जगह भी बना रहे हैं। दरअसल, वो ये कहते हैं कि धर्म में कोई विवशता नहीं है। अभी, भारत में बहुत कम मुसलमान हैं। और तुर्कों का तरीक़ा यहाँ मुसलमानों की संख्या बढ़ाने के लिए कभी काम नहीं कर पाएगा। क्योंकि हमारे देश की जीवन शैली पर हमला करने से हिन्दू और अधिक नाराज़ और विद्रोही होंगे; और हम स्वभाव से काफ़ी विद्रोही लोग हैं। लेकिन मेरी बात याद रखना, अगर इस्लाम भारत में कभी बड़ा धर्म बनता है, तो ये सूफियों के कारण होगा। उनका खुलापन और उदारता हिन्दुओं की रक्षात्मक प्रवृत्ति को कम करेगी। तुर्क गलत सोचते हैं कि अगर वो हमारे मन्दिरों को नष्ट करेंगे, हमारी आस्था का अपमान करेंगे तो हम आत्मसमर्पण कर देंगे। हम इस तरीक़े से कभी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। इसके विपरीत, उनके प्रति हमारी नफ़रत हमें एकजुट कर सकती है। लेकिन कई भारतीय सूफियों के प्रेम के आगे आत्मसमर्पण कर सकते हैं।'

'सूफी अपने धर्म के लिए अच्छा काम कर रहे हैं, आस्था और सम्मति पर आधारित धर्म,' सुहेलदेव ने कहा। 'लेकिन मैं नहीं चाहता कि हिन्दू धर्म ख़त्म हो। यह उन चुनिन्दा प्राचीन संस्कृतियों में एक है जो आज तक जीवित हैं। अधिकतर बड़ी मूर्तिपूजक संस्कृतियाँ, जैसे रोम, यूनान और मिस्र, ख़त्म हो चुकी हैं। यहाँ तक कि पारसी धर्म भी अपने प्राचीन राष्ट्र ईरान में लगभग मृत है। कुछ लोग हमारी सभी प्राचीन संस्कृतियों को बुतपरस्त कहकर अपमान करने की कोशिश करते हैं। अगर हिन्दू धर्म का अन्त होता है, तो विश्व का सम्बन्ध उस अन्तिम प्राचीन जीवन शैली के साथ ख़त्म हो जाएगा, जिसमें धर्म विवेक और प्रश्न पूछने की भावना पर आधारित है। हम इसकी अनुमति नहीं दे सकते। और इसलिए हमें अपनी सामाजिक समस्या को सुलझाना होगा। हमें उस वंश व्यवस्था को नष्ट करना होगा, जो हमें विभाजित करती है, और इतने अत्याचार और दर्द का कारण बनती है।'

'बिल्कुल,' काशीनाथ ने कहा। 'हमें सुधारकों की आवश्यकता है जो जन्म आधारित वंश व्यवस्था को नष्ट करें। और हमें हमारे मूल प्राचीन रास्तों की तरफ़ ले जाएँ।'

गोवर्धन ने आगे बढ़कर सुहेलदेव का हाथ थाम लिया। 'ये आदमी हमारा सुधारक होगा। आज से सदियों बाद, लोग इसका नाम याद करेंगे। और वो सुहेलदेव की मिसाल देकर हम हिन्दुओं को सिखाएँगे कि अगर हम अपनी आस्था को बचाना चाहते हैं, अगर हम अपने महान पूर्वजों का सम्मान करना चाहते हैं, अगर हम सच्चे देशभक्त हैं, तो हमें निश्चित रुप से वंश व्यवस्था को नष्ट कर देना चाहिए।'

अध्याय 21

रानी विजयलक्ष्मी अपने पुत्र को काफ़ी देर तक देखती रहीं, उनके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। उसके कंधों को पकड़े हुए। उसका सहारा लेते हुए। उसे सहारा देते हुए।

रानी और राजकुमार उनके कमरे में अकेले थे। सामान्यतः उनके राजकुमार और तुर्कों के ख़िलाफ़ प्रतिरोध के नायक के लौटने पर श्रावस्ती में बड़ा उत्सव होना चाहिए था। लेकिन हर कोई जानता था कि उनके राजा मंगलध्वज कितने बीमार हैं। हर कोई जानता था कि कितनी तेज़ी से उनका रोग शरीर में फैल चुका है। शहर पर उदासी की एक परत सी छाई थी। सुहेलदेव अपने दस्ते के प्रमुख के रूप में चुपचाप शहर में आया था। उसके आदमियों को जहाँ महल के अलग-अलग कमरों में ठहराया गया था, वहीं वो तुरन्त अपनी माता के निजी कक्ष में पहुँच गया था।

कई युद्ध देख चुकी विजयलक्ष्मी की मज़बूत आँखों से आँसू की एक बूँद गिरी। जैसे शक्तिशाली देवी शक्ति के कवच में एक छोटा सा छिद्र, जो ये दिखा रहा हो कि उसे भी भेदा जा सकता है। उन्होंने सुहेलदेव को ज़ोर से गले लगा लिया। 'मेरे पुत्र...'

'माँ...'

वो दोनों एक-दूसरे को थामे चुपचाप खड़ रहे। उस पुरुष के लिए दुखी जिससे दोनों प्रेम करते थे। विजयलक्ष्मी का पति। सुहेलदेव का पिता।

सुहेलदेव पीछे हटा। उसके हृदय के किसी कोने में, अभी भी उम्मीद बची थी।

उम्मीद। मानवीय शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत। और मानवीय दुख का भी।

'कैसे...क्या कोई...वैद्यों...'

विजयलक्ष्मी ने अपने पुत्र की तरफ़ देखा। उन्होंने कुछ कहा नहीं। कम से कम, अपने मुँह से नहीं कहा। लेकिन उनकी आँखों ने सब कुछ कह दिया।

सुहेलदेव रोने लगा।

महल के उस कक्ष के बाहर कई दरबारी, सम्बन्धी और अन्य लोग प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे राजा के उपचार के लिए अस्पताल में बदल दिया गया था। मानो कमज़ोर हो चुका शेरों का झुंड किसी बूढ़े, लेकिन एक समय प्रभावशाली शेर के मरने का इन्तज़ार कर रहा हो।

अपनी माँ के पीछे सुहेलदेव को आता देखकर लोगों ने जगह बनाई। उन्हें कमरे में जाने का रास्ता दिया। वो सभी सुहेलदेव का ध्यान खींचने की कोशिश कर रहे थे। सहानुभूति और चिन्ता दिखाने की कोशिश कर रहे थे। उनमें से कई वास्तविक थे। कुछ नहीं भी थे। सुहेलदेव जल्दी ही राजा बनने वाला था। कुछ लोग अपने सम्बन्ध सुधारना चाहते थे। लेकिन राजकुमार ने सभी को नज़रअन्दाज़ कर दिया।

पर्दा हटाया गया। सुहेलदेव ने एक गहरी सांस ली और अपने आप को मज़बूत किया।

गरिमामयी और मज़बूत, विजयलक्ष्मी ने अपने पुत्र का हाथ पकड़ा। 'वो तब से काफ़ी बदल चुके हैं जब तुमने उन्हें पिछली बार देखा था...'

सुहेलदेव ने सिर हिलाया और अपनी माँ के साथ अपने पिता के कमरे में चल दिया। जब वो दरवाज़े को पार कर रहा था, उसे बिस्तर के चारों ओर कई वैद्य और उसके गुरु काशीनाथ दिखे। वो एक किनारे हो गए और सुहेलदेव ने अपने पिता को देखा।

वो रुक गया। सन्न और अविश्वास से अपने स्थान पर जड़।

बिस्तर पर लेटी हुई आकृति उस विशालकाय योद्धा की जीर्ण परछाईं भर थी जो उसकी याददाश्त में था। जिसे उसने कुछ महीनों पहले ही देखा था। मंगलध्वज इतने कमज़ोर हो गए थे कि उनकी चमड़ी हड्डियों से मज़बूती से चिपकी दिख रही थी। उनकी खोपड़ी का ढांचा भी हल्का सा दिखने लगा था। उन्होंने सुहेलदेव को देखकर मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन उनके होंठ ऐंठ कर रह गए क्योंकि खांसी ने उनके कमज़ोर शरीर को हिलाकर रख दिया।

राजकुमार तेज़ी से मंगलध्वज के बिस्तर तक पहुँचा और उसके पास अपने घुटनों के बल बैठ गया।

'बाबा,' सुहेलदेव फुसफुसाया।

मंगलध्वज ने पंजों के समान अपना एक हाथ उठाया और अपने पुत्र के सिर पर धीरे से थपकी दी। ऐसा लगा कि इतने भर से वो थक गए और उनका हाथ वापस बिस्तर पर गिर पड़ा।

सुहेलदेव ने धीरे से अपने पिता का दुर्बल हाथ थामा, इस बात की कोशिश करते हुए कि उसके चेहरे पर चौंकने के भाव ना आएँ। बेहद सावधानी से, उसने उसे अपने होंठों से लगाकर चूम लिया।

कोशिश करने पर मंगलध्वज बोल सके। वो मुश्किल से फुसफुसाहट भर थी। 'अच्छा हुआ तुम आ गए...मैं शान्तिपूर्वक मर सकता हूँ...'

'मरने की बात मत करिए, बाबा,' सुहेलदेव ने नरम और दुख भरी आवाज़ में कहा। 'आप अच्छे हो जाएँगे।'

मंगलध्वज हल्के से मुस्कुरा दिए। 'तुम कभी भी भरोसे के साथ झूठ नहीं बोल सकते...मुझसे तो बिल्कुल नहीं...'

सुहेलदेव चुप रहा। अपने पिता के हाथ को थामे हुए। एक शक्तिशाली आत्मा के साथ जुड़ी एक जीर्ण बाँह से उसे शक्ति मिल रही थी।

'फिर भी...कम से कम मैं उस राक्षस महमूद से अधिक जीवित रहा...' मंगलध्वज ने हँसने की कोशिश की, लेकिन वो हँसी खांसी में बदलकर रह गई।

'आराम करिए, बाबा। हम कल बात करेंगे।'

मंगलध्वज ने इनकार में सिर हिलाया। उन्हें काफ़ी कुछ कहना था। और वो नहीं जानते थे कि उनके पास कितना समय बचा है। 'वो लौटेंगे...मेरा विश्वास करो...तुर्क...लौटेंगे।'

सुहेलदेव ने हामी भरी। वो मंगलध्वज से सहमत था। वो देख सकता था कि उसके पिता को बोलने में कितनी कोशिश करनी पड़ रही है। वो इस बातचीत को और आगे बढ़ाकर अपने पिता को और कमज़ोर नहीं करना चाहता था।

मंगलध्वज ने काशीनाथ की तरफ़ देखा, जो तुरन्त बिस्तर के समीप आ गए। राजा फिर से अपने पुत्र की तरफ़ मुड़े।

'मैंने योजनाएँ बना ली हैं...' मंगलध्वज ने कहा। '...गुरुदेव सब जानते हैं... उनसे बात करो...'

सुहेलदेव ने काशीनाथ की ओर थोड़ी देर के लिए देखा और फिर अपने पिता की ओर देखने लगा। 'हाँ, बाबा। मैं गुरुदेव से बात करूँगा।

मंगलध्वज ने एक गहरी सांस ली। जैसे कि यह उनका अन्तिम प्रयास था। उन्होंने अपने पुत्र के हाथ को आश्चर्यजनक रूप से मज़बूती से पकड़ा, उनकी आँखें अचानक ग़ुस्से में जलने लगीं, उनका चेहरा सख्त हो गया। 'मेरे बेटे...लड़ते रहना... कभी आत्मसमर्पण मत करना...वो जहाँ भी दिखें उनसे लड़ना...अन्त तक उनसे लड़ना...भले ही तुम अकेले बचे रहो...लड़ते रहना...लड़ते रहना...कभी हथियार मत डालना...वो विदेशी कमीने...हमारी मातृभूमि पर राज नहीं करेंगे...वो अपवित्र नहीं —'

मंगलध्वज के शब्दों को अचानक आई तेज़ खांसी ने रोक दिया। गाढ़ा, चिपचिपा बलगम उनके मुँह के कोने से बाहर निकला। एक वैद्य उसे साफ़ करने के लिए आगे बढ़ा। लेकिन मंगलध्वज ने अपना चेहरा घुमा लिया। और फिर से सुहेलदेव की तरफ़ देखने लगे। अपने पुत्र की आँखों में। अपने पुत्र की आत्मा में।

'तुम लड़ते रहोगे...मुझे वचन दो...'

'मैं आपको वचन देता हूँ, बाबा। मैं आपको वचन देता हूँ...'

मंगलध्वज ने एक और गहरी सांस ली। 'जय माँ भारती।'

और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। कुछ ही पलों में, वो सो चुके थे। सिर्फ उनकी छाती का हल्का उतार-चढ़ाव संकेत देता था कि वो अभी भी जीवित हैं।

राजसी वैद्य मंगलध्वज के पास ही थे। उनकी नब्ज़ की नियमित जाँच कर रहे थे। उनकी सांस की स्थिरता की जाँच कर रहे थे। जब भी आवश्यकता हो, उन्हें दवाएँ दे रहे थे। कोई नहीं जानता था कि यह कब तक चलेगा। कभी-कभी मरीज़ इसी स्थिति में महीनों तक जीवित रहते थे।

सुहेलदेव और विजयलक्ष्मी थोड़ी दूरी पर बैठे थे, और बिस्तर पर लेटे हुए राजा को देख रहे थे।

कभी-कभी वो ख़ामोश बैठे रहते। कभी-कभी वो एक-दूसरे से बात करते और चर्चा करते कि उन्होंने मंगलध्वज के साथ कैसा समय बिताया था। जब भविष्य में सिर्फ निराशा दिखे, तो अतीत की यादों में सुख ढूँढ़ना बुद्धिमानी है।

'वो तुम्हें विवाहित देखकर ख़ुश होते,' विजयलक्ष्मी ने ठंडी सांस लेते हुए कहा।

सुहेलदेव ने अपनी माँ की तरफ़ देखा। लेकिन कुछ कहा नहीं।

'ऐसा नहीं है कि वो बस ये चाहते हैं कि तुम्हारा पुत्र हो और राजगद्दी का उत्तराधिकारी आए,' रानी ने बोलना जारी रखा।

'मैं जानता हूँ,' सुहेलदेव ने कहा। 'मैं गुरुदेव से बात कर रहा हूँ। मैं उन समझौतों के बारे में जानता हूँ जो बाबा ने अलग-अलग राज्यों से किए हैं। श्रावस्ती के नेतृत्व में राज्यसंघ बनाने के लिए। और मेरा अन्दाज़ा है कि मुझे इन राज्यों में से कुछ की राजकुमारियों से विवाह करना होगा ताकि गठबंधन मज़बूत बनें।'

'नहीं, बात वो भी नहीं है। मंगलध्वज के लिए वो महत्वपूर्ण था, लेकिन वही इकलौती चीज़ नहीं थी। वो वास्तव में ये चाहते हैं कि तुम्हें कोई ऐसा मिले जो तुम्हारा जीवन पूर्ण कर दे। जो तुम्हें ख़ुश रखे।'

सुहेलदेव धीरे से मुस्कुराया और अपने पिता की तरफ़ देखा। उसने धीमे से कहा, 'कौन नहीं चाहेगा जो तुम्हारे और बाबा के पास है, माँ? ऐसा नहीं है कि मैंने इस बारे में नहीं सोचा। लेकिन प्रेम ध्यान भटका सकता है। विशेषकर ऐसे समय में, जब हमारा देश और संस्कृति दांव पर हैं, मेरा मानना है कि नेताओं के पास व्यक्तिगत जीवन की विलासिता का समय नहीं है।'

विजयलक्ष्मी ने अपने पुत्र का हाथ पकड़ा। 'गलत। दरअसल, ऐसे ही समय में एक नेता को उसके जीवन में प्रेम की आवश्यकता होती है। यह उन चीज़ों में एक है जो आपको जोड़े रखती हैं। इससे आप मानवता को भूलते नहीं हैं।'

सुहेलदेव चुप रहा।

'किसी राक्षस से लड़ने में सबसे बड़ा डर यह नहीं है कि आप उससे हार जाएँगे। दरअसल, सबसे बड़ा डर यह है कि राक्षस से लड़ने में हम स्वयं राक्षस के समान बन जाएँगे। हम निश्चित रूप से तुर्कों को हरा देंगे। मुझे इसका यक़ीन है।

लेकिन तुर्कों को हराते-हराते, अगर हम उनके समान बन जाते हैं, अगर हम अपनी उदारता और दिमाग का खुलापन खो देते हैं, तो फिर जीत का क्या मतलब है?'

'लेकिन उनकी क्रूरता का मुकाबला केवल हम अपनी क्रूरता से कर सकते हैं। अगर हम उनसे लड़ रहे हैं तो हम कैसे नहीं बदलेंगे? यह तो बिल्कुल वैसे ही असम्भव है जैसे कि हम उनका सिर काटें और ख़ून की एक बूँद भी हम पर नहीं पड़े।'

'ख़ून के कुछ छींटे हम पर पड़ेंगे। लेकिन उन्हें साफ़ किया जा सकता है। और उनकी सफ़ाई करता है प्रेम। अगर तुम अपने हृदय को प्रेम से भर दोगे, तो तुम नहीं बदलोगे। और अगर नेता नहीं बदलेगा, तो उम्मीद है कि लोग भी नहीं बदलेंगे।'

सुहेलदेव ने एक बार फिर चुप्पी साध ली।

'मैं उस पर थोड़े समय से नज़र रख रही हूँ। वो एक अच्छी स्त्री है। उससे विवाह कर लो।'

सुहेलदेव ने अपनी माँ की तरफ़ चौंककर देखा। वो समझ नहीं पाया कि क्या प्रतिक्रिया दे।

'मैं तुम्हारी माँ हूँ। मैं तुम्हारा हृदय पढ़ सकती हूँ। और तुम्हारे पिता भी वही कहते जो मैं कह रही हूँ। तुम्हें हमारा आशीर्वाद है। तोशानी से विवाह कर लो।'

सुहेलदेव मुस्कुराया और उसकी आँखों से आँसुओं की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। उसने अपनी माँ को गले लगा लिया और अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया।

अध्याय 22

दरबान की आवाज़ साफ़-साफ़ और ज़ोर से आई। 'श्रावस्ती नरेश, एक मुलाक़ाती आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहते हैं।'

सुहेलदेव को अजीब लगा, उसे असहज महसूस हुआ। यहाँ तक कि उसे अपराध-बोध सा होने लगा। जैसे कि वो इस पद के लिए उपयुक्त नहीं है।

मंगलध्वज की मृत्यु हुए कुछ हफ्ते बीत चुके थे। वृद्ध राजा का रोगी शरीर कर्कट रोग से अधिक नहीं लड़ सका था। किसी आम आदमी को उसके प्यारे पिता की मौत का दुख मनाने के लिए अधिक समय मिल जाता। लेकिन एक अभागे राजकुमार को तो अपने साथ भी बिताने के लिए समय नहीं दिया गया।

पिछले कुछ हफ्तों में कई अनुष्ठान कराए गए थे। मंगलध्वज का अन्तिम संस्कार एक शासक के लिए उपयुक्त सम्मान के साथ किया गया। सुहेलदेव की राजा के रुप में मान्यता के फलस्वरूप एक पूजा कराई गई, क्योंकि सिंहासन को ख़ाली नहीं छोड़ा जा सकता था। अलग-अलग राज्यों से आए राजदूतों के सम्मान में एक समारोह हुआ, जिन्होंने श्रावस्ती के प्रति निष्ठा का वचन दिया था। राज्यसंघ आकार ले रहा था। मंगलध्वज का सपना साकार हो रहा था।

लेकिन अब, समय आ गया था कि राज्याभिषेक का समारोह आयोजित किया जाए। सुहेलदेव ने निर्णय किया था कि इसमें कोई आडम्बर नहीं होगा। लेकिन उसने इलाक़े के सभी राजाओं और रानियों को निमंत्रण भेजा था, इनमें वो राज्य भी थे जो श्रावस्ती के नेतृत्व वाले राज्यसंघ के अंश नहीं थे। कन्नौज के अजीतपाल ने आने से इनकार कर दिया था, और इससे किसी को आश्चर्य नहीं हुआ था। लेकिन उसने अपने मंत्री वृषभ को अपने प्रतिनिधि के रुप में भेजा था।

राज्याभिषेक समारोह सम्पन्न होने के बाद सुहेलदेव क़रीबी साथियों के साथ अपने कक्ष में चला गया था। लेकिन थोड़ी देर बाद ही, उससे मिलने के लिए मुलाक़ाती आने लगे थे।

काशीनाथ, अब्दुल, गोवर्धन और तोशानी ही कक्ष में सुहेलदेव के साथ थे। राजगुरु ने रेतघड़ी की तरफ़ देखा।

‘आपके पास अधिक समय नहीं है,’ काशीनाथ ने कहा। ‘पहले से ही कई लोग आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और फिर उसके तुरन्त बाद रात्रिभोज का समय हो जाएगा जिसे आपने आयोजित किया है, महाराज।’

सुहेलदेव ने अपनी नाक सिकोड़ी। ‘गुरुदेव, मैं आपको कितनी बार बताऊँ कि भले ही मैं राजा हूँ, मैं आपका महाराज नहीं हूँ। कृपया मुझे ऐसा कहकर सम्बोधित ना करें।’

काशीनाथ ने अपने हाथ नमस्ते की मुद्रा में जोड़ लिए। ‘मैं श्रावस्ती के सिंहासन पर बैठने वाले को उचित सम्बोधन ना देकर उसका अपमान नहीं कर सकता। अब, अनावश्यक तर्क-वितर्क पर हमें समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आप पहले अपने मुलाक़ाती से क्यों नहीं मिल लेते, फिर हम आपके दूसरे कार्यों की ओर बढ़ेंगे?’

सुहेलदेव ने ठंडी सांस ली। ‘ठीक है। आप सभी तब तक तैयार क्यों नहीं हो जाते? मैं आपसे थोड़ी देर में मिलता हूँ।’ वो दरबान की ओर मुड़ा। ‘मुलाक़ाती कौन है?’

‘सामन्त वृषभ, कन्नौज के प्रधानमंत्री, महाराज।’

सुहेलदेव जम सा गया। उसकी मुट्ठियाँ तन गईं। कन्नौज के शासक ने हमेशा ही सुहेलदेव को अकुलीन वंश का नवोदित समझा था। और उसने कई लड़ाइयों में ग़ज़नी का पक्ष भी लिया था।

‘महाराज,’ काशीनाथ ने विनम्रता से कहा। ‘कम से कम प्रधानमंत्री तो आए हैं। अगर वो राज्याभिषेक समारोह का बहिष्कार करते तब हमारा अपमान होता।’

सुहेलदेव चुप रहा। साफ़ तौर पर वो नाख़ुश था।

‘सुहेलदेव,’ तोशानी ने कहा, ‘चाहे दूसरे लोग कैसा भी व्यवहार करें, हमें अतिथि का सम्मान करना ही चाहिए। यही *धर्म* है।’

सुहेलदेव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया। ‘आप सभी जाएँ। मैं उससे निपट लूँगा।’

अब्दुल ने कुछ बोलने की ज़रूरत समझी। ‘महाराज, मेरी बात सुनें—’

उसे सुहेलदेव ने बीच में ही रोक दिया। ‘आप सभी, कृपा करके जाएँ। मैं इस मामले को संभाल लूँगा।’

काशीनाथ ने बाक़ियों की तरफ़ देखा और इशारा किया कि उन्हें बात माननी चाहिए। फिर उन्होंने झुककर नमस्कार किया और कक्ष से बाहर निकल गए। बाक़ी लोग भी उनके पीछे निकल गए, तोशानी सबसे अन्त में निकली।

जल्दी ही, कन्नौज के प्रधानमंत्री को कक्ष में लाया गया।

वृषभ की चाल धीमी और विश्वास से भरी थी। उसका रंग-ढंग कठोर और रुखा था। उसने अपने हाथ नमस्ते की मुद्रा में जोड़े। ‘जय श्री कृष्ण।’

‘जय श्री कृष्ण,’ सुहेलदेव ने जवाब दिया।

‘बधाई हो, महाराज। अपने माननीय पिता की मृत्यु पर मेरी संवेदना स्वीकार करें। मेरे स्वामी, सम्राट अजीतपाल को खेद है कि वो व्यक्तिगत रुप से समारोह में नहीं आ सके।’

'मुझे यक़ीन है कि उन्हें खेद है,' सुहेलदेव ने रूखेपन से कहा।

श्रावस्ती के राजा ने दरबानों की तरफ़ देखा और उन्हें जाने का इशारा किया। वो हिचकिचाए। राजा को किसी दुश्मन राज्य के प्रधानमंत्री के साथ पूरी तरह अकेला छोड़ने की परम्परा नहीं थी। लेकिन सुहेलदेव से सवाल पूछने की बजाय वो तुरन्त कक्ष से बाहर चले गये।

सुहेलदेव अपनी राजगद्दी से उठा और वृषभ के पास पहुँचा, उसका डील-डौल कन्नौज के क्षत्रिय राजा के छोटे क़द के प्रधानमंत्री से ऊँचा था।

हालांकि, वृषभ पीछे की तरफ़ नहीं हटा। उसने आत्मविश्वास भरी मुस्कुराहट के साथ सुहेलदेव की तरफ़ देखा और धीरे से बोला, 'कैसा चल रहा है, मेरे मित्र?'

सुहेलदेव गर्मजोशी से मुस्कुराया और वृषभ को गले लगा लिया। 'बहुत अच्छा, वृषभ जी।'

वृषभ ने बन्द दरवाज़े की तरफ़ देखा। और फिर सुहेलदेव की तरफ़। 'भगवान कृष्ण के आशीर्वाद से, हमारा गुप्त गठबंधन एक राज़ ही रहे।'

'इसे रहना ही चाहिए...मैं कभी भी आपको उचित ढंग से धन्यवाद नहीं दे पाया, आपकी उस सहायता के लिए, जो आपने मेरे वर्षों के वनवास के दौरान की है।'

वृषभ एक क़दम पीछे हटा, उसने अभी भी सुहेलदेव की बाँहें थाम रखी थीं। 'कम से कम मैं इतना तो कर ही सकता था। तुम अपना जीवन जोखिम में डाल रहे थे। और वो भी हमारी मातृभूमि के लिए।'

'यक़ीन मानिए, आपकी मदद ने सम्भवतः कई बार मेरी जान बचाई है।'

'मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई...और तुम्हारा धन्यवाद कि तुमने मुझे मातृभूमि की सेवा करने का अवसर दिया। तुम्हारे माध्यम से...काश मैं खुलकर तुम्हारे साथ जुड़ पाता।'

'आप कन्नौज के दरबार में रहकर मेरी और हमारी मातृभूमि की कहीं बड़ी सहायता कर रहे हैं,' सुहेलदेव ने कहा। 'अब, मुझे बताइए कि राजा अजीतपाल क्या कर रहे हैं?'

'वो तुम्हारे राजा बनने से ख़ुश नहीं हैं, लेकिन वो तुम पर अकेले आक्रमण नहीं करेंगे। गज़नी की सेना के समर्थन के बिना नहीं। वो इक्कीस राजाओं और सरदारों के तुम्हारे राज्यसंघ से अकेले नहीं भिड़ सकते।'

'हम्म।'

'राज्यसंघ बनाने का विचार बुद्धिमानी भरा था।'

'मेरे पिताजी हमेशा से बुद्धिमान थे।'

'वो तो थे ही...लेकिन, एक बात है जो तुम्हें जानने की ज़रुरत है।'

'क्या?' सुहेलदेव ने कौतूहल के साथ पूछा।

'तुम्हारे दल में एक गद्दार है।'

जैसे ही सुहेलदेव ने उस विशाल कक्ष में प्रवेश किया, इक्कीस राजाओं और सरदारों का समूह खड़ा हो गया। सुहेलदेव ने विशेष रूप से इन इक्कीस व्यक्तियों के साथ एक अलग मुलाक़ात का प्रबंध किया था क्योंकि ये लोग तुर्कों के विरुद्ध एक गठबंधन, एक राज्यसंघ बनाने के मंगलध्वज के सुझाव पर सहमत हो गए थे।

उनके छोटे राज्य और रियासत उत्तर भारत की राजसी शक्तियों के पतन के कारण बने थे, और उन्हीं में से टूटकर निकले थे।

सुहेलदेव ने सभी का अभिवादन नमस्ते के साथ किया, और फिर उन्हें बैठने का संकेत किया। वो कक्ष के एक छोर पर एक साधारण सिंहासन पर बैठा, और उसके सहयोगी उसके आसपास खड़े रहे।

'आप सभी महान राजाओं का अपनी उपस्थिति से मेरा सम्मान बढ़ाने के लिए धन्यवाद,' सुहेलदेव ने कहा। 'मेरे पिता का एक दूरदर्शी स्वप्न था। वो स्वप्न अब आकार लेता दिख रहा है। वो स्वप्न कि जब हम एकजुट रहेंगे, तभी हम बर्बर तुर्कों के समान विदेशी आक्रमणकारियों से लड़ने में सक्षम होंगे। मैं अपने चारों तरफ़ ऐसे पुरुषों को देख रहा हूँ, जिनका मैं हमेशा से प्रशंसक रहा हूँ। भारत के महान सपूत, जिनके पास हमारी मातृभूमि की रक्षा के लिए आवश्यक विवेक, शक्ति और देशभक्ति है। जय माँ भारती!'

उत्साह से भरी पुकार पूरे कक्ष में गूँज उठी। 'जय माँ भारती!'

'आप सभी मेरे पिता के नेतृत्व में राज्यसंघ का हिस्सा बनने के लिए राज़ी हुए। वो एक महापुरुष थे और उनका स्थान सही मायने में कोई नहीं ले सकता। लेकिन मैं उनके जीवन का कार्य और स्वप्न साकार करने की पूरी कोशिश करूँगा। और मैं उन शर्तों पर क़ायम रहूँगा जो मेरे पिता के साथ आप लोगों ने मानी थीं। इस राज्यसंघ का केवल एक लक्ष्य रहेगा: विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध साझा रक्षा पंक्ति। हम एक-दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। हर राज्य की स्वायत्तता का हमेशा सम्मान किया जाएगा।'

'साधु! साधु!'

'हम विदेशियों से लड़ने के लिए एक साझा सेना बनाएँगे। आपकी आन्तरिक कोतवाली स्वतंत्र रहेगी।'

एक राजा ने सुहेलदेव से पूछा, 'आपके अनुसार तुर्कों की वापसी कब हो सकती है?'

'वो अभी गृह युद्ध में उलझे हैं। उन सर्पों ने हमें तैयारी का समय दे दिया है। लेकिन वो वापस आएँगे। भारत में बहुत पैसा है। और वो हमारी तुलना में ग़रीब हैं। जो भी गज़नी के गृह युद्ध में विजयी होगा, उसे अपने सहयोगियों की वफादारी ख़रीदने के लिए पैसे की ज़रूरत होगी। वो वापस आएँगे। हमें आत्मसन्तुष्ट होकर नहीं बैठना चाहिए। हमें इस समय का उपयोग युद्ध की तैयारी के लिए करना चाहिए। आप इससे सहमत हैं?'

चत्री के शासक और कक्ष में उपस्थित सबसे बुज़ुर्ग व्यक्ति, राजा शंकर उठे। बढ़ती उम्र के बावजूद उनकी आवाज़ अभी भी दमदार थी और उनका सम्मान वहाँ उपस्थित सभी व्यक्ति करते थे। 'महाराज सुहेलदेव ने समझदारी की बात कही

है। तुर्कों की वापसी में अधिक समय नहीं लगेगा। अगर उन्हें कोई रोक सकता है, तो वो सुहेलदेव हैं। पिछले कुछ वर्षों में, जब हम अपने महलों में विलासिता का जीवन जी रहे थे, वो तुर्कों और उनके चाटुकारों से लड़ रहे थे।' वो सुहेलदेव की तरफ़ मुड़े और उसे झुककर नमस्कार किया। 'आपके पिता ना केवल एक महान स्वप्नदर्शी और योद्धा थे, वो सभी पीड़ित लोगों के एक निष्ठावान मित्र भी थे। वो पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हमारे राज्य को कूटनीतिक मान्यता दी, जब बाक़ी सभी ने हमसे किनारा कर लिया था। मुझे उन्हें एक भाई की तरह मानने का सम्मान मिला था। मैं आपको अपना साथी कहकर प्रतिष्ठित महसूस करूँगा। मैं आपके प्रस्ताव से सहमत हूँ। आइए, हम सब मिलकर अपनी संयुक्त सेना बनाएँ। महाराज सुहेलदेव की जय!'

बाक़ी राजाओं ने एक-एक करके उनके सुर में सुर मिलाया, जब तक कि पूरा कक्ष उनकी जय-जयकार से गूँज नहीं उठा। सुहेलदेव नमस्ते की मुद्रा में अपने हाथ जोड़कर खड़ा हुआ, और उसने विनम्रता से अपना सिर झुका दिया। फिर उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और सभी को शान्त होने का संकेत किया।

'महान राजाओं, आप सभी के इस विश्वास और सहयोग के लिए धन्यवाद। मैं भगवान शिव और भगवान राम की शपथ लेता हूँ कि मैं आपको कभी इस पर पछताने का अवसर नहीं दूँगा। मेरी कुछ योजनाएँ हैं जिनकी घोषणा मैं कल दरबार में करूँगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप पहले इनके बारे में जान लें।' उसने पहले अब्दुल और गोवर्धन की तरफ़ इशारा किया। 'तुर्कों से लड़ाई के मेरे अनुभव के आधार पर, मेरा मानना है कि सामान्य सेना के अतिरिक्त हमें घुड़सवारों के दो छोटे सैन्य दल भी बनाने चाहिए, जो मार्गदर्शक की तरह काम करेंगे और औचक आक्रमण किया करेंगे। अब्दुल और गोवर्धन इन सैन्य दलों का गठन और नेतृत्व करेंगे, जिनमें कई वैसे लोग भी होंगे जो मेरे दस्ते में थे।' जब अब्दुल और गोवर्धन ने सिर झुकाया, तो सुहेलदेव ने उन्हें कहा, 'ये सुनिश्चित करना कि तुम दोनों के हर सैनिक को उन दोनों बौद्ध संन्यासियों से प्रशिक्षण ज़रूर मिले। उनका कौशल बहुत काम आएगा।' फिर, सुहेलदेव तोशानी की तरफ़ मुड़ा। 'मेरा हमेशा से मानना रहा है कि हमें अधिक महिलाओं को हमारी सेना में शामिल करना चाहिए। हमारी प्राचीन सेनाओं में कई महिला योद्धा होती थीं। उनके सीने में भी वही देशभक्त दिल धड़कता है, जो पुरुषों के सीने में धड़कता है। तो उन्हें हमारी मातृभूमि की रक्षा का अवसर क्यों नहीं मिलना चाहिए? इसलिए मेरी योजना है कि हम महिला योद्धाओं का एक स्वयंसेवी सैन्य दल बनाएँ। तोशानी, तुम इस सैन्य दल को संभालोगी। हम इसे माँ काली सैन्य दल कहेंगे!'

तोशानी का चेहरा प्रसन्नता से चमक उठा। उसने सुहेलदेव और सभी उपस्थित राजाओं के सामने झुककर नमस्कार किया।

'कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए, मुझे आप लोगों को ये बताते हुए दुख हो रहा है कि श्रावस्ती के दरबार में एक गद्दार था।' सुहेलदेव ने ताली बजाई। 'उसे अन्दर लाया जाए।'

पूरी सभा दंग रह गई जब कुछ प्रहरी एक आदमी को धकेलते हुए कक्ष में लाए। उस आदमी को वो सभी पहचानते थे। उसके हाथ बंधे हुए थे और चेहरे पर चोट के ताज़ा निशान थे। उसने भयभीत निगाहों से कक्ष में चारों तरफ़ देखा।

सुहेलदेव ने उस बन्दी की तरफ़ संकेत किया। 'इस नीच के पास बहुत सारी ज़मीन है और इसके हाथ में तीन हज़ार सैनिकों की कमान थी। लेकिन ये इतने से सन्तुष्ट नहीं था। ये कन्नौज के राजा अजीतपाल के साथ मिलकर, गज़नी के दुष्ट सालार मक़सूद के निर्देशों के अनुसार, हम सबके ख़िलाफ़ साज़िश कर रहा था। मैं इस पर कभी सन्देह नहीं करता, लेकिन एक भरोसेमन्द सूत्र ने मुझे इसके बारे में बताया। जब पूछताछ की गई तो इसने ये बात स्वीकार की।'

'दया, स्वामी! मैंने आपके पिता की वफादारी के साथ सेवा की थी...मेरी भूल को माफ कर दीजिए...दया!'

सुहेलदेव ने उसकी ओर कठोर दृष्टि से देखा। 'मैं किसी मित्र के लिए अपनी जान दे सकता हूँ। और मुझे किसी शत्रु की जान लेने में कोई हिचक नहीं है। तुमने स्वयं को उसी दिन अपराधी बना दिया था जिस दिन तुमने हमारे राज्य के एक शत्रु के साथ मेरे विरुद्ध षड्यंत्र करने का फैसला लिया।' उसने प्रहरियों को इशारा किया। 'इसे यहाँ से ले जाओ।'

वो आदमी ज़मीन पर गिर गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। प्रहरियों ने उसकी बाँहें पकड़ीं और उसे खींचते हुए बाहर ले जाने लगे, वो अभी भी दया की विनती कर रहा था। कक्ष की हर आँख उसी का पीछा कर रही थी जब उसे बाहर ले जाया जा रहा था।

सुहेलदेव ने उस बन्दी को बाहर ले जाने तक इन्तज़ार किया, फिर अपनी बात आगे बढ़ाई। 'गद्दारों के लिए कोई दया नहीं दिखाई जाएगी, लेकिन मेरे पिता के प्रति उसकी सेवाओं का सम्मान करते हुए, मैं उसे एक आसान मौत दूँगा। गद्दार की जायदाद ज़ब्त की जाएगी, और उसे सैन्य दर्जे से बेदख़ल किया जाएगा।'

उसने कक्ष में चारों ओर देखा, ये सुनिश्चित करने के लिए कि जो सन्देश वो देना चाह रहा है, वो लोगों तक पहुँचा या नहीं। सभी के चेहरों की गम्भीरता से ये साफ़ था कि सन्देश पहुँच चुका था।

'महान राजाओं, एक अन्तिम बात और,' सुहेलदेव ने कहा। 'मैंने हमारे कई प्राचीन ग्रन्थ, प्राचीन कहानियाँ पढ़ी हैं। एक परम्परा है जिसका सम्मान हमारे सभी देवताओं ने किया है। एक परम्परा जिसे हम भूल गए हैं। यह माना जाता है कि जब भगवान राम अपना साम्राज्य मेलूहा स्थापित करने के लिए अन्तिम युद्ध के लिए अपनी सेना और अपने भाइयों को तैयार कर रहे थे, उन्होंने इसका पालन किया था। यह माना जाता है कि जब देवी सीता युद्ध के लिए गई थीं, तो उन्होंने इसका पालन किया था। यह माना जाता है कि जब भगवान शिव, देवी सती, और उनके पुत्र, भगवान गणेश और भगवान कार्तिक युद्ध के लिए जाते थे, तो वो भी इसका पालन करते थे। यह माना जाता है कि देवी सती की बहन, देवी काली ने भी उनका साथ दिया था। यह माना जाता है कि भगवान परशुराम से लेकर भगवान रुद्र, देवी मोहिनी से लेकर भगवान कृष्ण सभी इसका पालन करते थे। यह एक

अच्छी परम्परा थी। वो परम्परा जिसे हम भुला चुके हैं। वो परम्परा जिसका अब हम सम्मान नहीं करते।'

राजाओं ने एक-दूसरे की ओर आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा।

'अतीत की कुछ परम्पराएँ हैं जो हमें बांटती हैं। और कुछ परम्पराएँ हैं जो हमें एक करती हैं। हम अपने अतीत की किस परम्परा का सम्मान करते हैं, उससे हमारा भविष्य तय होता है। फैसला हमारा है।'

वहाँ उपस्थित सभी राजाओं के मन में एक ही प्रश्न था। *महाराज सुहेलदेव किस परम्परा की बात कर रहे हैं?*

'देश के रूप में, हमने अपने आप को बांटने का विकल्प चुना है। और अपने आप को बांटकर हमने विजय की बजाय पराजय चुनी है। आइए अब हम एकता चुनें। हम सब विजय को चुनें...आइए हम उन परम्पराओं को चुनें जो एकता को बढ़ावा देती हैं।'

पूरी सभा में ख़ामोशी बनी रही।

'प्राचीन भारत में एक समय था जब अलग-अलग समुदायों में विवाह सामान्य बात थी। इससे एकता को बल मिलता था। भारत में एक समय था जब हम एक-दूसरे के उत्सवों को मनाते थे। इससे एकता को बल मिलता था। एक समय था जब मन्दिर सभी समुदायों के लिए खुले रहते थे। इससे एकता को बल मिलता था। एक समय था जब एक ही कुएँ से गाँव के सभी लोगों को पानी मिलता था। इससे एकता को बल मिलता था। एक समय था जब हम सब साथ भोजन करते थे। इससे एकता को बल मिलता था।'

सुहेलदेव ने ताली बजाई, और दस लोग वास्तव में एक महाकाय थाल लेकर अन्दर आए। उनके पीछे कई राजसी सेवक भोजन के लिए व्यंजन लेकर पहुँचे।

'हमारे महान देवताओं भगवान राम और भगवान शिव की परम्परा के अनुसार, आइए हम सब एक ही थाली से, साथ खाएँ और दिखाएँ कि हम सब वास्तव में एकजुट हैं। हम सभी ने अपनी माता, इस महान भारत राष्ट्र के प्रति निष्ठा की शपथ ली है। उनकी मिट्टी और उनके आशीर्वाद से उपजे भोजन को एक थाली से खाकर, आइए हम माँ भारती का सम्मान करें।'

कक्ष में सन्नाटा पसर गया। राजाओं ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा। जन्म से ही वो इस धारणा के साथ पले-बढ़े थे कि भोजन और विवाह जैसे व्यक्तिगत विषयों को अलग रखा जाना चाहिए, और वंश व्यवस्था के नियमों को तोड़ते हुए एक ही थाली से भोजन करना उनमें से कई के लिए डरावना था।

सुहेलदेव को थोड़ा और हौसला बढ़ाने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। 'हमारी मातृभूमि हमें पुकार रही है। क्या उसके बच्चे अपने आप को बांटते रहेंगे? या वो एकजुट होंगे?'

जब ख़ामोशी असहज रूप से लम्बी होने लगी, सुहेलदेव का चेहरा लाल होने लगा। निराशा में। ग़ुस्से में।

तभी गोवर्धन ने क़दम आगे बढ़ाया।

गोवर्धन का जन्म एक क्षत्रिय के रूप में हुआ, और वो भी राज परिवार में। इसलिए वो, एक तरह से, कक्ष में उपस्थित लोगों में वंश व्यवस्था के तथाकथित नियमों के अनुसार, सबसे कुलीन वंश का था।

गोवर्धन ने सुहेलदेव की तरफ़ देखा, फिर ज़ोर से गूँजती आवाज़ में बोला, ताकि पूरी सभा में उपस्थित सभी लोग सुन सकें। 'हमने साथ मिलकर लड़ा है, मारा है और ख़ून बहाया है। युद्ध में बना भाईचारा किसी भी किताब में लिखे नियमों से ज़्यादा मज़बूत होता है। मुझे अपने क्षत्रिय होने पर गर्व है। और मुझे इस बात पर गर्व है कि आप मेरे राजा हैं, अधिक गर्व है कि आप मेरे मार्गदर्शक हैं और सबसे अधिक गर्व है कि आप मेरे भाई हैं।' फिर वो तोमर सेनापति दूसरे राजाओं की तरफ़ मुड़ा। 'मैं अपने धर्मग्रन्थों का विशेषज्ञ नहीं हूँ। उनमें क्या लिखा है मुझे इस बारे में बहुत कम जानकारी है। लेकिन मैं यह बात जानता हूँ: अगर हम बेवक़ूफ़ों की तरह अपने आप को बांटना बन्द नहीं करेंगे, हम उन विदेशी बर्बरों के हाथ सब गंवा देंगे। और हमारी संस्कृति, हमारी भूमि, हमारे मन्दिर, हमारा धर्म, सब बर्बाद हो जाएँगे।'

गोवर्धन महाकाय थाल के पास नीचे बैठ गया। उसने अपने चारों तरफ़ जमा हुए सभी लोगों को देखा। 'मुझे आप लोगों का नहीं पता, लेकिन मैं बहुत भूखा हूँ।'

ये कहते-कहते, उसने रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा, उसे दाल के कटोरे में डुबोया और अपने मुँह में रख लिया। सुहेलदेव भी नम आँखों के साथ नीचे बैठा और खाना शुरु कर दिया। धीरे-धीरे सभी राजा, एक-एक करके, महाकाय थाल के पास आए और भोजन का निवाला लेना शुरु किया।

सुहेलदेव ने अब्दुल और तोशानी की तरफ़ इशारा किया कि वो भी साथ आएँ। और वो आ गए।

उन्हें थाली से बस प्रतीकात्मक रूप से एक निवाला लेना था। लेकिन सभी ने अपना पूरा भोजन साथ किया। उसी एक महाकाय थाल से।

भारत माता के बच्चे। एकजुट।

ख़ून में गढ़े बंधन को उस चीज़ से पवित्र किया गया जो भारतीयों के हृदय के सबसे क़रीब है: भोजन।

'मैंने इस विषय में गहराई से सोचा, सुहेल...' तोशानी ने कहा। वह थोड़ा हिचकिचा रही थी। उसकी आँखें नम थीं। 'पर मुझे लगता है...नहीं...'

'नहीं, क्या मतलब है तुम्हारा?' सुहेलदेव ने गुस्से में पूछा।

श्रावस्ती के राजदरबार में हुई इक्कीस राजाओं की सभा के कुछ हफ्ते बीत चुके थे। अपने सिद्धान्त पर सबको राज़ी करने और एक विशाल सेना के निर्माण का कार्य आरम्भ करने के बाद सुहेलदेव अब वो काम करना चाहता था जिसकी आज्ञा उसकी माँ ने दे दी थी। जिसे उसका दिल करना चाहता था। उसने तोशानी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा। पर आश्चर्यजनक रूप से तोशानी ने तुरन्त जवाब

देने से इनकार कर दिया और सोचने के लिए कुछ समय माँगा। उसके जवाब ने, एक हफ्ते बाद, सुहेलदेव को दुखी और व्याकुल कर दिया।

'सुहेल...' तोशानी बोली। 'तुम जानते हो मैं तुम्हारी परवाह करती हूँ...'

'और इस तरह दिखा रही हो, है न?' सुहेलदेव ने पूछा, गुस्सा उसके चेहरे पर साफ़ नज़र आ रहा था। वह अभी भी अपने पिता के जाने का शोक मना रहा था। उसका हृदय वेदना से भरा था। और पहले से ही दुखी हृदय को और दुख पहुँचाने पर स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में क्रोध ही झलकता है।

'सुनो सुहेल...' तोशानी ने अन्ततः अपनी भावनाओं पर काबू पाते हुए कहा। 'मैं कहीं नहीं जा रही हूँ...बस यह सही समय नहीं है। याद करो तुम्हारे पिता ने तुमसे क्या माँगा था। याद करो तुमसे क्या करने को कहा था। कभी युद्ध करना नहीं छोड़ना। तब तक नहीं जब तक माँ भारती पर से तुर्क ख़तरा ख़त्म नहीं हो जाए।'

'इससे मेरे विवाह का क्या सम्बन्ध है?! मेरा ध्यान नहीं भटकेगा। तुम मुझे भटकने नहीं दोगी।'

'इसके लिए तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है, सुहेल। मैं जानती हूँ तुम कभी नहीं भटकोगे। मैं जानती हूँ, अपनी मातृभूमि के लिए तुम कभी युद्ध करना नहीं छोड़ सकते। अपनी अन्तिम सांस तक भी नहीं।'

'फिर क्यों...क्यों मुझे इस तरह पीड़ा दे रही हो?'

'क्योंकि तुम अकेले युद्ध नहीं लड़ोगे।'

'क्या?! दूसरे लोग क्या सोचते हैं उसकी किसे परवाह है? इस सबका उससे क्या लेना-देना—'

'मेरी बात समझो, सुहेल...तुम्हें उस सेना की आवश्यकता है जो तुम्हारे लिए अपनी जान देने को तैयार हो। और मैंने हमेशा तुम्हारी इस बात से सहमती जताई है कि भारत में शूरवीर पुरुषों और स्त्रियों की कमी नहीं है। विश्व में हम लोग सबसे बहादुर लोग हैं। हमारी यही समस्या है कि किसी बाहरी शत्रु से लड़ने की बजाय हम आपस में ही लड़ना चाहते हैं। हम स्वयं की भलाई के लिए आपस में ही विभाजित हैं।'

'भगवान शिव के लिए मुझे बताओ, इससे मेरे विवाह का क्या लेना-देना है?'

'हम भारतीय हर चीज़ पर कुछ ज़्यादा ही विचार कर लेते हैं, सुहेल...'

'हाँ, करते हैं! तुम इस समय वही कर रही हो!'

तोशानी मायूसी से मुस्कुराई। 'नहीं, मैं ऐसा नहीं कर रही। पर तुम्हारे कई अभिजात अनुयायी ज़रूर करेंगे। वो ये सोचते रहेंगे कि जब तुर्कों के साथ युद्ध समाप्त हो जाएगा तो उनका क्या होगा। क्या तुम अति शक्तिशाली बन जाओगे? क्या तुम उत्तर भारत के नए सम्राट बन जाओगे? क्या उन्हें अपनी स्वतंत्रता गंवानी पड़ेगी?'

'ये बकवास है! हमें तो अभी यह भी नहीं पता कि हम तुर्कों को हरा भी पाएँगे या नहीं।'

‘उन्हें तुम्हारे नेतृत्व में विश्वास है, सुहेल...और यही समस्या है। क्योंकि वो मानते हैं कि तुम उन्हें विजय की ओर ले जाओगे। वो कल के विषय में नहीं सोच रहे हैं। वो भविष्य के विषय में सोच रहे हैं।’

सुहेलदेव ने गहरी सांस ली। ‘इन सबका मेरे विवाह से क्या लेना-देना है?’

‘हाल ही के भारतीय इतिहास के महान साम्राज्य-निर्माता के बारे में सोचो।’

‘गुरु चाणक्य?’

चाणक्य, सम्राट चन्द्रगुप्त के मुख्य सलाहकार, को महान मौर्य साम्राज्य का निर्माता माना गया जिसमें लगभग पूरा भारतीय उपमहाद्वीप और उससे भी ज़्यादा इलाक़े शामिल थे।

‘लोग उनका अनुसरण क्यों करते थे? केवल इसलिए नहीं कि वो बुद्धिमान थे। केवल इसलिए नहीं कि वो अद्भुत संगठक थे। केवल इसलिए नहीं कि वो निष्ठुर थे।’

सुहेलदेव को अन्ततः समझ आ गया कि तोशानी क्या कहना चाह रही है। ‘क्योंकि यह स्पष्ट था कि उनके इस साम्राज्य-निर्माण में कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं था...’

‘बिल्कुल। कोई भी ये सोच ही नहीं सकता था कि इस साम्राज्य के निर्माण में गुरु चाणक्य का निजी स्वार्थ भी था। यदि तुम्हारे अनुयायी ये सोचना शुरु कर दें कि इस युद्ध में तुम्हारा निजी स्वार्थ छिपा है, तो क्या वे तुम्हारे लिए इतना करेंगे? उन्हें ऐसा बिल्कुल नहीं लगना चाहिए कि तुम अपने वंश, या अपने बच्चों या अपने राज्य के लिए युद्ध कर रहे हो। उन्हें भरोसा होना चाहिए कि इस युद्ध में तुम्हारा कोई भी निहित स्वार्थ नहीं है। एक खास वजह से ही भारतीय इतिहास के ज़्यादातर महान नेता अविवाहित ही रहे; संन्यासी की भांति। क्योंकि तभी उनके अनुयायियों को ये विश्वास हुआ कि उनका नेता सिर्फ लोगों के लिए समर्पित है। कोई भी धृतराष्ट्र जैसा नेता नहीं चाहता। सभी को भगवान राम चाहिए। यदि हम भारतीयों को अपने नेता की मंशा पर विश्वास है तो हम उसके लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।’

‘पर...’

तोशानी जानती थी कि सुहेलदेव अपनी माँ की बात भी रखेगा। वो मुस्कुराई। ‘सुहेल, मैं तुम्हें काफी समय से जानती हूँ। तुम धर्म में इतने डूबे हो कि तुम तुर्कों की तरह दानव नहीं बनोगे।’

सुहेलदेव ने अपना सिर झटका। और गहरी सांस ली।

‘तुम जानते हो कि मैं जो कह रही हूँ वो सही है,’ तोशानी ने कहा। ‘ये अनुचित है। बेशक। तुम्हारे लिए भी और मेरे लिए भी। लेकिन हमें ये अन्याय सहना पड़ेगा। अपनी माँ भारती के लिए...’

सुहेलदेव चुप रहा। नाख़ुश।

‘मैं कहीं नहीं जा रही हूँ। मुझे सेना की माँ काली टुकड़ी को बढ़ाना है। मैं यहीं हूँ। पहले युद्ध जीतते हैं। तुर्कों को खदेड़ते हैं। और फिर देखते हैं...’

सुहेलदेव ने सिर हिलाया और ज़मीन की ओर देखने लगा। नाख़ुश और निराश।

अध्याय 23

ग़ज़नी, 1033 ईसवी

लम्बे-चौड़े सैनिक ने अपनी पकड़ सख़्त की और अपने दाहिने हाथ से मक़सूद के गले को ज़ोर से दबाया। उसके बाएँ हाथ ने मज़बूती से मक़सूद के उस हाथ को नीचे दबा रखा था जिसमें उसने तलवार पकड़ी थी। मक़सूद हाँफने लगा और अपने प्रतिद्वन्द्वी की पकड़ को ढीली करने की जीतोड़ कोशिश करने लगा, लेकिन वो लम्बा-चौड़ा सैनिक, मक़सूद के लिए भी काफ़ी ताक़तवर था।

मक़सूद ने उस आदमी को लात-घूँसे मारे, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। उसकी ताक़त जवाब देने लगी और उसकी आँखों के आगे अंधेरा छाना शुरू हो गया।

अचानक, वो लम्बा-चौड़ा सैनिक घुरघुराया और उसके हाथ की पकड़ थोड़ी ढीली पड़ी। फिर उसका चेहरा दर्द के भाव के साथ बिगड़ा और वो मक़सूद को छोड़कर अपना हाथ अपनी पीठ की तरफ़ ले गया, जिसमें एक लम्बा छुरा धंसा हुआ था। उसने भयंकर दर्द से कराहते हुए, अपनी गर्दन घुमाई और अपने ऊपर हमला करने वाले को देखा।

करीम।

करीम का सुन्दर चेहरा ग़ुस्से से दमकने लगा जब उसने छुरे को और अन्दर धकेलते हुए घुमा दिया और निर्ममता से तब तक धकेलता रहा, जब तक कि वो उस आदमी के दिल तक नहीं पहुँच गया।

जब वो लम्बा-चौड़ा सैनिक मरकर ज़मीन पर गिर गया, मक़सूद ने खांसते हुए जल्दी-जल्दी लम्बी सांसें लीं। उसने अपनी आँखें मींच लीं जब अपनी चोटिल गर्दन को हल्के से रगड़ा। उसकी बादामी आँखें ख़ून की तरह लाल और नम हो गई थीं। आमतौर पर उसके लहराते हुए बाल पसीने से चिपक गए थे। मक़सूद ने अपनी गर्दन को सहलाना जारी रखा ताकि उसे आराम मिले, और ताज़ी हवा की कमी से जूझ रहे अपने शरीर को राहत देने के लिए लम्बी सांस लेता रहा।

सुहेलदेव के राज्यसंघ का गठन करने और एक स्थायी सेना तैयार करने के बाद दो वर्ष से ज़्यादा बीत चुके थे। ऐसा नहीं था कि मक़सूद भारत में हो रही गतिविधियों पर नज़र रख रहा था। गज़नी में गृह युद्ध काफ़ी लम्बा खिंच चुका था। बहुत लम्बा।

जब सालार मक़सूद को अपने शरीर में ताक़त लौटती महसूस हुई, उसने अपनी ज़िन्दगी की मुहब्बत करीम की तरफ़ देखा।

करीम मक़सूद के सामने उसका बचाव करने की मुद्रा में खड़ा था, उसकी पीठ मक़सूद की तरफ़ थी, और उसकी तलवार किसी भी ख़तरे से लड़ने के लिए तैयार थी।

लेकिन अब कोई बड़ा ख़तरा बचा नहीं था। मक़सूद ने असुर के मृत शरीर की तरफ़ देखा, वो लम्बा-चौड़ा असीरियाई सैनिक, जिसे अभी-अभी करीम ने मारा था। मक़सूद ने उसकी लाश पर थूक दिया।

इस कमीने ने मुझे मार ही डाला था।

वो धीरे-धीरे उठा, और करीम का सहारा लेने से हाथ हिलाकर मना कर दिया। फिर उसने वहाँ से कुछ मीटर आगे पड़ी बुरी तरह से घायल एक आकृति को देखा। महमूद गज़नवी का छोटा बेटा मोहम्मद ज़मीन पर औंधा पड़ा था, उसके शरीर पर कई जगह से ख़ून बह रहा था। जब वो नीचे गिर रहा था, मक़सूद और उसके सैनिक उसे अपनी गिरफ्त में लेने दौड़े थे, जबकि मोहम्मद के ख़ास पहरेदारों ने उसके बचाव के लिए एक भयानक, आख़िरी कोशिश की थी। असुर, जिसे करीम ने अभी-अभी ख़त्म किया था, मोहम्मद के बचपन से ही उसका निजी अंगरक्षक, साथी और रक्षक था। उसकी मौत के साथ ही, मोहम्मद अपनी ज़िन्दगी में पहली बार बिल्कुल अकेला रह गया था।

मक़सूद ने अपने गीले बालों में उँगलियाँ फिराईं। उसने जानबूझकर ऐसा करते हुए थोड़ा समय बिता दिया, ताकि अपने सामने पड़े हुए आदमी की फ़िक्र बढ़ाई जा सके।

जब मक़सूद की परछाईं उसके शरीर पर पड़ी, मोहम्मद ने अपने पैरों पर उठने की कोशिश की। वो अपने दोनों हाथों और दोनों पैरों पर तो किसी तरह खड़ा हो गया, लेकिन उसके थके हुए शरीर ने इससे ऊपर उठने से इनकार कर दिया।

मक़सूद ने उसकी पीठ धीरे से, क़रीब-क़रीब कोमलता से, थपथपाई। 'युद्ध ख़त्म हो चुका है, भाई,' उसने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा। फिर उसने क्रूरता से मोहम्मद की पसली में घुटने से ठोकर मार दी।

मोहम्मद दर्द से चीख़ा और फिर से ज़मीन पर गिर गया, जहाँ वो पूरी तरह से थका-माँदा पड़ा रहा। 'अल्लाह के लिए, मुझे मार डालो...इसे ख़त्म कर दो...'

मक़सूद ने इनकार में सिर हिलाया। 'तुम्हारा भाई फैसला करेगा कि तुम्हारा क्या करना है। लेकिन मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि तुम्हारे साथ जल्द मौत जैसी रहमदिली नहीं होगी।' वो अपने कुछ सैनिकों की तरफ़ मुड़ा जो उनके चारों तरफ़ जमा हो गए थे। 'उसे बांध दो। उसे सबसे अलग रखना और अच्छी तरह पहरेदारी करना।'

‘मक़सूद, मेरे भाई शाहिद ने तुम्हारे सामने जो भी प्रस्ताव रखा है, मैं उसका दोगुना दूँगा!’ मोहम्मद चीख़ा, हताशा ने एकाएक उसमें ताक़त भर दी थी। ‘बस मुझे जाने दो!’

मक़सूद मोहम्मद के पास गया, नीचे की तरफ़ झुका और उसके चेहरे पर हाथ फिराया। उसका चचेरा भाई कांप गया और पीछे हटने की कोशिश करने लगा।

‘तुम्हें पता है कि तुम क्यों इतने घटिया नेता हो, भाई?’ मक़सूद ने पूछा। उसका लहजा ठंडा और क्रूर था, मानो कि वो इस घटिया आदमी से बात करने तक से नफ़रत करता हो। ‘क्योंकि तुम्हें आदमियों और उनके मकसदों की समझ नहीं है। अगर तुम सच में मुझे समझते, तो तुम जानते कि मेरी वफादारी बिकाऊ नहीं है। तुम्हारे अन्दर तुम्हारे महान पिता जैसा कुछ नहीं है।’

मक़सूद ने अपने आदमियों को संकेत किया। वो मोहम्मद को उसके पैरों से घसीटते हुए खींचकर ले जाने लगे।

फिर मक़सूद करीम की ओर मुड़ा। उसकी आँखों में गर्मजोशी और मुहब्बत थी। उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान थी। उसने कोमल और प्यार भरे लहजे में कहा; वो इस वक़्त बिल्कुल अलग आदमी लग रहा था। ‘तो, अब तक तुमने कितनी बार मेरी ज़िन्दगी बचाई है?’

करीम मुस्कुराया और उसने मक़सूद को गले से लगा लिया। ‘मेरे लिए ये सही नहीं है कि मैं अपने ही दिल को बचाने की गिनती करता रहूँ।’

मक़सूद मुस्कुराया और करीम के चेहरे को प्यार से सहला दिया।

मक़सूद ने पर्दे हटाए और तम्बू में घुस गया, जहाँ करीम उसका इन्तज़ार कर रहा था।

अभी मोहम्मद को बन्दी बनाए एक ही दिन बीता था, जिसने तुर्कों के बीच लम्बे समय से चल रहे गृह युद्ध को, प्रभावी रुप से समाप्त कर दिया था। वो उस बन्दी के साथ गज़नी की वापसी के रास्ते में थे। अब ये मोहम्मद के बड़े भाई और गज़नी की राजगद्दी के असली वारिस शाहिद पर था कि वो मोहम्मद का क्या इंसाफ़ करता है।

मक़सूद ने अपनी फौज को रात भर के लिए डेरा डालने को कहा था। वो गज़नी का अपना सफ़र अगली सुबह दोबारा शुरू करने वाले थे।

‘कैसे हो तुम?’ करीम ने मक़सूद से मुस्कुराते हुए पूछा, और साथ ही मक़सूद के एक नौकर को इशारा किया, जो तुरन्त ही गुनगुने पानी से भरी एक बाल्टी ले आया।

मक़सूद ने बाल्टी में अपना सिर डुबोया और उसी स्थिति में थोड़ी देर रहा। फिर उसने जब अपना सिर बाहर निकाला तो उसके बाल और दाढ़ी भीगे हुए थे। फिर मज़ाकिया अन्दाज़ में, उसने अपना सिर ज़ोर से हिलाया जिससे पानी के छींटे

उड़कर करीम पर जाने लगे। वो ग़ुलाम अपने महबूब को देखकर प्यार से मुस्कुराया, लेकिन कहा कुछ नहीं।

मक़सूद ने नौकर को बाहर जाने को कह दिया। वो दोनों अब अकेले थे।

'तुम कितने समय से सल्तनत के ग़ुलाम हो?' मक़सूद ने पूछा।

करीम ने अपने कंधे उचका दिए। 'सच पूछें तो मुझे अब याद नहीं है।'

मक़सूद करीम के पास गया और प्यार से उसका चेहरा सहला दिया। 'मैं बादशाह शाहिद से कुछ भी माँग सकता हूँ, क्योंकि मैंने उन्हें सल्तनत सौंप दी है। मैं तुम्हारी आज़ादी माँग लूँगा।'

करीम मुस्कुराया, थोड़ा और क़रीब आया और मक़सूद को हल्के से चूम लिया। 'लेकिन भले ही सल्तनत मुझे आज़ाद कर दे, मैं हमेशा *तुम्हारा* ग़ुलाम रहूँगा।'

मक़सूद ने भी मुस्कुराकर उसे वापस चूम लिया। वो दोनों एक-दूसरे को लम्बे समय तक थामे रहे। दोनों को एक-दूसरे से ताक़त और मुहब्बत मिल रही थी।

'और मैं एक दूसरी चीज़ के लिए भी सुलतान से पूछूँगा,' मक़सूद ने हँसकर कहा और करीम की पीठ थपथपा दी।

करीम पीछे हट गया। उसकी ख़ुशमिज़ाजी अचानक काफ़ूर हो गई। वो फ़िक्रमन्द दिखने लगा।

मक़सूद के कंधे ढीले पड़ गए। वो जानता था कि ये दिन आएगा जब गृह युद्ध ख़त्म होगा। वो जानता था कि उसे ये काम करना है। लेकिन वो करीम को दुखी नहीं देखना चाहता था। 'करीम, मेरी जान, मेरी बात ध्यान से सुनो। भारत—'

'मक़सूद, कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि तुम इस बात की परवाह भी नहीं करते कि मैं क्या चाहता हूँ,' करीम ने उसे बीच में टोक दिया।

'ऐसी बात नहीं है, मेरी जान। लेकिन तुम जानते हो कि मुझे—'

'नहीं, तुम्हें करने की ज़रुरत नहीं है। सुलतान महमूद के लिए तुम्हारी क़सम का अब कोई मतलब नहीं है। अब सुलतान को मरे हुए कई साल बीत चुके हैं।'

'करीम...'

'तुमने गज़नी के लिए काफ़ी किया है। तुमने सल्तनत के लिए काफ़ी किया है। अब ये सब भूल जाओ और यहाँ से दूर चलो। सिर्फ तुम और मैं। भारत को भूल जाओ। उस ज़मीन पर जीत हासिल करने की भूल जाओ।'

'मैं ऐसा नहीं कर सकता...'

'क्यों नहीं? मैंने तुम्हें पहले भी कहा है। उस क़सम का अब कोई मतलब नहीं है।'

'ये बात सुलतान महमूद के लिए मेरी क़सम की नहीं है।'

'फिर तुम भारत को क्यों नहीं भूल सकते?'

'क्योंकि मैं नहीं भूल सकता!'

'क्यों? तुम्हें मुझे जवाब देना होगा!'

'क्योंकि मैं यह चाहता हूँ! मैं उस ज़मीन पर राज करना चाहता हूँ! मैं उन लोगों पर राज करना चाहता हूँ!'

करीम ने गहरी सांस ली। उसने अपनी आँखें मूँदीं और अपना सिर हिलाया। दुनिया के सबसे समृद्ध देश, भारत की सम्पत्ति ने उसकी मुहब्बत को बहका दिया था।

करीम ने मक़सूद के हाथ को थामकर नरम लहजे में कहा, 'मेरी बात ध्यान से सुनो मेरी जान, दौलत का कोई मतलब नहीं है। क्या हमारे अपने महान इमाम ने यह सलाह नहीं दी थी कि हमें दौलत को अपने पैरों की धूल समझना चाहिए। क्योंकि जब धूल तुम्हारे सिर पर चढ़ आती है तो वो तुम्हारी क़ब्र बन जाती है।'

मक़सूद की आँखें पत्थर की तरह सख्त हो गईं। 'मैं वहाँ जा रहा हूँ, करीम। मैं भारत को जीतने जा रहा हूँ। और जब मैं उस पर राज करूँगा तो तुम मेरे बगल में बैठोगे? क्या ये बात साफ़ है?'

करीम ख़ामोश रहा। उसके चेहरे पर दुख और उदासी के भाव थे। यह उदासी इस बात की थी कि वो उसे बचा नहीं सकता जिससे वो मुहब्बत करता है।

'क्या ये बात साफ़ है?'

करीम ने हामी भरी। *हाँ।*

'खुशामदीद, महान ख्वाजा हसन,' मक़सूद ने अपना सिर थोड़ा सा झुकाते हुए गज़नी के वज़ीर-ए-आज़म से कहा। 'आराम से तशरीफ रखिए।'

मक़सूद जानता था कि उसे गज़नी के ईरानी वज़ीर-ए-आज़म के लिए आदर दिखाना होगा। दुबले-पतले और हमेशा पैसे की बात सोचने वाले ख्वाजा हसन जैसी शख्सियत फौजी मक़सूद के लिए मज़ाक़ का पात्र थी। लेकिन हसन ने अपने को बचाए रखा था। वो कई सालों तक सुलतान महमूद का वज़ीर-ए-आज़म था। और अब उसने चालाकी से अपने आपको नए सुलतान, शाहिद के ख़ास आदमियों में शामिल कर लिया था।

हसन मुस्कुराया और बैठ गया। ये मक़सूद का निजी महल था। वो अपने माँ-बाप और परिवार के दूसरे सदस्यों से अलग रहता था।

हसन ने करीम की तरफ़ देखा, जो वहाँ से थोड़ी दूर खड़ा था। 'तुम कैसे हो, करीम?'

करीम ने नीचे झुककर वज़ीर-ए-आज़म के लिए आदर दिखाया, और पारम्परिक ईरानी शैली में अपनी दाहिनी हथेली को अपने ललाट तक ले जाकर उसका अभिवादन किया। 'मैं अच्छा हूँ, महान वज़ीर-ए-आज़म।'

करीम के इस तरह ईरानी तहज़ीब के मुताबिक आदर दिखाने पर हसन प्रभावित था। ऐसा आदर शासक वर्ग, ना तो तुर्क और ना ही अरब, कभी नहीं दिखाते थे। वज़ीर-ए-आज़म मक़सूद की तरफ़ फिर से मुड़ा। 'सुलतान तुमसे ख़ुश हैं, सालार मक़सूद। मैं यहाँ अपने साथ उनकी तरफ़ से कई क़ीमती तोहफे लेकर आया हूँ। उन्होंने तुम्हें ये बताने को भी कहा है कि उनका प्रस्ताव अभी भी क़ायम

है। तुम अपनी पसन्द के किसी भी सूबे के हाकिम बन सकते हो। जो तुम चाहो, वो माँग सकते हो। तुम्हें किसी भी चीज़ के लिए मना नहीं किया जाएगा।'

मक़सूद मुस्कुराया। 'मैंने केवल दो चीज़ें माँगी हैं। नेक सुलतान जानते हैं कि वो क्या हैं।'

हसन मुस्कुराया। कुलीन और प्रभावशाली तरीक़े से, उसने मक़सूद को एक बन्द खत सौंपा। 'तुम्हारे...दोस्त...की आज़ादी का इश्तिहार।'

मक़सूद ने खत लिया और उसे खोलने के पहले करीम की तरफ़ देखा। उसने खत को खोला और उसे दो बार पढ़ा, हर अगले शब्द के साथ उसकी मुस्कुराहट बढ़ती जा रही थी।

उसने फिर से करीम की तरफ़ देखा और मुस्कुराया। गर्मजोशी और मुहब्बत भरी मुस्कान। फिर वो हसन की ओर मुड़ा। 'क्या कुछ और भी है?'

हसन कहीं ज़्यादा मुस्कुराते हुए बोला, 'हाँ, कुछ और भी है।'

वज़ीर-ए-आज़म ने अपने थैले में से एक और खत बाहर निकाला। इस बार तरीक़ा पहले से भी ज़्यादा प्रभावशाली था।

सालार मक़सूद इस खत पर ऐसे झपटा जैसे कोई बच्चा अपनी मनपसन्द मिठाई पर झपटता है। उसने तुरन्त उसे खोला और पढ़ना शुरु किया, बेताबी से वो लच्छेदार भाषा और आडम्बरपूर्ण शब्दों को छोड़ता रहा जब तक कि वो सबसे अहम हिस्से तक ना पहुँचा।

'गज़नी के साम्राज्य के प्रति आपकी साहसपूर्ण सेवा और अटल स्वामिभक्ति के सम्मान में, महामहिम सुलतान, अपनी असीमित उदारता और कृपा के साथ, आपको राजसी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। आपको अपने नए पद पर तुरन्त प्रभाव से आसीन होने का, और भारत पर आक्रमण की तैयारियाँ शुरु करने का निर्देश दिया जाता है। इस उद्देश्य के लिए, आपको सेना के सभी आदमियों और संसाधनों को जमा करने का अधिकार दिया जाता है, केवल उन सैन्य दलों को छोड़कर, जो राज्य की रक्षा के लिए आवश्यक हैं, और साथ ही भारत को सच्ची आस्था के उजाले में लाने, और महामहिम, सुलतान अमीर-ए-शाहिद के उदार और न्यायप्रिय शासन के अधीन लाने के लिए भारत की तरफ़ बढ़ने का अधिकार दिया जाता है।'

खत पर सुलतान के हस्ताक्षर थे, और सेबुक्तगिन गज़नवी साम्राज्य की मुहर लगी थी।

मक़सूद के चेहरे पर विजयी मुस्कान आ गई। ये आक्रमण इतने बड़े पैमाने पर होगा जैसा महमूद ने भी कभी नहीं किया था। मरहूम सुलतान ने तो केवल हमला किया था और एक बार मक़सद पूरा होने के बाद वो वापस लौट आए थे। लेकिन मक़सूद का मक़सद भारत पर जीत हासिल करना और राज करना था। वो एक बार फिर करीम की तरफ़ मुड़ा, उसका जोश और ख़ुशी उसके चेहरे पर साफ़ झलक रही थी। दूसरी तरफ़, करीम अपने मन के असली जज़्बातों को छिपाने में कामयाब रहा था।

‘मुबारक हो, महान सेनापति!’ करीम ने ज़ोर से कहा। ‘भारत जल्दी ही गज़नी के पैरों में होगा।’

मक़सूद मुस्कुराया। वो वापस हसन की ओर मुड़ा, खत को ऊपर उठाया और कहा, ‘इस नेक काम के लिए महान सुलतान को मेरा शुक्रिया पहुँचाइयेगा। मैं जल्दी ही भारत को जीतकर उनकी सल्तनत में शामिल कर दूँगा।’

‘सुलतान को भी इससे कम की उम्मीद नहीं है,’ हसन ने मुस्कुराते हुए कहा। वो आगे बोलने के पहले कुछ हिचकिचाता हुआ लग रहा था। ‘क्या मैं तुमसे कुछ पूछ सकता हूँ?’

‘बेशक, वज़ीर-ए-आज़म।’

‘तुम आसानी से गज़नी में सबसे ताक़तवर लोगों में से एक की तरह अय्याशी की ज़िन्दगी बिता सकते थे। तुमने एक और मुश्किल मुहिम पर जाने को लेकर इतनी ज़िद क्यों ठान रखी है?’

मक़सूद ने सावधानी से खत को वापस मोड़ा, फिर हसन की ओर ऊपर देखा। ‘मैंने अपने मामा, मरहूम सुलतान महमूद से एक वादा किया था। मैंने क़सम ली थी कि मैं पूरे भारत पर जीत हासिल करूँगा और काफिरों के उस इलाक़े को मुसलमानों के देश में बदल दूँगा। मैंने ये क़सम तब ली थी जब उन्होंने मुझे बताया था कि केवल मैं ही उनके ख्वाब को पूरा करने की काबिलियत रखता हूँ।’

‘हाँ। और महान सुलतान शाहिद का भी ख्वाब यही है।’

बेशक, हसन ये नहीं जानता था कि मक़सूद की नीयत भारत पर सिर्फ जीत हासिल करने और उसे मुसलमान देश बनाने की नहीं, बल्कि उस पर राज करने की भी थी; कम से कम उत्तर भारत पर। और उसके नियंत्रण में उस इलाक़े की बताई जाने वाली दौलत और बड़े पैमाने पर संसाधनों के साथ, वो दुनिया के सबसे ताक़तवर लोगों में एक होगा, पक्के तौर पर सुलतान शाहिद से ज़्यादा ताक़तवर। शायद चीन के सोंग सम्राट के बराबर ताक़तवर। या, अगर क़िस्मत साथ दे तो दुनिया के सबसे ताक़तवर आदमी से भी ज़्यादा मज़बूत: शक्तिशाली चोल सम्राट राजेन्द्र, जो पूरे दक्षिण और पूर्वी भारत के साथ-साथ दक्षिण-पूर्व एशिया के ज़्यादातर इलाक़ों पर शासन करता था।

हसन ने सिर झुकाया और चला गया। जैसे ही वो बाहर गया, मक़सूद करीम की तरफ़ मुड़ा। ‘इसी वक़्त अफ़सरों को बैठक के लिए बुलाओ। हमें बहुत सारी तैयारियाँ करनी हैं। हम भारत वापस जा रहे हैं। और तुम एक पलटन की अगुवाई करोगे, सेनापति।’

अध्याय 24

पत्र समाप्त करते ही सम्राट राजेन्द्र चोल की भौंहें चढ़ गईं और सन्देशवाहक की ओर घूरकर देखा। काशीनाथ ने अपना चेहरा भावहीन बना रखा था, वो अपनी घबराहट छुपाने की भरपूर कोशिश कर रहे थे।

लेकिन काशीनाथ का भय समझा जा सकता था। आख़िर ऐसा रोज़ तो होता नहीं है, जब कोई दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति से मिल रहा हो। और अगर वो उत्तर में तुर्क सेना से लोहा लेना चाहते हैं तो उन्हें सम्राट की मदद लेनी ही होगी। समझौता-वार्ता बेहद कठिन थी, क्योंकि काशीनाथ सालार मक़सूद के विरुद्ध मदद माँग रहे थे जो पहले ही तबाही मचाता हुआ उत्तर-पश्चिमी भारत में प्रवेश कर चुका था। काशीनाथ के पास सहायता के बदले ऐसा कुछ नहीं था जिसे वो सम्राट राजेन्द्र चोल को देने की पेशकश कर सके। ना धन, ना भूमि। ना अधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव।

सांवला, लम्बा, मज़बूत क़द काठी और साथ में घुमावदार मूँछें, सम्राट राजेन्द्र चोल भारत के कुछ गिने-चुने महान विजेताओं में एक था। उसकी विजय पताका अंडमान निकोबार द्वीप समूह, श्रीलंका और मालदीव तक फहरा रही थी। उसने मलेशिया और इंडोनेशिया पर आक्रमण कर उन्हें अपने नियंत्रण में ले लिया था। थाइलैंड और कम्बोडिया के राजा उसे भेंट-उपहार देकर उसकी अधीनता स्वीकार कर चुके थे। दक्षिण भारत में अपने पांव मज़बूती से जमाने के बाद उसने गंगा के मैदानों में अपनी विजय यात्रा आरम्भ की थी, और बंगाल और बिहार के पाल शासकों को उसने पराजित कर दिया था। उस ऐतिहासिक अभियान की याद में, जो इस शक्तिशाली राज्याधिपति के लिए बहुत भावनात्मक क्षण था, उसने गंगईकोंडा की पदवी धारण की थी। गंगईकोंडा, यानी ऐसा व्यक्ति जो पवित्र गंगा जल अपने साथ लेकर आया। यहाँ तक कि उसने अपनी नई राजधानी का भी निर्माण किया जिसका नाम रखा गया गंगईकोंडा चोलपुरम।

ऐसे व्यक्ति के आभामंडल का प्रभाव ना हो, ऐसा कठिन था।

राजेन्द्र ने काशीनाथ को घूरकर देखा, पसरा हुआ सन्नाटा उसे असहज कर रहा था।

काशीनाथ अभी भी खड़े थे, सम्मानपूर्वक नमस्ते की मुद्रा में हाथ जोड़कर। चुपचाप। उस महान व्यक्ति के निर्णय की प्रतीक्षा में।

दांव पर काफ़ी कुछ था।

आख़िरकार राजेन्द्र ने अपनी चुप्पी तोड़ी। उसकी कोमल लेकिन गहरी आवाज़ साफ़ सुनी जा सकती थी। 'मैं सीधे वास्तविक विषय पर आता हूँ। एक राजा वास्तव में मुझे अपने राज्य में मेरी सेना भेजने का निमंत्रण दे रहा है?'

'महाआर्य,' काशीनाथ ने अत्यन्त सम्मान के साथ राजेन्द्र चोल को सम्बोधित किया, जो भारतवर्ष में उस समय सर्वश्रेष्ठ राजा था। 'मेरे महाराज सुहेलदेव आपसे केवल तुर्कों के विरुद्ध सहायता चाहते हैं।'

'मुझे उसके राज्य पर क़ब्ज़ा करने से कौन रोक सकता है?' राजेन्द्र ने प्रश्न किया।

'महाराज सुहेलदेव आपको महान दृष्टि रखने वाले सम्राट के तौर पर मानते हैं। तुर्क किसी एक राज्य के लिए ख़तरा नहीं हैं बल्कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए ख़तरा हैं। वे एक के बाद एक राज्यों को जीतकर और उनके संसाधनों को लूटकर ज़्यादा शक्तिशाली होते जाएँगे। क्या यह समझदारी नहीं होगी कि उनके आक्रमणों को पहले ही रोक दिया जाए?'

राजेन्द्र ने अपने होंठ सिकोड़े और एक बार फिर काशीनाथ पर विचारपूर्वक दृष्टि दौड़ाई।

'महान सम्राट,' काशीनाथ ने अपनी बात जारी रखी। 'क्या यह श्रेष्ठकर नहीं होगा कि आपके राज्य की सीमाओं के निकट विदेशी बर्बर तुर्कों की जगह आपके अपने भारतीय ही रहें?'

राजेन्द्र मुस्कुराया। 'तो तुम सोचते हो कि मैं इन मध्य एशियाई बर्बरों से अपने राज्य की रक्षा करने में असमर्थ हूँ?'

'आप बिल्कुल अपने राज्य की रक्षा कर सकते हैं, महाराज,' काशीनाथ ने विनम्रता से कहा। 'आपके पास हमारी सहायता करने का यह दूसरा कारण है।'

राजेन्द्र चोल की भृकुटियाँ थोड़ी चढ़ गईं, साफ़ तौर पर उसे काशीनाथ की बात समझ नहीं आई थी।

काशीनाथ ने स्पष्ट किया, 'उत्तर भारत आपके साम्राज्य का हिस्सा भले ना हो महाराज किन्तु ये आपके देश का हिस्सा तो है। उत्तर में हिमालय मस्तक है, पश्चिमी और पूर्वी सागर भुजाएँ हैं और हिन्द महासागर चरण हैं। भारत माता हम सबकी माता हैं। हम विदेशी आक्रान्ताओं को अपनी माँ की मर्यादा भंग नहीं करने दे सकते।'

राजेन्द्र चोल ख़ामोश रहा, परन्तु उसके चेहरे के भाव साफ़ पढ़े जा सकते थे।

काशीनाथ को पता था कि वह भगवान शिव का कट्टर भक्त था। 'आपको याद है इन बर्बरों ने सोमनाथ के महान शिव मन्दिर में क्या किया था, स्वामी? महाराज सुहेलदेव भी भगवान शिव के भक्त हैं। उनके ज्येष्ठ भ्राता ने सोमनाथजी मन्दिर की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया था।'

यकायक राजेन्द्र ने अपनी सांस रोक ली। काशीनाथ ने देखा कि शक्तिशाली राजेन्द्र ने मुट्ठियाँ भींच ली हैं।

'उनके बड़े भाई का क्या नाम था?' राजेन्द्र ने मृदु स्वर में प्रश्न किया।

'राजकुमार मल्लदेव, महाराज।'

राजेन्द्र चोल ख़ामोश रहा। ऊपर से उदासीन।

अपने मन में, उस महान चोल शासक ने भगवान शिव की प्रार्थना की। देवों के देव, महादेव से विनती की कि वो वीर मल्लदेव की आत्मा को आशीर्वाद दें।

आख़िरकार उसने सहमति से सिर हिलाया, 'काशीनाथ, तुम्हें कल उत्तर मिल जाएगा।'

काशीनाथ ने सम्राट के सम्मान में आदर से सिर झुकाया और ज़ोर से बोले, 'जय माँ भारती।'

विदा लेने के इस अपरम्परागत अभिवादन से चकित होकर राजेन्द्र चोल ने काशीनाथ की ओर देखा। दूत के विदा लेने का ये तरीक़ा बिल्कुल अलग था। अपने राजा की प्रशंसा में दूत ने कुछ नहीं कहा था। ईश्वर की प्रशंसा में कुछ नहीं कहा था।

प्रशंसा की थी तो केवल मातृभूमि के लिए, केवल भारत के लिए।

शब्द प्राकृत में थे जो भारत के उस भूभाग में बोली जाती थी जहाँ सुहेलदेव का निवास था। लेकिन सम्राट को उन शब्दों का अर्थ पता था।

राजेन्द्र चोल मुस्कुराया और उसने उत्तर दिया '*भारथा थाई वाझगा*'।

ये शब्द राजेन्द्र चोल की अपनी भाषा तमिल में थे।

लेकिन काशीनाथ को उनका अर्थ मालूम था। चोलपुरम की यात्रा के दौरान वह थोड़ी बहुत तमिल सीख चुके थे। उन्होंने मुस्कुराकर एक बार फिर अपना सिर झुकाया। वह समझ चुके थे कि कल क्या उत्तर मिलने वाला है।

भारथा थाई वाझगा। भारत माता की जय।

थोड़ी देर बाद, चार व्यक्ति अल्प सज्जित लेकिन भव्य कक्ष में गुप्त बैठक कर रहे थे। ये राजेन्द्र चोल का निजी कक्ष था। बैठक में महान सम्राट का सबसे बड़ा पुत्र राजकुमार राजाधिराज, प्रधान सेनापति कीर्तिवर्मन, और गुप्तचर सेवा एवं विशेष सेना के प्रधान नरसिम्हन उपस्थित थे।

बिना किसी भूमिका के राजेन्द्र चोल ने बोलना शुरु किया 'हमें इन मामलों में क्यों शामिल होना चाहिए? हमें जो करना था वह पहले ही कर चुके हैं। पृथ्वी का सबसे नीच व्यक्ति महमूद मारा जा चुका है, सोमनाथ महादेव के अपमान का दंड दिया जा चुका है। उत्तर भारतीयों और सालार मक़सूद की लड़ाई में हमारा कुछ भी दांव पर नहीं है। और हम उन उत्तर भारतीयों के लिए क्यों लड़ें जिन्होंने अहिंसा को अपनी ज़िद बना लिया है? जो भगवान बुद्ध को मानते हैं, हम हिन्दुओं को हिंसक एवं कट्टर बताकर नीचा दिखाते हैं। उत्तर के हिन्दू भी बौद्धों के प्रभाव में हैं।'

‘आपकी बात उचित हो सकती है, अप्पा,’ राजाधिराज ने विनम्रता-पूर्वक अपने पिता से कहा। ‘सम्भव है कि उत्तर के अहिंसक उदारवादी अपनी रक्षा करने में असमर्थ हों। सम्भव है अहिंसक उदारवादी पाखंडी हों और हमारी उपेक्षा करते हों। लेकिन, फिर भी वो *हमारे* अहिंसक उदारवादी हैं। अगर कोई बर्बर विदेशी उन पर आक्रमण करेगा तो हमें उनकी रक्षा के लिए आगे आना होगा। और शायद उन अहिंसकों को इससे हम आक्रामक शैव हिन्दुओं की भारतीय संस्कृति में महत्व का भी पता चलेगा।’

राजेन्द्र चोल ज़ोर से हँसा। ‘हमें उनकी स्वीकार्यता की ज़रूरत नहीं, पुत्र।’

नरसिम्हन ने सिर झुकाया और बोला, ‘स्वामी, मैं पूरे सम्मान के साथ कह रहा हूँ कि ये मेरा कर्तव्य है कि सभी छोटे-बड़े राजाओं की पूरी जानकारी एकत्र करूँ, मैंने महाराज सुहेलदेव के बारे में सूचनाएँ एकत्र की हैं। वह उनमें सबसे अलग है, उसने कई साल तुर्कों के विरुद्ध गोरिल्ला युद्ध किया है। वह वास्तव में सच्चा योद्धा है, वह विजय पाने के लिए युद्ध करता है। ’

‘तो हमें उसकी सहायता करनी चाहिए,’ राजाधिराज ने तुरन्त कहा। ‘हमें उन घृणित तुर्कों को दुम दबाकर अपने देश भागने को विवश कर देना चाहिए।’

राजेन्द्र ने कीर्तिवर्मन की ओर देखा। ‘तुम क्या कहते हो?’

कीर्तिवर्मन ने विचारपूर्वक अपने जबड़े सहलाए। ‘महान सम्राट, राजनीतिक विषयों पर निर्णय आप करें, मेरी चिन्ता तो साधन एकत्र करने की है। अगर आप अभी तुरन्त आज्ञा भी दें, तो हमें सेना तैयार करने में थोड़ा समय लगेगा, फिर हमें श्रावस्ती की ओर कूच करना होगा। शायद हम वहाँ देर से ही पहुँचेंगे, क्योंकि सामन्त काशीनाथ ने कहा है कि सालार मक़सूद भारतवर्ष की सीमाओं में प्रवेश कर चुका है।’

बैठक में कुछ देर शान्ति छाई रही। तीनों व्यक्ति धैर्यपूर्वक राजेन्द्र के बोलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लम्बे समय तक राजेन्द्र के साथ काम करने की वजह से वो जानते थे कि सम्राट यहाँ बैठक की शुरुआत में ही अपना मन बना चुके हैं। बस वो निर्णय सुनाने से पूर्व सबका मत जानना चाहते हैं।

वो सम्राट के निर्णय को भी जानते थे। वे जानते थे कि राजेन्द्र चोल ने गज़नी के महमूद का क्या हाल किया था। वे जानते थे कि ये उन्होंने पवित्र सोमनाथ मन्दिर की प्रतिमा के लिए किया था। वे जानते थे कि सम्राट फिर से तुर्कों को भारत भूमि पर नहीं आने देंगे। भले ही ऐसा करने में उन्हें कोई व्यक्तिगत लाभ ना हो।

आख़िरकार राजेन्द्र ने चुप्पी तोड़ी। ‘तुर्क भारत के लिए दीर्घकालिक ख़तरा हैं। जब हमने महमूद का वध किया और गज़नी में गृहयुद्ध फूट पड़ा, मैंने सोचा समस्या का समाधान हो गया। लेकिन अब लगता है कि भेड़ियों के बच्चों से भी सावधान रहना चाहिए।’ महान चोल सम्राट आगे की ओर झुका, सभी व्यक्ति उसके निकट आ गए। वो बुदबुदाया, ‘तो हमारी योजना ये होगी।’

अध्याय 25

जैसे ही मक़सूद घोड़े से उतरा अजीतपाल उसके सम्मान में झुक गया। 'हुज़ूर, कन्नौज में आपका स्वागत हमारे लिए सम्मान की बात है।'

मक़सूद ने बेरुखी से सिर हिलाया और चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। 'राजा अजीतपाल, आपको मेरे इस्तकबाल के लिए राज्य की सीमा तक आने की ज़हमत नहीं उठानी चाहिए थी, आप मेरा राजधानी में इन्तज़ार कर सकते थे।'

मक़सूद ने जानबूझकर अजीतपाल को सम्राट की जगह राजा कहा जबकि वो जानता था कि उसका भारतीय सहयोगी क्या कहलाना पसन्द करता है।

'बिल्कुल नहीं, हुज़ूर,' चाटुकारिता पूर्वक अजीतपाल बोला। 'अपने साम्राज्य में आपको व्यक्तिगत तौर पर लाना मेरी ख़ुशक़िस्मती है, कृपया पधारिए, जलपान तैयार है।'

अजीतपाल मक़सूद को आलीशान तम्बू की ओर लेकर चला जहाँ विशाल मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजन और मदिरा रखी गई थी। 'उत्तर भारत का लज़ीज़ खाना और शराब आपके लिए प्रस्तुत है, हुज़ूर।'

मक़सूद ने खाने की मेज़ पर नाक सिकोड़कर कर कहा, 'शराब का मन नहीं है राजा अजीतपाल। जहाँ तक खाने का सवाल है, मुझे जो मांस पसन्द है शायद ही यहाँ हो।' ऐसा कहकर वह चुप हो गया और एक तरफ़ गर्दन फिराकर उसने अजीतपाल को घूरा। 'या बनवाया है तुमने?'

अजीतपाल ने घबराहट में थूक निगला, उसके चेहरे से पसीने की बूँदें छलछला आईं। 'हुज़ूर मुर्गा, बकरा, मोर, तीतर, ऊँट...क़रीब-क़रीब हर तरह का मांस पका है।'

'क़रीब-क़रीब,' मक़सूद इरादतन ज़ोर देकर बोला। वह लगातार अजीतपाल को नज़र गड़ाकर देख रहा था, घूर रहा था और उसकी छटपटाहट महसूस कर रहा था। थोड़ी देर के लिए उसने सोचा कि वो अजीतपाल को गौमांस परोसने को कहे। तभी उसने अपनी आँख के किनारे से देखा कि करीम की त्योरियाँ चढ़ी हुई हैं और वो मना कर रहा है।

'ठीक है, मैं पानी और इन व्यंजनों में से ही कुछ से काम चला लूँगा।'

अजीतपाल ने राहत से अपने कंधे ज़मीन तक झुका लिए। मक़सूद ने अपनी ख़ुशी छिपाई और फिर अजीतपाल के मंत्री वृषभ को देख भौंहें चढ़ाईं। वह एक सेवक से फुसफुसाकर बात कर रहा था।

'तुम्हें कोई तक़लीफ़ है?' उसने मंत्री से प्रश्न किया।

वृषभ तुरन्त हाथ जोड़कर झुका। 'मुझे माफ करें हुज़ूर, अगर मेरी कोई बात आपको पसन्द ना आई हो। मैं उसे कुछ आदेश दे रहा था। निकट के नगर में आपके सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया है।'

मक़सूद गुर्राया। 'मुझे डर है जब तक हम जंग के मैदान में होंगे, मेरे सिपाही आप लोगों की मेहमाननवाज़ी में खा-खाकर इतने मोटे हो चुके होंगे कि जंग के लायक़ नहीं बचेंगे।'

'कन्नौज की सेना आपके कंधे से कंधा मिलाकर साथ लड़ेगी, हुज़ूर।' अजीतपाल ने कहा। 'मेरा खानदान दोस्तों के साथ खड़े रहने में हमेशा गर्व महसूस करता है।'

'हाँ, मैं तुम्हारे खानदान की शानदार रवायत अच्छी तरह जानता हूँ और किस तरह तुम इसे निभा रहे हो, उसका भी पता है मुझे।' मक़सूद ने रूखेपन से जवाब दिया। उसे ताज्जुब हुआ कि अजीतपाल इस छिपे व्यंग्य को समझने की जगह उस पर ख़ुश हो रहा है।

एक बार फिर अपनी प्रसन्नता छिपाते हुए मक़सूद ने अजीतपाल की ओर इशारा किया, 'आइए महाराज, अब आपके रसोइए ने जो बनाया है उसके साथ कुछ इंसाफ़ किया जाए। कृपया मेरे साथ भोजन करने की इज़्ज़त बख़्शें।' उसने एक थाली उठाई। उसने देखा कि थाली चाँदी की थी और उसमें वो व्यंजनों का ढेर लगाने लगा। 'मैं चाहता हूँ कि पहला कौर आप खाएँ।' मक़सूद ने अपने हाथ से पहला कौर अजीतपाल की ओर बढ़ाया।

अगर खाने में ज़हर होगा तो मोटा मेंढ़क पहले मरेगा।

अजीतपाल सकुचाया। 'हुज़ूर, आपने मुझे बहुत ज़्यादा इज़्ज़त बख़्शी है।'

'कतई नहीं,' मक़सूद ने नरमी से कहा। 'मैं अपने प्यारे साथी के लिए इतना तो कर ही सकता हूँ।'

अजीतपाल ने वृषभ की ओर देखा, उसने सहमति से सिर हिलाया। बेमन से अजीतपाल ने मक़सूद के हाथों से कौर खाया, मानो वो उसका पालतू जानवर हो। अपनी आँखों की कोर से मक़सूद अजीतपाल के सलाहकारों के हाव-भाव ताड़ रहा था। उनके चेहरों पर शर्म और घृणा की छोटी सी लकीर तैरी और फिर तुरन्त ग़ायब हो गई। केवल वृषभ इससे बेपरवाह रहा।

वे नाराज़ हैं कि मेरे हाथों से भोजन कर उनका बहुमूल्य 'सम्राट' अपवित्र हो रहा है। एक म्लेच्छ बर्बर के हाथों से। खैर, उनके लिए बेहतर है कि वे अब इसकी आदत डाल लें। अब वो सम्राट नहीं है। अब वो मेरी कठपुतली है, मैं जो चाहूँगा उससे वो कराऊँगा।

कुछ घंटे बाद, मक़सूद और अजीतपाल एक साथ घोड़ों पर सवार होकर अच्छी तरह सजे-धजे हरसरन नगर के प्रवेश द्वार से गुज़र रहे थे। हरसरन कन्नौज राज्य में प्रवेश करने के बाद पहला बड़ा नगर था।

सारे रास्ते पर फूल बिखरे हुए थे। नगरवासियों को, जिन रास्तों से दोनों गुज़र रहे थे, उसके दोनों तरफ़ खड़े होकर जय-जयकार का आदेश सुनाया गया था। उनके पीछे-पीछे काफ़ी बड़ी पैदल सेना और फिर घुड़सवारों की टुकड़ी चल रही थी। एहतियातन और तुर्कों की माँग पर अजीतपाल ने हरसरन के नागरिकों के हथियार ज़ब्त करने का आदेश जारी कर दिया था। कुछ हफ्ते बाद जब तुर्क चले जाएँगे, उनके ये हथियार लौटा दिए जाने थे।

'हरसरन में आपका स्वागत है, हुज़ूर,' अजीतपाल बोला। 'जैसा कि इसके नाम से साफ़ है, जो भी यहाँ आता है ये नगर बिना उसका वंश, नस्ल और राष्ट्रीयता देखे उसे अपने यहाँ शरण देता है। ये एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है और यहाँ अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग पीढ़ियों से शान्तिपूर्वक रहते आए हैं।'

मक़सूद ने उत्तर देने के लिए मुँह खोला ही था कि कीचड़ का एक ढेला अजीतपाल के निकट से उड़ता निकल गया। भौंचक्का होकर उसने घोड़े की लगाम को ज़ोर से खींचा। घोड़ा पिछली दोनों टांगों पर खड़ा हो गया और उसने क़रीब-क़रीब उसे गिरा ही दिया था। अजीतपाल ने घोड़े को क़ाबू में करने की भरसक कोशिश की। जब तक वो कामयाब होता उसके अंगरक्षकों ने उसके चारों तरफ़ घेरा बना लिया। उनमें से कुछ तेज़ी से भीड़ में घुस गए और उस व्यक्ति को पकड़कर बाहर खींच लाए जिसने कीचड़ फेंका था। वह मैला-कुचैला, बैसाखियों पर खड़ा लंगड़ा बूढ़ा आदमी था, लम्बे सफेद बाल उसकी गर्दन तक लटक रहे थे। उसकी नज़रों में जुनून साफ़ दिख रहा था।

अजीतपाल का चेहरा ज़र्द पड़ चुका था, वह ज़ोर से चीख़ा, 'अपने सम्राट का अपमान करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?'

'तू वो व्यक्ति है जिसने अपने वीर पिता की स्मृति का अपमान किया है, अजीतपाल!' लड़खड़ाते हुए वृद्ध चिल्लाया, 'मैं कन्नौज की सेना में सिपाही था। मैंने इस साम्राज्य के लिए लड़ते हुए अपनी टांग गंवा दी। मैंने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा जब कन्नौज का सम्राट विदेशी हमलावर के तलवे चाटेगा!'

भीड़ में सन्नाटा छा गया था। बूढ़ा व्यक्ति जो कह रहा था वास्तव में हरसरन का हर नागरिक अपने शासक के बारे में ऐसा ही सोचता था। लेकिन कोई ऐसी अवज्ञा करेगा किसी ने नहीं सोचा था।

बूढ़े ने सालार मक़सूद की ओर रुख किया। 'हमारा शासक कायर है। लेकिन हम आम कन्नौजवासियों में अभी भी आत्मसम्मान शेष है। हम किसी विदेशी लुटेरे

के सामने नहीं झुकने वाले!' उसने ज़ोर से खंखारकर मक़सूद की ओर थूका जो उसके पांव पर जाकर गिरा।

भीड़ में से फुसफुसाने की आवाज़ आने लगी और धीरे-धीरे आवाज़ें तेज़ होने लगीं। भीड़ में कई लोग सम्राट से नाराज़ थे लेकिन वे अतिथि के ऐसे अपमान को धर्म विरुद्ध मान रहे थे। भीड़ में से कुछ लोगों ने वृद्ध को अपनी ओर खींचना शुरू कर दिया और उसे शान्त हो जाने की सलाह दी।

मक़सूद, जो अभी तक एक शातिर मुस्कुराहट से अजीतपाल की बेचैनी को देख रहा था, अचानक इस अपमान से उसका चेहरा लाल हो गया। उसका हाथ अपनी तलवार पर पहुँच चुका था तभी उसे अपनी पीठ पर किसी का हाथ महसूस हुआ।

ये करीम था। तुर्की ग़ुलाम नरम आवाज़ में फुसफुसाया, 'इस नगर की हमें छावनी के तौर पर ज़रूरत है...बड़ा मक़सद याद रखो...मुझे निपटने दो इससे...'

बड़ी मुश्किल से मक़सूद ख़ुद पर क़ाबू रख सका।

इस बीच बूढ़ा व्यक्ति नागरिकों से जूझ रहा था। उसमें इस उम्र में ना जाने इतनी शक्ति कहाँ से आई थी। वह लगातार कन्नौज के आम नागरिकों की वीरता के बारे में चिल्लाकर बताए जा रहा था।

करीम अपने घोड़े से उतरा, बूढ़े सिपाही की ओर बढ़ा और हाथ बढ़ाकर उसके कंधे पर रख दिया। 'मेरे दोस्त, हम पहले दुश्मन थे, अब नहीं। आज गज़नी का महान साम्राज्य और कन्नौज का महान राज्य—'

'दूर हो जाओ मुझसे!' बूढ़ा सैनिक करीम को बीच में रोककर ग़ुस्से से चिल्लाया। उसने झटककर अपने को तुर्क से अलग किया। ऐसा करते वक़्त, बूढ़े सैनिक ने उसे पकड़े हुए हरसरन के नागरिकों को भी ज़ोर से धक्का दिया। उसके पांव लड़खड़ा गए, उसकी बैसाखी का सन्तुलन बिगड़ गया और उसका सिर करीम के चेहरे से टकरा गया। सिर की टक्कर इतनी तेज़ थी कि तुर्क की नाक और मुँह से ख़ून फूट पड़ा और उसके पांव डगमगा गए। फिर वह पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़ा, उसका सिर ज़मीन पर ज़ोर से टकराया। वह बेहोश हो चुका था।

मक़सूद का ग़ुस्सा फूट पड़ा। उसने अपनी तलवार निकाली और बूढ़े सैनिक पर लहराई। एक झटके में वृद्ध का सिर कटकर गिर गया। मक़सूद का ग़ुस्सा इतने पर ही शान्त नहीं हुआ। वह घोड़े से कूदा और सिर कटे वृद्ध के शरीर के उसने टुकड़े-टुकड़े कर डाले। चारों तरफ़ ख़ून की नदी बह चली।

आम लोग भय से चिल्लाने लगे। कुछ नागरिकों ने साहस बटोरा और मक़सूद की दरिन्दगी का विरोध शुरू कर दिया। गज़नी और कन्नौज की सेनाओं के सिपाहियों ने तुरन्त मक़सूद और अजीतपाल के चारों तरफ़ सुरक्षा घेरा बना लिया। हरसरन के नागरिकों को पीछे हटने का आदेश दिया गया।

लेकिन भीड़ ने ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। वो चिल्ला रहे थे कि पूर्व सैनिक को मारा नहीं जाना चाहिए था।

'महाराज, स्थिति अनियंत्रित होती दिख रही है,' वृषभ ने अजीतपाल से कहा। 'हुज़ूर मक़सूद को शान्त कराइए और कृपा करके यहाँ से निकल चलिए।'

घबराहट में अजीतपाल ने थूक निगला। लेकिन वो बिल्कुल जड़ हो चुका था। हिल भी नहीं रहा था।

मक़सूद अभी भी बूढ़े सैनिक के शरीर पर वार पर वार किए जा रहा था। उस पर पागलपन सवार हो चुका था।

तब तक पूरी भीड़ उत्तेजित हो चुकी थी। उसने नारेबाज़ी तेज़ कर दी और कन्नौज के सैनिकों के घेरे को धक्का देने लगी जो अपने ही नागरिकों पर आक्रमण करने को तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने हथियार तक नहीं निकाले थे। हालांकि गज़नी के सैनिकों ने अपनी तलवारें निकाल ली थीं। वे लोगों को मार डालने के लिए तड़प रहे थे, बस उन्हें अपने सेनापति के आदेश की प्रतीक्षा भर थी।

एक तुर्क सेनानायक मक़सूद की ओर बढ़ा, हिम्मत जुटाकर तेज़ी से बोला, 'हुज़ूर...'

मक़सूद अपने पागलपन से बाहर आया और चारों ओर देखकर हालात का जायज़ा लिया। उसने पल भर के लिए अपनी आँखें बन्द कीं और जब खोलीं तो वो शान्त हो चुका था। उसने सधी हुई आवाज़ में कहा, 'इस आदमी ने गज़नी के सेनापति पर हमला किया। इसे तो कई दिन तक तड़पा-तड़पाकर मारा जाना चाहिए था, लेकिन ये आसानी से छूट गया क्योंकि मैं अपना आपा खो बैठा था। हालांकि मुझे लगता है कि हरसरन के लोगों ने कोई सबक नहीं सीखा। मैं इन्हें ऐसा सबक सिखाऊँगा कि कन्नौज में उसे कोई कभी नहीं भूलेगा।' वह अपने अधिकारी की ओर मुड़ा और आदेश दिया। 'इस नगर के हर काफ़िर का घर बर्बाद कर दो। एक ईंट भी बची नहीं रहनी चाहिए। हर गैर-मज़हबी मर्द को मार डालो—जवान, बच्चा या शिशु। इनकी औरतों को ग़ुलाम बना लो और हमारे सिपाहियों के लिए बने वेश्यालयों में बेच दो। केवल मुसलमानों को छोड़ देना। जब ये काम हो जाए तब मुझे ख़बर दी जाए। '

अजीतपाल अवाक था। 'क्या? मेहरबानी, मेरे हुज़ूर, नहीं...'

करीम को उठाते हुए मक़सूद ने सम्राट को नज़रअन्दाज़ किया और करीम के निढाल शरीर को अपने घोड़े पर लादा। फिर ख़ुद घोड़े पर सवार हुआ और शहर से बाहर निकल गया। अजीतपाल सकपकाया, फिर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। उनके पीछे चीख़-पुकार का सिलसिला शुरू हो गया, मक़सूद के सिपाहियों की बर्बरता शुरू हो चुकी थी।

'गलियाँ रक्त से लाल हो चुकी हैं। सिपाहियों से बचने के लिए नागरिक कुओं में कूद गए और वो लाशों से पटे पड़े हैं। घरों के जलने से धुएँ की इतनी मोटी चादर फैल चुकी है कि हाथ को हाथ नहीं दिख रहा। लेकिन इसके बावजूद मैं इस अकथनीय आतंक का साक्षी बन गया। मैंने देखा सिपाहियों ने गर्भवती स्त्रियों तक से बलात्कार किया और उन्हें ख़ून से लथपथ मरने के लिए छोड़ दिया। मुझे अब नरक का भी भय नहीं। जो मैंने हरसरन में देखा उससे बुरा कुछ नहीं हो सकता।'

कन्नौज में तुर्क सेना के शिविर में लगे शाही तम्बू में अजीतपाल हरसरन में जो कुछ घटा, उसकी जानकारी एक दुबले से व्यक्ति से ले रहा था। इस दुबले-पतले व्यक्ति का नाम था सुभाष, वह वृषभ के उस गुप्तचर दल का सदस्य था जिसे उसने बड़ी मेहनत से तैयार किया था।

वृषभ ने उसके कंधों को अपने हाथ से थपथपाया। 'जाओ और थोड़ा आराम करने की कोशिश करो, सुभाष।' जैसे ही सुभाष वहाँ से निकला, प्रधानमंत्री अजीतपाल की ओर मुड़ा। 'महाराज, हमारे हज़ारों देशवासी मारे जा चुके हैं। कृपा करके, मैं आपसे भीख माँगता हूँ कि आप कम से कम हुज़ूर मक़सूद के पास जाएँ और उनसे रक्तपात बन्द करने की प्रार्थना करें। नगर भले ही धूल में मिला दिया जाए लेकिन कम से कम कुछ प्राण तो बचाए जा सकते हैं। एक राजा का सर्वप्रथम एवं सर्वोपरि कर्तव्य है कि वो अपनी प्रजा के प्राणों की रक्षा करें। कृपा करके कुछ सीमा तक तो अपने *धर्म* का पालन करें।'

अजीतपाल ने अपना मदिरा पात्र नीचे रख दिया। उसका हाथ कांप रहा था, उसके नेत्र रक्तमय थे और चेहरा राख की तरह काला पड़ चुका था। 'ये कैसे मनुष्य हैं? यदि ये अपने मित्रों के साथ ऐसा कर सकते हैं...'

वृषभ ने दुखी होकर सिर हिलाया। 'वे हमें अपना मित्र नहीं समझते, महाराज। हम उनके लिए खिलौना मात्र हैं, जब चाहा खेल लिया और जब चाहा मार दिया। आपने राक्षसों से मित्रता की है। अभी भी विलम्ब नहीं हुआ है। आप इस समझौते को समाप्त कर अपना सम्मान और गौरव फिर से प्राप्त कर सकते हैं और—'

'बस करो!' अजीतपाल ने तीखे स्वर में अपना हाथ उठाकर कहा। 'सावधान, वृषभ। तुम राजद्रोह जैसी बात कह रहे हो। मैं मक़सूद के पास जाऊँगा और उससे अपने आदमियों को वापस बुलाने को कहूँगा। किन्तु अब इस गठबंधन से पीछे हटने का प्रश्न ही नहीं उठता।'

थोड़ी देर बाद अजीतपाल सेनापति मक़सूद के शिविर के बाहर प्रतीक्षारत था। तुर्क प्रहरियों ने उसे भीतर प्रवेश करने से रोक दिया। यहाँ तक कि उन्होंने अजीतपाल के आने की सूचना मक़सूद तक पहुँचाने से भी मना कर दिया। अजीतपाल को प्रतीक्षा करने को कहा गया था।

और अजीतपाल, कन्नौज का सम्राट, उन व्यक्तियों का वशंज जिनका अभी हाल तक उत्तर भारत के अधिकतर भूभाग पर आधिपत्य था, एक ऐसे साम्राज्य का उत्तराधिकारी जिसके गीत अभी तक गाए जाते थे, अपने गौरवपूर्ण अतीत को भुलाकर प्रतीक्षा में खड़ा था। निवेदक की तरह।

शिविर के भीतर, करीम एक बड़े बिस्तर पर लेटा हुआ था। उसकी नाक और सिर पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं। ज़ाहिर था कि उसके सिर में गम्भीर चोट लगी थी और उसे पूरी तरह आराम करने की सलाह दी गई थी। मक़सूद बिस्तर के सामने

एक कुर्सी पर बैठा हुआ था, चिन्ता और परेशानी उसके चेहरे पर साफ़ देखी जा सकती थी।

'मेहरबानी करके...मैं आपसे भीख माँगता हूँ...ख़ून-ख़राबा बन्द कीजिए...' करीम ने मक़सूद से बुदबुदाकर कहा। 'वे आम नागरिक हैं...वो सिपाही नहीं हैं...ये ठीक नहीं है...'

'तुम बहुत नर्म दिल इंसान हो,' मक़सूद ने दृढ़ता से कहा, हालांकि वो करीम के हाथ को कोमलता से सहला रहा था। 'उन्हें सबक सिखाना ज़रूरी था। '

करीम ने सिर हिलाना शुरू किया, फिर दर्द से कराह उठा, हिलने-डुलने से दर्द की एक तीखी टीस सी उठी। 'इतनी सारी मासूम जानें...मेरी वजह से चली गईं... मैं ये बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

'वे मासूम नहीं हैं। उन्होंने तुम्हें चोट पहुँचाने की हिमाकत की।' अचानक मक़सूद ने शिविर के पर्दे की ओर देखा और चिल्लाया, 'हकीम कहाँ मर गया?! उसे करीम के दर्द का इलाज करने को कहा था!'

मुख्य प्रहरी ने पर्दे के पीछे से घबराई हुई आवाज़ में कहा। 'वो बाहर इन्तज़ार कर रहा है हुज़ूर।'

मक़सूद तुरन्त बोला, 'उसे अन्दर भेज, बेवक़ूफ़!'

हकीम ने आहिस्ते से पर्दा सरकाया और अन्दर दाखिल हुआ।

प्रहरी ने अजीतपाल की ओर देखा, फिर पर्दे की ओर देखा और डर से थूक गटकते हुए बोला, 'हुज़ूर, सम्राट अजीतपाल भी आपका यहाँ इन्तज़ार कर रहे हैं।'

कोई उत्तर नहीं मिला।

अजीतपाल बोला। 'महान सेनापति, क्या मैं आपका थोड़ा समय ले सकता हूँ?'

करीम ने मक़सूद का हाथ पकड़कर नरमी से दबाया। मक़सूद ने लम्बी सांस ली और ज़ोरदार आवाज़ में आदेश दिया, 'अन्दर आ जाओ।'

अजीतपाल ने तुरन्त पर्दा एक तरफ़ सरकाया और तम्बू में दाखिल हुआ।

उसने देखा कि मक़सूद उसे घूर रहा है। लम्बी, कठोर, ठंडी निगाहों से। अजीतपाल का साहस जवाब देने लगा।

मक़सूद ने एक गहरी सांस ली, जैसे कि वो अपने आप पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा हो। फिर वो थोड़ा सा मुस्कुराया, उसके चेहरे पर अजीतपाल के लिए तिरस्कार साफ़ दिख रहा था। उसने व्यंग्यपूर्वक कहा, 'महान सम्राट, आप वहाँ क्यों खड़े हैं? आइए, बैठिए। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

अजीतपाल बैचेनी महसूस कर रहा था और वो वहाँ नहीं बैठा जिस तरफ़ मक़सूद ने इशारा किया था। उसने पहले करीम की ओर और फिर मक़सूद की ओर देखा। 'सेनापति मक़सूद...मुझे...मुझे आशा है सेनानायक की तबीयत अब ठीक होगी?'

मक़सूद ने हल्के से सिर हिलाया और उसकी ओर ठंडी निगाह डाली। लेकिन इसके पहले कि वो कुछ बोलता, शिविर के बाहर से तेज़ आवाज़ें आने लगीं।

मक़सूद ग़ुस्से से चिल्लाया। 'बाहर ये क्या हंगामा मचा रखा है? मैंने साफ़ कहा था कि शान्ति बनाए रखी जाए! '

एक तुर्क अधिकारी दौड़कर शिविर के अन्दर आया। 'हुज़ूर, हमारे सैनिकों ने हरसरन के एक मुसलमान नागरिक तारिक को गिरफ्तार किया है। मुसलमान होने के बावजूद उसने अपने कुछ काफ़िर पड़ोसियों को अपने घर में पनाह दे रखी थी। हमारे सिपाहियों ने जब उन्हें घर से निकालने की कोशिश की तो उसने सिपाहियों पर हमला बोल दिया। हमले में हमारे दो सैनिक मारे गए और तीन बुरी तरह घायल हो गए। मुसलमान को ना मारने के आदेश के चलते उसे ज़िन्दा पकड़ लिया गया है। अब इसका क्या करें, आपके आदेश का इन्तज़ार है।'

मक़सूद ग़ुस्से से खड़ा हो गया। 'ये मक्कार हिन्दुस्तानी मुसलमान! उसे यहाँ लेकर आओ!'

तारिक को घसीटकर अन्दर लाया गया। लम्बे क़द का और चौड़े कंधे वाला, वो शख़्स चीख़ता-चिल्लाता लाया गया, हालांकि उसकी बुरी तरह पिटाई की गई थी और उसके हाथ मज़बूती से बांधे गए थे। उसकी आँखें पिटाई की वजह से सूजी हुई थीं। वह साफ़ देख नहीं पा रहा था। लेकिन सबसे पहले उसकी नज़र पड़ी अजीतपाल पर।

'गद्दार!' तारिक दहाड़ा, अपने राज्य के सम्राट के प्रति उसका ग़ुस्सा फूट रहा था।

मक़सूद अजीतपाल की बैचेनी पर भद्दी हँसी हँस रहा था।

तभी तारिक मुड़ा और उसे मक़सूद दिखा। और वो सन्न रह गया।

भौंचक्का तारिक इतने धीरे से बुदबुदाया कि बड़ी मुश्किल से सुना जा सकता था। 'असलान?'

आवाज़ करीम के कान में साफ़ सुनाई दी। वो तुरन्त चौंका। उसने मक़सूद और अजीतपाल की ओर देखा। फिर अपने ऊपर क़ाबू पाते हुए अपने आप को चुप रखा।

लेकिन मक़सूद ने उदासीन भाव से तारिक को इस तरह देखा मानो उसे कुछ समझ नहीं आया। 'ये असलान कौन है?'

'तू है कुत्ते की औलाद!' तारिक गरजा, पता नहीं अचानक कैसे उसमें ताक़त आ गई।

तारिक मक़सूद की ओर बढ़ा लेकिन उसे तुर्क सिपाहियों ने तुरन्त रोक लिया और एक बार फिर बर्बरता से पीटना शुरू कर दिया।

तम्बू का पर्दा हिला और गज़नी की सेना के अधिकारी ने अन्दर प्रवेश किया।

'प्रधानमंत्री वृषभ,' अधिकारी बोला, 'हुज़ूर मक़सूद आपसे मिलना चाहते हैं।'

वृषभ मुस्कुराया, 'अगर मैं ना मिलना चाहूँ तो क्या होगा?'

'तम्बू के बाहर दस सैनिक खड़े हैं, हुज़ूर। मैं आपकी उम्र और ओहदे का लिहाज करता हूँ, इसलिए सैनिकों को अन्दर नहीं बुला रहा। कृपया मुझे मजबूर ना करें।'

वृषभ को वाक़ई आश्चर्य हुआ। 'तुम तुर्कों के हिसाब से काफ़ी तमीज़दार हो। तुम्हारा नाम क्या है, अगर मैं जानना चाहूँ?'

'ओज़गुर, हुज़ूर,' उसने उत्तर दिया।

वृषभ खड़ा हुआ और उसने ओज़गुर की ओर गौर से देखा। 'हम्म...माफी चाहता हूँ किन्तु तुम शाही खानदान से नहीं लगते। ना ही तुम नौजवान हो। किन्तु अधिकारी हो, इसका आशय है तुम सिपाही थे और तरक्की पाकर यहाँ तक पहुँचे हो। क्या ये सही नहीं?'

'हुज़ूर, मुझे नहीं लगता कि मेरी ज़िन्दगी के बारे में बात करने का ये सही वक़्त है।'

'बेशक...तो तुम्हारे सेनापति ने मुझे क्यों बुलाया है?'

ओज़गुर की शक्ल पर परेशानी साफ़ दिख रही थी। लेकिन वो आदेश की अवज्ञा नहीं कर सकता था। 'मैं यह बताने की हिमाकत नहीं कर सकता, हुज़ूर।'

'एक कर्तव्यनिष्ठ सच्चा सिपाही।' वृषभ बोला। 'ठीक है, अफ़सर, तुम आगे-आगे चलो।'

भले ही ओज़गुर ने कुछ नहीं बताया, वृषभ को समझ आ गया था कि क्या चल रहा है। सुभाष ने थोड़ी देर पहले ही इसकी सूचना दे दी थी। तारिक, कन्नौज की सेना का पूर्व सैनिक था, जिसे वृषभ ने सुहेलदेव की टुकड़ी का साथ देने के लिए जंगल भेजा था। अब वो हरसरन में अपने परिवार के पास लौट आया था। वो कुछ हिन्दुओं को मक़सूद के सैनिकों से बचाने की खातिर उनसे भिड़ गया था। नतीजतन उसे तुर्क शिविर में घसीटते हुए ले जाया गया। सुभाष ने बताया कि उसे यातनाएँ देकर पूछताछ की जा रही है। तारिक बेहद दिलेर आदमी था और उससे कुछ भी उगलवा पाना मुमकिन नहीं था। लेकिन उन्हें इस अनहोनी के लिए भी तैयार रहना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो ये पता लगने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा कि वृषभ ने उत्तर भारत में तुर्कों के सबसे बड़े शत्रु सुहेलदेव को सहायता पहुँचाई है।

सुभाष ने ज़ोर देकर कहा था कि वृषभ को बचकर भाग जाना चाहिए। लेकिन प्रधानमंत्री ने तुरन्त जवाब दिया। *मूर्खता की बातें मत करो। मैं प्रधानमंत्री हूँ। मैं भाग नहीं सकता।*

लेकिन वृषभ के नहीं भागने का एक व्यवहारिक कारण भी था। उसके ग़ायब होने की बात तत्काल पता लग जाएगी और उसकी तलाश में खोजी-दल रवाना हो जाएँगे। लेकिन सुभाष के लापता होने का किसी को पता नहीं चलेगा क्योंकि उसे कोई इतना अहम नहीं मानता था। उसने तुरन्त सुभाष और दो दूसरे आदमियों को तीन अलग-अलग रास्तों से श्रावस्ती रवाना होने और तुर्कों के बारे में सारी सूचनाएँ सुहेलदेव तक पहुँचाने का आदेश दे दिया था। वृषभ तुर्कों के बारे में पहले

ही विस्तार से दस्तावेज़ तैयार कर चुका था। उनकी सैन्य-शक्ति, युद्ध की योजना, रणनीति और शस्त्र इत्यादि के बारे में।

ये सूचनाएँ सुहेलदेव के लिए बहुत मूल्यवान थीं और इनका उस तक पहुँचना *आवश्यक* था।

अब वृषभ का कार्य तुर्कों को भ्रमित करने का था। या ये सुनिश्चित करने का था कि कम से कम सुभाष और उसके साथियों को ज़्यादा से ज़्यादा समय मिल सके।

हर किसी को एक ना एक दिन मरना ही है। किन्तु ऐसे बहुत कम होते हैं जिन्हें अर्थपूर्ण मृत्यु प्राप्त होती है। ऐसी मृत्यु जिसके गीत लिखे जाएँ।

वृषभ ने मक़सूद के तम्बू का पर्दा एक ओर खींचा और भीतर प्रवेश कर गया। प्रवेश करते ही उसे अपने राजा अजीतपाल की आवाज़ सुनाई दी।

'भ्रष्ट देशद्रोही!'

वृषभ उस ओर मुड़ा, जिस तरफ़ से आवाज़ आई थी। बस देख भर पाया कि अजीतपाल ने अपना आधा भरा प्याला उसकी ओर फेंका। वृषभ तुरन्त झुक गया। लेकिन थोड़ी देरी हो चुकी थी। मदिरा की रक्तिम लकीर उछालता हुआ प्याला उसके माथे से टकराया। कन्नौज का प्रधानमंत्री लड़खड़ाया और फिर धराशायी हो गया, गहरे घाव से रक्त की धार बहने लगी। अजीतपाल ने उस पर हमला कर दिया और उस पर अपने पैरों से वार पर वार करने लगा। वो ग़ुस्से में चीख़ता जा रहा था। बचाव में वृषभ स्वयं को सिकोड़कर पड़ा रहा जब तक कि अजीतपाल थक नहीं गया और रुककर हाँफने नहीं लगा।

'जब हुज़ूर मक़सूद ने तेरे बारे में बताया, तो मैंने तेरा बचाव किया!' अजीतपाल चिल्लाया, उसके चेहरे पर आँसुओं की धार बह रही थी। 'मैंने कहा कि ज़रूर कोई भूल हुई होगी! वृषभ मेरे लिए वफ़ादार है!' उसने लम्बी सांस खींचकर अपने फेंफड़ों में हवा भरी, और फिर बोला। 'तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? *क्यों?*' अन्तिम शब्द क़रीब-क़रीब घुटी हुई चीख़ की तरह बाहर निकला।

वृषभ ने पहले अपना सिर हिलाया, फिर धीरे-धीरे खड़ा हुआ। वो ख़ून से लथपथ हो चुका था। जब भी वो सांस खींचता, तो उसकी पसलियों में दर्द की टीस सी उठती। कोशिश करके, उसने अपने आप को सीधा खड़ा किया और अजीतपाल की आँखों में देखा। उसकी आवाज़ डरावने रूप से शान्त थी, हालांकि उसके शब्द बड़ी मुश्किल से निकल पा रहे थे। 'मैं वफ़ादार हूँ...लेकिन आपके लिए नहीं...मैं भारत के लिए वफ़ादार हूँ...मैं कन्नौज के लिए वफ़ादार हूँ...'

'मैं ही कन्नौज हूँ!' अजीतपाल चीख़कर बोला।

'आप कन्नौज नहीं हैं...राजा देश नहीं होता है। देश होती है प्रजा...कन्नौज उन लोगों में रहता है जिनका हरसरन में नरसंहार कर दिया गया। वे लोग जिनकी

रक्षा आप नहीं कर सके...वे लोग जिनके लिए आप ना तो ख़ून बहाएँगे और ना ही आँसू...'

अजीतपाल ने वृषभ को मारने के लिए फिर से अपना हाथ उठाया, लेकिन इस बार प्रधानमंत्री ने सम्राट को पीछे धकेल दिया। अजीतपाल सन्न होकर उसे देखता रहा, उसे अपने मंत्री के दुस्साहस पर यक़ीन नहीं हो रहा था।

मक़सूद अब धूर्तता से मुस्कुरा रहा था। साफ़ तौर पर वो हिन्दुस्तानियों के बीच इस आपसी झगड़े का मज़ा ले रहा था।

वृषभ ने अजीतपाल की तरफ़ नफ़रत से देखा। 'आप अपना हाथ केवल एक निहत्थे बूढ़े आदमी पर उठा सकते हैं...आपके अन्दर अपने लोगों के असली दुश्मन से लड़ने का साहस नहीं है...आपने हमारे देश को धोखा दिया है...आपने अपने महान पूर्वजों को धोखा दिया है...आपने अपने सलाहकारों और अपने बहादुर सैनिकों को धोखा दिया है...आपने युद्ध टालने के लिए अपमान स्वीकार किया। अब आपका अपमान भी होगा और युद्ध भी।'

'चुप हो जा, बदतमीज़ कुत्ते,' अजीतपाल चीख़ा, फिर मक़सूद की ओर मुड़ा। 'उसे मार डालिए, हुज़ूर। इस कमीने को मार डालिए। मैं अब उसकी रक्षा नहीं करूँगा।'

मक़सूद अब खुलकर हँस रहा था। 'तुम कौन हो इसकी रक्षा करने वाले, मूर्ख?' फिर वो वृषभ की तरफ़ मुड़ा। 'मुझे अच्छा लगा कि तुम्हारे अन्दर कम से कम लड़ने का साहस तो है। मुझे अपने राज्य के दूसरे गद्दारों के नाम बता दो। मुझे उनके नाम बता दो जो उस लुटेरे सुहेलदेव की सहायता कर रहे हैं और तुम पर रहम करते हुए मैं एक आसान मौत दूँगा। वरना...'

'मैं इकलौता हूँ। बाक़ी सभी छोटे सैनिक हैं, जो पहले ही सुहेलदेव के साथ जुड़ चुके हैं। मैंने भी उसके साथ जुड़ने की कोशिश की, लेकिन मैं उसके लिए ज़्यादा काम का नहीं था। अन्यथा उसने मुझे अपने राज्य में स्वीकार कर लिया होता।'

मक़सूद उसके क़रीब आया और अपनी आवाज़ में क्रूरता भरते हुए बोला। 'तुम्हें लगता है कि मैं मूर्ख हूँ? क्या तुम्हें लगता है कि मैं नहीं जानता कि भारतीय राज्यों में से कई सामन्त सुहेलदेव को धन, संसाधन और सबसे बड़ी बात, जानकारी दे रहे हैं? मैं सुहेलदेव के बारे में उससे कहीं ज़्यादा जानता हूँ जितना तुम सोचते हो। लेकिन तुम्हें...मैं कभी तुम्हारे बारे में नहीं जान पाया...सुहेलदेव एक चालाक आदमी है। और मुझे उसके बारे में ज़्यादा जानकारी चाहिए। तुम बताओगे...यक़ीन मानो, तुम नहीं चाहोगे कि मैं—'

मक़सूद बोलते-बोलते रुक गया, वो वृषभ की प्रतिक्रिया देखकर सन्न रह गया था।

कन्नौज के प्रधानमंत्री ने जम्हाई ली थी। खुलेआम। जैसे कि वो मक़सूद के भाषण से ऊब गया हो। और उसने अपना दायाँ हाथ भी सामने लाकर अपना मुँह ढंक लिया था।

मक़सूद की इतनी खुलेआम बेइज़्ज़ती शायद ही कभी हुई थी। उसकी माँ ने भी नहीं की थी। उसके पिता ने भी नहीं की थी। उस आदमी ने भी नहीं की थी, जिससे वो सबसे ज़्यादा नफ़रत करता था।

'तुम्हें पता भी है कि तुम किसके सामने बात कर रहे हो?' मक़सूद गरजा। 'मेरा इम्तिहान मत लो! तुम्हें मेरे अत्याचारों की क्रूरता का अन्दाज़ा नहीं है! अगर वो उस मूर्ख ताक़तवर तारिक को तोड़ सकते हैं, तो सोचो कि तुम्हारे कमज़ोर शरीर का क्या होगा।'

वृषभ धीरे से हँस दिया। वो जानता था कि मक़सूद उस पर खीझ रहा है। 'तुम एक लकड़बग्घे की तरह मिमियाते हो...तुम्हें सुहेलदेव के बारे में कुछ नहीं पता...वो एक शेर है...वो तुम्हारी सोच से कहीं बेहतर है...'

मक़सूद थोड़ा और पास आया। वो भी हँस पड़ा। 'मुझे तुम्हें यातनाएँ देकर अच्छा लगेगा। मैं सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें हफ्तों तक ज़िन्दा रखा जाए। तुम्हें इतनी तक़लीफ होगी जिसकी तुमने कभी कल्पना तक नहीं की होगी।'

वृषभ खिलखिला दिया।

'तुम्हें इसमें कुछ मज़ाकिया लग रहा है?' अजीतपाल ने पूछा।

वृषभ अजीतपाल की तरफ़ देखकर मुस्कुराया। 'पहले मैंने आपको निराश किया...' फिर वो मक़सूद की तरफ़ मुड़ा। 'और अब, मुझे दुख है कि...मैं आपको भी निराश करूँगा।'

प्रधानमंत्री ने जैसे ही ये शब्द कहे, उसके शरीर को एक झटका सा लगा। उसने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। उसकी आँख की पुतलियाँ पीछे की तरफ़ चली गईं और वो ज़मीन पर गिर गया। उसके मुँह से झाग निकलने लगा। यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि बाक़ी लोगों को कुछ सोचने का मौक़ा ही नहीं मिला।

'क्या है ये!' चौंककर मक़सूद चिल्लाया।

अचानक ओज़गुर भागता हुआ आगे आया।

जब उसने जम्हाई ली थी...

उसने वृषभ का हाथ पकड़कर उसे पलट दिया। उसकी मध्यमा उँगली में पहनी गई अंगूठी का नग अन्दर की तरफ़ था। ओज़गुर ने उसे सूँघा और अपनी नाक सिकोड़ ली जब उसे एक अजीब सी गंध मिली।

'जल्दी से एक हकीम बुलाओ,' वो चीख़ा। 'इसने ज़हर खा लिया है।'

जब एक सैनिक बाहर की तरफ़ भागा, ओज़गुर ने वृषभ के गले में एक उँगली डालकर उसे उल्टी कराने की कोशिश की। पल भर बाद, वो चीख़ पड़ा क्योंकि वृषभ ने उसकी उँगली को दांत से काट लिया। उसने जल्दी से उसे बाहर निकाला और उसे हाथ से दबा दिया।

अब वृषभ के मुँह से ख़ून टपक रहा था। वो पलटा, अपने कांपते हाथों से धरती को दबाया, और फिर अपने माथे को उससे स्पर्श कराया। जैसे कि वो धरती से आशीर्वाद माँग रहा हो।

विदा, माँ...आपका बेटा आपके लिए बस इतना ही कर सका...

फिर वृषभ के शरीर को एक और झटका लगा और वो स्थिर हो गया।

अध्याय 26

श्रावस्ती के नेतृत्व में राज्यसंघ का गठन किए हुए सुहेलदेव को लगभग तीन साल हो चुके थे। ये तीन साल अच्छी तरह बीते थे। उसने एक मज़बूत सेना तैयार कर ली थी। और उसने देश भर से योद्धा जुटा लिए थे जिन्होंने तुर्कों के विरुद्ध इस गठबंधन के प्रति स्वामिभक्ति का वचन दिया था।

इन तैयारियों की परीक्षा का समय आ चुका था।

क्योंकि सालार मक़सूद और गज़नी की सेना वापस आ चुकी थी।

सुहेलदेव और उसके सलाहकार चर्चा कर रहे थे। हरसरन की तबाही की ख़बरें उन तक कुछ दिनों पहले पहुँच चुकी थीं। वो जानते थे कि अब बहुत जल्दी तुर्क उनके क्षेत्र तक भी पहुँच जाएँगे। उनके देश का भाग्य तय करने वाला युद्ध बहुत जल्दी लड़ा जाएगा।

राजसी मन्दिर में प्रार्थनाएँ हो रही थीं, जो सुहेलदेव के निजी कार्यालय से बहुत अधिक दूर नहीं था। ये प्रार्थनाएँ हरसरन के पीड़ितों की आत्मा की शान्ति के लिए थीं। इस गम्भीर बैठक में संस्कृत के मंत्रों की आवाज़ तैरती हुई आ रही थी।

गरुड़ पुराण से ली गई इन प्रार्थनाओं में विनती की गई थी कि पितरों के पास जाने के लिए आत्माओं की यात्रा सुरक्षित हो। ऐसा माना जाता था कि जिन शरीरों का अन्त दुखद होता है, उनकी आत्माओं में थोड़ी नकारात्मक ऊर्जा होती है। प्रार्थनाओं से उन आत्माओं को इस ऊर्जा पर विजय पाने में सहायता मिलेगी, ताकि वो अपने आप को अगले जीवन के लिए, इस माया जगत में दोबारा आने के लिए तैयार कर सकें।

सुहेलदेव ने वृषभ के लिए विशेष प्रार्थनाएँ कराई थीं। श्रावस्ती के आन्तरिक परिषद का हर सदस्य यह सुनकर हतप्रभ था कि कन्नौज का प्रधानमंत्री सुहेलदेव का सहयोगी था और वो राजा के देशभक्तिपूर्ण संघर्ष में गुप्त रूप से सहायता कर रहा था। ना तो काशीनाथ को इसका पता था, ना ही उसके सबसे नज़दीकी साथी तोशानी, अब्दुल, या गोवर्धन को।

सुहेलदेव वाक़ई में रहस्यों को अपने हृदय में गहरा छिपाकर रख सकता था। अच्छे नेता की ये भी एक पहचान है।

'अब क्या?' गोवर्धन ने पूछा।

'क्या हमें यहाँ उनका इन्तज़ार करना चाहिए?' काशीनाथ ने पूछा।

तोशानी का रुख साफ़ था। 'मेरा मानना है कि हमें बाहर निकलना चाहिए। अगर हम उन्हें श्रावस्ती के पास आने देंगे, तो हम चिन्तित रहेंगे कि वो हमारे नागरिकों के साथ क्या करेंगे। वो उन्हें बंधक बनाकर हमारे ख़िलाफ़ उनका इस्तेमाल भी कर सकते हैं।'

अब्दुल ने अपनी बात रखी। 'लेकिन अगर हम बाहर निकले तो हम अपने नगरों और गाँवों को अरक्षित छोड़ देंगे। उनकी सेना हमें छकाते हुए हमारे लोगों पर हमला कर सकती है।'

'शायद हम उन पर अपनी गुरिल्ला रणनीति अपना सकते हैं?' गोवर्धन ने सुझाव दिया। 'वो हमेशा से काम आई है।'

सुहेलदेव ने आगे की ओर झुकते हुए इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं। अब वो लोग यहाँ अपना मन बनाकर एक सेना के साथ आए हैं। अपनी मृत्यु से पहले वृषभ जी ने जो सूचना भेजी है, उसके अनुसार इस बार की तुर्क सेना पहले की सेनाओं के मुकाबले कहीं बेहतर नेतृत्व के साथ है। उनकी छावनी का रक्षा तंत्र मज़बूत है। हमारे गुरिल्ला योद्धाओं के लिए उन्हें भेद पाना आसान नहीं होगा। मैंने सुना है कि उनका सेनापति मक़सूद हमारे देश को और इसकी संस्कृति को पहले के सेनापतियों के मुकाबले कहीं बेहतर समझता है। वो जानता है कि किस राज्य के ख़िलाफ़ क्या तरीक़े अपनाने हैं। आप मान सकते हैं कि वो भारत को उतने ही अच्छे तरीक़े से जानता है, जितना हम भारतीय। और जितनी भी सूचनाएँ मुझे मिली हैं, इस बार वो सिर्फ हम पर हमला करने नहीं आए हैं। वो आए हैं हमें जीतने और यहाँ रहने के लिए।'

'फिर तो हमें उनके साथ जमकर लड़ाई करनी होगी,' तोशानी ने कहा। 'और हमें उन सभी को मार गिराना होगा।'

'किसी भी भारतीय सेना ने ऐसा पहले नहीं किया है,' काशीनाथ ने ध्यान दिलाया। 'हालांकि महान चन्देल राजा, महाराज विद्याधर ने महमूद को युद्ध में रोक दिया था और बाद में कलिंजर के किले से उसे खदेड़ दिया था।'

सुहेलदेव ने लम्बी सांस ली। 'बदक़िस्मती से, महाराज विद्याधर हमारी मदद नहीं कर सकते। वो गम्भीर रूप से बीमार हैं, और मैंने सुना है कि वो बहुत ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहेंगे। और गद्दी के उत्तराधिकारी, राजकुमार विजयपाल इन दिनों कालाचूरियों के साथ लड़ने में व्यस्त हैं, जो महाराज की बीमारी का फायदा उठाने की कोशिश में लगे हैं।'

'हम भारतीयों की आपसी लड़ाई का फायदा ये विदेशी उठाते हैं,' काशीनाथ ने उदासी के साथ सिर हिलाते हुए कहा। 'खैर, मैंने राजकुमार से सम्पर्क किया था और उन्होंने वचन दिया था कि वो अपने सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों में से एक, सूर्यवीर के नेतृत्व में सैनिकों की एक पलटन हमें भेजेंगे। लेकिन कोई दूसरा महाराज विद्याधर नहीं हो सकता। काश हमें चन्देलों की पूरी सेना मिल जाती।'

'चाहतों की तो कोई सीमा नहीं है,' तोशानी ने कहा। 'हमें उसी से सर्वश्रेष्ठ करना है, जो हमारे पास है।'

सुहेलदेव ने काशीनाथ की तरफ़ देखा। वो जानता था कि उन्हें कुछ महीनों के लिए युद्ध टालना होगा। क्योंकि श्रावस्ती की मदद के लिए राजेन्द्र चोल की पलटनें तभी तक यहाँ पहुँच सकेंगी। लेकिन, काशीनाथ और सुहेलदेव के अतिरिक्त किसी और को राजेन्द्र चोल के साथ गठबंधन की बात पता नहीं थी।

तभी मुख्य प्रहरी ने दरवाज़े पर एक घोषणा की। 'महाराज, आपके मित्र असलान आए हैं।'

हर किसी की निगाहें दरवाज़े की ओर मुड़ गईं। सुहेलदेव एक चौड़ी मुस्कान के साथ तुरन्त उठ खड़ा हुआ।

शायद असलान को मक़सूद के बारे में कुछ पता हो जो हमारे काम का हो।

'उसे अन्दर आने दो!'

कुछ पलों बाद, असलान ने अपनी बाँहें फैलाए हुए अन्दर प्रवेश किया। सुहेलदेव उसका अभिवादन करने के लिए आगे बढ़ा। दोनों ने एक-दूसरे को गर्मजोशी से गले लगाया।

अब्दुल के चेहरे पर अविश्वास साफ़ दिख रहा था। गोवर्धन ने झुककर उसे फुसफुसाते हुए कहा, 'ठीक है, अब्दुल। महाराज सुहेलदेव असलान पर विश्वास करते हैं। हमें भी उस पर विश्वास करना चाहिए।'

अब्दुल ने थोड़ी देर तक गोवर्धन की तरफ़ देखा और फिर असलान और सुहेलदेव की तरफ़ देखने लगा। 'मुझे उस तुर्क पर भरोसा नहीं है। उसके चेहरे में ऐसा कुछ है...जो मुझे परेशान करता है...मैं उम्मीद करता हूँ कि महाराज को दुश्मनों में से एक आदमी पर भरोसा करने की भारी क़ीमत ना चुकानी पड़े...'

गोवर्धन ने अब्दुल का हाथ थपथपाया। 'घबराओ नहीं...'

इस दौरान, सुहेलदेव और असलान एक-दूसरे से अलग हो चुके थे, लेकिन अभी भी एक-दूसरे का हाथ पकड़े थे।

'मेरे दोस्त, तुम्हें दोबारा देखकर बहुत ख़ुशी हो रही है!' सुहेलदेव बोला। 'कहाँ रहे तुम इतने दिन?'

'मैं थोड़े समय तक भटकता रहा, फिर आख़िरकार मैं एक झील के पास बस गया जहाँ मुझे एक आध्यात्मिक अनुभव हुआ,' असलान ने कहा। 'वहाँ, मैंने एक छोटा सा आश्रम बनाया जहाँ मैंने दान के बदले लोगों का छोटा-मोटा इलाज करना शुरू कर दिया। जल्दी ही, प्रार्थना के दौरान कुछ लोग मेरे साथ आने शुरू हो गए। अब, वहाँ एक छोटा सा समुदाय बन गया है। मेरे लिए यह एक बेहतरीन समय था। मुझे अपने जीवन में कभी भी इतनी शान्ति महसूस नहीं हुई थी।'

सुहेलदेव उदासी से मुस्कुरा दिया। 'और उस शान्ति को फिर से ख़तरा है। गज़नी के राक्षसों से।'

असलान ने सहमति जताते हुए होंठ सिकोड़ लिए। 'हम सूफ़ी मुसलमानों को समझना होगा कि हमें शान्ति तब तक नहीं मिलेगी जब तक कट्टर मुसलमान बचे

हैं। हमें उनसे लड़ना होगा। हमारी अपनी भलाई के लिए। और दुनिया की भलाई के लिए।'

'वे कट्टर मुसलमान नहीं हैं, असलान। वे केवल कट्टर राक्षस हैं। लेकिन हाँ, हम सभी को साथ मिलकर उनसे लड़ने की ज़रूरत है।'

'बिना दया के।'

'बिना दया के।' सुहेलदेव ने सहमती जताई।

'और इसलिए मैं आया हूँ। तुम्हें अब मेरी ज़रूरत है।'

'हाँ, मुझे ज़रूरत है। तुर्कों के इस सेनापति, मक़सूद की...उसकी रणनीतियाँ...'

'...बेहतरीन हैं।' असलान ने सुहेलदेव की बात को पूरा किया।

सुहेलदेव ने हामी भरी। 'हाँ...और, दरअसल, उसका सेनानायक है उसका प्रेमी करीम। क्या किसी तरीक़े का...कोई मौक़ा है जिसका फायदा हम उठा सकते हैं?'

असलान के चेहरे पर पल भर के लिए गहरे जज़्बात उभरे। लेकिन उसने अपने आप को तुरन्त संभाल लिया। उसने नीचे देखा, गहरी सांस ली और फुसफुसाया, 'मैं जानता हूँ कि तुम इससे बेहतर इंसान हो। उनके प्रेम को इससे बाहर रखो। वो दोनों योद्धा हैं। हमारे पास वो रणनीतियाँ होनी चाहिए जो उनके ख़िलाफ़ काम आएँ।'

'हाँ...तुम्हारी सलाह का स्वागत है।'

'मैं सलाह ही नहीं, उससे अधिक के साथ आया हूँ,' असलान ने जवाब दिया। 'पिछले कुछ महीनों के दौरान, कुछ युवकों का एक छोटा दल मेरे साथ आ गया है, जो मुझे आध्यात्मिक गुरु के रूप में देखता है। हाल ही में, उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या किसी को अपने मज़हब के लिए लड़ना चाहिए या देश के लिए। मैंने उत्तर दिया कि भारत किसी भी व्यक्ति या किसी भी चीज़ के पहले आता है। मादर-ए-वतन जन्नत से भी बढ़कर है।'

सुहेलदेव मुस्कुराया और उसने असलान के कंधे थाम लिए। वो चुप रहा। जो स्पष्ट है, उसे क्या बोलना।

असलान की आँखें नम हो गईं। 'मेरा जन्म कहीं भी हुआ हो, मुझे भारत में नया जन्म मिला है। यहीं मैंने सूफीवाद की तालीम ली है। यहीं मैंने सही मायने में अल्लाह को हासिल किया है। यही मेरे मक़सद का देश है। मैं भारत को अपनी पवित्र मातृभूमि के रूप में देखता हूँ। अगर वो इस बर्बर तुर्क को अपनाने के लिए...'

'हमारी माता ने पहले ही तुम्हें अपना लिया है, असलान,' सुहेलदेव ने कहा। 'भारत माता का हृदय विशाल है। अगर कोई विदेशी यहाँ आकर भारत को अपनी पवित्र मातृभूमि के समान देखता है, तो वो विदेशी नहीं रह जाता।'

असलान मुस्कुरा दिया। 'मेरे दोस्तों ने मेरे साथ यहाँ आने की ज़िद की। वो मुश्किल से दो सौ लोग हैं, लेकिन वो युवा, मज़बूत और उत्साही हैं। और मैंने उन्हें

थोड़ी फौजी तालीम भी दी है। वो तुम्हारे पीछे-पीछे रहेंगे, चाहे जो हो जाए। मैं तुम्हें सुझाव दूँगा कि तुम उन्हें अपनी निजी अंगरक्षक टुकड़ी में रखो।'

सुहेलदेव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया।

'याद रखना, सुहेलदेव, हम तुम्हें मरने नहीं दे सकते। अगर तुम मरोगे, भारतीय सेना बिखर जाएगी। तुर्क ये बात जानते हैं। मेरे लोग तुम्हारी रक्षा करेंगे।'

'मैं अपनी अंगरक्षक टुकड़ी में उनका स्वागत करता हूँ,' सुहेलदेव ने भावुक होते हुए कहा। 'चलो उनसे मिलते हैं।'

जब सुहेलदेव और असलान कमरे से बाहर जाने लगे, अब्दुल गोवर्धन की तरफ़ मुड़ा। उसने सारी बातें सुनी थीं और वो नाराज़ दिख रहा था। 'राजन ऐसा कैसे कर सकते हैं?'

'चिन्ता मत करो, अब्दुल,' गोवर्धन ने कहा। 'तुम अभी भी शान्तिकाल में अंगरक्षक टुकड़ी के सेनापति हो। इसे इस तरह देखो कि तुम्हारे पास दो सौ ज़्यादा सैनिक हैं।'

'लेकिन वे सैनिक असलान के वफादार होंगे, महाराज सुहेलदेव के नहीं!'

अध्याय 27

श्रावस्ती की राजसी युद्ध परिषद सुहेलदेव के निजी कार्यालय कक्ष में जमा हुई थी। सुहेलदेव, तोशानी, काशीनाथ, गोवर्धन और अब्दुल एक मेज़ के चारों तरफ़ जमा थे और इलाक़े के एक वृहत मानचित्र को देख रहे थे। मानचित्र बड़ा था, जिसमें भौगोलिक स्थिति, शहरों, गाँवों, नदियों और यहाँ तक कि नालों के भी विवरण थे। बुद्धिमान योद्धाओं का कहना है कि इलाक़े की पूरी जानकारी होने का मतलब आधी लड़ाई जीतना है। मानचित्र के ऊपर मिट्टी के कई पुतले रखे हुए थे, जो घुड़सवारों, तीरन्दाज़ों, पैदल सैनिकों और दूसरे फौजी ढांचे को दिखा रहे थे। असलान मेज़ के दूसरी तरफ़ था। राज्यसंघ के सभी राजा भी उपस्थित थे।

'हमारे पास संख्या बल है,' असलान ने कहा, 'लेकिन तुर्कों की घुड़सवार सेना उन्हें ताक़तवर बना देती है। वो तेज़ी से आगे बढ़ते हैं, अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं, और बहुत कुशल योद्धा हैं।'

'हमारे पास भी अपनी घुड़सवार सेना है,' अब्दुल ने कहा, उसे असलान की इस बात में भारतीय योद्धाओं का तिरस्कार दिख रहा था। 'और हम उनसे युद्ध कर सकते हैं।'

'मुझे कोई सन्देह नहीं है कि तुम्हारी घुड़सवार सेना बहुत अच्छी है, बहादुर अब्दुल,' असलान ने कहा, उसकी आवाज़ विनम्र और शान्त थी। 'लेकिन वो तुर्क घुड़सवार सेना को हरा नहीं पाएँगे। मेरा यक़ीन करो। उनके पास हमसे तीन गुना घोड़े हैं। और उन घुड़सवारों को बार-बार युद्ध का अनुभव है। अगर हम उन्हें युद्ध के दौरान पीछे रख भर सकें, तो भी हमारे लिए ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।'

गोवर्धन ने चुपचाप मेज़ के नीचे अब्दुल का हाथ पकड़ा। और अब्दुल चुप हो गया।

असलान ने मेज़ पर चारों तरफ़ देखा। 'मुझे यक़ीन है कि मक़सूद दोनों पक्षों से हमारी फौज पर अपने घुड़सवारों का हमला करेगा। उनकी मदद के लिए तीरन्दाज़ बुलाए जाएँगे, जो हम पर तीर बरसाएँगे। अगर उनकी घुड़सवार सेना कामयाब होती है, जो अभी तक के हर युद्ध में दिखा है, तो फिर वो हमारी पैदल सेना पर दोनों तरफ़ से हमला करेगी। और तभी उसकी पैदल सेना सामने से हमला

करने उतरेगी। फिर वो हमें ऐसे फंसा लेगी जैसे कि चिमटे में पकड़ लिया जाता है। और फिर वो अपनी आरक्षित सेना को भी बुला लेगा। उसके बाद, केवल नरसंहार होगा।' मक़सूद की रणनीति को समझाते वक़्त असलान मिट्टी के पुतलों को मानचित्र पर चारों तरफ़ घुमाकर दिखाता जा रहा था, ताकि मक़सूद की फौज की चाल को आसानी से समझाया जा सके। अब उसने सारे पुतलों को उनकी वास्तविक स्थिति पर ला खड़ा किया। उसने सुहेलदेव की तरफ़ देखा। 'मक़सूद हथियार डालने का मौक़ा नहीं देगा। तुम्हारी सेना को बिल्कुल नहीं। वो तुम्हारी सेना के हर आदमी को मार डालना चाहता है। कोई दया नहीं दिखाई जाएगी।'

सुहेलदेव मुस्कुराया। 'यही चीज़ हम दोनों में एक जैसी है। मेरी तरफ़ से भी कोई दया नहीं दिखाई जाएगी। क्योंकि मेरा इरादा भी तुर्कों के हरेक सैनिक को मार डालने का है।'

'हर हर महादेव!' तोशानी ने नारा लगाया।

'जय श्री राम!' सुहेलदेव के एक सहयोगी, राजा करण ने कहा।

'अल्लाहु अकबर!' अब्दुल ने कहा।

असलान के चेहरे पर चौड़ी मुस्कान आ गई। 'आप सभी को ज़्यादा ताक़त मिले। लेकिन ईश्वर आपकी मदद नहीं कर पाएँगे अगर आप तुर्क घुड़सवार सेना को नहीं रोक सके। आपके पास इसके लिए योजना होनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण है। अगर हम किसी तरह उनकी घुड़सवार सेना को रोक सके, तो हम अपनी पैदल सेना की मदद से उनकी सामने की सैन्य टुकड़ी पर हमला कर सकते हैं। और फिर हमारा संख्या बल काम आएगा। तब, अल्लाह हमें फतह नसीब कराएगा।'

सुहेलदेव ने अपनी आँखें सिकोड़ीं। 'मैंने सुना है कि कई बार मक़सूद की घुड़सवार सेना पीछे हटने का दिखावा भी करती है?'

असलान ने चौंककर ऊपर देखा। और फिर हल्के से मुस्कुरा दिया। *यह आदमी वाक़ई में समझदार है।*

'हाँ, तुम सही कह रहे हो,' असलान ने कहा। 'कभी-कभी तुर्क दिखावा करते हैं कि वो पिछड़ रहे हैं और भागने लगते हैं। दुश्मन घुड़सवार सेना को उनका पीछा करने के लिए ललचाते हैं। उन्हें अपनी तरफ़ अन्दर खींचते हैं। एक जाल में। उन्होंने ऐसा लाहौर में किया था। पूरी दुश्मन घुड़सवार सेना को कुचल दिया गया था।'

सुहेलदेव ने गोवर्धन और अब्दुल की तरफ़ देखा। 'चाहे जो हो जाए, हमारे घुड़सवारों को हमारी सेना के क़रीब ही रहना चाहिए। अगर दुश्मन पीछे हटे तो भी उनका पीछा नहीं करना है। उन पर हमला नहीं करना है, बस बचाव करना है।'

गोवर्धन ने कहा। 'अगर हमारी घुड़सवार सेना केवल बचाव करेगी, तो फिर आप युद्ध कैसे जीतेंगे?'

सुहेलदेव ने नीचे नक्शे की तरफ़ देखा। 'अगर हमारे लिए घोड़े युद्ध नहीं जीत सकते, तो फिर हमें युद्ध के मैदान को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करना होगा।'

सभी ने उसकी तरफ़ देखा। वो कुछ समझ नहीं पाए।

'हमें युद्ध का ऐसा मैदान चुनना होगा जहाँ घुड़सवारों का हमला मुश्किल होगा,' सुहेलदेव ने कहा। 'इस वक़्त तुर्क कहाँ हैं?'

'उन्होंने सतरिख में पड़ाव डाला है,' तोशानी ने कहा। 'हमारे जासूस सैनिकों से पता चला है कि वो रसद इकट्ठा कर रहे हैं। साथ ही, उनकी कुछ टुकड़ियाँ दूसरे राज्यों में हमला करने के लिए गई हैं। एक बार जब वो जमा हो जाएँगे, तुर्क हमारी ओर बढ़ेंगे। बहुत ज़्यादा समय नहीं, बस कुछ हफ्ते और।'

सुहेलदेव ने काशीनाथ की तरफ़ देखा। राजेन्द्र चोल को एक आपातकालीन सन्देश भेजा जा चुका था कि उनकी सहायता की आवश्यकता योजना से काफ़ी पहले होगी। लेकिन क्या राजेन्द्र चोल के सैनिक समय पर पहुँच पाने में सफल होंगे?

उस बारे में इस समय कुछ नहीं किया जा सकता। बस अच्छा होने की उम्मीद करो, और लड़ो।

सुहेलदेव ने फिर से नक्शे पर ध्यान लगाया, और तुर्क सेना के सम्भावित मार्गों पर अपनी तर्जनी दौड़ाई, और तभी एकाएक वो रुका।

'यहाँ,' उसने नक्शे पर उँगली टिकाई। 'तुर्कों को इस रास्ते से आना होगा। यहाँ एक बहुत बड़ा खुला मैदान है, इतना बड़ा कि हमारी पूरी सेना वहाँ आ सकती है। इसके दाईं तरफ़ एक झील है और बाईं तरफ़ घने जंगल। ये प्राकृतिक रुकावटों का काम करते हैं। तुर्क हम पर छकाकर हमला करने के लिए इनसे होकर नहीं आ पाएँगे। उन्हें हम पर सामने से हमला करना होगा। अगर हम उन्हें प्राकृतिक रुप से संकुचित किनारों पर रोक सकें, तो हम उन्हें युद्ध के लिए बीच में ला सकते हैं।'

सभी ने झुककर फिर से नक्शे की तरफ़ देखा।

तोशानी ने उस बात को शब्द दे दिए, जो बाक़ी सभी सोच रहे थे। 'हाँ, ये तरीक़ा काम कर सकता है।'

सुहेलदेव ने अपनी नज़रें नक्शे से हटाकर अपने सभी सलाहकारों पर दौड़ाईं। 'मेरा मानना है कि हमें इसी वक़्त वहाँ चलना चाहिए और देखना चाहिए कि क्या मैदान वाक़ई में ऐसा ही दिखता है। अगर ये ऐसा है, तो हम अपना अड्डा यहीं बनाएँगे।' उसकी आँखें असलान पर रुकीं, जो परेशान दिख रहा था। 'क्या बात है?'

असलान ने लम्बी सांस ली। 'मैदान वैसा ही दिखता है जैसा नक्शे में दिखाया गया है। मैं जानता हूँ क्योंकि मैं पिछले कुछ महीने से, अपने छोटे से दल के साथ वहीं रह रहा था। यह एक कुदरती और खूबसूरत जगह है जहाँ हमें असीम शान्ति मिली। माना जाता है कि वहाँ झील के पानी में चमत्कारी औषधीय शक्तियाँ हैं, और तीर्थयात्री अक्सर वहाँ इस उम्मीद में स्नान करने आते हैं कि ये उनके रोगों को ठीक कर देगा। मेरा दिल इस बात से बेचैन है कि इस जगह पर ख़ून बहेगा और ज़िन्दगियाँ ख़त्म होंगी।'

सुहेलदेव ने अपने दोस्त का कंधा थपथपाया। 'जब युद्ध ख़त्म हो जाएगा, हम वहाँ पूजा के लिए एक सुन्दर जगह बनाएँगे, जो सभी के लिए खुला रहेगा।

यह जगह ख़ून से अपवित्र नहीं होगी। बल्कि पवित्र हो जाएगी। यहीं हम अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए, अपना ख़ून बहाएँगे, और अपने दुश्मनों का भी।'

असलान चुप रहा। अपनी सोच को अपने आप तक सीमित रखते हुए। *देखते हैं अल्लाह किसे अपनी रहमत देता है। करीम है। तुम हो। और मैं हूँ।*

सुहेलदेव फिर बाक़ी लोगों की तरफ़ मुड़ा। 'सेना को चलने के लिए तैयार कर दो। हमें उस स्थान पर समय पर पहुँचना है ताकि हम तुर्कों का स्वागत अच्छे से कर सकें।'

श्रावस्ती के राजा ने मुस्कुराते हुए सभी लोगों की पीठ थपथपाई जब वो तम्बू से बाहर जा रहे थे। जब वो अकेला रह गया, तभी उसने आत्मविश्वास से भरे हाव-भाव को चेहरे पर से जाने दिया। जब वो मेज़ के पास फिर से पहुँचकर उसे देखने लगा, उसके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें दिखने लगीं।

यहीं भारत का भविष्य तय होगा।

भगवान शिव हमारी मदद करें।

हमें विजय का आशीर्वाद दें।

अगर लेना है तो मेरे प्राण लें। लेकिन हमें विजय का आशीर्वाद दें।

जब सुहेलदेव नक्शे को देख रहा था, तो उसे लगा कि पूरा नक्शा धीरे-धीरे मिटता जा रहा है और सिर्फ उस स्थान पर सिमटता जा रहा है जिसे उसने रेखांकित किया था। युद्ध के उस मैदान के पास के शहर का नाम साफ़ और मोटे अक्षरों में दिख रहा था, और मानो वो उसे घूर रहा था।

बहराइच।

सुहेलदेव ने अपने हाथ जोड़े और अपनी आँखें बन्द कर लीं जब विजयलक्ष्मी ने उसके माथे पर तिलक लगाया। सुहेलदेव के निजी कार्यालय में रणनीति तय करने के लिए बैठक को सिर्फ तीन दिन बीते थे। और उसकी सेना कूच करने के लिए तैयार थी। परम्परा के अनुसार, वो अपनी माँ का आशीर्वाद लेने के लिए उसके कमरे में आया था। और परम्परा के ही अनुसार, उसकी माँ ने उसे विजय का आशीर्वाद दिया था। केवल विजय का।

विजयलक्ष्मी के शब्द साफ़ थे। 'जीतकर आना या फिर वापस मत आना।'

किंवदन्तियाँ हैं कि वैदिक युग के समय से ही गर्व से भरे पारिवारिक सदस्य अपने परिवार के योद्धाओं को आशीर्वाद इन शब्दों के साथ देते थे। दरअसल, कई लोग मानते हैं कि भगवान राम और देवी सीता ने एक-दूसरे को यही आशीर्वाद दिया था जब वे युद्ध लड़ने गए थे। और कई सहस्राब्दियों पहले, देवी सती ने यही पंक्ति भगवान शिव को कही थी, जब वो युद्ध के लिए जा रहे थे।

क्योंकि सच्चे योद्धा कभी भी लम्बे जीवन की आकांक्षा नहीं करते। उन्हें केवल विजय की आकांक्षा होती है। केवल विजय।

‘अगर वो ये बात नहीं समझता है, तो हम उसकी बात भारत माता से कराएँगे! हम बहराइच चलेंगे! हम उन तुर्कों के हरेक सैनिक को मार गिराएँगे! हम उस कमीने सालार मक़सूद का सिर काट लेंगे! हम उन सभी को भारत माता की मिट्टी में दफन करेंगे! फिर वे उनसे बात कर सकते हैं!’

‘जय माँ भारती!’ तोशानी, अब्दुल और गोवर्धन ने नारा लगाया।

‘जय माँ भारती!’ सेना की गर्जना हुई।

‘जय माँ भारती!’

‘जय माँ भारती!’

मातृभूमि के प्रति समर्पित इन गर्जनाओं के साथ योद्धाओं ने अपना कूच शुरू किया।

बहराइच की ओर।

नियति की पुकार की ओर।

भारत माता की पुकार की ओर।

विजय प्राप्ति की राह में मिली मृत्यु उस जीवन से बेहतर है जो पराजय के साथ समझौते के बाद मिले।

सुहेलदेव अपनी माँ के चरण स्पर्श करने के लिए झुका। थोड़ी देर के लिए एक माँ की भावनाएँ विजयलक्ष्मी के गर्वित, राजसी आचरण पर हावी हो गईं। उसने अपने पुत्र को गले लगा लिया। और लगभग तुरन्त ही, उसे छोड़ दिया।

'जाओ, मेरे पुत्र। भारत माता को विजय दिलाओ। जय माँ भारती।'

सुहेलदेव ने धीरे से दोहराया, 'जय माँ भारती।'

श्रावस्ती का राजा मुड़ा और उसने अपने सेवक की तरफ़ इशारा किया, जिसने तुरन्त ही राजसी टोप उसकी तरफ़ बढ़ाया। सुहेलदेव ने उसे पहना और तनकर चलता हुआ, अपनी माँ के निजी कक्ष से निकल गया। और फिर, राजमहल से निकलते हुए उस चौराहे पर पहुँचा, जहाँ उसका घोड़ा और निजी रक्षक इन्तज़ार कर रहे थे।

सैनिकों ने हर्षध्वनि की जब उन्होंने अपने राजा को आते देखा। सुहेलदेव ने उनका अभिवादन स्वीकार करने के लिए थोड़ी देर के लिए हाथ उठाया।

सेवक एक घोड़े को सुहेलदेव के पास ले आए। राजा ने घोड़े की काठी थामी, और आसानी से अपने घोड़े पर, एक छलांग के साथ सवार हो गया।

सुहेलदेव ने मुड़कर अपने मुख्य उप-सेनापतियों—तोशानी, अब्दुल और गोवर्धन की तरफ़ देखा। और मुस्कुरा दिया।

फिर सुहेलदेव अपने योद्धाओं की तरफ़ मुड़ा। भारत माता के योद्धाओं की तरफ़।

'मेरे सैनिको! मेरे दोस्तो!, मेरे देशवासियो!'

सुहेलदेव की सेना के पुरुष और स्त्रियाँ चुप हो गए। वे अपने राजा, अपने नेता की बात ध्यान से सुन रहे थे।

'हमें उस बर्बर तुर्क, ग़ज़नी के सालार मक़सूद का एक सन्देश मिला है।'

सैनिकों की तरफ़ से ग़ुस्से और नफ़रत भरी आवाज़ें आने लगीं। उस नाम के लिए नफ़रत अपने चरम पर थी। सुहेलदेव ने अपना हाथ उठाकर उन सभी को शान्त किया।

'दरअसल, उसने हमें कहा है कि धरती की सारी ज़मीन उसके ईश्वर की है। और चूँकि वो अपने ईश्वर का प्रतिनिधि है, वो अपनी सम्पत्ति का मालिकाना हक लेने आया है। उसने हमें आत्मसमर्पण का आदेश दिया है!'

तुर्कों के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा फिर से फूट पड़ा। सैनिक मक़सूद को गालियाँ बकने लगे। सुहेलदेव के इशारे के बाद वे एक बार फिर शान्त हुए।

'मैंने उसे बस इतना सन्देश भेजा है कि, भारत में, धरती स्वयं में ईश्वर है!'

सैनिक पूरे ध्यान से सुन रहे थे।

सुहेलदेव ने अपनी आवाज़ बढ़ाई, उसके शब्द हर किसी के कान में गूँज रहे थे। 'उसे भारत माता पर अधिकार जमाने का दुस्साहस कैसे हुआ?! भारत माता पर किसी का अधिकार नहीं है! भारत माता का अधिकार हम पर है!'

योद्धाओं की तरफ़ से गर्जना होने लगी। भारत माता के योद्धाओं की तरफ़ से।

अध्याय 28

बहराइच के पास उस बड़े खुले मैदान में सुहेलदेव की सेना को श्रावस्ती के मार्गदर्शक सैनिकों के नेतृत्व में पहुँचे एक हफ्ता ही हुआ था। वहाँ पहले पहुँचने की वजह से उन्होंने अपने लिए बेहतर स्थान चुन लिया था और अपना अड्डा जमा लिया था। कुछ दिनों तक तुर्क युद्ध के मैदान के क़रीब आने से बचते रहे थे। वो जानते थे कि उन्हें जिस जगह को लेने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, वो उनके लिए सबसे अच्छी नहीं होगी। उन्होंने सुहेलदेव के शिविर को लूटने की कोशिश की, ताकि उसकी सेना वहाँ से हट जाए। लेकिन जब इसका फायदा नहीं हुआ तो तुर्कों के पास उस युद्ध के मैदान की तरफ़ कूच करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा, जिसे सुहेलदेव ने चुना था।

भारतीय सेना में सैनिकों की तादाद तुर्कों के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा थी। अनुभवी तुर्क सेनापतियों और जासूसों ने एक साथ बैठक कर ये अनुमान लगाया था कि भारतीय सैनिकों की तादाद लगभग सत्तर हज़ार होगी, जिसका मतलब था कि उनकी संख्या तुर्कों के मुक़ाबले क़रीब दस हज़ार अधिक थी। लेकिन तुर्क इससे बहुत ज़्यादा परेशान नहीं थे। उनका प्रधान सेनापति, सालार मक़सूद भारतीय सेना के बारे में अन्दरूनी जानकारियाँ रखता था। वो हफ्तों तक गायब हो जाता था और वेश बदलकर भारत भर में चुपचाप घूमता, और उन राज्यों की जानकारी जुटाता था जिन्हें वो जीतना चाहता था। तुर्कों में से कुछ को ही पता था कि सालार मक़सूद ने कहाँ-कहाँ की यात्रा की है। लेकिन, साफ़ तौर पर, भारत के बारे में उसकी जानकारी का युद्ध में एक बड़ा रणनीतिक फायदा हुआ था। और चूँकि सालार मक़सूद को भारतीयों के बारे में काफ़ी ज़्यादा जानकारी थी, उसने अपने सेनापतियों और सैनिकों को इस बात के लिए तैयार रखा था कि उनका सामना कहीं बड़ी शत्रु सेना से होगा। उसने उन्हें यह भी समझाया था कि भारतीयों की बड़ी तादाद से उन्हें कोई फायदा नहीं होगा। क्योंकि उनके ज़्यादातर सैनिक पैदल सेना में हैं ना कि ज़्यादा अहम, घुड़सवार सेना में।

लेकिन भारत के बारे में उसकी जानकारी और युद्ध की रणनीति कितनी भी अच्छी हो, सुहेलदेव ने उसे युद्ध के इस मैदान में उनकी स्थिति के मामले में मात दे दी थी।

युद्ध के मैदान में देरी से पहुँचना और वहाँ कमज़ोर स्थिति पर लड़ने के लिए मजबूर होना तुर्कों के लिए साफ़ तौर पर दर्दनाक था।

वो उस छोटी नदी के रास्ते में नीचे की तरफ़ थे जो दोनों शिविरों से लगकर बहती थी। इसका मतलब था कि सुहेलदेव के शिविर की गन्दगी उस पानी को गन्दा कर देगी जो बहकर तुर्कों तक पहुँचेगा। इसने पहले ही तुर्कों के शिविर में कुछ बीमारियों को फैला दिया था। यही नहीं, तुर्कों के मार्गदर्शक सैनिकों ने जानकारी दी थी कि उनके शिविर से युद्ध के मैदान तक पहुँचने के रास्ते में कई बड़े गड्ढे हैं जो एक पुराने, सूखे जलमार्ग के हैं। इससे तुर्क सैनिकों को अपने पैदल सैनिकों और घुड़सवारों को युद्ध के लिए माकूल ढांचे की शक्ल में भेजना मुश्किल होगा। एक तरफ़ घने जंगल, और दूसरी तरफ़ झील के बंधनों ने निश्चित रूप से तुर्क घुड़सवारों के लिए पूरी ताक़त से युद्ध में कूदना मुश्किल बना दिया था।

सुहेलदेव पहले पहुँच गया था। और उसने इसका अच्छा फायदा भी उठा लिया था।

तुर्क ये बात जानते थे।

और वो युद्ध से बच रहे थे।

अभी तक।

रात काफ़ी बीत चुकी थी। तुर्कों का आक्रमणकारी घुड़सवार दल चुपचाप घने जंगलों से गुज़र रहा था। उनके जीन की रकाबों को कपड़े से ढंक दिया गया था ताकि उनकी आवाज़ ज़्यादा ना हो। तलवारों और चाकुओं पर कपड़े की पट्टियाँ थीं, जो म्यान से बाहर निकलते ही अपने आप फट जातीं। कपड़े की पट्टियों ने म्यान के अन्दर धातुओं के टकराने की आवाज़ को कम कर दिया था। घोड़े की नाल को चमड़े से ढंक दिया गया था, ताकि ज़मीन पर उनके क़दमताल की आवाज़ कम आए। मौखिक आदेश देने पर सख्त रोक थी। निर्देशों के लिए तुर्क फौज में आगे रहने वाले सिपाहियों को सिर्फ पक्षियों की आवाज़ें निकालने की हिदायत थी।

यह एक दुस्साहसी और ख़तरनाक मिशन था। लेकिन सालार मक़सूद इससे बेचैन नहीं था। करीम की सलाह के ख़िलाफ़, उसने इस हमलावर दस्ते की अगुवाई ख़ुद करने का फैसला किया था।

उसने करीम से साफ़ कहा था। *मेरा यक़ीन करो, हमें बस वहाँ घुसपैठ करके सुहेलदेव को मारना है। उसके बाद सारे भारतीय बिखर जाएँगे। और तब हम उनका पीछा कर सबका क़त्ल कर देंगे।*

मक़सूद की योजना साधारण थी: युद्ध की भारतीय परम्परा को तोड़ देना, जहाँ सूरज डूबने के बाद या निहत्थे और सोए हुए विपक्षी पर हमला नहीं करने की परम्परा थी। तुर्कों की योजना थी कि रात में दुश्मन के शिविर पर हमला करो, वहाँ गड़बड़ी फैला दो, ज़्यादा से ज़्यादा भारतीय सैनिकों और घोड़ों को मारो, ताकि दुश्मन की घुड़सवार सेना को नाकाबिल बनाया जा सके। लेकिन सबसे अहम

था कि कमांडो सैनिकों का एक छोटा दस्ता राजसी शिविर में घुसपैठ करे और सुहेलदेव को मार डाले। और फिर, हमलावर दल बची हुई तुर्क सेना को संकेत भेजेगा कि वो पूरी ताक़त से दुश्मन पर हमला कर दे।

सूरज के उगने तक लड़ाई ख़त्म हो जाएगी, सालार मक़सूद ने सोचा, और उस बर्बादी को याद करने लगा, जो तुर्कों ने दिल्ली के पास रात के हमले में तोमर सेना के साथ मचाई थी।

लेकिन जहाँ दिल्ली के पास युद्ध में तुर्कों को उनके दुश्मन सोते हुए मिले थे, इस बार भारतीय सतर्क थे। छावनी तक पहुँचने के रास्ते पर काफ़ी उजाला था। सुहेलदेव के सन्तरियों को जोड़ों में तैनात किया गया था, और सभी के पास तुरही थी ताकि ज़रूरत पड़ने पर चेतावनी दी जा सके। रात के पहरेदारों को आग के पास बैठने की इजाज़त नहीं थी, क्योंकि आग की गर्मी से कुछ पहरेदारों को नींद आ सकती थी। उन्हें हर दो मिनट पर अपने पड़ोसी सन्तरियों को प्रकाश-संकेत देना होता था, जो उनसे सौ मीटर की दूरी पर तैनात थे। अगर रात्रि प्रहरियों के किसी जोड़े को पड़ोसी सन्तरियों से निर्धारित समय तक संकेत ना मिले, तो मान लिया जाता कि उन सन्तरियों को मार दिया गया है और चेतावनी के लिए तुरही बजाई जानी थी।

पहरेदारी अनुशासित, सुनियोजित और सतर्कता भरी थी।

काफ़िर सीख रहे हैं, सालार मक़सूद ने बेमन से सोचा था। *सुहेलदेव तेज़ है।*

इकलौता रास्ता जहाँ पर सुरक्षा थोड़ी कम थी, वो भारतीय छावनी का वैसा हिस्सा था जो घने जंगल से लगा था। शायद उन्होंने अनुमान लगाया होगा कि तुर्क उस रास्ते से वहाँ तक बड़ी तादाद में घुड़सवारों की सेना को नहीं पहुँचा सकेंगे। सालार मक़सूद इसी कमज़ोरी का फायदा उठाना चाहता था।

लेकिन उसे ये नहीं मालूम था कि सुहेलेदव ने तुर्क सेनापति से बिल्कुल ऐसा ही क़दम उठाने की उम्मीद की थी।

अक्सर, जो आपको दुश्मन की कमज़ोरी दिखती है, वो वास्तव में सुनियोजित चाल होती है।

जब सालार मक़सूद जंगल से गुज़र रहा था, एक चीज़ उसके दिमाग में साफ़ थी।

उसके खेमे में मुसलमान हैं। सुहेलदेव ने नादानी में उन्हें स्वीकार कर लिया है। मुसलमान अपने हिन्दू नेता के ख़िलाफ़ हो जाएँगे जब वो दूसरे पक्ष में अपने साथी मुसलमान को देखेंगे। सुहेलदेव का अन्दरूनी दस्ता और उसके अंगरक्षक ही उसे मार डालेंगे।

मैं जीत जाऊँगा।

मैं राज करूँगा।

जब तुर्क चुपचाप आगे बढ़ते जा रहे थे, ज़ोर से पक्षी की आवाज़ सुनाई दी। पक्षी की आवाज़ का लहजा और लम्बाई निश्चित रूप से तुर्कों का नहीं था।

सभी ने एक जैसी ही बात सोची कि ये ज़रूर किसी पक्षी की आवाज़ होगी।

लेकिन सालार मक़सूद के अन्दर जैसे कुछ चुभा। सब कुछ सही नहीं लग रहा था।

हालांकि, पक्षी की आवाज़ बिल्कुल सही थी। लहजा। स्वर। तेज़ी। लम्बाई। हर चीज़ बिल्कुल सही थी।

मक़सूद घुड़सवारी करता रहा। अब बहुत जल्दी उसका हमलावर दस्ता भारतीय छावनी तक पहुँच जाएगा। और फिर उसकी जीत होगी।

लेकिन उसका दिमाग बार-बार पक्षी की उस आवाज़ तक जाता रहा। उसने अपना सिर इनकार में हिलाया। *वो एकदम सही थी।*

और तभी मक़सूद जम सा गया। उसके दिल में जो चेतावनी सी उठी थी, अचानक वो एक साफ़ सोच में बदल गई।

वो कुछ ज़्यादा ही सही थी।

ये कोई परिंदा नहीं है!

मक़सूद ने तुरन्त अपनी ढाल आगे की और पूरी ताक़त से चिल्लाया। 'ढाल ऊपर!'

और उसी वक़्त, हवा में एक तीर के उड़ने की आवाज़ सुनाई दी। और उसके तुरन्त बाद दर्द भरी घुटी सी चीख़ क्योंकि वो तीर एक तुर्क हमलावर के गले में जा धंसा। वो पीछे की ओर लड़खड़ाया और धमाके की आवाज़ के साथ अपने घोड़े से ज़मीन पर गिर गया।

अब तक सभी तुर्कों ने अपनी ढाल सामने कर ली थी। लेकिन तीर सभी दिशाओं से उड़ते हुए आ रहे थे।

आप तीरों की उस बारिश से अपना बचाव नहीं कर सकते जो आपको दिखाई भी ना दे।

हमलावर अपनी-अपनी जगहों पर रुक गए थे, और एकाएक हालात बदलने से जम से गए थे। वो अपनी ढाल के पीछे छिप रहे थे। कुछ क्षणों के भीतर, कई और काठियाँ ख़ाली हो गईं जब तीरों की बारिश उन हमलावरों पर टूट पड़ी।

घने जंगल में इतना अंधेरा था कि तुर्क ये तक ठीक से देख नहीं सकते थे कि उनके कितने आदमी मर रहे हैं। लेकिन आवाज़ से समझ आ रहा था कि कई आदमी मारे गए थे।

और भारतीयों की ज़ोरदार गर्जना तुर्कों के आतंक को बढ़ा रही थी, जो एकाएक उन पर छा गया था।

मक़सूद ने अपनी ढाल को मज़बूती से पकड़ रखा था। वो अपने को घेरे हुए सैनिकों के क़रीब था, और उन्हें मानव ढाल की तरह इस्तेमाल कर रहा था। लेकिन वो जानता था कि हालात नाउम्मीदी भरे हैं।

वो हमें चुन-चुनकर मार रहे हैं।

एक भारतीय की ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी। 'रोशनी!'

यह अब्दुल की आवाज़ थी। वो तुर्कों के ख़िलाफ़ घात लगाकर किए गए इस हमले में भारतीय तीरन्दाज़ों का अगुवा था।

अचानक, दूर से रोशनी आनी शुरु हो गई। भारतीयों ने कुछ मशालें जला ली थीं। कोशिश कर रहे थे कि इस रोशनी में वो तुर्कों को देख सकें। ताकि उनके तीर सही निशानों पर लग सकें।

तीर उड़ते रहे, और मरने वाले तुर्कों की तादाद बढ़ती रही।

सभी भारतीय पेड़ों में ऊँचाई पर छिपे हुए थे। वहाँ मचान बनाकर अच्छी तरह सुरक्षित थे। उन्होंने पहले से इसकी योजना बना ली थी। मक़सूद सोच-विचारकर बनाए गए जाल में सीधे कूद गया था।

दर्द से चीख़ते तुर्कों की हताशा भरी आवाज़ें रात में गूँज रही थीं। और उसके साथ थी भारतीयों के युद्ध की ज़ोरदार हुँकार।

'हर हर महादेव!'

'जय श्री राम!'

लेकिन युद्ध की एक हुँकार ऐसी थी जिसने तुर्कों के दिलों में डर भर दिया था। आमतौर पर यह हुँकार उनके भीतर ताक़त भरती थी। अब, यह उन्हें आतंकित कर रही थी। 'अल्लाहु अकबर!'

जो हुँकार तुर्कों के भारत पर आक्रमण करने पर गूँजती थी, अब वो भारत माता की रक्षा कर रहे भारतीय मुसलमानों की तरफ़ से सुनाई दे रही थी।

'अल्लाहु अकबर' पूरे तौर पर 'हर हर महादेव' और 'जय श्री राम' के साथ जुड़ गया था और ये सभी हुँकार मिलकर युद्ध की उस हुँकार में दिखते थे जो वास्तव में मायने रखती थी। वो हुँकार जो उन सभी को एक करती थी : 'जय माँ भारती!'

तुर्क गिरते रहे और भारतीय तीर उन्हें चीरते रहे।

मक़सूद के बाईं तरफ़ खड़ा एक तुर्क ज़ोर से चिल्लाया, 'यह तबाही है, हुज़ूर! लौट चलने का आदेश दीजिए! लौट चलने का आदेश दीजिए!'

तुर्क के शब्द पूरे होने के पहले ही एक तीर उड़ता हुआ आया, और उस सैनिक की बाईं आँख में धंस गया। वो दर्द से चीख़ता हुआ अपने घोड़े से नीचे गिर पड़ा।

मक़सूद के दूसरी तरफ़ खड़ा करीम चिल्लाया, 'लौट चलने का आदेश दो, मक़सूद!'

इस हंगामे के बीच भी मक़सूद जानता था कि लौटना नामुमकिन है। ज़्यादातर तीर उनके पीछे से आ रहे थे। उसे इस जंगल के बारे में अच्छी तरह पता था।

इस हंगामे से निकलने का एक ही रास्ता था। पीछे हटना नहीं। बल्कि पूरी ताक़त से हमला करना। घात लगाकर किए गए इस हमले से बचने का तरीक़ा इसे नाकाम बनाना ही था। पेड़ों पर ऊँचाई पर बैठे तीरन्दाज़ों के दायरे से बाहर जाना।

और फिर जंगल में दाहिनी तरफ़ बचकर भाग निकलना।

'पूरी ताक़त लगाकर सामने की तरफ़ हमला करो!' मक़सूद गरजा।

मक़सूद ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और साहसी तुर्क भी अपने सेनापति के पीछे सरपट दौड़ने लगे। पागलों की तरह चिल्लाते हुए। अपने आप को हमले की शक्ल में झोंकते हुए।

यह लड़ाई उनकी ज़िन्दगी के लिए थी!

अचानक, अश्वघोष की अगुवाई में सशस्त्र सैनिक, तुर्कों को रोकने के लिए, ज़मीन पर अपनी छिपी हुई स्थितियों से उठ खड़े हुए या पेड़ों की निचली शाखाओं से कूद पड़े। वो लगातार तीरों की बारिश कर रहे थे।

अब तक, जंगल में उजाला भर चुका था क्योंकि भारतीयों ने तुर्कों पर हमला करने के मक़सद से काफ़ी ज़्यादा मशालें जला ली थीं।

'मज़बूती से लड़ो!' मक़सूद गरजा। 'मज़बूती से लड़ो!'

अश्वघोष ने देखा कि हमलावर दस्ते की अगुवाई कर रहा तुर्क उन लोगों को काटता जा रहा है जो उसे रोकने की कोशिश कर रहे हैं। उस तुर्क की सोने की नोक वाली टोप और अच्छी गुणवत्ता का कवच साफ़ कर रहा था कि वो तुर्क सेना के वरिष्ठ अधिकारियों में एक था। अश्वघोष जानता था कि सुहेलदेव इस सेनापति को उसके पास ज़िन्दा ले जाना पसन्द करेगा। क्योंकि उसे यातना देकर जानकारी निकलवाई जा सकती थी।

'उस तुर्क सेनापति को पकड़ो!' अश्वघोष चिल्लाते हुए तुर्क घुड़सवारों की तरफ़ दौड़ पड़ा। 'उसे ज़िन्दा पकड़ना!'

संघमणि भी अश्वघोष के इस हमलावर दस्ते का हिस्सा था और वो घुड़सवारों के रास्ते में ही था। मक़सूद ने रफ्तार बढ़ाते हुए संघमणि की पलटन की तरफ़ दौड़ लगाई। संन्यासी ने कुछ तीर चलाए, लेकिन वो मक़सूद के बेहद मज़बूत कवच से टकराकर बेकार हो गए। संघमणि ने अपना धनुष गिरा दिया और अपनी तलवार बाहर निकाल ली।

'जय माँ भारती!' भारतीय पलटन ने गर्जना की।

इस दौरान, दूर खड़ा अश्वघोष अपने मित्र की ओर दौड़ने लगा।

इससे पहले कि मक़सूद संघमणि तक पहुँचता, सुहेलदेव का एक और सैनिक उस पर झपट पड़ा। मक़सूद ने बुरी तरह तलवार चलाई और उस भारतीय की उस बाँह को क़रीब-क़रीब अलग कर दिया, जिसमें उसने तलवार पकड़ रखी थी। वो आदमी घूम गया और अपने घुटनों पर नीचे गिर पड़ा। मक़सूद उसे पीछे छोड़ता हुआ संघमणि पर झपटा, और उस पर अपनी तलवार ज़ोर से लहराई। वो संन्यासी बगल की तरफ़ लुढ़क गया, मक़सूद के प्रहार को बेकार किया और घोड़े के पैरों पर पूरी ताक़त से तलवार को लहराया। किसी घोड़े और उसके सवार को नीचे गिराने का सबसे माना हुआ तरीक़ा।

लेकिन तुर्क घोड़े ऐसे हमलों के लिए सुरक्षित थे। उनके पैरों पर, नीचे से घुटनों तक चमड़े के कवच चढ़े थे, जिससे तलवारों के लिए उन्हें काटना मुश्किल हो जाता था।

घोड़े पर कोई असर नहीं हुआ। जब संघमणि असहाय की तरह देख रहा था, मक़सूद ने मारक प्रहार के लिए एक बार फिर अपनी तलवार पीछे की। अश्वघोष बिल्कुल उसी क्षण पहुँचा। जिस आदमी को मक़सूद ने कुछ देर पहले घायल किया था, वो अभी भी अपने घुटनों पर था, और अपनी बाँह के खुले हुए घाव को पकड़े हुए था। अपनी रफ्तार को बदले बगैर, अश्वघोष सीधा दौड़ता हुआ उसके

पास पहुँचा, एक पैर उसके कंधे पर रखा और उस ताक़त का इस्तेमाल करते हुए अपने आप को हवा में उछालकर सीधा मक़सूद से टकराया।

दोनों आदमी घोड़े से एक साथ ज़मीन पर नीचे गिरे। अश्वघोष लुढ़कता हुआ दूर गया, फिर अपने हाथों को ज़मीन पर अपने सिर के पीछे रखा और अपने आप को उछालकर पैरों पर खड़ा हो गया। जब तुर्क सेनापति अपने आप को संभाल ही रहा था,अश्वघोष ने अपने शरीर को घुमाते हुए ज़ोरदार लात उसके सिर पर जमाई जिससे वो फिर से ज़मीन पर लुढ़क गया।

इस बीच, संघमणि को एक दूसरे तुर्क सैनिक ने रोक रखा था।

करीम इस लड़ाई में ज़्यादातर समय मक़सूद के पीछे ही घोड़े पर सवार था। लेकिन उसका रास्ता सुहेलदेव के दो सैनिकों ने रोक रखा था जो भाले लहरा रहे थे। उसने अपने प्यारे सेनापति को बचाने का रास्ता ढूँढ़ने की जीतोड़ कोशिश की।

जब करीम अपने सामने खड़े सैनिकों से पूरी ताक़त से लड़ता जा रहा था, वो उस आदमी की ज़िन्दगी के लिए ज़ोर से चीख़ा जिसे वो प्यार करता था। 'मक़सूऽऽऽऽऽऽऽद!'

अश्वघोष ने अपने कमरबन्द से एक कटार निकाली और लड़खड़ाते हुए तुर्क सेनापति तक पहुँचा, जो ज़मीन पर अपनी तलवार ढूँढ़ने के लिए जूझ रहा था।

मक़सूद का टोप गिर चुका था। जब अश्वघोष ने धमकाने वाले अन्दाज़ में अपनी कटार पीछे की, वो गरजा, 'अपने आप को मेरे हवाले कर दो!'

मक़सूद अपना एक हाथ ऊपर करके मुड़ा, जैसे कि वो आत्मसमर्पण कर रहा हो। उसका चेहरा, जो अब तक अंधेरे में था, एकाएक रोशनी में दिखा।

अश्वघोष सन्न रह गया। 'असलान?!'

वो हिचकिचाया। उसकी कटार बीच हवा में रह गई।

और वो हिचकिचाहट बौद्ध संन्यासी के लिए प्राणघातक साबित हुई।

मक़सूद को उसकी तलवार मिल गई और उसने निर्ममता से हमला कर दिया। तलवार संन्यासी के पेट को काटती चली गई, और उसकी मांसपेशियों और महत्वपूर्ण अंगों को चीर डाला। मक़सूद ने और ताक़त से उसे घुसाया और तलवार उस बहादुर संन्यासी की पीठ के पार चली गई।

अश्वघोष के मुँह से दर्द भरी चीख़ निकली। कटार उसके सुन्न हाथ से नीचे गिर गई। उसके घुटने झुक गए और उसने अपने पैरों पर खड़े रहने के मक़सद से, तुर्क के कंधे पकड़ लिए।

मक़सूद खड़ा हुआ, उसने अभी भी हाथ में तलवार थाम रखी थी। उसने अश्वघोष को गर्दन से पकड़ा, फिर धीरे-धीरे, तलवार को निर्ममता से घुमाते हुए, उसे बाहर निकाल लिया। उसके ज़ख्म से ख़ून तेज़ी के साथ बाहर निकला, और उसके पैरों के पास की ज़मीन लाल हो गई।

संन्यासी पल भर के लिए लहराया, फिर ज़मीन पर गिर पड़ा।

इस बीच, करीम ने उसका रास्ता रोक रहे दोनों सैनिकों को हरा दिया था। वो मक़सूद की तरफ़ अपने हाथ फैलाकर दौड़ा। 'मक़सूद!'

तुर्क सेनापति ने करीम की बाँह पकड़ी, और छलांग लगाकर घोड़े पर चढ़ गया।

तुर्क घुड़सवार नाकाम हमले के बाद पीछे हट गए थे।

तब तक, संघमणि ने अपने साथ लड़ रहे तुर्क को मार गिराया था। वो भागता हुआ अपने घायल मित्र के पास पहुँचा। 'अश्वघोष!'

अश्वघोष जानता था कि वो मरने वाला है। घाव बहुत गहरा था। कई महत्वपूर्ण अंग कट-फट गए थे।

लेकिन वो अपनी मृत्यु से भयभीत नहीं था। वो किसी और चीज़ से भयभीत था। उसने अपने मित्र को मज़बूती से पकड़ा और भागते हुए तुर्कों की ओर इशारा करके, जल्दी-जल्दी बुदबुदाने लगा। 'अस...अस...'

संघमणि ने अश्वघोष को उठाने की कोशिश की ताकि उसे छावनी में वापस ले जा सके। लेकिन अश्वघोष ने उसे ऐसा करने से रोक दिया।

भागते हुए तुर्कों की तरफ़ फिर से इशारा करके, उसने अपनी बची-खुची ताक़त समेटी और जल्दी से फुसफुसाया, 'असलान...वो...असलान है...सुहेलदेव को...सावधान करो...महाराज...को सावधान...करो...'

संघमणि ने स्तब्ध होकर रात में भागते हुए तुर्कों को देखा और फिर अपने मित्र को देखा। 'असलान?!'

'सुहेलदेव को...बचाओ...'

इतने बड़े छल की सच्चाई एकाएक संघमणि को समझ आई। *सुहेलदेव... अंगरक्षक...असलान के आदमी...*

हे भगवान बुद्ध!

अध्याय 29

'शान्त हो जाओ, अब्दुल!' सुहेलदेव ने अपने दोस्त को संभालते हुए कहा।

रात काफ़ी हो चुकी थी। ग़ुस्से से लाल अब्दुल सुहेलदेव के राजसी शिविर के बाहर था। पूरी छावनी में हर तरफ़ अब कई और मशाल जला ली गई थीं। और राजसी शिविर के बाहर का इलाक़ा विशेष रूप से अधिक रोशनी में रखा गया था। तुर्कों के हमलावर दस्ते की तबाही की ख़बर ने बाक़ी भारतीयों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर दिया था, लेकिन अब्दुल नाराज़ था। सुहेलदेव से नाराज़ था।

'मैंने आपको कहा था कि उस पर यक़ीन ना करें!' अब्दुल चीख़ा। 'मैंने आपको कहा था कि उसे हमारी सेना में आने ना दें! मैंने आपको बताया था!'

सुहेलदेव ने अपना लहजा शान्त रखा। 'अब्दुल...मैं नहीं मानता कि...'

लेकिन अब्दुल सुन नहीं रहा था। वो अपने सैनिकों की ओर मुड़ा। 'असलान के सभी आदमियों को गिरफ्तार कर लो! इसी वक़्त उन सभी के सिर काट डालो! वो तुर्की कुत्ते हैं!'

'अब्दुल!' सुहेलदेव ने कड़ी आवाज़ में कहा। 'तुम्हें क्या हो गया है? शान्त हो जाओ! हम अपने लोगों के बीच बंटवारा नहीं कर—'

'मैंने आपको कहा था! आपने गलत आदमी पर भरोसा किया! असलान ने अश्वघोष को मार डाला! वो असलान—'

अब्दुल बोलते-बोलते रुक गया, जब सुहेलदेव के शिविर का पर्दा अचानक उठा और असलान बाहर निकला। उसके पीछे तोशानी और गोवर्धन थे। अब्दुल ने असलान को घूरा। वो पल भर के लिए स्तब्ध रह गया। फिर, उसने ग़ुस्से में चीख़ते हुए उस पर धावा बोल दिया, और उसके गले को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया।

'अब्दुल, रुको!' सुहेलदेव ने अब्दुल को पकड़ा और उसे दूर खींचने की कोशिश करने लगा। 'तुम क्या कर रहे हो?!'

अब्दुल अब ग़ुस्से में चीख़ रहा था। जब गोवर्धन और सुहेलदेव किसी तरह उसे खींचकर दूर ले जाने लगे, उसने ज़ोर से लात मारी, जो सीधे असलान के सीने पर लगी।

असलान इस चोट से तिलमिला गया और घुटनों पर आ गया। अब्दुल ने अपने आप को गोवर्धन की पकड़ से छुड़ाया और असलान को फिर से उसकी पसलियों पर लात मारी, जिससे वो ज़मीन पर लुढ़क गया।

'अब्दुल! रुको!' गोवर्धन चिल्लाया और उसने अब्दुल को फिर अपनी ओर खींच लिया।

असलान वहाँ पड़ा रहा। वो जानता था कि सच सामने आ चुका है। किसी ना किसी दिन इसे बाहर आना ही था। वो बस आश्चर्यचकित था कि यह छल इतने लम्बे समय तक चलता रहा।

सुहेलदेव और गोवर्धन अब्दुल को खींचकर दूर ले जाने लगे, और वो इस दौरान भी गालियाँ बकता रहा और हवा में लातें चलाता रहा। तोशानी असलान की मदद के लिए उसकी ओर दौड़ी।

सुहेलदेव ने अब्दुल को कसकर पकड़ लिया, और क़रीब-क़रीब विनती के अन्दाज़ में कहा। 'अब्दुल, शान्त हो जाओ...वो अश्वघोष को नहीं मार सकता था... ज़रूर कोई गलतफहमी हुई है...असलान तो शिविर से बाहर ही नहीं निकला। वो पूरे दौरान मेरे साथ था।'

'वो वहाँ था!' अब्दुल चीख़ा। 'उसने अश्वघोष को मारा! संघमणि ने उसे देखा!'

असलान तोशानी के सहारे के बिना धीरे-धीरे खड़ा होने लगा। उसके चेहरे का सारा रंग उतर चुका था। वो थका हुआ दिख रहा था।

'संघमणि की आँखें झूठ नहीं बोल रही थीं, बहादुर अब्दुल...लेकिन वो पूरा सच भी नहीं बता रही थीं।'

'पहेलियों में बातें करना बन्द करो, आस्तीन के सांप,' अब्दुल ने ग़ुस्से में कहा। वो अपने आदमियों की ओर मुड़ा। 'असलान को मार डालो! उसके सभी आदमियों को मार डालो!'

'रुको!' सुहेलदेव ने अपना हाथ उठाकर आदेश दिया।

और अब्दुल के आदमी वहीं के वहीं रुक गए। वे अपने राजा का आदेश मान रहे थे।

असलान ने नीचे की तरफ़ देखा। चुपचाप। परेशान।

इस चुप्पी को सुहेलदेव ने तोड़ा। 'असलान, बोलो!'

'बस उसे मार डालो!' अब्दुल चीख़ा।

गोवर्धन ने ग़ुस्से में उबलते अब्दुल को शान्त किया। सुहेलदेव असलान की ओर देखता रहा। असलान की आँखों में डर था। और उदासी। गहरी उदासी।

सुहेलदेव ने नरमी से कहा, लेकिन उसकी आवाज़ में धमकी साफ़ झलक रही थी। 'असलान, बताओ। क्या हो रहा है? बताओ, इससे पहले कि मैं अब्दुल के हाथों को आज़ाद करने के लिए मजबूर हो जाऊँ।'

असलान ने सुहेलदेव की तरफ़ देखा और एक गहरी सांस ली, जैसे कि अपने आप को मज़बूत बना रहा हो। जब उसने बोलना शुरू किया तो ऐसा लगा जैसे हर शब्द उससे ज़बरदस्ती बुलवाया जा रहा हो। 'मैं वो नहीं हूँ जो मैंने कहा था।'

अब्दुल फिर ग़ुस्से से फूट पड़ा। 'मैंने आपको कहा था!'

सुहेलदेव ने अपना हाथ उठाकर ख़ामोश रहने का इशारा किया और अब्दुल ने उसे माना। श्रावस्ती के राजा ने अपनी तलवार की मूठ थाम ली और उसे बाहर निकालने को तैयार हो गया। असलान को घूरते हुए, वो गरजा, 'कौन हो तुम?'

असलान की आँखें नीचे की तरफ़ थीं। *अल्लाह मुझ पर रहम करे।*

'असलान, अभी बताओ!'

असलान ने एक गहरी सांस ली और साफ़-साफ़ कहा। 'मेरा नाम सालार मसूद है। मैं मरहूम सुलतान महमूद गज़नवी का भांजा...और तुर्क सेनापति, सालार मक़सूद का जुड़वां भाई हूँ।'

इस बात को लगभग आधा घंटा हो चुका था।

सुहेलदेव, तोशानी, गोवर्धन, अब्दुल और संघमणि राजसी शिविर में चले गए थे। असलान वहाँ था। उससे हथियार ले लिए गए थे। और शिविर के भीतर दस सैनिक थे। असलान की किसी भी हरकत के लिए बिल्कुल तैयार। इस बीच, असलान के सैनिकों पर सुहेलदेव के सैनिकों द्वारा लगातार नज़र रखी जा रही थी।

असलान ने सुहेलदेव और बाक़ी लोगों को अपने जीवन की वास्तविकता बता दी थी। सालार मसूद के रूप में उसके जीवन की। यह वास्तविकता कि वो सालार साहू और सित्र-ए-मुअल्ला का छोटा बेटा है। साहू गज़नवी फौज में एक सेनापति था, जबकि सित्र-ए-मुअल्ला ख़ुद सुलतान महमूद की बहन थी।

हालांकि उसका जन्म उसके जुड़वां भाई सालार मक़सूद के कुछ ही मिनटों बाद हुआ था, उनके स्वभाव में ज़मीन-आसमान का अन्तर था।

उसने अपने जुड़वां भाई की धर्मांधता के बारे में बताया। और सूफी रास्ते की तालीम और अमन को लेकर उसके अपने प्यार के बारे में। कैसे उसकी माँ ने उसकी मदद की थी। जबकि उसके पिता उसके बड़े भाई को ज़्यादा प्यार करते थे। उसने बताया कि कैसे उसका भाई सुलतान महमूद गज़नवी का चहेता था, क्योंकि मक़सूद ख़ुद सुलतान की ही तरह पक्का धर्मांध था।

और सालार मक़सूद की एक क्रूरता भरी हरकत के बाद ज़रूरी हो गया कि कुछ किया जाए। ये तब हुआ जब महमूद की सेना ने एक और मन्दिर को नष्ट किया था। इस बार मन्दिर भगवान राम का था और पेशावर में स्थित था जहाँ ज़्यादातर आबादी बौद्धों और हिन्दुओं की थी। उस मन्दिर से भगवान राम की मूर्ति भी लूट ली गई थी। कुछ हफ्तों बाद, हिन्दू पश्तूनों का एक प्रतिनिधिमंडल गज़नी के राजदरबार में मूर्ति लौटाने की याचना करने आया था। इसके बदले में, वो अच्छी ख़ासी रकम चुकाने को तैयार थे, जिसका इस्तेमाल महमूद मंगोलों के ख़िलाफ़ युद्ध के लिए कर सकता था और जिसके लिए वो तैयारी कर रहा था। और इसलिए वो इस समझौते के लिए तैयार हो गया। मक़सूद को इस समझौते की शर्तें तय करने का ज़िम्मा सौंपा गया।

मक़सूद ने ज़बरदस्त मोल-तोल करके मूर्ति लौटाने के लिए बहुत ऊँची क़ीमत रखी। पश्तूनों ने सारी रकम उन्हें मिले निर्देश के अनुसार अग्रिम चुका दी थी। और जब वो मूर्ति लेने के लिए महल में आए, मक़सूद ने उनका अभिवादन शरबत के साथ किया। जब उन्होंने उसे पी लिया तो मक़सूद ने उन्हें बताया कि मूर्ति को तकनीकी रूप से उन्हें पहले ही लौटाई जा चुकी है। क्योंकि भगवान की जिस मूर्ति की वो पश्तून पूजा करते थे, उसे चूर-चूर करके शरबत में मिला दिया गया था। मक़सूद ने मूर्तिपूजक पश्तूनों का मज़ाक़ उड़ाते हुए उनके सामने एक गम्भीर दार्शनिक विचारधारा की भद्दी व्याख्या भी की। उसने कहा कि चूँकि हिन्दू मानते हैं कि भगवान हर किसी में और हर जगह है, अब वो भगवान उनके पेट में भी है। क्रोधित पश्तूनों ने मक़सूद से लड़ने की कोशिश की, लेकिन उसके सैनिकों ने उन्हें हरा दिया और शहर से बाहर निकाल दिया। उन पश्तूनों में से हरेक भयानक रूप से परेशान था क्योंकि अनजाने में ही सही, उन्होंने शरबत पीकर पाप किया था। उनमें से हर पश्तून ने शहर के मुख्य द्वार के बाहर आत्महत्या कर ली थी। और मरते समय, उन्होंने गज़नी शहर और इसके शासकों को श्राप दिया था। मक़सूद ने पश्तूनों के बलिदान का मज़ाक़ उड़ाया था। लेकिन गज़नी के कई नागरिक पश्तूनों की इस पीड़ा से हिल गए थे। उनमें से एक असलान था।

असलान ग़ुस्से में था। वो मानता था कि यह इस्लाम की सीख के ख़िलाफ़ है। उसने अपने भाई मक़सूद का विरोध किया था। और यह विरोध उन दोनों के बीच तलवार की लड़ाई तक बढ़ गया था। उसकी माँ ने लड़ रहे भाइयों को रोकने के लिए दख़ल दिया था।

इन सब से असलान के मन में नफ़रत भर गई थी, और उसने गज़नी छोड़ने का फैसला कर लिया था।

'किसी ने तुम्हें रोका नहीं?' सुहेलदेव ने पूछा।

'किसी को परवाह नहीं थी,' असलान ने जवाब दिया। 'सिवाय मेरी माँ के। और वो भी जानती थी कि मेरी सोच गज़नी के कुलीन समाज में कुफ्र समझी जाती थी। ज़्यादा वक़्त नहीं लगता जब मुझे धर्मभ्रष्ट घोषित कर दिया जाता और मार दिया जाता। मैं एक भरोसेमन्द सैनिक ओज़गुर की मदद से शहर से भाग आया। एक कहानी फैलाई गई कि मैं झिकाई नदी में गिरकर डूब गया। मैंने अपना नाम असलान रख लिया, और भारत आ गया, जहाँ मुझे शेख नूरुद्दीन मिले और मैं उनका शागिर्द बन गया। उसके बाद की कहानी आप सभी जानते हैं।'

'तुमने हमें अपनी पहचान पहले क्यों नहीं बताई?' गोवर्धन ने पूछा।

असलान के चेहरे पर बेबसी के भाव आए। 'मैं चाहता था, लेकिन मैं उस झूठ के जाल में फंस गया था, जिसे मैंने रचा था। मैंने अपना नाम बदल लिया था क्योंकि मैं नई ज़िन्दगी शुरु करना चाहता था। जब तुम मुझसे मिले, मैं असलान के रूप में रह रहा था। अगर मैं उसी वक़्त तुम्हें अपनी कहानी सुनाता, तो क्या तुम मुझ पर विश्वास करते, या मुझे अपने जासूस की तरह रखते? मैंने उम्मीद की थी कि मसूद की ज़िन्दगी मैं पीछे छोड़ आया हूँ और अब मैं सारी ज़िन्दगी असलान की तरह बिताऊँगा, लेकिन आख़िरकार मेरे अतीत ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा।'

सुहेलदेव बोला। 'अब तुम हमारी मदद क्यों कर रहे हो?'

'मैं मानता हूँ कि जो चीज़ भारत में मौजूद है, वो क़ीमती है। क्रोध से भरे इस युग में, यह इकलौता देश है, जहाँ अलग-अलग धार्मिक समूह एक-दूसरे के साथ शान्तिपूर्वक रहते हैं। यही वो इकलौता देश है, जहाँ शिया और सुन्नी मुसलमान एक-दूसरे के साथ तुलनात्मक रूप से शान्ति के साथ रहते हैं। यही वो इकलौता देश है, जहाँ आप सभी धर्मों, सभी भगवानों की पूजा कर सकते हैं और कोई आप पर सवाल नहीं उठाता। भारत को बचे रहने की ज़रूरत है। सिर्फ इस्लाम या हिन्दू धर्म की भलाई के लिए नहीं, बल्कि इंसानियत की भलाई के लिए।' असलान ने सुहेलदेव की आँखों में झांका। 'और आप, महाराज, उत्तर भारत में इकलौते आदमी हैं, जो आगे बढ़ रहे तुर्क गिरोह के ख़िलाफ़ लड़ाई की अगुवाई करने के काबिल हैं। इसलिए मैं आपका सहयोग कर रहा हूँ। क्योंकि मैं आप जैसे ही किसी आदमी की तलाश में था।'

सुहेलदेव ने कुछ नहीं कहा।

'तुर्क फौज में भी कुछ लोग हैं जो अमन चाहते हैं।'

तोशानी बोल पड़ी। 'कौन?'

'आप करीम के बारे में जानते हैं। उनकी फौज का सेनापति और मक़सूद का प्रेमी। वो मेरा पुराना दोस्त है। वो भी युद्ध के पक्ष में नहीं है। वो अमन चाहता है, ताकि वो मक़सूद को दूर ले जा सके और वो किसी दूसरे देश में ख़ुशी-ख़ुशी रह सकें। वो जानता है कि जब तक मक़सूद भारत पर जीत का ख्वाब देखता रहेगा, उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी। वो अपनी पूरी ज़िन्दगी बेकार की लड़ाइयों में बर्बाद कर देंगे।'

गोवर्धन और तोशानी को देखकर ऐसा लग रहा था कि उन्हें असलान की कहानी पर यक़ीन है। सुहेलदेव का चेहरा भावहीन था, उदासीन।

लेकिन साफ़ तौर पर अब्दुल को एक शब्द पर भी भरोसा नहीं था। वो सुहेलदेव की तरफ़ मुड़ा। 'यह बकवास है। क्या आप इसकी बेजोड़ कहानी पर यक़ीन करते हैं, राजन?'

सुहेलदेव चुप रहा। वो असलान की आँखों में झांक रहा था। अपने मन की बात सुनने की कोशिश कर रहा था।

'तो, अब हम इसके साथ क्या करें?' अब्दुल ने अपने हाथों को फड़काते हुए पूछा। उसके दिमाग में साफ़ था कि क्या करना है।

सुहेलदेव खड़ा हुआ और शिविर के एक छोर पर रखी भगवान शिव की मूर्ति के पास गया। उसने मेज़ के चारों तरफ़ बैठे लोगों की तरफ़ पलटकर नहीं देखा। वो भगवान के चरणों की तरफ़ देखता रहा। फूलों और बेलपत्रों को देखता रहा जो वहाँ रखे थे। जलती हुई अगरबत्ती की राख को देखता रहा। काफ़ी देर बाद वो मुड़ा और असलान की तरफ़ देखा। 'कल तुम और तुम्हारे आदमी बिल्कुल आगे होंगे। तुम एक अलग इकाई बनाओगे, और मेरे मुख्य पैदल सैनिक तुम्हारी मदद करेंगे। तुम्हें तुर्कों के केन्द्र पर आक्रमण की अगुवाई करने का सम्मान मिलेगा।'

असलान ने हामी भरते हुए सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया। *सुहेलदेव की यही पहचान है। दयालु। लेकिन व्यावहारिक।*

असलान जानता था कि उसे और उसके सैनिकों को मार डालना सुहेलदेव के लिए सबसे आसान है। लेकिन साफ़ तौर पर वो ऐसा नहीं करना चाहता था। क्योंकि शायद वो मानता था कि असलान और उसके आदमी निर्दोष हैं। लेकिन वो उन्हें कैदी की तरह रखना भी नहीं चाहता था। उसे उनकी पहरेदारी के लिए अपने आदमी तैनात करने पड़ेंगे; वो आदमी जिनकी ज़रूरत लड़ाई में होगी। और वो असलान और उसके आदमियों को अलग रखना भी नहीं चाहता था। अगर वो गद्दार निकले, तो वो यहाँ से भारतीय युद्ध पक्ष को भारी नुक़सान पहुँचा सकते थे। इससे कहीं बेहतर है कि असलान और उसके आदमियों को आगे कर दिया जाए। केन्द्र में, जहाँ ज़्यादातर लड़ाई होगी। इसे एक सम्मान समझा जाएगा। और अगर वो गद्दार भी निकले तो उस स्थिति से वो भारतीय पक्ष को बहुत कम नुक़सान पहुँचा सकेंगे।

दयालु। लेकिन व्यावहारिक।

असलान खड़ा हुआ और सुहेलदेव को सलाम किया। 'मेरे आदमी और मैं आपको निराश नहीं करेंगे, महाराज।'

अध्याय 30

सूर्य उदय हुआ और ऐसा लगा कि आकाश गुस्से से लाल हो गया हो। इतने तड़के शायद ज़्यादातर लोग बिस्तर से भी नहीं उठते होंगे, लेकिन, उस दिन दो विशाल सेनाएँ युद्ध के लिए तैयार थीं। तुर्क सेनाओं के असफल हमले को दो दिन बीत गए थे। सुहेलदेव को यह भी सूचना मिली थी कि तुर्कों की योजना थी कि वे भारतीय सेना के हमले को बाधित करने के लिए अपनी सेना के सामने गायों को रखेंगे ताकि विपक्षी सेना के हिन्दू सैनिक एहतियात बरतें कि कहीं वे अपने पूजनीय पशु को चोट न पहुँचा दें। उसने गोवर्धन के नेतृत्व में तुर्कों के बंधक सभी मवेशियों को आज़ाद करने के लिए पिछली रात एक छापेमार दस्ता तुर्क खेमे में भेजा था। गोवर्धन और उसके साथी योद्धा इस कार्य में सफल रहे थे। तुर्क सेना के सारे दांव-पेंच विफल हो गए थे। अब बारी थी खुली जंग की।

लेकिन रोशनी की पहली किरण से भी पहले सभी सैनिक जाग गए थे। उनको इस बात का अहसास था कि यह दिन उनके जीवन का आख़िरी दिन भी हो सकता है। लेकिन, उन्होंने अपनी तैयारियों पर इन ख्यालों को हावी नहीं होने दिया। अनुभवी सैनिकों ने जो भी खाना मिला उसे जल्दी-जल्दी मुँह में ठूँस लिया। अपने अनुभव से वे जानते थे कि दिन लम्बा और थकाने वाला होगा और इसलिए उन्हें अपने शरीर में ऊर्जा को संचित करके रखना होगा। विशेषरूप से तब जब दिन चढ़ेगा और गर्मी अपना प्रचंड रूप दिखाएगी। कई युवा सैनिक रोमांचित थे, या फिर घबराए हुए—या दोनों—कि उनकी भूख ही मर गयी थी। उन्होंने अनमने मन से भोजन किया।

सबने मिलकर प्रार्थना की। जंग के मैदान पर कोई भी नास्तिक नहीं होता। किसी ने जीत की दुआ माँगी, तो किसी ने गौरव की। कुछ ने ईश्वर से उनके प्राणों की रक्षा करने के लिए प्रार्थना की, तो बाक़ियों ने अपने प्रियजनों से दोबारा मिलने की विनती की।

फिर आदेशों का एलान हुआ और सैनिक तुरन्त अपनी-अपनी जगह पर तैनात हो गए। तीरन्दाज़ों ने बाज़ुएँ खोलने के लिए कमान को आज़माया। बाक़ी दस्ते ने गर्दन, पीठ और कंधों की वर्जिश की। इस बड़े मैदान में हल्की हवा चलने लगी,

जो चेहरों को सहला रही थी, और झंडों को तान रही थी। असहनीय गर्मी को थोड़ा कम कर रही थी।

तभी शाही खेमे से बख्तरबन्द सुहेलदेव बाहर आया। हथियारों से लैस। साहस से भरपूर। युद्ध के लिए तैयार।

तोशानी, गोवर्धन, अब्दुल और संघमणि उसका इन्तज़ार कर रहे थे। अपने-अपने घोड़ों पर सवार। सुहेलदेव मुस्कराया और उसने अपना सिर हिला दिया।

जब सुहेलदेव का घोड़ा लाया गया तो वो मुड़ा। वो जल्दी से घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया। बाक़ी लोग उसके पीछे चलने लगे।

वे सभी चुपचाप चल रहे थे। मैदान-ए-जंग की ओर।

असलान पहले से अग्रिम पंक्ति पर मौजूद था। उसकी नज़र सबसे पहले घोड़े पर सवार राजा पर पड़ी थी। और उसने जय-जयकार की।

अपने बहादुर राजा को देखकर भारतीयों की गर्जना और तेज़ हो गई।

'सुहेलदेव!'

'सुहेलदेव!'

'सुहेलदेव!'

सुहेलदेव ने अभिनन्दन में अपना हाथ जैसे ही उठाया, सेना शान्त हो गई।

'साथियो,' सुहेलदेव की आवाज़ गरजी! उसने युद्ध के मैदान में दूसरी ओर जुटे तुर्कों की ओर इशारा किया। 'इन दानवों ने सोमनाथ जी के मन्दिर पर हमला किया! हमारे सबसे पवित्र धर्मस्थल को इन्होंने अपवित्र किया है! इन हैवानों ने सोमनाथ जी की भव्य प्रतिमा को भी नहीं छोड़ा!'

भारतीयों ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं, उनमें क्रोध और प्रतिशोध की लहर दौड़ गई।

'आप में से कितने शैव हैं?!'

क़रीब एक तिहाई सैनिकों की तरफ़ से 'हर-हर महादेव' की जयकार गूँजी।

'आज हम अपने ईश के तिरस्कार का बदला लेंगे।' सुहेलदेव गरजा। 'इन शैतानों ने पेशावर में भगवान राम के मन्दिर को तहस नहस कर दिया। हमारी सेना में कितने वैष्णव हैं?'

क़रीब एक तिहाई सैनिकों की तरफ़ से 'जय श्री राम' और 'जय श्री कृष्ण' की जयकार गूँजी।

'आज हम उनका भी प्रतिशोध लेंगे। इन दुष्टों ने बौद्ध मठों, सूफ़ी मज़ारों, और माँ की शक्तिपीठों को भी बर्बाद कर दिया। आप में से कितने इन महान धर्मों के अनुयायी हैं?'

अब 'जय श्री बुद्ध', 'अल्लाहु अकबर' और 'जय माँ शक्ति' की हुँकार सुनाई दी।

'आज हम इन सबका बदला लेंगे!' सुहेलदेव अपने घोड़े से झुका और अपनी मुट्ठी में मिट्टी लेते हुए कहा, 'उन्होंने इस धरती का तिरस्कार किया है। उन्होंने भारत माँ का तिरस्कार किया है। आप में से कितने भारत माता के भक्त हैं?'

इस बार पूरी सेना ने एकजुट होकर कहा, 'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!' सुहेलदेव ने उनका उत्साह बढ़ाया।

तोशानी, गोवर्धन, अब्दुल, संघमणि और असलान ने भी उनका साथ दिया। 'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

सुहेलदेव ने अग्रिम पंक्ति का मुआयना किया। उसकी बाँह उठी, मुट्ठी तनी थी। उसके वफादार सिपाही बार-बार जयकार कर रहे थे।

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

सुहेलदेव ने अपने माथे पर मिट्टी से तिलक लगाया और फिर सेना को शान्त होने का आदेश दिया। 'आज से हज़ार साल बाद, कवि आज के दिन के बारे में गाथाएँ सुनाएँगे...लेखक इस शौर्य के सम्मान में गाथाएँ लिखेंगे...हज़ार साल बाद भी इस पवित्र धरती पर रहने वाले लोग रुककर, आश्चर्यचकित हो उन वीर गाथाओं को सुनेंगे जो आज यहाँ रची जाएँगी...वो भारत माँ की गर्भ से जन्मे इन शूरवीरों को याद करेंगे। वो याद रखेंगे कि कैसे भारत माँ के इन बहादुर बेटों ने मानव इतिहास के सबसे निर्दयी हत्यारों से उसकी रक्षा की थी!'

सेना में बिल्कुल ख़ामोशी थी।

'आज से हज़ार साल बाद भी वो भारतीय, अपने उन पूर्वजों की याद में सम्मान से खड़े होंगे, जिन्होंने आजादी की रक्षा के लिए देवताओं की तरह युद्ध किया। वो आपके लिए सम्मान में खड़े होंगे। वो उन महान योद्धाओं के सम्मान में खड़े होंगे, जिन्होंने बहराइच के युद्ध में लड़ाई की और जीत हासिल की।'

सुहेलदेव के वचन से सेना में जोश और जीत के जज़्बे की लहर दौड़ गई।

फिर सुहेलदेव ने आवाज़ धीमी की। 'अब हमें इन कहानियों को असलियत में बदलना है!'

'जीतेंगे हम!' तोशानी ने कहा

'जीतेंगे हम!' सेना ने स्वर में स्वर मिलाते हुए कहा।

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

सुहेलदेव वापस उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसके उप-सेनापति प्रतीक्षा कर रहे थे। उसका आदेश सीधा-सादा था: 'अपनी-अपनी जगह पर।'

ज़्यादा तुर्क घुड़सवार दोनों कोनों पर तैनात थे, बिल्कुल वैसा ही जैसा असलान ने पूर्वानुमान लगाया था। ऐसा लगा कि तुर्कों ने बहुत कम सैनिकों को बाद के लिए बचाकर रखा था।

'हमारे गुप्तचरों ने अच्छी सूचना दी है...कन्नौज की सेना आज हमारे ख़िलाफ़ नहीं लड़ेगी,' तोशानी ने कहा। अब्दुल, गोवर्धन और वो घोड़ों पर सवार थे और सुहेलदेव के साथ मिलकर अर्धगोले की आकृति में खड़े थे। तोशानी ने बात आगे बढ़ाई। 'ख़बरों के मुताबिक, कन्नौज में लोगों ने विद्रोह कर दिया है। वहाँ की प्रजा हरसरन में नरसंहार और वृषभ जी की मृत्यु से क्रोधित हो गई है। लोगों के ग़ुस्से को शान्त करने के लिए अजीतपाल को वापस लौटना पड़ा, नहीं तो मक़सूद को रसद की आपूर्ति पर ख़तरा हो सकता था।'

सुहेलदेव ने गम्भीरता से सिर हिलाते हुए कहा, 'हम इसके बारे में बाद में विचार करेंगे।'

'लेकिन, मनोहरगढ़ की सेना यहाँ मौजूद है। सुना है कि राजा जयचन्द, मक़सूद के साथ सेना की अगुवाई कर रहा है,' तोशानी ने कहा।

'हमने गुरिल्ला युद्ध में उनकी फौज को पहले कई बार पस्त किया है,' गोवर्धन ने अपने दूर के रिश्तेदार की चुटकी लेते हुए कहा, 'वो पहली बार हमारा सामना करने का साहस जुटा पाए हैं।'

सुहेलदेव ने अब्दुल और गोवर्धन की तरफ़ देखा। 'तुम्हें पता है कि तुम लोगों को क्या करना है।'

अब्दुल ने सुहेलदेव को गले लगाते हुए कहा, 'आज अल्लाह हमारा साथ दे, महाराज।' फिर उसने तोशानी और गोवर्धन की तरफ़ देखा और जंग के लिए निकल पड़ा।

गोवर्धन ने भी सुहेलदेव को गले लगाया, 'श्री राम हमें जीत की राह दिखाएँ।' फिर उसने तोशानी की ओर देखा और उसके हाथों को थाम कर कहा, 'हे वीरांगना, इन दरिन्दों को नरक पहुँचा देना।'

तोशानी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'अरे, अगर तुम किसी को छोड़ोगे तब तो!'

गोवर्धन हँसा और फिर वो भी अपने घोड़े को ऐड़ लगाकर चला गया।

अब्दुल बाईं ओर से आक्रमण की बागडोर संभाल रहा था, जबकि गोवर्धन को दाहिनी ओर की सेना का ज़िम्मा दिया गया था। दोनों अपनी-अपनी जगहों पर पहुँच गए और सुनिश्चित किया कि उनके घुड़सवार पूरी तरह तैयार हैं।

दूसरी ओर, तुर्क पक्ष में, मक़सूद ने विरोधियों का निरीक्षण किया और उसके माथे पर शिकन सी आई। अब्दुल और गोवर्धन की टुकड़ियों में ज़्यादातर पैदल सैनिक और तीरन्दाज़ थे और सहयोग के लिए थोड़े से ही घुड़सवार थे। सुहेलदेव के घुड़सवारों का ज़्यादातर हिस्सा बीच में तैनात था।

मक़सूद ने हैरत भरी आवाज़ में कहा, 'ऐसा लग रहा है कि सुहेलदेव उसकी दोनों छोर की टुकड़ियों को नेस्तनाबूद करने के लिए मुझे न्योता दे रहा है। आख़िर वो सोच क्या रहा है?'

‘उस मूर्ख के पास युद्ध का कोई अनुभव नहीं है। जंगल में कुछ भिड़न्तों के बल पर वो अपने आप को महान सेनापति मानने लगा है,’ मनोहरगढ़ के राजा जयचन्द ने मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा।

पर किसी भी अनुभवी सेनापति की तरह, मक़सूद, अपने विरोधी को कभी कम नहीं आंकता था। उसके सामने एक ऐसा योद्धा था, जिसने कई बार अपने आप को रणनीति में माहिर साबित किया था। लेकिन अभी उसे सुहेलदेव की योजना समझ नहीं आ रही थी।

‘इस पहेली को सुलझाने का सिर्फ एक ही तरीक़ा है,’ मक़सूद ने अपने आप से कहा। फिर उसने अपनी अग्रिम पंक्ति की ओर मुड़ते हुए कहा, ‘घुड़सवारों को दोनों छोर से पूरी ताक़त से आक्रमण करने का आदेश दो। इन काफ़िरों को कुचल दो और उन्हें घेर लो।’

बिगुल बजा दिए गए, झंडे लहरा दिए गए और आदेश गूँज उठे। कुछ मिनट बाद, ज़मीन कांप उठी जब तुर्कों की घुड़सवार सेना हरकत में आई। जब वो तुलनात्मक रूप से कमज़ोर अपने दुश्मनों पर हमला करने के लिए आगे बढ़ रहे थे, ऐसा लग रहा था कि नरसंहार होकर रहेगा।

अपने आदमियों की तरफ़ कूच करते हुए तुर्क घुड़सवारों को देखकर अब्दुल मन ही मन मुस्कुराया। उसने थोड़ी देर के लिए अपनी आँखें बन्द कीं, और अपने-आप से दबी ज़बान में कहा, ‘अल्लाहु अकबर!’ फिर उसने आँखें खोलीं और उलटी गिनती शुरू कर दी।

अचानक, तुर्क फौज का एक घोड़ा, दर्द से हिनहिनाया और ज़मीन पर ढेर हो गया। फिर दूसरे के साथ भी कुछ वैसा ही हुआ, पर गिरने के बजाय वो एक और घोड़े से जा टकराया। उन घोड़ों के टकराने की आवाज़ इतनी ज़ोरदार थी कि वो बाक़ी घोड़ों की टाप और युद्ध की हुँकार के बीच भी सुनाई दी। दोनों घोड़े और उसके सवार टूटी बाँहों और कुचली हड्डियों के ढेर में बदल गए। स्तब्ध तुर्कों के सामने तो फिर घोड़े एक-एक करके दम तोड़ने लगे।

आतंकित होकर मक़सूद अपने एक अफ़सर की तरफ़ मुड़ा। ‘जाओ, जाकर देखो कि आख़िर हो क्या रहा है!’

यह रहस्यमयी घटना नतीजा थी सुहेलदेव के उस आदेश का जिसे पिछली रात ही अंजाम दिया गया था। उसके सैनिकों ने जंग के मैदान पर ख़ास चार नुकीले कोने वाली, सितारे जैसी कीलें बिखेर दी थीं। ये कीलें सुहेलदेव के राज्य में लोहे के औज़ार बनाने वाले कारीगरों ने बनाई थीं। इनकी रचना इस तरह की गई थी कि सितारे का एक नुकीला सिरा हमेशा ज़मीन से उठा हुआ होगा। यह जाल आसान पर असरदार था और तुर्क फौज इसमें फंस गई थी। सुहेलदेव का यह जाल बहुत दूर तक फैला नहीं था, शुरुआती घुड़सवारों पर हुए इसके असर ने पूरी घुड़सवार फौज का रास्ता ही रोक दिया था। उन्हें अपने घोड़ों को ऐन वक़्त पर रास्ते से हटाना पड़ा था, लेकिन जो घुड़सवार ऐसा नहीं कर पाए, वे भी गिरते हुए घोड़ों के साथ टकराकर गिरते चले गए, उनमें से कुछ घोड़े अपने पैरों पर खड़े होने के लिए जूझ रहे थे और दर्द से हिनहिना रहे थे।

जब दोनों तरफ़ से तुर्कों का हमला रुक सा गया, सुहेलदेव ने अपने दाएँ हाथ को पहले उठाया और फिर नीचे गिराया। कुछ पलों बाद, सैकड़ों तीरों के हवा में उड़ने की आवाज़ सुनाई दी जो दुश्मन घुड़सवारों पर बरस रहे थे। तुरन्त ही फिर तीरों की दूसरी बारिश हुई। फिर एक और। और फिर वो बारिश होती रही।

धारदार तीर घोड़ों पर सवार तुर्क सैनिकों के चमड़े के कवच को छेद रहे थे। केवल अफ़सरों के पास धातु के कवच थे, जो इन तीरों को रोक सकते थे। आतंकित जानवरों और आदमियों की चीख़-पुकार फिर गूँज उठी जब उन पर निर्ममता से मौत और तबाही बरसने लगी।

अपने सैनिकों को टुकड़े-टुकड़े होते देख मक़सूद बौखला गया। जिन घुड़सवारों के दम पर उसने जीत की रणनीति बनाई थी, उनकी लाशें बिखर रही थीं, जबकि अभी किसी पक्ष ने तलवार भी नहीं चलाई थी। ग़ुस्से में वो गरजा, 'वापस बुलाओ उनको!'

जब उसके आदेश का कोई असर नहीं हुआ तो उसने देखा कि उसके पास खड़ा अफ़सर मैदान की तरफ़ देख रहा है, वो फटी निगाहों और खुले मुँह से अपने सैनिकों को मारे जाते हुए देख रहा था। मक़सूद ने ग़ुस्से में उस अफ़सर को एक घूँसा मारा, और उसका जबड़ा तोड़ दिया।

मक़सूद के पास खड़े सभी लोगों की निगाहें उसकी तरफ़ घूम गईं। 'अगर मुझे अपना आदेश दोहराना पड़ा तो उसकी क़ीमत उस आदमी को अपने सिर से चुकानी पड़ेगी! अब, उन्हें वापस बुलाओ।'

एक बार बिगुल बजे और थके-हारे घोड़े और उनके सवारों की टोली, अपने खेमे की ओर लौटने लगी। तुर्कों को वापस जाते देख अब्दुल मुस्कुराया और अपने पैदल सैनिकों की तरफ़ मुड़ा। 'उनके पीछे जाओ। पर कीलों को पार मत करना।'

दूसरे पक्ष की तरफ़, गोवर्धन भी अपने जवानों को वही निर्देश दे रहा था।

मक़सूद पागलों की तरह चारों ओर देखने लगा जब उसे सुहेलदेव का मनसूबा समझ आया। 'दोनों छोर से हमारे दस्ते पीछे मुड़ रहे हैं, अब सुहेलदेव हम पर बीच से वार करने की कोशिश करेगा,' मक़सूद ने अपने आप से कहा और आने वाली तबाही से बचने की तरकीब ढूँढ़ने लगा। अचानक उसके चेहरे पर चमक आ गई।

पीछे लौट रहे तुर्कों पर हमला करने वाले सैनिकों की अगुवाई गोवर्धन कर रहा था। 'कीलों की लकीर को पार मत करना,' गोवर्धन अपने सैनिकों से बार-बार यही बात कह रहा था, जब उसके सैनिक भाग रहे तुर्कों को मारने में लगे थे। उसने देखा कि एक सैनिक अपने उत्साह में उसके आदेश की अवहेलना करने वाला है और उसने अपनी ढाल पर अपनी गदा ज़ोर से टकराई।

'जिसने भी मेरे आदेश की अवेहलना की, उसे मैं मार डालूँगा,' वो चीख़ा, और हवा में अपनी गदा लहराई। सैनिक रुक गए, और उनमें से कुछ असन्तोष के साथ तुर्कों को भागते देखने लगे।

पीछे से किसी के खांसने की आवाज़ आई। गोवर्धन मुड़ा और पाया कि एक युवा अफ़सर भौंचक्का होकर उसकी तरफ़ देख रहा है।

'क्या है?' उसने ग़ुस्से में पूछा।

युवा अफ़सर ने सन्देह भरी आवाज़ में पूछा, 'सरदार, मुझे माफ करें, लेकिन दुश्मन इस वक़्त मैदान छोड़कर भाग रहे हैं। हम उन्हें ख़त्म क्यों नहीं कर देते?'

इससे पहले कि गोवर्धन इस सवाल का जवाब दे पाता, तुर्कों की ओर से एक बार फिर बिगुल बजने की आवाज़ आई। गोवर्धन उस ओर मुड़ा और फिर उसके मुँह से भद्दी गाली निकली।

सुहेलदेव की सेना की बाईं टुकड़ी की तरफ़ इशारा करते हुए गोवर्धन ने कहा, 'इस वजह से'।

अब्दुल भी अपनी टुकड़ी को वही हिदायत दे रहा था। पर घुड़सवारों का बचाव करने के लिए तुर्क तीरन्दाज़ लगातार तीरों की बौछार कर रहे थे और इसी में से एक अब्दुल की बाईं आँख में जा लगा। चोटिल अब्दुल अपने घोड़े से गिर गया, और उसके गिरते ही, उसके सैनिकों ने सारी हिदायतों को भुलाते हुए, तुर्कों का पीछा करना शुरू कर दिया। वे कीलों से बचने के लिए नीचे गिरे तुर्क घोड़ों और सैनिकों पर चढ़कर जाने लगे।

इस नज़ारे से मक़सूद की डूबती उम्मीद को एक नया उफान मिला। क़िस्मत ने उसे एक मौक़ा दिया था और वो उसका फायदा उठाने जा रहा था।

'वापस घूम जाओ,' मक़सूद ने अपने घुड़सवारों को आदेश देते हुए कहा, 'तुम्हें कोई ख़तरा नहीं है। फिर से हमला करो। जाओ और उन काफ़िरों को ख़त्म कर दो। वो सादे मैदान पर घुड़सवारों के सामने टिक नहीं सकेंगे।'

तुरन्त आदेश का पालन हुआ।

घुड़सवारों ने अपना रुख पलटा। शिकार अचानक शिकारी बन गए और उन भारतीय सैनिकों पर हमला बोल दिया जो उनका पीछा कर रहे थे। थोड़ी ही देर पहले हुई बेइज़्ज़ती के बाद बदले की आग ने उनमें और ज़्यादा जोश भर दिया था।

उनके घुड़सवारों को अब किसी कील का डर नहीं था और अपने सैनिकों की मौजूदगी में सुहेलदेव के तीरन्दाज़ भी बेअसर थे क्योंकि उनके तीरों का निशाना अपने ही सैनिक बन सकते थे। मुक़ाबला अचानक एकतरफ़ा लगने लगा। कुछ ही पलों में, सुहेलदेव की बाईं टुकड़ी छितरा गई थी। जब वो सैनिक पीछे लौटने की कोशिश कर रहे थे, उनमें से कई को टुकड़े-टुकड़े कर डाला गया।

सुहेलदेव इस नाटकीय पलटवार को देखकर चिन्तित हो गया। 'इससे पहले कि ये टुकड़ी पूरी तरह ख़त्म हो जाए, हमें उस छोर को मज़बूत करना होगा!'

तोशानी और उसके सैनिक सबसे नज़दीक थे। उसने अपने जवानों को कूच करने का संकेत दिया और उनकी अगुवाई करने के लिए चल पड़ी। बाएँ पक्ष को मज़बूत करने के लिए और टुकड़ियाँ पीछे-पीछे आने लगीं।

मक़सूद ने रकाब पर खड़े होकर पूरे मैदान का मुआयना करते हुए कहा, 'हालात पहले से बेहतर हैं। पर दुख की बात है कि दाईं ओर तैनात टुकड़ी का हाल हम वैसा नहीं कर पाए, जैसा हमने बाईं टुकड़ी का किया है।'

'उस तालाब ने उन्हें महफ़ूज़ रखा हुआ है,' करीम ने कहा, 'नहीं तो हम उन्हें पीछे से घेर कर वार कर सकते थे।'

तालाब का ज़िक्र आते ही मक़सूद को अचानक महसूस हुआ कि वो प्यासा है। उसने कई घंटों से पानी नहीं पिया था, और पसीने से वो इस कदर भीग चुका था कि बख्तर के नीचे उसके कपड़े बदन से चिपक गए थे।

'थोड़ा पानी लाओ,' उसने आदेश दिया। तुरन्त ही उसे पानी की थैली थमाई गई जिसमें से उसने एक बड़ा घूँट लिया। 'इस देश में तो शायद जहन्नुम से भी ज़्यादा गर्मी है।' लेकिन, तभी उसका माथा ठनका।

'गर्मी अपने शबाब पर है, और इतनी गर्मी में तो तालाब में पानी कम हो गया होगा।'

मक़सूद करीम की ओर मुड़ा, 'किसी को तालाब तक भेजो और पता लगाओ कि आख़िर पानी कितना गहरा है।'

करीम को इल्म था कि जिस भी सैनिक को वो भेजेगा, वो बलि का बकरा बनेगा। अगर पानी गहरा हो, तो वो डूब जाएगा, लेकिन अगर ना हो, तो सुहेलदेव पर एक और छोर से हमला करने की गुँजाइश बन जाएगी।

पर उसे इस बात का भी इल्म था कि इन हालात में मक़सूद से बहस करना मुनासिब नहीं था।

आदेश दिए गए। और एक तुर्क सैनिक आदेश का पालन करने के लिए तैयार हुआ। जल्दी-जल्दी अपना बख्तरबन्द उतारकर वो तालाब की ओर चल पड़ा। घोड़े के साथ उसने पानी में उतरने की कोशिश की, पर घोड़ा हिचकिचा गया।

अफ़सर ने घोड़े को ऐड़ लगाई और पीछे से दूसरे सैनिक उसे धक्का देने लगे। आख़िरकार, घोड़ा बेमन से पानी में उतरा। कुछ क़दम लेते ही, पानी उसके घुटनों तक पहुँच गया और फिर कंधों तक।

घोड़े को देख रहे मक़सूद ने सोचा, *यह तरकीब काम नहीं आएगी।*

तभी उसने गौर किया कि पानी अब और ऊपर नहीं आ रहा था जबकि घोड़ा झील में चलता जा रहा था। जब वो और आगे बढ़ा, पानी घटने लगा और पहले उसकी छाती तक आया, फिर उसके घुटनों तक।

मक़सूद के आदेश तुरन्त सभी तक पहुँचाए गए। 'घुड़सवारों से कहो कि तालाब के दूसरी ओर पहुँचें। फिर वहाँ से एक बार फिर पानी को पार कर दुश्मनों पर पीछे से वार करें।'

आदेश जारी होते ही, सैनिक उसे अंजाम देने निकल पड़े।

तुर्क सेना में इस हलचल को गोवर्धन दूर से देख रहा था और उलझन में था। तभी अचानक उसे तुर्कों की चाल समझ आ गई।

'पीछे मुड़ो, पीछे मुड़ो,' गोवर्धन चीख़ा, 'उन्हें पीछे से हमला करने का मौक़ा नहीं देना। इस बार जब वो झील को पार करें, तो हमारी पीठ की जगह उन्हें हमारी तलवार दिखनी चाहिए।'

भारतीय सैनिक अपने सेनापति के आदेशानुसार अपनी-अपनी जगह लेने लगे। तीरन्दाज़ भी ये पक्का करने में लग गए कि जब तुर्क सैनिक उनके दायरे में आएँ तो उनका स्वागत वो तीरों की बारिश से करें।

सुहेलदेव को गोवर्धन की चाल देखकर सन्तुष्टि हुई। गोवर्धन ने ठीक वैसा ही किया था, जैसा इन हालातों में सुहेलदेव स्वयं करता। फिर उसने अपना ध्यान अपने सामने लगा दिया।

सुहेलदेव को छकाकर हमला करने की कोशिश में और अपनी बाईं घुड़सवार टुकड़ी को झील पार करने का आदेश देकर, मक़सूद ने बीच वाली और बाईं टुकड़ी के बीच काफ़ी खुली जगह बना दी थी। इस खुली जगह को भरने का मतलब होता अपने सैनिकों की स्थिति को कमज़ोर करना।

अभी तक, सुहेलदेव ने अपने ज़्यादातर घुड़सवारों को युद्ध में उतारा नहीं था। अब ख़ाली जगह देखकर उसे न्योता सा मिल रहा था।

मैं उस इलाक़े पर हमला कर सकता हूँ और फिर सीधा मक़सूद की सेना के बीच तक पहुँच सकता हूँ।

उसने चारों तरफ़ देखा और पाया कि अग्रिम पंक्ति में असलान और उसके सैनिक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं। असलान को लगा कि सुहेलदेव की निगाहें उस पर हैं और उसने उसकी तरफ़ सवालिया नजरों से देखा। सुहेलदेव ने उसे पास आने का इशारा किया।

'क्या तुम्हें वो दिख रहा है, जो मैं देख पा रहा हूँ?' सुहेलदेव ने पूछा जब असलान पास आ गया। असलान ने हामी भरते हुए सिर हिलाया लेकिन कुछ कहा नहीं।

'यही समय है,' सुहेलदेव ने असलान से कहा। 'दुश्मन के बीचोबीच हमले की अगुवाई करो।'

असलान ने अपना सिर झुकाया और अपने हाथ से अपने सीने को छुआ। 'यह सम्मान की बात होगी।'

फिर वो तुरन्त अपनी छोटी टुकड़ी के पास पहुँचा। जैसे ही उसके सैनिकों को आदेश मिला, उनकी तरफ़ से उत्तेजना भरी गर्जना हुई। और क़रीब-क़रीब तुरन्त ही, आक्रमण शुरू हो गया। असलान का दस्ता दुश्मन की तरफ़ तेज़ी से दौड़ पड़ा। सुहेलदेव की मध्य घुड़सवार सेना थोड़ी दूरी बनाकर उनके पीछे थी।

'वे आ रहे हैं,' करीम ने कहा जब विपक्षी घुड़सवार सेना उनकी तरफ़ आ रही थी।

मक़सूद ने गम्भीरता से सिर हिलाया। वो अच्छी तरह जानता था कि अगले कुछ मिनट इस युद्ध का नतीजा तय कर देंगे—इस पार या उस पार। 'केन्द्र में हर क़ीमत पर बने रहना,' वो पूरी ताक़त से चिल्लाया। 'ना पीछे हटना है, ना हथियार डालना है, ना कैदी बनना है!'

आदेश उसकी सेना में ऊपर-नीचे हर सैनिक तक पहुँचा दिए गए और तुर्क भारतीय केन्द्रीय टुकड़ी के उन पर हमले का इन्तज़ार करने लगे।

अध्याय 31

तोशानी ने क्रूरतापूर्वक अपनी तलवार लहराई और उस गज़नवी सैनिक की गर्दन काट दी, जो ज़मीन पर गिरे एक भारतीय पर हमला करने ही वाला था।

उस सिपाही का सिर कटा शरीर औंधे पड़े व्यक्ति के ऊपर जा गिरा। एक सिहरन के साथ, उसने उसे धक्का दिया और फौरन अपने पांवों पर खड़ा हो गया, वो कृतज्ञता से मुस्कराया।

उस व्यक्ति का चेहरा रक्त में डूबा हुआ था किन्तु पहचाना लग रहा था। तोशानी ने नज़रें तिरछी कीं और उसे समझ आ गया कि ये संघमणि था।

'क्या हुआ यहाँ ?' उसने पूछा। 'अब्दुल कहाँ हैं?'

संघमणि ने इनकार करते हुए सिर झटका। 'मैंने उसे एक तीर लगते हुए देखा था। ये बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है। मुझे नहीं मालूम उसका क्या हुआ।'

ओह, यहाँ पूरी तरह अव्यवस्था है, तोशानी ने सोचा। *लेकिन मैं शायद अभी भी स्थिति संभाल सकती हूँ।*

उसने चारों ओर देखकर स्थिति को समझा, फिर ज़ोर से चिल्लाकर बोली। 'पीछे हटो और एक जगह जमा हो जाओ! पीछे हटो!'

उसके सन्देशवाहक सैनिक आदेश पहुँचाने के लिए दौड़ गए।

तभी एक कर्कश आवाज़ सुनाई दी। 'इतनी जल्दी भी क्या है, मेरी जान?' ये एक तुर्क अफ़सर की आवाज़ थी जो कई दूसरे घुड़सवारों के साथ वहाँ पहुँच गया था। तोशानी शुरुआत में कई अंगरक्षकों के साथ चल रही थी किन्तु उनमें से अनेक या तो मारे गए थे या छितरा रही टुकड़ी को एकत्र करने के प्रयास में पीछे छूट गए थे।

तोशानी ने चारों तरफ़ देखा। वो बुरी तरह घिर चुकी थी।

देवी काली मुझ पर दया करें।

उसने अपने चेहरे पर निराशा नहीं आने दी। उसने अपनी तलवार की नोंक उस तरफ़ घुमाई जिस तरफ़ से उस अधिकारी की आवाज़ आई थी। 'मैं तुझे नर्क के दरवाज़े पर पहुँचाने की जल्दी में हूँ, कुत्ते।'

ग़ुस्से से दहाड़ते हुए तुर्क तोशानी की ओर लपका। जैसे ही तोशानी ने उसका वार रोका, तलवार टकराने की आवाज़ खनखना उठी, और तोशानी ने ज़ोर का झटका अपनी कलाई और कंधे पर महसूस किया।

वो आदमी दोबारा आक्रमण करने ही जा रहा था कि संघमणि ने उस पर भाले से हमला किया। उस आदमी ने इस हमले से तो किसी तरह अपने को बचा लिया किन्तु थोड़ी देर के लिए उसका ध्यान भटक गया। तोशानी ने फुर्ती से अपनी तलवार उसकी गर्दन में घुसा दी। घाव से ख़ून का फव्वारा फूट पड़ा और ख़ून से तोशानी का चेहरा और आँखें सराबोर हो गईं। उसने पलकें झपकाईं और चेहरे से ख़ून पोंछकर साफ़ देखने का प्रयास करने लगी।

अचानक उसे अपनी दाईं तरफ़ कुछ हरकत दिखाई दी। तोशानी ने इसे भांपकर अपनी तलवार उठाई, उसने हमला तो नाकाम कर दिया किन्तु दुश्मन की भारी-भरकम गदा उसके टोप से टकरा गई।

अचानक उसकी आँखों के सामने सफेद रोशनी की लकीर सी तैर गई और उसका टोप सिर से अलग हो गया। उसके कान में घंटियाँ बजने लगीं। सिर पर लगी चोट से वो इतनी स्तब्ध थी कि उसे समझ नहीं आ रहा था आसपास क्या हो रहा है। फिर भी वह हिम्मत जुटाकर लड़ रही थी और किसी तरह ख़ुद को बचा रही थी। तभी अचानक एक दूसरा घुड़सवार लपका और उस पर वार कर दिया। तोशानी को अपने चेहरे की दाईं तरफ़ भयानक दर्द महसूस हुआ, उसका शरीर निढाल हो गया और उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया।

एक तुर्क सैनिक भाला लेकर सुहेलदेव की ओर तेज़ी से बढ़ा, उसका निशाना राजा की छाती पर था। सुहेलदेव ने अपनी तलवार से भाले की नोंक को एक तरफ़ पलट दिया। भाला दूसरी ओर छितरा गया और जब घुड़सवार आगे आया तो सुहेलदेव ने अपनी तलवार से तुर्क का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसका सिर ज़मीन पर लुढ़क गया, लेकिन उसका धड़ घोड़े पर बाईं ओर लटक गया था और घोड़ा भागा जा रहा था, हर तरफ़ ख़ून फैलता जा रहा था।

सुहेलदेव के सैनिक तुर्कों पर इस कदर टूट पड़े थे जैसे हथौड़े की चोट होती है। तुर्क मध्य पंक्ति किसी तरह मोर्चा संभाले थी लेकिन वो नाम भर को थी।

किसी भी वक़्त वो टूटकर बिखर सकती थी।

महादेव आज हमें विजय का आशीर्वाद देंगे।

एक और घुड़सवार लपका, सुहेलदेव ने अपनी तलवार लहराई जो तुर्क के चमड़े के बख्तर को चीर गई, लेकिन उसके कंधे में धंस गई।

वो आदमी चिल्लाया और उसका घोड़ा भागने लगा। सुहेलदेव अपने घोड़े से गिरते-गिरते बचा, और उसके कंधे में दर्द की एक लहर सी उठी। उसने दुश्मन के शरीर में फंसी अपनी तलवार छोड़ दी और लगाम को कसकर पकड़ लिया।

असलान पास में ही लड़ रहा था। उसने देखा कि सुहेलदेव निहत्था हो चुका है। वो अब तक अपनी काठी में लगी दूसरी तलवार नहीं निकाल सका था। असलान ने उसकी ओर घोड़ा दौड़ाया लेकिन उसकी आँखें फटी रह गईं जब उसने देखा कि करीम सुहेलदेव पर हमला करने वाला है, करीम का भाला तैयार था। असलान सुहेलदेव को आगाह करने के लिए चिल्लाया लेकिन उसकी आवाज़ हंगामे में डूब गई।

सुहेलदेव इस ख़तरे से ऐन वक़्त पर संभल गया। करीम ने अपने भाले से जैसे ही उस पर आक्रमण किया, सुहेलदेव ने आख़िरी क्षण में अपनी ढाल से बचाव कर लिया। ढाल से टकराकर भाला टूट गया। लेकिन सुहेलदेव का भी सन्तुलन बिगड़ गया, उसके पूरे शरीर में झनझनाहट तैर गई। वो ज़मीन पर गिरने से पहले हवा में उछला।

करीम ने अपना बेकार हो चुका भाला एक ओर फेंका और अपनी तलवार निकाली। सुहेलदेव ने हड़बड़ाते हुए चारों ओर देखा और एक मृत सैनिक के शरीर के पास उसे एक बरछी दिखी। उसने बरछी खींची और तलवार से हमला करने को तैयार करीम की ओर उछाल दी। अपनी ओर बरछी को आते देखकर करीम ने अपने सिर को दूर झटका दिया, लेकिन तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। बरछी उसकी दायीं आँख को चीरकर सिर के पीछे से निकल गई थी, और वो तुरन्त मर गया था।

करीम का घोड़ा अभी भी दौड़ रहा था, और वो सुहेलदेव से टकराया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। उसका सिर ज़मीन से इतनी ज़ोर से टकराया कि वो गिरते ही बेहोश हो गया। उसे बेहोश देखकर एक तुर्क अधिकारी उसे ख़त्म करने ही जा रहा था।

'ओज़गुर, नहीं!' असलान चिल्लाया। वो ऐन मौक़े पर पहुँचा और अपनी तलवार से ओज़गुर के वार को रोक लिया।

ओज़गुर ने पहले निढ़ाल पड़े सुहेलदेव को देखा और फिर असलान को। वह गज़नी का वफादार सैनिक ज़रूर था लेकिन उसके दिल में असलान के लिए काफ़ी मुहब्बत और इज़्ज़त थी जिसे वो अभी भी उसके पुराने नाम सालार मसूद से ही पुकारता था। उसके चेहरे पर दुविधा साफ़ झलक रही थी।

'ये हमारा दुश्मन है, हुज़ूर!' ओज़गुर ने गुहार की।

'ये मेरा मित्र है!' असलान दहाड़ा। 'पहले तुम्हें मुझे मारना होगा।'

ओज़गुर क्षणभर को सकपकाया। इतना वक़्त असलान के शागिर्दों के लिए काफ़ी था कि वो मदद के लिए पहुँच सकें। ओज़गुर असलान से अलग होकर पीछे हट गया।

असलान ने राहत की सांस ली। वह ख़ुद को ओज़गुर से लड़ने को भी तैयार कर चुका था लेकिन इस बात से ज़्यादा ख़ुश होता कि ना लड़ना पड़े। तेज़ी से उसने सुहेलदेव को उठाया और घोड़े की काठी पर लाद लिया। वो अपने एक शागिर्द से बोला, 'महाराज को शिविर के अस्पताल में ले जाओ। जितने आदमियों की ज़रूरत हो उतने साथ ले जाओ। लेकिन ये हर क़ीमत पर सुरक्षित रहने चाहिए।'

'महाराज गिर गए हैं!'

असलान ने घूमकर देखा जब उसके कानों में सुहेलदेव के एक सैनिक की चीख़ सुनाई पड़ी।

'महाराज लौट आएँगे! लड़ते रहो!' वो ज़ोर से चिल्लाया। लेकिन वो देख रहा था कि सैनिकों के बीच अफवाह तेज़ी से फैल रही है और वे घबराए हुए हैं। हमला नाकाम होने का ख़तरा था।

'आओ, मेरे वीर योद्धाओं!' असलान दहाड़ा। 'जब तक हम ज़िन्दा हैं ये जंग ख़त्म नहीं होगी! अल्लाहु अकबर!'

उसके शागिर्द उसके चारों तरफ़ इकट्ठा हो गए और ज़ोर-ज़ोर से नारा लगाने लगे, 'अल्लाहु अकबर!'

'गज़नवी मुर्दाबाद!'

अपने साथियों को तुर्कों पर हमला करते देख, सुहेलदेव के सैनिक भी जुट गए। और 'हर हर महादेव' की हुँकार के साथ एक और हमला कर दिया।

इस हिस्से में भारतीय सैनिकों के आक्रमण की सूचना दूतों ने जाकर मक़सूद को दी। उसे पता था कि उस टुकड़ी की अगुवाई करीम कर रहा था। मक़सूद हैरान था कि करीम के रहते भी उसकी सेना भारतीयों को रोकने में नाकाम थी। सैनिक दूतों ने, समझदारी दिखाते हुए, करीम की मौत की सूचना मक़सूद को नहीं दी थी। वो जानते थे कि इस सूचना से तुर्क सेनापति टूट जाएगा।

मक़सूद ने अपने सैनिक इकट्ठा किए और उस ओर बढ़ चला जहाँ असलान और उसकी सेना कहर बरपा रही थी।

उस ओर जाते हुए, उसने एक सैनिक दूत को पुकारा और कहा, 'करीम से कहो कि वो मुझसे आकर मिले! मैं बताऊँगा कि अब क्या करना है।'

सैनिक दूत चुपचाप आँखें नीची करके चलता रहा।

कुछ क्षण बाद मक़सूद को समझ आया कि सैनिक दूत की तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया है। उसने उसकी आँखों में देखा, जिसमें जवाब साफ़ दिख रहा था।

करीम मर चुका था।

'वो कहाँ है? मुझे उसके पास ले चलो। '

'हुज़ूर, गुज़ारिश है कि इस वक़्त वहाँ ना जाएँ,' दूत गिड़गिड़ाया।

'मुझे उसके पास लेकर चलो!' मक़सूद पागलों की तरह चिल्लाया।

दूत ने सिर झुकाया और उस तरफ़ बढ़ चला जहाँ करीम पड़ा हुआ था। तुर्क सेना की एक टुकड़ी अपने सेनानायक के शरीर को दुश्मन के हाथ ना पड़ने देने की जद्दोजहद में जुटी थी। करीम का शरीर गज़नी के झंडे से ढंका हुआ था।

मक़सूद सैनिकों के बीच से गुज़रते हुए उस जगह पहुँचा। घोड़े से उतरा और झंडे के पास जाने लगा।

तुर्क सैनिक दूत गिड़गिड़ा रहा था, 'हुज़ूर, रहने दीजिए! मैं आपसे भीख माँगता हूँ...'

मक़सूद उसे नज़रअन्दाज़ करके वहाँ पहुँचा और झंडे को करीम के शरीर पर से खींच लिया। करीम के खूबसूरत चेहरे की घातक चोट से ऐसी बुरी हालत देखकर वो दर्द से चीख़ने लगा। घुटनों के बल बैठकर अपनी छाती पकड़ ली। उसके चेहरे पर आँसुओं की धारा बह रही थी।

ग़ुस्से और दुख ने उसकी आत्मा तक को छलनी कर दिया था। वह करीम के शरीर से लिपट गया और प्यार से उसके माथे को चूमने लगा।

मेरे महबूब, मैं तुमसे जन्नत में मिलूँगा।

फिर उसने करीम के क्षत-विक्षत चेहरे को वापस ज़मीन पर रख दिया। वह मुड़ा, अपने घोड़े पर चढ़ा, उसका चेहरा आसमानी बिजली की तरह तमतमा रहा था।

'काफ़िरों को मार डालो!' वो अपने सिपाहियों पर गरजा। 'इन सबको ख़त्म कर दो! एक भी ज़िन्दा बचकर ना जाने पाए!'

मक़सूद ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और उस तरफ़ चल पड़ा जहाँ भयानक लड़ाई छिड़ी हुई थी। जैसे ही वो क़रीब पहुँचा, उसने वहाँ अपने छोटे जुड़वां भाई को देखा। मक़सूद को एक दिन पहले ही पता चला था कि वो अभी तक जीवित है और भारतीयों से जाकर मिल गया है।

'मसूऽऽऽद!' मक़सूद दहाड़ा, उसका सारा ग़ुस्सा और दुख अब उसके भाई की ओर मुड़ चुका था। 'मुझसे लड़, धोखेबाज़!'

उसकी चीख़ पूरे मैदान में सुनाई दी। असलान ने सिर उठाकर देखा कि मक़सूद तेज़ी से उसकी ओर दौड़ा चला आ रहा है। उसके चेहरे पर भयंकर क्रोध दिख रहा था।

अचानक एक भारतीय तीर उसके घोड़े की टांग में आकर लगा। ठीक दाईं टांग के जोड़ के पास। घोड़ा अब पूरी तरह लाचार होकर मक़सूद को गिराकर ज़मीन पर लुढ़क चुका था। अपनी क़द काठी के हिसाब से मक़सूद ने बेहद फुर्ती दिखाई, थोड़ी दूर तक लुढ़कता हुआ गया, फिर अपने पांवों पर खड़ा हो गया और अपने बचाव के लिए ज़मीन पर पड़े एक सैनिक की तलवार और ढाल उठा ली।

असलान थोड़ा झिझका और फिर अपना घोड़ा आगे बढ़ाया। घोड़े से उतरकर अपने भाई के सामने खड़ा हुआ। उसके चेहरे पर खेद का भाव था किन्तु दृढ़ निश्चय भी साफ़ झलक रहा था।

'अगर हमें लड़ना है तो बराबरी से लड़ना चाहिए,' उसने कहा।

मक़सूद के चेहरे पर आँसू थे लेकिन आँखें ख़ून की तरह लाल थीं। 'तूने करीम को मारा!' मक़सूद दहाड़ा, उसकी आवाज़ उस आदमी की आवाज़ थी जिसके पास अब ज़िन्दा रहने की कोई वजह नहीं थी।

अपने भाई के साथ तमाम मतभेदों के बावजूद उसकी पीड़ा को वो महसूस कर रहा था। 'मैंने उसे नहीं मारा...और उसके साथ जो हुआ उसका मुझे अफसोस है।' वो सच कह रहा था। वो करीम को हमेशा पसन्द करता था क्योंकि करीम

हमेशा उसके भाई को अच्छा इंसान बनाने की कोशिश करता था। करीम उसका भी दोस्त था।

मक़सूद के चेहरे पर नफ़रत पसर आई। 'मैं बुतपरस्तों और काफ़िरों के इस जहन्नुम में एक को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा! शुरुआत तुझसे होगी!'

असलान ने अपने कंधे घुमाए और गर्दन को मोड़ा, अपने जोड़ों से तनाव कम करने की कोशिश की। और फिर लड़ाई के लिए ख़ुद को तैयार किया, अपने पांव पर हल्के से सन्तुलन बनाया और तलवार ऊपर उठाई।

भीतर ही भीतर, उसे मालूम था कि एक दिन उसकी जान अपने भाई से धर्म युद्ध में ही जाएगी।

'अल्लाहु अकबर!' असलान दहाड़ा। फिर जयकारा लगाया, 'हर हर महादेव!'

कुछ पलों तक दोनों भाई सतर्क होकर एक-दूसरे को चक्कर में घुमाते रहे। फिर मक़सूद ने दहाड़ के साथ आक्रमण किया।

मक़सूद ने अपनी तलवार असलान के सिर की ओर घुमाई जिसने उसे अपनी ढाल से रोक लिया। असलान के पलटवार को मक़सूद ने अपनी ढाल के सहारे नाकाम कर दिया। मक़सूद ने फिर वार किया, असलान ने झुककर वार बचाया। मक़सूद की तलवार का वार ख़त्म होते ही वह कुछ क्षण के लिए लड़खड़ा गया। असलान ने अपनी ढाल से उस पर हमला करके उसे गिरा दिया। मक़सूद थोड़ा लड़खड़ाया, लेकिन फिर तुरन्त अपने पांव पर खड़ा हो गया। अभी उसके हाथ में तलवार थी लेकिन उसकी ढाल हाथ से छूट चुकी थी।

मक़सूद ने गहरी सांस ली, ख़ुद को शान्त किया। फिर असलान पर ताबड़तोड़ आक्रमण कर दिए, जिनका बचाव असलान ने अपनी ढाल से किया। अचानक, मक़सूद ने अपने भाई के घुटनों पर ज़ोर से लात मारी। जब असलान लड़खड़ाया, उसके भाई ने ढाल का किनारा पकड़ा और आगे की ओर खींच लिया, साथ ही अपनी तलवार की मूठ से असलान के जबड़े पर वार किया।

थोड़ी देर के लिए स्तब्ध असलान के हाथ से तलवार छूटकर गिर गई। मक़सूद विजयी मुद्रा में दहाड़ा, असलान की ढाल को झटके से खींचा और ज़मीन पर फेंक दिया। आख़िरी वार के लिए उसने तलवार उठाई ही थी कि असलान ने उसकी कलाई पकड़ ली और कठोरता से उसे जकड़ लिया।

मक़सूद ने अपने भाई का गला जकड़ लिया और उसे दबाने की कोशिश करने लगा। दोनों तलवार के लिए लड़ रहे थे। असलान अपने भाई की जकड़ से छूटने की भरसक कोशिश कर रहा था लेकिन उसकी पकड़ बेहद मज़बूत थी। होश के कुछ पलों के रहते उसने अपनी उँगलियाँ मक़सूद की आँखों में गड़ा दीं।

मक़सूद दर्द से चिल्लाया और अपने सिर को पीछे की तरफ़ ले गया, जिससे असलान के गले पर उसकी पकड़ ढीली हो गई। असलान ने मक़सूद को धक्का दिया और पीछे हटकर ज़मीन पर गिरी अपनी तलवार तुरन्त उठा ली।

मक़सूद ने असलान के सिर की तरफ़ ताबड़तोड़ तलवार चलानी शुरू की। असलान ने बचाव करते हुए मक़सूद के जबड़े पर ज़ोरदार मुक्का मारा जिससे वो हिल गया।

मक़सूद ने अपने क़दम पीछे किए और फिर संभलने के लिए अपना सिर हिलाया। उसने मुँह में भर आए ख़ून को थूका, अपना मुँह पोंछा और ग़ुस्से से दहाड़ा। फिर उसने अपनी तलवार को बचाव की मुद्रा में रखा और अपने भाई को घूरकर देखा, वो अपने आप को संभालने के लिए गहरी सांसें ले रहा था।

असलान बिना हड़बड़ाए मक़सूद की तरफ़ बढ़ा, फिर अचानक हरकत में आया और अपनी तलवार उसकी तरफ़ बिजली की रफ्तार से धकेली ताकि उसे चौंका सके। लेकिन मक़सूद तैयार और चौकन्ना था। उसने असलान की तलवार का वार ऊपर की तरफ़ मोड़ दिया, फिर अपने भाई के पेट पर वार किया। असलान बिल्कुल सही समय पर पीछे की ओर हटा।

'हमारे उस्ताद एक ही थे, भाई,' मक़सूद मुस्कुराया। 'याद है?'

'हाँ। और मैं बेहतर शागिर्द था।'

'ऐसा तुम सोचते हो!'

'अपनी सांस लड़ाई के लिए बचाकर रखो,' असलान ने कहा, और एक के बाद एक कई तेज़ झटके और वार किए। मक़सूद ने उनका बचाव किया, लेकिन अपने जुड़वां भाई के घातक हमले से पीछे हटने पर उसे मजबूर होना पड़ा।

मक़सूद ये देख नहीं पा रहा था कि वो कहाँ जा रहा है, और वो एक लाश से टकराकर लड़खड़ाया और नीचे गिर गया। जैसे ही वो एक घुटने पर ऊपर उठा, असलान ने उसकी ओर ताक़त से तलवार लहराई। मक़सूद ने उसे अपनी तलवार की मदद से रोका, लेकिन उसकी पकड़ ढीली थी और असलान के वार की ताक़त से उसकी तलवार हाथ से छूट गई।

ग़ुस्से और हताशा में एक जानवर की तरह चीख़ते हुए, मक़सूद ने अपने कमरबन्द से एक कटार खींची और असलान पर झपटा, जबकि उसके भाई ने उस पर तलवार से हमला करने की कोशिश की। मक़सूद ने असलान के दाहिने हाथ को मज़बूती से पकड़ लिया, जिससे वो अपनी तलवार नीचे ही नहीं ला सका। असलान ने यही काम मक़सूद के दाहिने हाथ के साथ किया, और उसे कटार को ऊपर ले जाने से रोक दिया। दोनों भाइयों के माथे पर नसें उभर आईं जब वो एक-दूसरे से भिड़े हुए थे, दोनों अपनी पूरी ताक़त एक-दूसरे पर आज़मा रहे थे। हालांकि, धीरे-धीरे मक़सूद असलान को पीछे धकेलने में कामयाब हो रहा था। पहले एक क़दम, फिर एक और, फिर एक और।

असलान ने एकाएक रणनीति बदल ली। मक़सूद को ताक़त से हराने की कोशिश करने के बजाय, वो आगे की तरफ़ बढ़ा, एक पैर मक़सूद की टांग में फंसाया और उसे धक्का दिया। हतप्रभ मक़सूद ज़मीन पर लुढ़क गया। असलान ने उसकी कलाई पर ज़ोरदार लात जमाई और उसकी कटार हाथ से छूट गई।

एक बार फिर, मक़सूद ने ज़बरदस्त कलाबाज़ी दिखाई। वो ज़मीन से एक कमानी की तरह उछलकर खड़ा हो गया, अपनी बाँहों से अपने भाई की कमर को

लपेटा और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। जब असलान ने उठने की कोशिश की, मक़सूद ने उसकी गर्दन को एक हाथ से पकड़ा और दूसरे हाथ से एक बाँह को, उसे हवा में उठाया और उछाल दिया।

असलान ज़मीन पर धड़ाम से गिरा और उसकी सांस फूल गई। वो अपने घुटनों पर बैठकर जूझते हुए अपनी तलवार तलाशने लगा। मक़सूद उसकी तरफ़ दौड़ता हुआ आया और उसकी पसलियों में ज़ोरदार लात जमाई।

असलान दर्द से कराह उठा और दोहरा हो गया। मक़सूद ने उसे दोबारा लात मारने की कोशिश की लेकिन जैसे ही उसने अपना पैर ऊपर उठाया, असलान ने उसका पैर पकड़ा और ज़ोर से खींच दिया जिससे उसका सन्तुलन बिगड़ गया। जब मक़सूद ज़मीन पर गिरा, असलान उछलकर उसके ऊपर चढ़ गया। दोनों भाई उलटते-पलटते रहे, कुश्ती करते रहे जैसा एक समय वो मासूमियत से किया करते थे, जब वो छोटे बच्चे थे। लेकिन अभी, दोनों पर एक-दूसरे को फाड़ डालने का भूत चढ़ा हुआ था।

अन्त में मक़सूद को उसकी पीठ के बल लिटाकर असलान उस पर सवार हो गया। उनके टोप बहुत पहले ही गिर चुके थे और उनके चेहरे ख़ून से लथपथ और एक-दूसरे के नाखूनों से लगी ख़रोंचों से भरे थे। दोनों एक-दूसरे को हाथों से मार रहे थे, सालों का भरा हुआ ग़ुस्सा और दुश्मनी अब बाहर आ रही थी।

असलान ने अपने भाई के चेहरे पर उल्टे हाथ का तेज़ प्रहार किया। मक़सूद के सिर का पिछला हिस्सा ज़मीन से टकराया। गरजते हुए, उसने अपना धड़ उठाते हुए असलान के गाल पर एक ज़ोर का घूँसा जड़ा। असलान पीछे की तरफ़ लड़खड़ाया और मक़सूद ने उसे अपने पेट से धकेल दिया। असलान ज़मीन पर गिरा और लुढ़ककर दूर चला गया।

बुरी तरह हाँफते हुए मक़सूद अपने पैरों पर लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। धुँधली आँखों से उसने देखा कि असलान ज़मीन पर लेटा हुआ है। वो उसकी तरफ़ लम्बे क़दम भरता हुआ गया ताकि उसके सिर पर लात से वार कर सके।

असलान धीरे से अपने पेट पर पलटा। अधमुन्दी आँखों से उसने अपने भाई को अपनी तरफ़ ख़ास नीयत से आते देखा। थककर चूर, उसने अपने दोनों हाथ ज़मीन पर रखे और अपने आप को ऊपर की तरफ़ धकेला। उसका दाहिना हाथ किसी चीज़ से टकराया। उसने देखा कि वो एक तलवार की मूठ है।

जब मक़सूद पास आया, असलान ने अपने बाएँ हाथ के सहारे अपने को ऊपर की ओर धकेला और तलवार को ज़ोर से लहराया। तलवार ने मक़सूद की जांघ पर एक गहरा चीरा लगा दिया। मक़सूद दर्द और सदमे से चीख़ा और उसके पैर ने जवाब दे दिया। जब वो नीचे गिरा, असलान ने उसे धक्का देकर पीठ के बल लिटाया और अपने हाथ में तलवार लेकर उसके ऊपर खड़ा हो गया।

'नहीं, भाई!' मक़सूद अपनी कुहनियों पर टिका और विनती करने के अन्दाज़ में एक हाथ उठाया। 'रहम! रहम!'

असलान पल भर के लिए रुका, फिर उसका चेहरा सख़्त हो गया। लेकिन इसके पहले कि वो कुछ कर पाता, मक़सूद फिर से ख़ुशामदी लहजे में बोला।

'हमारे माँ-बाप के बारे में सोचो, मैं तुमसे भीख माँगता हूँ! तुमने उन्हें पहले ही छोड़ दिया है। क्या तुम उन्हें बेऔलाद करना चाहते हो?'

असलान रुक गया जैसे कि उसे कोई चोट लगी हो। उसकी आँखों से ख़ून की प्यास मिटने लगी, और उसकी जगह अनिश्चितता ने ले ली।

'मुझे छोड़ दो!' मक़सूद ने फिर विनती की। 'मैं वादा करता हूँ कि मैं भारत छोड़ दूँगा और फिर कभी नहीं लौटूँगा।'

असलान ने अपने बड़े जुड़वां भाई की तरफ़ देखा। *मैंने करीम से वादा किया था कि मैं मक़सूद को जान से नहीं मारूँगा।*

करीम ने एक बार असलान की जान बचाई थी, जब वो सालार मसूद हुआ करता था। असलान हमेशा महसूस करता था कि इस वजह से वो करीम का क़र्ज़दार है। और करीम की मौत उसके लिए भी एक झटका थी।

असलान की मुद्रा का तनाव थोड़ा कम हुआ। 'क्या तुम मेरे सामने हथियार डालते हो, भाई?'

'हाँ, हाँ, मैं हथियार डालता हूँ!' मक़सूद ने तुरन्त कहा। 'बस मुझे जाने दो। मैं अपने बचे हुए दिन मक्का में बिताऊँगा। मैं अपने बचे हुए दिन इबादत करते बिताऊँगा। मुझे बस करीम के लिए शान्ति से दुख जताने दो।'

असलान ने अपनी तलवार नीचे कर ली। 'मैं तुम्हारा आत्मसमर्पण स्वीकार करता हूँ। अपनी सेना को हथियार डालने का आदेश दो।'

'हाँ, बेशक,' मक़सूद ने अपना हाथ उठाते हुए जवाब दिया। 'मुझे उठने में मदद करो, मेरे भाई।'

असलान नीचे की ओर झुका और अपने जुड़वां भाई की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाया। मक़सूद मुस्कुराया और अपने भाई का हाथ थाम लिया। असलान ने उसे ऊपर खींचा। जब मक़सूद पैरों पर खड़ा हुआ, उसकी मुस्कुराहट और चौड़ी हो गई। फिर उसने अचानक असलान को बालों से पकड़ा और क्रूरता से अपने सिर से उस पर हमला किया।

असलान की आँखों के आगे कुछ पलों के लिए अंधेरा छा गया। जब उसे होश आया, तो ज़मीन पर पड़ा हुआ था। उसके चेहरे पर सूरज की रोशनी पड़ रही थी। और तभी एक परछाईं उसके ऊपर आई। उसने ऊपर देखा और पाया कि मक़सूद पास में खड़ा है जिसके हाथ में तलवार है।

असलान ने मक़सूद को नफ़रत भरी नज़र से देखा, लेकिन कुछ कहा नहीं। मक़सूद इन्तज़ार कर रहा था कि असलान कुछ करे। कुछ भी। शायद वो रहम की भीख माँगेगा, उस पर ग़ुस्से से चिल्लाएगा, या फिर केवल डर से अपनी नज़रें फेर लेगा। असलान ने ऐसा कुछ नहीं किया। वो बस मक़सूद को शान्त होकर देखता रहा।

आख़िरकार मक़सूद ने ही चुप्पी तोड़ी। 'जहन्नुम में सड़ो, मेरे भाई,' उसने कहा, उसकी आवाज़ में नफ़रत भरी थी।

फिर उसने अपनी तलवार असलान की गर्दन पर लहराई। एक ज़ोरदार वार से उसका सिर काट दिया। असलान का कटा हुआ सिर लुढ़ककर उसके बगल में आ गया। जब वो रुका, तो उसकी आँखें मक़सूद को देख रही थीं। अपने भाई को।

उन आँखों में सिर्फ और सिर्फ नफ़रत थी। सालार मक़सूद के लिए नफ़रत।

अध्याय 32

तोशानी दर्द से चीख़ी, जब वैद्य ने उसके घाव पर मरहम का लेप किया। उसका शरीर थोड़ी देर कांपा, फिर स्थिर हो गया।

'सुहेल...सुहेल...' वो बुदबुदाई।

'मैं यहाँ हूँ,' सुहेलदेव बोला, उसने तोशानी का हाथ कसकर पकड़ लिया।

'वो बेहोश हैं महाराज,' वैद्य ने नरम स्वर में कहा। 'मुझे नहीं लगता कि वो आपको सुन पा रही हैं।'

सुहेलदेव को बेहोशी की हालत में शिविर के चिकित्सालय में लाया गया था, लेकिन वैद्यों ने जाँच के बाद बताया कि गम्भीर बात नहीं है, सिर्फ आघात और कंधे में खिंचाव है। उसे थोड़ा आराम करने की सलाह दी गई थी लेकिन सुहेलदेव ने रुखाई से जवाब दिया था कि जब युद्ध चल रहा हो तो वो ऐसी बात सोच भी नहीं सकता।

वो वहाँ से निकलने ही वाला था जब उसे पता चला कि दूसरे चिकित्सा शिविर में तोशानी घायल पड़ी है और वो तुरन्त उसे देखने चला आया। अब वो हल्के से उसकी बाँह सहलाकर उसे सान्त्वना दे रहा था।

तभी एक वरिष्ठ अधिकारी तम्बू में आ पहुँचा। 'महाराज, असलान की मौत हो गई। उनका भाई उनके क़ब्ज़े में आ गया था लेकिन उन्होंने उसकी जान बख्श दी थी। बदले में विश्वासघाती भाई ने धोखे से उनका क़त्ल कर दिया।'

सुहेलदेव ग़ुस्से में तुरन्त उठकर खड़ा हो गया।

'महाराज, सिपाहियों में भगदड़ मच रही है,' अधिकारी ने आगे कहा, 'अब उनका हौसला टूटने के कगार पर है। शायद हमें पीछे हटने और फिर एक और दिन लड़ने पर विचार करना चाहिए?'

सुहेलदेव ने इनकार में सिर हिलाया। 'अगर अभी भागे, फिर सारा जीवन हम भागते ही रहेंगे, कितने तरोताज़ा सैनिक बचे हैं शिविर में?'

अधिकारी ने कंधे उचकाकर कहा, 'अधिक से अधिक दो सैन्य दल होंगे, अगर उन्हें भी युद्ध में भेज दिया तो पीछे हटने वालों की सुरक्षा को कोई नहीं बचेगा।'

इस तरह की लड़ाइयों में युद्ध बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि आरक्षित सैनिकों को कब और कहाँ इस्तेमाल में लाया गया था।

'उन्हें तैयार करो, अभी नहीं तो कभी नहीं,' बोलते हुए सुहेलदेव तम्बू से बाहर आ गया।

एक नया घोड़ा सुहेलदेव के लिए मंगाया गया। राजा के लिए अच्छी प्रजाति का घोड़ा, लम्बा, युद्ध के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित शानदार जानवर। सुहेलदेव ने प्यार से उसका चेहरा सहलाया। 'मैं तुम पर भरोसा कर रहा हूँ,पवन। आज मुझे विजय दिला दो और मैं तुम्हें दिन के अन्त में घास के साथ-साथ खूबसूरत घोड़ियाँ भी दूँगा।'

फिर वो कूदकर काठी पर चढ़ गया।

एक किशोर जो अभी-अभी सेना में भर्ती हुआ था, श्रावस्ती का ध्वज उठाए था।

'इस ध्वज को ऊँचा रखना, बेटे। हमारे सारे सैनिकों को ये दिखाई देना चाहिए,' सुहेलदेव ने आदेश दिया। फिर उसने अपने सैनिकों को इशारा किया। 'आगे बढ़ो।'

जब सुहेलदेव अपने सैनिकों का नेतृत्व करता हुआ युद्ध के लिए जा रहा था, उसका सामना भारतीय सैनिकों के एक दल से हुआ जो घबराहट भरे चेहरे के साथ पीछे लौट रहा था। वे सैनिक अपने राजा को देखते ही वहीं ठिठक गए।

'भगोड़ो,' एक अधिकारी गुर्राया। 'इनका यहीं वध कर दें महाराज?'

'ठहरो,' सुहेलदेव बोला। उसने उनमें से एक बुज़ुर्ग सैनिक से कहा। 'मैंने तुम्हें आज सुबह देखा था कि तुमने मेरे साथ शपथ ली थी अन्तिम सांस तक मातृभूमि की रक्षा करने की। क्या वो शब्द मात्र थे? क्या तुम्हारे भीतर ज़रा भी आत्मसम्मान नहीं? या फिर मर्यादा? अगर नहीं, तो फिर क्यों सैनिक बने थे?'

'हमें क्षमा कर दीजिए, महाराज,' शर्म में डूबे उस सैनिक ने कहा। वो सुहेलदेव से नज़रें नहीं मिला पा रहा था। 'हमें लगा आप युद्ध का मैदान छोड़ चुके हैं।'

सुहेलदेव उठा और काठी पर खड़ा हो गया। 'वापस युद्ध के मैदान में चलो, तुम सब! इतनी ज़ोर से चिल्लाओ कि सब सैनिक सुन सकें। मैं यहाँ हूँ! ना मैंने कभी तुम्हें छोड़ा है और ना कभी छोड़ूँगा!'

'महाराज हमारे साथ हैं!' बुज़ुर्ग सैनिक ज़ोर चिल्लाया।

आवाज़ दूसरे सैनिक ने आगे बढ़ाई और पूरे युद्ध क्षेत्र में फैल गई। सुहेलदेव की सेना में नई ताज़गी भर गई।

'महाराज हमारे साथ हैं!'

'महाराज सुहेलदेव हमारे साथ हैं!'

सुहेलदेव अपने पीछे आ रहे सैनिकों की ओर बढ़ा और अपनी दोनों बाँहें फैला दीं, मानो सबको गले लगाना चाहता हो। 'भाइयो! मुझे आज तुम सबकी शक्ति और साहस चाहिए। क्या तुम लोग मेरे साथ चलोगे?'

सभी सैनिक एक स्वर में बोले। 'जी हाँ, महाराज!'

'तुम मुझे विजय दिलाओगे?'

'हाँ, महाराज!'

सुहेलदेव ने अपनी तलवार हवा में ऊँची करके लहराई। 'अपने देश के लिए लड़ो, अपने लोगों के लिए लड़ो। माँ भारती के लिए लड़ो। हर-हर महादेव!'

जयकारा सारी टुकड़ियों में गूँज उठा, 'हर-हर महादेव!'

असलान की टुकड़ी के बचे सैनिकों ने नारा लगाया, 'अल्लाहु अकबर!'

सुहेलदेव ने उनकी ओर देखा और दहाड़ा, 'असलान का बदला लो! अल्लाहु अकबर!'

बहादुर योद्धाओं ने ज़ोर से नारा लगाया।

'आगे बढ़ो!' सुहेलदेव गरजा, अपने घोड़े को ऐड़ लगाकर आगे बढ़ा। घुड़सवार उसके पीछे-पीछे बिजली की गति से आवाज़ करते दौड़ पड़े।

सुहेलदेव के इस हमले से गज़नी की सेना की रक्षा पंक्ति टूट गई, उसके सैनिक उसे इस तरह काटे जा रहे थे, जैसे चाकू से मक्खन काटा जा रहा हो। तुर्क सेना बिखर गई थी। श्रावस्ती के सैनिक दिनभर की लड़ाई में थककर चूर हो चुके थे किन्तु सुहेलदेव के आने से उनकी भुजाओं में नई शक्ति दौड़ गई थी।

सुहेलदेव का पहला सामना भारतीय शैली के कवच पहने सैनिकों की टुकड़ी से हुआ। उसने उनके युद्धकौशल को देखा तो बेमन से ही सही उसके मन में प्रशंसा का भाव आ गया।

ये शर्मनाक है कि वे विदेशी हमलावर की तरफ़ से लड़ रहे थे।

एक घुड़सवार अचानक उसकी ओर बढ़ा और सुहेलदेव पर अपनी तलवार से वार किया। सुहेलदेव ने वार टाल दिया। लेकिन तभी उसने अपनी बाईं ओर तीखा दर्द महसूस किया। जब वो तलवार से अपना बचाव कर रहा था, दूसरी तरफ़ से एक सैनिक ने नश्तर से हमला किया। सुहेलदेव के कवच ने उसे आरपार होने से बचा लिया। फिर भी नश्तर ने थोड़ा घुसकर घाव कर दिया था जो भयानक पीड़ा दे रहा था।

सैनिक फिर से नश्तर से हमला करने को हुआ, एक क्षण गंवाए बिना सुहेलदेव ने बाएँ हाथ से घोड़े की लगाम को छोड़ा और नश्तर को कसकर पकड़ लिया और उसे वापस धकेल दिया। सैनिक हताशा में चिल्लाया, लेकिन इसके पहले कि वो कुछ और करता, सुहेलदेव ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई, पवन सीधा दौड़ पड़ा और दूसरे सैनिक के घोड़े से ज़ोर से टकरा गया।

तेज़ आवाज़ के साथ दोनों घोड़े एक-दूसरे से टकराए थे। थोड़ी देर को दोनों जानवर विचलित होकर डगमगा गए। पवन किसी तरह संभल गया लेकिन दूसरा घोड़ा धराशायी हो गया और घुड़सवार नीचे गिर गया।

'शाबाश, मेरे बच्चे!' सुहेलदेव ने पवन की पीठ थपथपाई।

तभी उसने देखा कि पहले वाला सैनिक फिर से आक्रमण करने जा रहा है। एक बार फिर सुहेलदेव ने उसका वार रोक दिया। इसके पहले कि घुड़सवार एक और वार करता, सुहेलदेव के एक सैनिक ने उसके सिर पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया।

सुहेलदेव ने अपने सैनिक की तरफ़ देखकर सिर हिलाया और फिर अपनी बाईं ओर मुड़ा। उस सैनिक की टांग टूट गई थी लेकिन वो दृढ़ निश्चय के साथ सुहेलदेव की ओर बढ़ रहा था। उसने सुहेलदेव को पकड़कर घोड़े से नीचे खींचने का प्रयास किया। सुहेलदेव ने अपने पांव से सैनिक के मुँह पर ज़ोरदार वार करके ज़मीन पर गिरा दिया। उसने फिर उठने का प्रयास किया, लेकिन पवन आगे बढ़ा और अपने खुरों से उस सैनिक का सिर कुचल दिया।

सुहेलदेव अपनी धड़कनों में तेज़ी महसूस कर रहा था और उसने ख़ुद को स्थिर रखने के लिए गहरी सांसें लीं। पवन भी उत्तेजित था, सुहेलदेव ने प्यार से उसे थपथपाया और सहलाया। उसने युद्ध क्षेत्र की ओर नज़रें घुमाईं और हालात का जायज़ा लिया। फिर वो एकाएक रुक गया, जब उसे दिखा कि घनी दाढ़ी, घुमावदार मूँछ और बाज़ जैसी नाक वाला एक व्यक्ति त्योरियाँ चढ़ाकर उसे घूर रहा है। उसका कवच धातु का था जिसमें सुनहरी चमक थी और उगते सूर्य का निशान उसकी छाती पर बना था।

ये लोग उसके अंगरक्षक हैं।

'जयचन्द!' सुहेलदेव दहाड़ा।

मनोहरगढ़ का राजा गरजा। 'सुहेलदेव!'

'तुम्हारे सैनिक वीर हैं!' सुहेलदेव चिल्लाया। 'उन्हें तुमसे बेहतर राजा चाहिए!'

जयचन्द गुस्से से भरा हुआ सुहेलदेव की ओर बढ़ा, उसने अपनी तलवार ऊपर की ओर उठा रखी थी। सुहेलदेव ने अपनी ढाल निकाल ली। जैसे ही वो निकट आया, जयचन्द ने अपनी तलवार से श्रावस्ती के राजा को काटने के लिए वार किया। सुहेलदेव ने अपनी ढाल से उसका वार आसानी से नाकाम कर दिया, फिर अपनी तलवार से जवाबी हमला किया।

जयचन्द पीड़ा से कराह उठा जब सुहेलदेव की तलवार उसके दस्ताने पर ज़ोर से लगी। दस्तानों ने उस वार के असर को थोड़ा कम तो किया, लेकिन वार इतना ज़बरदस्त था कि जयचन्द दर्द से चीख़ उठा। इससे पहले कि वो पहले वार से उबर पाता, सुहेलदेव ने फिर से उसी जगह वार कर दिया। जयचन्द का हाथ सुन्न पड़ गया और सुन्न पड़ी उँगलियों से उसकी तलवार फिसल गई।

जयचन्द का दुर्बल मनोबल अब पूरी तरह टूट चुका था। उसने अपना घोड़ा घुमाकर भागने की कोशिश की। तभी उसकी आँखें झटके से बाहर आ गईं जब सुहेलदेव ने अपनी तलवार उसकी गर्दन में घोंप दी।

जयचन्द अविश्वास से सुहेलदेव की तलवार की नोंक देख रहा था जो उसके कंठ से बाहर निकली थी। उसने बोलने की कोशिश की पर आवाज़ दबकर रह गई। वो एक बार खांसा और उसके मुँह से ख़ून की उलटी हो गई। फिर वो काठी पर आगे की ओर लुढ़क गया। वो मर चुका था।

सूर्यवीर लगातार सुहेलदेव की तरफ़ देखता रहा। उसने भी कुछ नहीं कहा। लेकिन उसकी आँखों में सन्देश साफ़ था। *सब कुछ ख़त्म हो गया है। हमारे लिए सब कुछ ख़त्म हो गया है।*

सुहेलदेव ने अपनी पीठ सीधी की और अपनी तलवार की मूठ को और मज़बूती से थाम लिया। 'हम आज मर सकते हैं, सेनापति सूर्यवीर। लेकिन हम ऐसा करने के पहले उन्हें मज़ा चखा देंगे।'

सूर्यवीर मुस्कुराया। 'ये तो सम्मान है, महाराज!'

सुहेलदेव भी मुस्कुराया। 'तुम्हारे साथ मौत पाकर मैं भी सम्मानित होऊँगा, मेरे दोस्त।'

सूर्यवीर ने अपनी तलवार ऊँची की। 'मरते दम तक!'

'मरते दम तक!'

भारतीयों की ओर दौड़कर आती घुड़सवार फ़ौज की गति कदमताल तक सीमित हो गई।

क्या हो रहा है?

सुहेलदेव ने रकाब में अपने पैर फंसाए और अपनी जीन पर खड़ा हो गया, ताकि वह अपनी बाईं दिशा में पीछे तक देख सके। युद्ध में आए नए घुड़सवारों ने अपने भाले ऊँचे उठाए हुए थे। उन्होंने अपने भाले आगे की ओर आक्रामक मुद्रा में नहीं पकड़े थे।

और फिर उसने इस घुड़सवार सेना का युद्धनाद सुना।

'वीर...'

'वेत्रि...'

सूर्यवीर चकराया हुआ सा सुहेलदेव की ओर मुड़ा। 'वे क्या बोल रहे हैं? कौन हैं ये लोग?'

आख़िरकार जब सुहेलदेव को समझ में आया कि क्या हो रहा है, उसकी रीढ़ में सिहरन सी दौड़ गई। उसे पहली बार युद्धनाद साफ़-साफ़ सुनाई दिया था।

'*वीरवेल! वेत्रिवेल!*'

वेल, अर्थात वह भाला जिसे महादेव शिव के प्रखर योद्धा पुत्र भगवान कार्तिक द्वारा इस्तेमाल किया जाता था। वह भाला जिसे अजेय माना जाता था। उनके भक्त इस युद्धनाद से उस महान योद्धा को सम्मान देते हैं जो इस पवित्र भारत भूमि पर आए थे।

वीरवेल! विजयीवेल!

'वीरवेल!'

'वेत्रिवेल!'

'वीरवेल!'

'वेत्रिवेल!'

सूर्यवीर सुहेलदेव की ओर मुड़ा, 'कौन हैं ये लोग?'

अध्याय 33

जयचन्द का मृत शरीर उसके घोड़े से नीचे गिर गया था। उसके अंगरक्षकों ने पहले ही आत्मसमर्पण कर दिया था। सुहेलदेव ने उन्हें आदेश दिया कि वो उसकी तरफ़ से लड़ें। भारतीयों के साथ।

तभी तनाव से भरी एक आवाज़ सुनाई दी। 'महाराज! महाराज!' यह सूर्यवीर की आवाज़ थी, जो सुहेलदेव के नेतृत्व वाले राज्यसंघ के साथ युद्ध में उतरी चन्देल सेना की टुकड़ी का सेनापति था।

सुहेलदेव सूर्यवीर की तरफ़ मुड़ा। 'क्या हुआ?'

'हमारा बायाँ पक्ष कमज़ोर पड़ गया है! हमें पीछे हटना पड़ेगा ताकि हम घेरे ना जाएँ!'

सुहेलदेव ने भाग्य को कोसा। 'गोवर्धन के पास एक दूत भेजो। उसे कहो कि बाएँ पक्ष को मज़बूत करने के लिए कुछ सैनिक भेजे।'

सूर्यवीर ने इनकार में सिर हिलाया। 'गोवर्धन जितने सैनिक भेज सकता था, भेज चुका है। अगर वो ज़्यादा सैनिक भेजेगा तो दाहिना पक्ष कमज़ोर हो जाएगा और वो कुचल दिया जाएगा।'

इससे पहले कि सुहेलदेव कोई जवाब दे पाता, उसे भारतीयों के बाएँ पक्ष के पीछे से तुरही की तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं।

ये क्या?

उसने अपने घोड़े पर से उचककर दूर तक देखा। अपनी फ़ौज के बाएं हिस्से के बहुत पीछे। क़रीब पाँच हज़ार नए घुड़सवार लड़ाई में कूद पड़े थे।

भगवान शिव दया करें!

सूर्यवीर सन्न था। 'मक़सूद के लिए घुड़सवारों की अतिरिक्त सेना?! ये कहाँ से आ गए?!'

सुहेलदेव ने कुछ नहीं कहा। कुछ कहने के लिए बचा भी नहीं था। उसके पास जो कुछ था, उसने अन्तिम दांव पर लगा दिया था। अब उसके पास कोई आरक्षित सेना नहीं थी। और क़िस्मत ने उसे चौंका दिया था। निर्दयी ढंग से।

‘ये हमारे लोग हैं!’ सुहेलदेव बोला, उसकी आवाज़ में उत्साह झलक रहा था। ‘ये हमारे देशवासी हैं! चोल!’ सुहेलदेव अपनी सेना की ओर मुड़ा। ‘जगह दो! जगह दो!’

ये वो कौशल था जिसका प्रशिक्षण सुहेलदेव ने अपने सैनिकों को दिया था। पीछे हटो, ख़ुद को टुकड़ियों में बांटो और आरक्षित सेना के लिए युद्ध में आने की जगह बनाओ।

श्रावस्ती की सेना ने अपने राजा की आज्ञा का पालन किया और पीछे हटकर बाईं ओर चोल सेना के लिए जगह बना दी। चोल सेना को तुरन्त रणनीति समझ में आ गई। उन्होंने अपने घोड़ों को ऐड़ लगाई और गति पकड़ ली।

‘वीरवेल! वेत्रिवेल!’

चोल अब इतने नज़दीक थे कि उनके चेहरे साफ़ देखे जा सकते थे। सुहेलदेव ने देखा कि एक विशालकाय आदमी इस सेना का नेतृत्व कर रहा है और अपना घोड़ा तेज़ी से दौड़ा रहा है। लम्बा, छह फुट से भी ज़्यादा कद वाला। गोरा। तराशी हुई कद-काठी। घनी घुमावदार मूछें। निश्चित ही वो इस सेना का सेनापति था। सुहेलदेव ने उसे देखा और हाँ में सिर हिलाया। सेनापति ने भी जवाब में अपना सिर हिलाया।

और फिर चोल सेनापति ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और भाले को आक्रामक स्थिति में पकड़ा। और ज़ोर से गर्जना की, ‘वीर चोल सैनिको! सबको मार गिराओ!’

चोल सैनिकों ने अपने सेनापति के आदेश का पालन किया। अपने भाले नीचे किए। और स्तब्ध तुर्क सेना पर आक्रमण कर दिया।

चोल सेना को तुर्कों से भिड़ते देख सूर्यवीर अपने उत्साह को रोक नहीं पा रहा था। चोल सैनिक उनके रास्ते में आने वालों को निर्ममता से मारते जा रहे थे।

सुहेलदेव अपनी सेना की ओर मुड़ा और आवाज़ ऊँची की। ‘साथियो, हमारा दुश्मन अब घुटने टेकने वाला है। इस युद्ध को हमेशा के लिए ख़त्म कर दो। कोई कैदी नहीं! कोई दया नहीं! सभी को ख़त्म कर दो!’

‘जय माँ भारती!’

युद्ध की हुँकार मैदान में गूँज उठी जब सुहेलदेव के सैनिकों ने भावनात्मक और शारीरिक शक्ति जुटाई और एक और आक्रमण कर दिया। दाएँ और मध्य में सुहेलदेव की सेना और बाईं ओर से चोल सैनिकों के नए आक्रमण से घिरी, पूरे दिन लड़कर थक चुकी, गज़नी की सेना बिखर गई।

सुहेलदेव ने पागलों की तरह मार-काट मचा दी और ना जाने कितने तुर्कों को मार डाला। उसके सैनिकों ने भी उत्साह में भरकर ऐसा ही किया और एक अप्रिय गतिरोध जल्दी ही विजय में बदल गया। मैदान ख़ून और लाशों के ढेर से भर गया और युद्ध एकतरफ़ा नरसंहार में बदल गया। गज़नी के कई सैनिकों ने अपने हथियार फेंककर रहम की भीख माँगी। लेकिन किसी को भी रहम नहीं मिला।

गज़नी की सेना हार गई, तुर्कों की अजेयता का मिथक बिखरने की आवाज़ ज़ोर से आई। कुछ सैनिक मुड़कर भागने लगे, उनके पीछे कुछ और भागे। इसकी

शुरुआत एक बूँद की तरह हुई थी, जो बाद में बाढ़ बन गई जब तुर्क अपनी जान बचाने के लिए भागने लगे। उनका लगातार पीछा किया गया और निर्ममता से उन्हें मार गिराया गया।

अन्तिम तुर्क तक का पीछा किया गया। अन्तिम तुर्क तक को मार गिराया गया।

सिवाय एक के।

एक को ज़िन्दा रखा गया।

सुहेलदेव के न्याय के लिए।

रात काफ़ी हो चुकी थी। दिन में तुर्कों के नरसंहार के बाद, भारतीय अपने शिविर में जमा थे। जश्न के लिए। ठीक होने के लिए। सोने के लिए।

वैद्यों ने लगातार काम करके कई भारतीय सैनिकों की जान बचाई थी। हालांकि भारतीयों ने क़रीब पन्द्रह हज़ार सैनिक खोए थे, पर साठ हज़ार सैनिकों की पूरी तुर्क सेना को ख़त्म कर दिया गया था।

ताज़ा इतिहास में यह सर्वाधिक एकतरफ़ा लड़ाइयों में से एक थी। एक युद्ध से ज़्यादा, एक नरसंहार।

सूर्यवीर और राज्यसंघ के सभी अन्य सेनापति पूरे इलाक़े में सालार मक़सूद के लिए खाक छान रहे थे, जो बचकर भाग निकला था। सैनिकों को साफ़ निर्देश दिए गए थे। ऐसे तुर्क की तलाश करो जो दिखने में असलान की तरह है। और उसे ज़िन्दा पकड़कर लाओ।

सुहेलदेव राजसी तम्बू में बैठा हुआ था, उसके ज़ख्मों की मरहम-पट्टी हो चुकी थी। वो बहुत बुरी तरह थका हुआ था। लेकिन उत्तेजना और जोश के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी। तोशानी अब इतनी स्वस्थ हो चुकी थी कि उसे होश आ गया था, लेकिन उसने पूरी दोपहर और शाम सोते हुए बिताई थी। वो आरामकुर्सी पर लेटी थी। सुहेलदेव से ज़्यादा दूर नहीं। जगी हुई, लेकिन थोड़ी मदहोश।

अब्दुल को ढूँढ़ लिया गया था। ख़ुशक़िस्मती से उसका ज़ख्म बहुत गम्भीर नहीं था। उसकी बाईं आँख चली गई थी, लेकिन तीर ने आँख में बहुत गहराई तक चोट नहीं की थी। वो भी सुहेलदेव से थोड़ी दूरी पर रखी एक कुर्सी पर बैठा था, उसकी आँख के साथ-साथ पूरे शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं। वो कमज़ोर था, लेकिन पूरे होश में और सतर्क। और वो भारत की जीत पर उन्मादी रूप से प्रसन्न था।

गोवर्धन ने अभी-अभी तम्बू में प्रवेश किया था और पर्दे के पास की एक कुर्सी पर बैठा था। उसकी बाईं बाँह गले की एक पट्टी से बंधी हुई थी और उसके शरीर पर कुछ जगह पट्टियाँ थीं, लेकिन तुलनात्मक रूप से वो सही-सलामत था।

'तुम्हें ज़्यादा चोट नहीं लगी,' सुहेलदेव मुस्कुराते हुए बोला।

गोवर्धन धीरे से हँस दिया। 'दरअसल, मेरी कुछ हड्डियाँ टूट गई हैं। लेकिन जिस हाथ से मैं लड़ता हूँ, वो सही-सलामत है। भगवान राम की कृपा है।'

'भगवान राम की कृपा है।'

फिर सुहेलदेव उस लम्बे, गोरे अजनबी की तरफ़ मुड़ा जिसकी मूँछें तलवार की तरह थीं और दाढ़ी सफ़ाई से कटी थी, और जो गोवर्धन के साथ अन्दर आया था। उसके शरीर पर किसी भी तरह की गम्भीर चोट नहीं थी। उसे गोवर्धन के पास ही बैठने का स्थान दिया गया था।

सुहेलदेव ने उसकी तरफ़ देखकर नमस्ते की मुद्रा में हाथ जोड़े और संस्कृत में बोला, जिस भाषा को भारत भर के शिक्षित लोग जानते थे। 'मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि आप कौन हैं, महान आर्य। महान सम्राट राजेन्द्र चोल को मेरा प्रेम और सम्मान। आपकी सहायता बिल्कुल सही समय पर आई।'

वो आदमी मुस्कुराया और अपने हाथ नमस्ते की मुद्रा में जोड़े। 'मेरे सम्राट, महान राजेन्द्र चोल आपको भी एक आर्य मानते हैं, महान सुहेलदेव। आपने हमारे देश के लिए, हमारे देवताओं के लिए लड़ाई लड़ी है। आपकी सहायता करना हमारा कर्तव्य था।'

राजेन्द्र चोल की काशीनाथ से मुलाक़ात के बाद, सम्राट ने सुहेलदेव के युद्ध प्रयासों में सहायता का निर्णय किया था। लेकिन वो जानता था कि उसकी पूरी सेना समय पर बहराइच नहीं पहुँच सकेगी। इसलिए उसने अपने सेनापति को आदेश दिया था कि वो चोल साम्राज्य के सुदूर उत्तरी छोर बंगाल में स्थित चौकी पर पहुँचे, और वहाँ से जितने ज़्यादा घुड़सवार हो सकते थे, लेकर सुहेलदेव की सहायता के लिए नदी मार्ग से जाएँ। इससे वो बहराइच तेज़ी से पहुँच सकते थे। लेकिन इसका अर्थ यह भी था कि वो तुलनात्मक रूप से छोटी और लगभग पाँच हज़ार घुड़सवारों की सेना लेकर ही पहुँच सकते थे।

ख़ुशक़िस्मती से वो घुड़सवार सेना पर्याप्त थी। या ये कहें, कि पर्याप्त से भी अधिक थी।

'आपका नाम क्या है, महान सेनापति?' सुहेलदेव ने पूछा।

'मेरा नाम नरसिम्हन है।'

सुहेलदेव काफ़ी मुश्किल से अपनी कुर्सी से उठा लेकिन उसने पास खड़े सेवकों से सहायता लेने से मना कर दिया। फिर वो नरसिम्हन के पास चलकर गया, जो अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ था।

सुहेलदेव आगे बढ़ा और गर्मजोशी से नरसिम्हन को गले लगाया। 'भगवान शिव आपको आशीर्वाद दें, महान नरसिम्हन।'

नरसिम्हन एक राजा की ओर से ऐसा अभिवादन पाकर सचमुच आश्चर्यचकित था इसलिए उसे प्रतिक्रिया व्यक्त करने में कुछ पल लग गए। लेकिन उसने प्रतिक्रिया दी। गर्मजोशी से। उसने अपनी बाँहों से सुहेलदेव को घेर लिया, पर ध्यान रखा कि उसकी पकड़ इतनी मज़बूत ना हो कि सुहेलदेव को तक़लीफ हो। और उसने कहा, 'भगवान शिव आप पर अपना आशीर्वाद बनाए रखें, महाराज।

जब तक समय का चक्र चलेगा, विश्व आपको भगवान शिव के महानतम भक्तों और भारत माता के सर्वश्रेष्ठ पुत्रों में से एक के रूप में याद रखेगा।'

अचानक, सूर्यवीर ने तेज़ी से पर्दे हटाते हुए शिविर में प्रवेश किया। स्पष्ट रुप से वो काफ़ी उत्साहित दिख रहा था।

सुहेलदेव ने अपने क़दम नरसिम्हन से पीछे हटाए और सूर्यवीर की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

'महाराज,' सूर्यवीर ने कहा, 'हमने उसे ढूँढ़ लिया है। वो एक कायर की तरह एक गड्ढे में छिपा हुआ था। लेकिन हमने उस कमीने को ढूँढ़ लिया। वो बाहर है।'

सुहेलदेव की सांस थम गई।

सालार मक़सूद

उसने फिर से तोशानी की तरफ़ देखा। उसकी आँखों में फौलाद था। तोशानी ने उसकी तरफ़ देखकर सिर हिला दिया।

थोड़ी देर के बाद, सुहेलदेव की सेना के मुख्य नेता राजसी शिविर के बाहर एक खुले इलाक़े में जमा थे। सुहेलदेव, तोशानी, गोवर्धन और अब्दुल कुर्सियों पर बैठे थे। उनके साथ चोल सेनापति नरसिम्हन भी बैठा था। साथ ही, चन्देल सेनापति सूर्यवीर और सुहेलदेव के राज्यसंघ के बाक़ी सभी सहयोगी भी। बुरी तरह से घायल संघमणि को भी बाहर लाया गया था। वो लेटने वाली एक कुर्सी पर था, उसका सिर ऊपर की तरफ़ उठा था, ताकि वो न्याय होते देख सके।

खुले मैदान में चारों तरफ़ ढेरों मशालें जलाई गई थीं, जिनसे दूर-दूर तक उजाला हो रहा था।

थोड़ी दूरी पर भारतीय सैनिक पीछे की तरफ़ खड़े थे। वो उस घृणित तुर्क का मज़ाक़ उड़ा रहे थे, जो अपने घुटनों पर था, उस खुले मैदान में जो उन सैनिकों और राजसी शिविर के बीच में था।

हाथ और पैर एक साथ बंधे हुए थे। ख़ून से लथपथ। सिर कपड़े से ढंका हुआ।

सालार मक़सूद।

'सिर से कपड़ा हटाओ!' सुहेलदेव ने आदेश दिया। 'हम सब गज़नी के इस कुत्ते को देख लें।'

मक़सूद के पास खड़े दो सैनिकों ने उसे मज़बूती से थामा और तुरन्त कपड़ा हटा दिया।

वहाँ उपस्थित सभी भारतीयों के चेहरे सन्न रह गए।

मक़सूद मुश्किल से इंसान लग रहा था। बुरी तरह से सूजी एक आँख पूरी तरह बन्द थी। दूसरी चमकीली लाल थी, जिसकी ख़ून की नलिकाएँ फूट गई थीं। उसके बाल और चेहरा ख़ून और धूल से सने थे। बायाँ कान आधा कटा था और बस किसी तरह चमड़ी और नस के सहारे सिर से टंगा था।

लेकिन उसकी चोट को देखकर भारतीयों को झटका नहीं लगा था। उनके मन में उस आदमी के लिए कोई सहानुभूति नहीं थी जिसने हाल ही में निर्दोष, निहत्थे नागरिकों के एक पूरे शहर का सफाया कर दिया था।

उन्हें झटका लगा था मक़सूद के चेहरे को देखकर। वो बिल्कुल असलान की नक़ल था। या कहें कि सालार मसूद की, जिसे वो जान चुके थे। वैसी ही बादामी आँखें। वैसे ही मध्य एशियाई नैन-नक्श। चमड़ी का रंग, सब कुछ। अपने आप में यह देखना बेचैनी भरा था कि जिस चेहरे को वो प्यार करते थे और उस पर भरोसा करते थे, वही चेहरा एक दूसरे आदमी पर है जिसे वो एक राक्षस मानते थे।

कैसे एक ही चेहरा दो ऐसे लोगों का हो सकता है जिसमें एक अच्छाई से भरा हो और दूसरा सिर्फ बुराई से?

सुहेलदेव ने अपने हाथ को हल्का झटका देकर अपने सैनिकों को इशारे से आदेश दिया। *उसे खड़ा करो।*

दो आदमियों ने मक़सूद को जकड़ा और उसे ज़बरदस्ती खींचकर खड़ा कर दिया। वो थोड़ी देर खड़ा रहा, फिर कराहने लगा और अपने घुटनों पर बैठ गया, उसके घायल पैर उसके शरीर का वज़न संभालने में नाकाम थे।

उसका बख्तर जगह-जगह से भेदा हुआ था, और वैसे तो ज़्यादातर ख़ून जम चुका था, उसके अनगिनत घावों में से कुछ से अभी भी ख़ून बह रहा था। उसकी जांघ पर बड़ी चोट, जो असलान ने की थी, ख़ासतौर पर गम्भीर थी। मक़सूद ने ख़ून बहने से रोकने के लिए उस पर एक गरम चाकू रखकर कपड़े के टुकड़े से कसकर बांध दिया था। युद्ध के मैदान में यही शुरुआती इलाज था।

'दया,' उसने बैठे हुए गले से अपने सूखे होंठों पर जीभ फिराते हुए कहा। 'दया...यही तुम्हारा...धर्म...कहता है।'

सुहेलदेव ने मक़सूद की तरफ़ अविश्वास से देखा। 'दया? धर्म? अपनी गन्दी ज़ुबान से इन क़ीमती शब्दों को अपवित्र मत करो।'

'मैं इंसाफ़...पाने का...हकदार हूँ। मैं...तुम्हारा धर्म जानता हूँ...मैं हकदार हूँ —'

सुहेलदेव ने मक़सूद की बात बीच में काट दी। 'तुम किसी और चीज़ के नहीं, बल्कि सिर्फ सार्वजनिक मौत के हकदार हो।'

मक़सूद ने सुहेलदेव को नफ़रत भरी निगाह से देखा। 'जहन्नुम में जाओ... काफ़िर!'

सुहेलदेव अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। वो अपनी चोटों को भूल चुका था। उसकी रगों में गुस्सा बह रहा था जिसने उसकी आत्मा को जकड़ लिया था और उसके शरीर को फौलादी बना दिया था।

वो मक़सूद के पास धीरे-धीरे चलकर पहुँचा।

मक़सूद ने सुहेलदेव की तरफ़ थूक दिया। सुहेलदेव के जूते पर गाढ़ा थूक आकर गिरा।

'मुझे मार डाल, काफ़िर...'

सुहेलदेव चुप रहा। बस उसकी क्रोधित आँखें बोल रही थीं।

अचानक मक़सूद ने गहरी सांस ली और अपनी आवाज़ ऊँची करने की ताक़त जुटा ली, ताकि सभी लोग सुन सकें। 'काफ़िरों, मुझे मार डालो! वैसे भी...मैं जन्नत जाऊँगा...अल्लाह मेरा ख्याल रखेगा...तुम सारे बुतपरस्त जहन्नुम में जाओगे...' फिर मक़सूद ने चारों तरफ़ देखा। 'और मैं जानता हूँ...कि तुम लोगों में मुसलमान भी हैं...तुम लोगों ने बुतपरस्तों का पक्ष लिया है...अल्लाह तुम्हें सज़ा देगा...तुम सब जहन्नुम में जाओगे...तुम लोग कभी जन्नत नहीं देखोगे...जहन्नुम की आग के लिए तैयार हो जाओ!'

सुहेलदेव ने अब्दुल की तरफ़ मुड़कर देखा।

अब्दुल धीरे-धीरे खड़ा हुआ। 'मैं मुसलमान हूँ...अल्लाह अपने देश के लिए लड़ने के लिए हमारी तारीफ करेगा...और जहाँ तक जन्नत की बात है, मैं पहले से उसमें रह रहा हूँ...'

अल्लाहु अकबर की पुकार भीड़ में से गूँज उठी। मुसलमानों, और हिन्दू भारतीयों दोनों की ज़ुबान से।

मक़सूद ने अब्दुल की तरफ़ देखा और फिर से थूक दिया। फिर वो सुहेलदेव की तरफ़ मुड़ा। 'मुझे मार डालो...और ख़त्म करो...'

सुहेलदेव ने जवाब दिया। 'मैं तुम्हारे बारे में फिक्रमन्द हूँ, मक़सूद। क्योंकि अगर तुम्हें जन्नत जाना है, तो क्या तुम्हारे शरीर को क़ायदे से दफनाना नहीं होगा?'

पहली बार, मक़सूद के चेहरे पर आतंक के भाव उतर आए। 'तुम...तुम नहीं कर सकते...'

'हाँ...मैं सोच रहा था कि तुम्हारा सिर काट दूँ...और फिर तुम्हारा शरीर जला दूँ...'

मक़सूद वास्तव में उन बातों में यक़ीन करता था जिनका वो प्रचार करता था। वो मरने से नहीं डरता था। लेकिन वो इस तरह से मरने से डरता था जिससे जन्नत पहुँचना नामुमकिन हो जाए; कम से कम उसके विश्वास के अनुसार। उसने अब्दुल की तरफ़ देखा। 'तुम मुसलमान हो...तुम किसी दूसरे मुसलमान के साथ ऐसा नहीं होने दे सकते...मेरी आख़िरी रस्में क़ायदे से होनी चाहिए...'

अब्दुल ने जज़्बाती लहजे में ज़ोर से कहा, 'तुम मुसलमान नहीं हो, मक़सूद। जो आदमी निर्दोष, निहत्थे नागरिकों को मारता है, वो मुसलमान नहीं हो सकता। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि तुम्हारे शरीर का क्या होता है।'

भौंचक्का मक़सूद सुहेलदेव की तरफ़ मुड़ा। 'तुम ऐसा नहीं कर सकते...तुम्हें अपने धर्म की मर्यादा रखनी होगी...तुम्हें अपने दुश्मन को सम्मान देना होगा...तुम्हें मुझे क़ायदे से दफनाना होगा...'

सुहेलदेव ने धीरे-धीरे अपनी तलवार बाहर निकाली। म्यान से बाहर आती तलवार की डरावनी आवाज़, एक सभ्य देश के ग़ुस्से का प्रतीक थी, जो बर्बरों से उसी भाषा में लड़ रहा था जिसे वो समझते थे।

मक़सूद विनती करता रहा। 'मैं क़ायदे से दफ्न होने का हकदार हूँ...तुम्हें अपना धर्म मानना होगा...'

सुहेलदेव के होंठों पर एक क्रूर मुस्कान आई और वो बुदबुदाया, 'तुम्हारा शरीर जलाया जाएगा।'

श्रावस्ती के राजा ने अपनी तलवार ज़ोर से लहराई और एक निर्मम वार से सालार मक़सूद का सिर काट डाला।

मक़सूद का सिर कटा शरीर ज़मीन पर गिर गया। गहरे लाल रंग का एक छोटा तालाब सा वहाँ बनने लगा, जब उसकी गर्दन से गाढ़े ख़ून का फव्वारा फूटा। उसका सिर लुढ़ककर बगल में चला गया। उसकी बेकार और मरी आँखें उसी धरती पर पड़ी थीं जिसे अपवित्र करने का उसने दुस्साहस किया था।

सुहेलदेव ने अपनी तलवार को ज़मीन पर गिरा दिया और उसने धीरे से अपनी गर्दन में पहना लॉकेट निकाला। ये शिव लिंग की वो छोटी सी प्रतिकृति थी जो उसके बड़े भाई ने उसे वर्षों पहले उपहार में दी थी।

उसने अपने भाई को सम्बोधित किया। उसने अपनी मातृभूमि को सम्बोधित किया। उसने अपने ईश्वर को सम्बोधित किया।

'आपका प्रतिशोध ले लिया गया है।'

अध्याय 34

सालार मक़सूद के वध के बाद अभी आधा घंटा ही बीता था। उसकी सिर कटी लाश वहीं पड़ी थी, जहाँ उसे मारा गया था। गोवर्धन के सैनिकों की एक पलटन उसकी रखवाली कर रही थी।

सुहेलदेव अपने राजसी तम्बू में लौट चुका था, और अपनी मेज़ पर बैठकर वो निर्देशों पर हस्ताक्षर कर रहा था। तोशानी बिस्तर पर लेटी हुई आराम कर रही थी। दो वैद्य निरन्तर वहाँ मौजूद रहते थे। सुहेलदेव ने उसे अपने ही शिविर में रखा था ताकि उसकी ठीक से देखभाल कर सके। गोवर्धन और अब्दुल अभी-अभी अन्दर आए थे।

'क्या हुआ?' सुहेलदेव ने इस दख़ल से चौंककर पूछा और पंख की नोक वाली क़लम नीचे रख दी।

गोवर्धन और अब्दुल चुप रहे। गोवर्धन घबराया हुआ दिख रहा था। और अब्दुल नाराज़ दिख रहा था।

'क्या बात है, मेरे दोस्तों?' सुहेलदेव ने पहले से नरम लहजे में पूछा।

अब्दुल ने गोवर्धन की तरफ़ देखा। साफ़ तौर पर वो नाख़ुश था। सुहेलदेव ने भी गोवर्धन की ओर मुड़कर उसकी ओर देखकर सवालिया अन्दाज़ में अपनी भौंहें ऊपर कीं।

'...राजन,' गोवर्धन ने कहा। 'आप सच में तो ऐसा नहीं करने जा रहे...है ना?'

'क्या करने नहीं जा रहे?'

'सालार मक़सूद के साथ, मेरा मतलब है।'

'मक़सूद के साथ क्या?'

'क्या आप सच में उसकी लाश जलाने जा रहे हैं?'

सुहेलदेव ने ठंडी सांस ली और अपनी कुर्सी में पीछे टिक गया।

अब्दुल बोल पड़ा, 'महाराज सुहेलदेव, मैंने अपना रुख पहले ही साफ़ कर दिया है। हरसरन में मक़सूद के आदेशानुसार नरसंहार के बाद मैंने कई मौलानाओं से बात की। वो सभी एकमत थे। मक़सूद मुसलमान नहीं रहा अगर उसने वो जघन्य

अपराध किया था। हम उसे अपने में से एक नहीं मानते। हम उसकी लाश लेने से इनकार करते हैं। आप इसके साथ जो चाहें, वो कर सकते हैं।'

'यहाँ बात मौलानाओं के कहने की नहीं है, अब्दुल,' गोवर्धन ने कहा।

'बात *वही* है जो वो कह रहे हैं, गोवर्धन,' अब्दुल ने कहा। 'थोड़ी देर पहले तुम मुझसे कह रहे थे कि उसकी आख़िरी रस्में इस्लामी तरीके से होनी चाहिए। मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि उसकी लाश को कोई भी भारतीय मुसलमान कब्रगाह स्वीकार नहीं करेगा। हम उसे दफ्न *नहीं* करेंगे। वो हममें से नहीं है। और तुम हम भारतीय मुसलमानों का अपमान कर रहे हो अगर तुम उसके साथ हमारे जैसा व्यवहार करोगे।'

'मैं वैसा नहीं कर रहा हूँ, अब्दुल,' गोवर्धन ने उसे शान्त करने वाले लहजे में कहा। 'मैं नहीं कह रहा हूँ कि भारतीय मुसलमानों को मक़सूद की लाश के लिए कोई रस्म करनी चाहिए। मैं कह रहा हूँ कि मेरे आदमी और मैं ये काम कर सकते हैं। हम उसे ख़ुद दफना सकते हैं। आदर के साथ। बात सालार मक़सूद की नहीं है। बात हमारी है। बात ये है कि हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए।'

'और हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए, गोवर्धन?' सुहेलदेव ने पूछा।

'राजन, मैं आपसे सहमत हूँ कि हमें उनके साथ लड़ने में निर्ममता दिखानी थी। लेकिन तुर्कों और हममें एक अन्तर है। हम राक्षस नहीं हैं। हम देवताओं के वंशज हैं। भगवान शिव और भगवान राम के। देवी सती और देवी सीता के। इतिहास हमारी ओर देखेगा। धर्म हमारी ओर देखेगा। उनके मृतकों के प्रति सम्मान दिखाकर, हम अपनी रीतियों की प्रतिष्ठा बढ़ाएँगे। हमें क्रोध में कोई फैसला नहीं लेना चाहिए।'

'क्या तुम वाकई में मानते हो कि ये फैसला क्रोध के कारण है?' सुहेलदेव ने पूछा। 'तुम सोचते हो कि मैं ऐसा करना चाहता हूँ क्योंकि मैं नाराज़ हूँ?'

गोवर्धन चुप रहा।

सुहेलदेव तोशानी की ओर मुड़ा। उसने हामी भरते हुए सिर हिलाया। और सुहेलदेव अपने दोस्तों की ओर फिर से मुड़ा।

'मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं ऐसा क्यों करना चाहता हूँ,' सुहेलदेव ने कहा। 'तुर्कों को मौत से डर नहीं लगता है। अगर वो डरते, तो वो दुनिया का इतना बड़ा हिस्सा नहीं जीत जाते। हमारे उनकी पूरी आक्रमणकारी सेना को ख़त्म करने भर से वो रुकेंगे नहीं। असल में तो इससे वो हम पर और हमले करने के लिए भड़क सकते हैं। शहीदों के सहारे तो वो अपनी कट्टरता और भड़काते हैं। लेकिन अगर वो सोचते हैं कि हम उनके समान ही राक्षसी व्यवहार कर सकते हैं, कि हम उनके मृत शरीर को जला देंगे, तो फिर वो सोचने के लिए मजबूर हो सकते हैं।'

गोवर्धन को इस बात पर भरोसा नहीं हो रहा था। 'लेकिन...'

'तुम्हें क्या लगता है कि वो हमारे मन्दिरों पर हमले और हमारी प्रतिमाओं को नष्ट क्यों करते हैं?' सुहेलदेव ने पूछा। 'क्या उनके लिए उन मूर्तियों को बंधक रखना और फिर उनके एवज में हमसे पैसे माँगना ज़्यादा समझदारी नहीं होगी? वो ऐसा नहीं करते क्योंकि वे हमारे विश्वास और आस्था का इस्तेमाल हमारे हौसले

को ख़त्म करने के लिए करते हैं। हमारी भावना को ख़त्म करने के लिए। क्योंकि वे सोचते हैं कि हतोत्साहित आबादी को जीतना बहुत आसान है। हमें उन्हें उनकी भाषा में उत्तर देना होगा। हमें उनके विश्वासों और आस्थाओं का इस्तेमाल उनके ख़िलाफ़ करना होगा। वो मौत के बाद के जीवन के लिए जन्नत चाहते हैं। और उनका मानना है कि उन्हें जन्नत नसीब नहीं होगी अगर हम उनके शरीर को जला देंगे। मैं नहीं जानता कि उनका विश्वास सही है या नहीं। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि अगर हम उनके विश्वास का इस्तेमाल उनके ख़िलाफ़ करेंगे, वो फिर भारत लौटने की हिम्मत नहीं करेंगे। अगर वो ये जान जाएँगे कि हम सिर्फ उन्हें मारेंगे नहीं बल्कि उनकी लाशों को जलाएँगे भी, वो हम पर हमला करने की कोशिश नहीं करेंगे।'

'लेकिन हमें ऐसा करने की ज़रुरत क्या है? भले ही वो वापस आ जाएँ, हम उन्हें दोबारा हरा देंगे। हम उन सभी को मार देंगे।'

'और हमारे कितने सैनिक एक और युद्ध में मारे जाएँगे?'

'मैं समझ रहा हूँ कि आप क्या कह रहे हैं,' गोवर्धन ने कहा। 'लेकिन—'

सुहेलदेव ने गोवर्धन को बीच में ही रोका। 'ऐसा मत सोचो कि मैं युद्ध जीतने के तुम्हारे क्षत्रिय तरीक़ों का अपमान कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि सच्चे योद्धा हमेशा ही देश के लिए जान देने को तैयार रहते हैं। मैंने हमेशा ही तुम्हारे साहस का सम्मान किया है।'

'नहीं। नहीं। मैं ये नहीं कह रहा था। मैं जानता हूँ कि आप कभी ऐसा नहीं सोचेंगे। आप सभी भारतीय तरीक़ों का सम्मान करते हैं। लेकिन क्या धर्म ये नहीं कहता कि हमें युद्ध जीतना तो चाहिए, लेकिन सही तरीक़े से?'

'धर्म...एक साधारण शब्द...लेकिन इसके पीछे कई जटिल दर्शन हैं...' सुहेलदेव अपनी कुर्सी से उठा और लंगड़ाते हुए गोवर्धन और अब्दुल के पास गया, उसने उनका सहारा लेने से इनकार कर दिया। और फिर उन दोनों के पास बैठ गया। 'धर्म क्या है? हमारे पूर्वजों ने सदियों तक इस प्रश्न के लिए कष्ट उठाए हैं। चलो थोड़ा कष्ट हम भी उठाएँ। एक योद्धा का धर्म क्या है?'

गोवर्धन ने तुरन्त जवाब दिया। 'लड़ना और जीतना। लेकिन बिना पाप का भागी बनाए...'

'...अपनी आत्मा को,' सुहेलदेव ने गोवर्धन की बात पूरी की।

'हाँ। अपनी आत्मा को बिना पाप का भागी बनाए। दुश्मन को पराजित करना, लेकिन मर्यादा के साथ। युद्ध जीतना, लेकिन एक सच्चे योद्धा के लिए बने नियमों का पालन करते हुए।'

सुहेलदेव मुस्कुरा दिया। 'ये तो आदर्श होगा ना? अगर कोई योद्धा युद्ध के नियमों को तोड़े बिना, कोई पाप किए बिना युद्ध जीत सके। लेकिन तब क्या अगर जीवन आपको ऐसा विकल्प दे ही नहीं?'

गोवर्धन चुप रहा।

'इसे इस तरह सोचो, गोवर्धन,' सुहेलदेव ने कहा। 'तब क्या करना चाहिए अगर जीवन किसी योद्धा को ऐसे दोराहे पर ले आए जहाँ उसके पास केवल दो

विकल्प हैं। एक राह पर वो अपनी मर्यादा बचा सकता है और पाप से अपनी आत्मा की रक्षा कर सकता है। लेकिन ऐसा करते हुए वो दुश्मन को वापस आने की छूट भी देता है, जिससे उन हज़ारों निर्दोष नागरिकों को अपनी जान गंवानी पड़ेगी जो उस योद्धा पर अपनी सुरक्षा के लिए आश्रित थे। हालांकि, दूसरी राह पर योद्धा अपनी आत्मा पर एक पाप लेता है। वो जानता है कि कर्म के नियम-क़ायदों के अनुसार, उसे उस पाप की सज़ा मिलेगी। इस जीवन में या फिर अगले जीवन में। लेकिन उस पाप को करके योद्धा ये सुनिश्चित कर देता है कि दुश्मन कभी नहीं लौटेगा और उसकी प्रजा नहीं मरेगी। धर्म क्या कहता है? योद्धा को क्या करना चाहिए?'

गोवर्धन चुप रहा।

'तुम्हें याद है भगवान परशुराम ने क्या कहा था?'

गोवर्धन ने सिर हिलाकर हामी भरी। वो जानता था। सभी योद्धा जानते थे।

'भगवान परशुराम ने कहा था कि एक सच्चा योद्धा अपनी आत्मा से अधिक अपने देश से प्रेम करता है। और अगर, अपनी आत्मा पर पाप का बोझ लेने से, मोक्ष प्राप्ति के अपने अवसर का त्याग करने से, वो अपने ऊपर आश्रित लोगों की रक्षा कर सकता है तो उसे ऐसा करना चाहिए। बिना किसी हिचक के।'

गोवर्धन, अब्दुल और तोशानी चुप थे।

सुहेलदेव पल भर के लिए रुका और फिर साफ़-साफ़ कहा, 'मक़सूद की लाश जलाई जाएगी।'

जब सुहेलदेव अपने बिस्तर से उठा, भोर हो चुकी थी, वो अपने तम्बू से बाहर निकला और घुड़साल की तरफ़ जाने लगा। उसके अंगरक्षक चुपचाप उसके पीछे चल दिए, बिना कुछ कहे।

सालार मक़सूद के वध के चार दिन हो चुके थे। सुहेलदेव के आदेशानुसार उसकी लाश जलाई जा चुकी थी। लेकिन उसके सिर को विशेष रसायनों का प्रयोग करके सुरक्षित रखा गया था। सुहेलदेव अभी भी गज़नी को एक सन्देश देना चाहता था।

जब श्रावस्ती का राजा सेना के घुड़साल शिविर में पहुँचा, उसका सईस अपनी आँखों को मलता हुआ उठ खड़ा हुआ। बिना कुछ कहे सुहेलदेव ने अपने घोड़े पर जीन चढ़ाने में उसकी मदद की। फिर, वो उस जानवर पर सवार होकर बाहर निकल गया, उसके प्रहरी पीछे-पीछे थे।

शिविर को युद्ध के मैदान से थोड़ी दूरी पर स्थानान्तरित कर दिया गया था, लेकिन सुहेलदेव को इतनी दूर घुड़सवारी करके जाने में कोई समस्या नहीं थी। इस समय, हवा सुखद थी और सुखदायक शान्ति थी जो दिन की व्यस्तता बढ़ने के साथ उसे कभी-कभार ही मिल पाती थी।

जब वो अपने मनोवांछित स्थान पर पहुँचा, तो उसने लगाम खींचकर अपने घोड़े की रफ्तार धीमी कर दी। घोड़े से उतरकर, उसने उसकी लगाम अपने एक अंगरक्षक को थमाई।

फिर वो थोड़ी दूर तक चला। अपने दोस्त की कब्र की ओर। असलान के अन्तिम विश्राम स्थल की ओर। सालार मसूद की कब्र।

जब वो जीवित था, असलान को झील के पास की एक जगह पसन्द आई थी और उसने उम्मीद की थी कि वो यहाँ वापस आकर एक सूफी आश्रम स्थापित करेगा। सुहेलदेव को ये बात याद थी। और उसने आदेश दिया था कि युद्ध के मैदान में से असलान का शव ढूँढ़ा जाए, और पूरे इस्लामी रीति-रिवाजों के साथ, झील के पास की उसकी मनपसन्द जगह पर उसे दफनाया जाए।

उसने हर सुबह थोड़ी देर के लिए उसकी कब्र पर आना शुरु कर दिया था और वो उससे ऐसे बात करता था जैसे कि असलान अभी भी जीवित हो।

'मैं कल यहाँ से चला जाऊँगा, मेरे दोस्त,' सुहेलदेव ने धीमी आवाज़ में असलान की कब्र से कहा। 'उस सबके के लिए तुम्हारा शुक्रिया, जो तुमने मेरे लिए किया। मेरी मातृभूमि के लिए किया। हमारी मातृभूमि के लिए किया।' हवा थोड़ी देर के लिए तेज़ बहने लगी, जैसे उसने आह भरी हो। सुहेलदेव ने आगे बढ़कर हल्के हाथ से कब्र को छुआ। 'अच्छे से आराम करो, मेरे दोस्त। तुम इसके हकदार हो। हममें से कोई भी तुम्हें कभी नहीं भूल पाएगा। अल्लाह और भगवान शिव तुम्हें अपना आशीर्वाद देते रहें।'

उसने झील की तरफ़ देखा। उसी नज़ारे को, जिसे वो जानता था कि असलान पसन्द करता था। फिर उसने गौर किया कि प्रहरी महिलाओं के एक समूह को पीछे धकेलते लग रहे हैं जिनके हाथों में फूल हैं।

'क्या हो रहा है?' सुहेलदेव ने पूछा।

'हम असलान बाबा की कब्र पर प्रार्थना करने आए हैं,' उनमें से एक महिला ने कहा। उसके माथे पर पारम्परिक हिन्दू बिन्दी थी। उसके पास की दूसरी महिला ने मुसलमान महिलाओं में सिर से पैर तक पहना जाने वाला लिबास, अबाया, पहना था। 'इतनी पवित्र जगह पर की गई दुआ ज़रूर कुबूल होगी।'

इस इलाक़े में बाबा शब्द का प्रयोग सन्त के लिए किया जाता था। इलाक़े के स्थानीय लोगों ने भारत की रक्षा के लिए असलान या सालार मसूद की भूमिका के बारे में सुना था। वे लोग उसका सम्मान करने आए थे। यहाँ तक कि उसे पूजने। क्योंकि महान लोग तो वही होते हैं, जो अपने अन्दर भगवान को तलाश लेते हैं।

'क्या अंधविश्वास और बकवास है,' एक प्रहरी ने कहा। वो एकाएक रुक गया और हड़बड़ाते हुए माफी माँगने लगा जब सुहेलदेव ने उसे घूरकर देखा।

'अगर इस जगह पर तुम्हें शान्ति मिलती है, तो आगे बढ़ो और प्रार्थना करो,' सुहेलदेव ने सालार मसूद की कब्र को देखते हुए कहा। 'क्योंकि इस जगह को भगवान शिव और अल्लाह दोनों का आशीर्वाद मिला है।'

उसने प्रहरियों को अपने पीछे आने का संकेत दिया, अपने घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया।

— EJJ ਮ੨ਨਟੋ∆ —

बहराइच के युद्ध के बाद साल भर का समय बीत चुका था।

तुर्कों के हाथों बर्बाद हुए कई इलाक़ों में पुनर्निर्माण शुरु हो चुका था। जिन स्थानों पर पुनर्निर्माण हो रहा था, उनमें से एक था गुजरात के समुद्र तट पर सोमनाथ मन्दिर।

तुर्कों के आतंक को ख़त्म करने वाले सुहेलदेव और उसके दस्ते को विशिष्ट अतिथियों के रूप में निमंत्रण भेजा गया था क्योंकि मन्दिर महादेव, भगवान शिव को समर्पित था।

आलीशान शिवलिंग चमक रहा था और उस पर गिरने वाली सूर्य की किरणों को प्रतिबिम्बित कर रहा था। एक अस्थायी मन्दिर में स्थापित करके इसकी प्राण प्रतिष्ठा की गई थी, जब सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण चल रहा था। लेकिन आज, ये मुख्य मन्दिर में अपने सही स्थान पर स्थापित होगा।

सुहेलदेव ने प्रतिमा के आगे सिर झुकाया। 'यह सम्राट राजेन्द्र चोल की तरफ़ से सच में अद्भुत उपहार है,' उसने नरसिम्हन को कहा। 'वास्तव में मूल शिवलिंग का उपयुक्त विकल्प।'

नरसिम्हन रहस्यमय ढंग से मुस्कुराया। 'हाँ...लेकिन शायद आपको पता नहीं कि मूल शिवलिंग का एक अंश भी आज वापस लौट आया है।'

सुहेलदेव का मुँह खुला का खुला रह गया। 'आपका मतलब है...लेकिन मैंने सोचा था कि महमूद...'

नरसिम्हन सुहेलदेव के आश्चर्य पर आनन्दित होकर मुस्कुराता रहा। 'यह लम्बी कहानी है, महाराज। लेकिन महमूद की मौत प्राकृतिक नहीं थी। और हमें अपना प्रतिशोध वहाँ भी मिला।'

'लेकिन कैसे?'

'मैं आपको बताऊँगा...और शायद, किसी दिन, कोई लेखक इस कहानी को लिख भी सकता है। एक अन्य पुस्तक में। लेकिन अभी के लिए, पहले हम अनुष्ठान सम्पन्न कर लें।'

सुहेलदेव उत्सुकता से भरा नरसिम्हन की ओर ताकता ही रहा। 'मेरे दोस्त, आपको अनुष्ठान के तुरन्त बाद मुझे पूरी कहानी बतानी होगी।'

नरसिम्हन ने अपना सिर झुका दिया। 'जैसा आपका आदेश, महाआर्य।'

सुहेलदेव ने मुस्कुराते हुए दोस्ताना अन्दाज़ में नरसिम्हन की बाँह थाम ली। फिर वो उस भारी भीड़ की तरफ़ मुड़ा जो वहाँ जमा हुई थी।

उसके बिल्कुल सामने तोशानी और उसके साथी, गोवर्धन, अब्दुल और संघमणि थे। उसकी माँ भी उपस्थित थीं। साथ ही श्रावस्ती गठबंधन के कई सदस्य थे, जिनमें चन्देल सेनापति सूर्यवीर, राजा करण और भी कई अन्य जिन्होंने तुर्कों के साथ बहादुरी से युद्ध किया था। और पूरे देश से आए भारतीय।

वे जानते थे कि अभी यहाँ लोगों को सम्बोधित किया जाने वाला है। और दर्शक उस शूरवीर को देखते ही उसका नाम पुकारने लगे।

'सुहेलदेव!'

'सुहेलदेव!'

'सुहेलदेव!'

सुहेलदेव ने सभी को शान्त रहने का संकेत करते हुए अपना हाथ ऊपर उठाया और कहा, 'इस मन्दिर का पुनर्निर्माण केवल एक ढांचे का पुनर्निर्माण नहीं है।'

दर्शक उसे बिल्कुल ख़ामोशी के साथ सुन रहे थे।

'ये भगवान महादेव का अपने स्थान पर लौटना भर नहीं है। महादेव लौट कैसे सकते हैं जब वो कहीं गए ही नहीं थे?'

भीड़ असमंजस में दिखने लगी।

सुहेलदेव ने स्पष्ट किया। 'ब्रह्मांड के हर कण में भगवान शिव हैं। केवल आपमें और मुझमें ही नहीं, बल्कि नदियों और महासागरों की हर बूँद में, सभी शरीरों और वस्तुओं के हर परमाणु में, आकाश के हर तारे में, उन सभी में भगवान शिव हैं। यहाँ तक कि नष्ट किए गए मन्दिर में भी भगवान शिव थे।'

भारतीय उसे चुपचाप ध्यान से सुन रहे थे। बीच में किसी ने एक जयकार भरी 'हर हर महादेव!'।

और फिर स्वाभाविक रुप से वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति ने दोहराया: 'हर हर महादेव!'

'फिर इस मन्दिर के पुनर्निर्माण का क्या अर्थ था?' सुहेलदेव ने पूछा।

श्रावस्ती के राजा ने चारों तरफ़ देखा। कोई उत्तर नहीं आया क्योंकि सभी उत्तर के लिए सुहेलदेव का इन्तज़ार कर रहे थे।

सुहेलदेव ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'सोमनाथ जी के मन्दिर का पुनर्निर्माण एक सन्देश है! विश्व को सन्देश! हमारे साथ की कई प्राचीन संस्कृतियाँ ख़त्म हो चुकी हैं। अब रोम में कोई भी रोमन देवताओं में विश्वास नहीं करता है। यूनान में अब कोई यूनानी मन्दिरों में पूजा नहीं करता है। मिस्र की प्राचीन संस्कृति को तो स्वयं मिस्र के लोगों ने छोड़ दिया है। भूमध्यसागर के आसपास के सभी आध्यात्मिक केन्द्र वीरान हो गए हैं। दुनिया भर में, कई सभ्यताओं का सफ़र ख़त्म हो चुका है जिन्होंने हमारे साथ ही शुरुआत की थी। वो ख़त्म हो गई हैं!' अपने पीछे बने मन्दिर की ओर संकेत करके सुहेलदेव ने गरजती हुई आवाज़ में कहा, 'लेकिन चूँकि भगवान शिव हमारे साक्षी हैं, हमारी भारतीय सभ्यता समाप्त नहीं होगी!'

भीड़ ने एक स्वर में गर्जना की। उनकी आत्मा की गहराई से वो गर्जना निकली। गर्व की गर्जना।

'वे सभ्यताएँ सिर्फ इसलिए ख़त्म नहीं हुईं कि उन पर विदेशियों ने आक्रमण किया था। सभ्य लोगों पर बर्बरों का हमला कब नहीं हुआ है? वे सभ्यताएँ ख़त्म हुईं क्योंकि सभ्य लोगों ने अपनी सभ्यता की परवाह करनी छोड़ दी! लेकिन चूँकि भगवान शिव हमारे साक्षी हैं, हम भारतीय परवाह करनी नहीं छोड़ेंगे!'

भीड़ सुहेलदेव के नाम की जयकार लगाने लगी। उन्होंने भारत माता की जयकार लगानी शुरू कर दी। सुहेलदेव ने अपना एक हाथ उठाकर उन्हें शान्त किया।

'कोई देश इसलिए ख़त्म नहीं होता क्योंकि कुछ लोग उससे घृणा करते हैं। क्या ऐसा कोई समय था जब इस विश्व में घृणा ना रही हो। एक मातृभूमि तब ख़त्म होती है जब उसके अपने बच्चे उससे प्रेम करना छोड़ देते हैं! एक राष्ट्र उनसे नहीं बनता जो उससे घृणा करते हैं, बल्कि उनके कंधों पर बनता है जो इससे प्रेम करते हैं!' सुहेलदेव ने अपनी मुट्ठी हवा में उठाई। 'और चूँकि भगवान शिव हमारे साक्षी हैं, हम भारतीय कभी भी अपने देश से प्रेम करना नहीं छोड़ेंगे!'

वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाए, मुट्ठियाँ तनी हुई थीं, शरीर गर्व से हर्षित थे, उनकी आत्माएँ एक लक्ष्य से भरी हुई थीं।

और अब केवल एक चीज़ कही जानी शेष थी।

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

'जय माँ भारती!'

सुहेलदेव ने अपना हाथ उठाकर सभी लोगों को शान्त किया।

'सभी लोगों को भगवान को स्पर्श करने का सम्मान मिलेगा। मन्दिर में महादेव को उनके उचित स्थान पर पुनर्स्थापित करने का सम्मान मिलेगा। उनकी प्रतिमा को ले जाने का सम्मान मिलेगा। यहाँ उपस्थित सभी लोगों को, सभी लोगों को।'

यह परम्परा से हटकर था। लेकिन किसी ने महान सुहेलदेव से प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया।

'आइए शुरू करें!'

सुहेलदेव के इशारा करने पर तोशानी आगे बढ़ी, साथ ही गोवर्धन और एक आँख पर पट्टी लगाए अब्दुल भी आगे बढ़ा। उसके पीछे संघमणि। चोल सेनापति नरसिम्हन, चन्देल सेनापति सूर्यवीर और राजा करण भी आगे बढ़े। एक-एक करके, सुहेलदेव के बहुतेरे सहयोगियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने क़दम आगे बढ़ाए। वो एक साथ झुके, उस चबूतरे को पकड़ा जिस पर शिवलिंग रखा था और उसे खींचा।

'हर हर महादेव!' सुहेलदेव ने जयकार लगाई।

'हर हर महादेव!' सभी की ओर से प्रत्युत्तर आया।

वो सभी सीधे खड़े हुए और अपने कंधों पर चबूतरे को उठा लिया।

जब वो शिवलिंग को मन्दिर की तरफ़ थोड़ी दूरी तक ले जा रहे थे, भीड़ गर्जना करती जा रही थी।

'हर हर महादेव!'

'जय माँ भारती!'

जयकार मन्दिर के चारों तरफ़ गूँज उठी और समुद्र की गर्जना से प्रतिध्वनित होने लगी। एक-एक करके सभी को चबूतरे को उठाने का अवसर मिला। भगवान

महादेव को उनके पुनर्निर्मित घर में पहुँचाने का। पुनर्निर्मित सोमनाथ मन्दिर के गर्भगृह में पुनर्स्थापित करने का।

सुहेलदेव को अपने रोंगटे खड़े होते महसूस हुए, जब जयकार बार-बार होने लगी। तेज़, और तेज़ होने लगी जब तक कि उस गर्जना ने सागर तट पर टकराने वाली लहरों की आवाज़ को पीछे नहीं छोड़ दिया।

दूर पीछे की तरफ़, मन्दिर के द्वार के पास, एक वृद्ध, जिसने कुछ वर्ष पहले सोमनाथ मन्दिर में घृणित महमूद ग़ज़नवी का कराया नरसंहार देखा था, अपनी छोटी पोती से कह रहा था। 'हमारे देश की तरफ़ कोई हमलावर नज़र उठाने का साहस नहीं करेगा, जब तक इस देश में श्रावस्ती के राजा जैसी सन्तानें होंगी। मेरी बच्ची, सुहेलदेव से सीख ले। उससे सीख।'

ग़ज़नी के तुर्कों ने निश्चित रूप से अपना सबक सीख लिया था, क्योंकि भारत में उनकी पूरी सेना को ख़त्म कर दिया गया था। अन्तिम सैनिक तक को। ये एक ऐसा नुक़सान था जिससे उबर पाना उनके लिए दशकों तक मुश्किल होगा। हरेक तुर्क सैनिक की लाश के साथ, सालार मक़सूद की लाश को भी जला दिया गया था। और मक़सूद के शरीर की राख को एक कलश में रखकर ग़ज़नी भेज दिया गया था। इसे एक सन्देश के साथ भेजा गया था। वो सन्देश सालार मक़सूद के कटे हुए सिर के माथे पर खुदा था।

सन्देश साधारण था।

भारत में भक्तों की तरह आओ, और हमारी मातृभूमि खुले हृदय से तुम्हारा स्वागत करेगी। हमलावरों की तरह आने का दुस्साहस करो, और हम तुममें से हरेक को जला डालेंगे।

तुर्कों ने अच्छा सबक सीख लिया था। अगले एक सौ पचास वर्षों तक भारत पर आक्रमण करने का कोई प्रयास नहीं हुआ।

'सुहेलदेव से सीख, मेरी बच्ची। उससे सीख। जय सुहेलदेव!'

छोटी बच्ची ने अपने दादा की तरफ़ ऊपर देखा। और फिर सुहेलदेव की तरफ़। वो जानती थी कि उसे बड़े होकर क्या बनना था। वो एक योद्धा बनना चाहती थी। भारत के लिए योद्धा।

उसने अपने हाथ सम्मानपूर्वक जोड़े और दूर खड़े श्रावस्ती के राजा की तरफ़ अपना सिर झुकाते हुए उसने अपने दादा की जयकार को दोहराया। 'जय सुहेलदेव!'

ॐ नमः शिवाय।

ब्रह्मांड भगवान शिव को नमन करता है।

मैं भगवान शिव को नमन करता हूँ।

अमीश की अन्य किताबें

शिव रचना त्रयी

भारतीय प्रकाशन इतिहास में सबसे तेज़ी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला

मेलूहा के मृत्युंजय
(शिव रचना त्रयी की किताब 1)

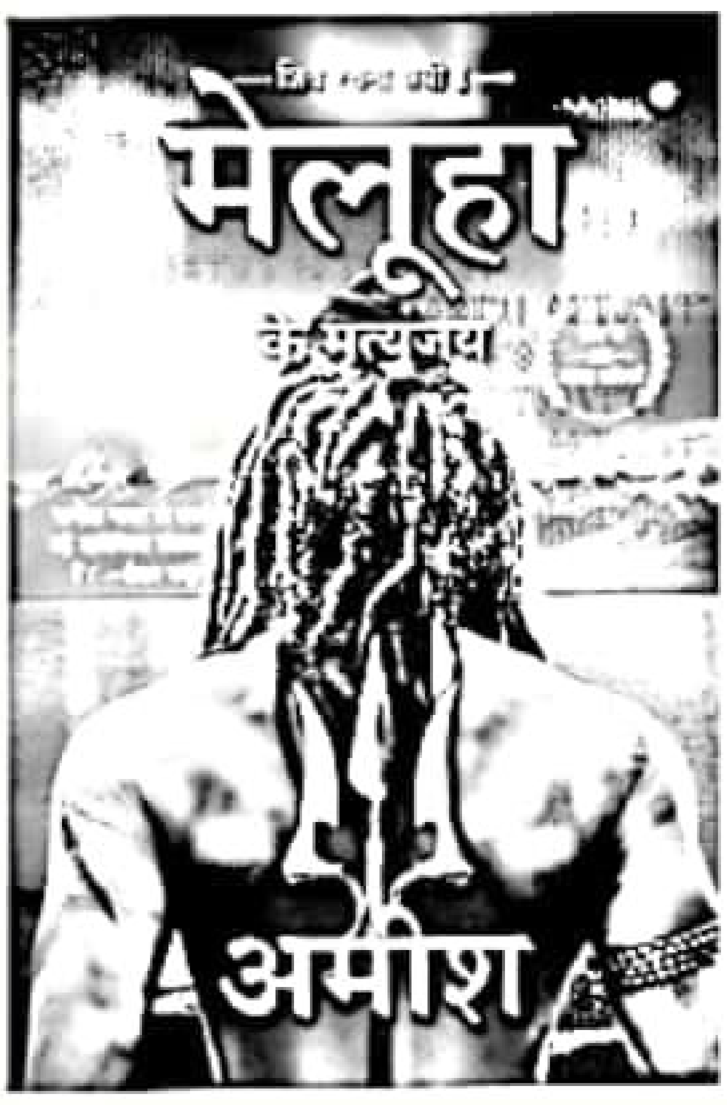

1900 ईसापूर्व। जिसे आधुनिक भारतीय ग़लती से सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं, उसे उस समय के निवासी मेलूहा की भूमि—एक सम्पूर्ण साम्राज्य जिसकी स्थापना प्रभु श्रीराम ने कई शताब्दियों पूर्व की थी—के रूप में जानते थे। अब उनकी प्राथमिक नदी सरस्वती मृतप्राय होती जा रही है, और वे पूर्व दिशा में अपने शत्रुओं द्वारा किये जा रहे आतंकवादी हमलों का सामना कर रहे हैं। क्या उनके प्रसिद्ध महानायक नीलकंठ बुराई के नाश के लिए अवतरित होंगे?

नागाओं का रहस्य
(शिव रचना त्रयी की किताब 2)

कुटिल नागा योद्धा ने अपने मित्र बृहस्पति की हत्या कर दी है और अब उसकी पत्नी सती के पीछे पड़ा है। शिव, जो बुराई के प्रसिद्ध विनाशक हैं, अपने राक्षसी विरोधियों को ढूँढ़ लेने तक चैन से नहीं बैठेंगे। प्रतिशोध की प्यास उन्हें सर्प प्रजाति के लोगों नागाओं के द्वार तक ले जायेगी। शिव रचना त्रयी की दूसरी किताब में, भयंकर युद्ध लड़े जायेंगे और कुछ चौंकाने वाले रहस्यों से पर्दा उठेगा।

वायुपुत्रों की शपथ
(शिव रचना त्रयी की किताब 3)

शिव नागाओं की राजधानी पंचवटी तक जा पहुँचते हैं, और अपने वास्तविक शत्रु के विरुद्ध धर्मयुद्ध की तैयारी करते हैं। नीलकंठ नाकाम नहीं हो सकते चाहे इसकी जो भी क़ीमत चुकानी पड़े। अपनी हताशा में, वे वायुपुत्रों से सम्पर्क करते हैं। क्या वे सफल हो पायेंगे? और बुराई से लड़ने की वास्तविक क़ीमत क्या होगी? इन सभी रहस्यों का जवाब पाने के लिए इस बैस्टसैलिंग शिव रचना त्रयी का अन्तिम भाग पढ़ें।

राम चंद्र शृंखला

भारतीय प्रकाशन इतिहास में दूसरी सबसे तेज़ी
से बिकने वाली पुस्तक शृंखला

राम—इक्ष्वाकु के वंशज
(शृंखला की किताब 1)

वे अपने देश से प्रेम करते हैं और क़ानून के लिए अकेले डटकर खड़े रहते हैं। उनके भाई, उनकी पत्नी सीता, और अराजकता के अँधकार के विरुद्ध लड़ाई। वे हैं राजकुमार राम। क्या वे दूसरों द्वारा उन पर उछाली गयी कीचड़ से उबर पायेंगे? क्या सीता के प्रति उनका प्रेम उन्हें उनके संघर्षों से पार लगा सकेगा? क्या वे उस राक्षस राजा रावण को हरा पायेंगे जिसने उनका बचपन नष्ट कर दिया था? क्या वे विष्णु की नियति को पूरा कर पायेंगे? अमीश की नयी राम चंद्र शृंखला के साथ एक और ऐतिहासिक सफ़र की शुरुआत करें।

सीता—मिथिला की योद्धा
(शृंखला की किताब 2)

खेतों में एक परित्यक्त बच्ची मिलती है। उसे दूसरों द्वारा नज़रअन्दाज़, कमज़ोर राज्य मिथिला के शासक गोद ले लेते हैं। किसी को विश्वास नहीं है कि यह बच्ची कुछ विशेष कर पायेगी। लेकिन वे ग़लत हैं। क्योंकि वह कोई साधारण लड़की नहीं है। वे सीता हैं। एक अनोखी बहु-रेखीय कथा शैली के माध्यम से, अमीश आपको राम चंद्र शृंखला के ऐतिहासिक जगत की गहराइयों में और अन्दर तक ले जाते हैं।

रावण—आर्यवर्त का शत्रु
(श्रृंखला की किताब 3)

रावण मनुष्यों में विशालतम बनने, विजयी होने, लूटपाट करने, और उस महानता को हासिल करने के लिए दृढ़संकल्प है जिसे वह अपना अधिकार मानता है। वह विरोधाभासों, नृशंस हिंसा और अथाह ज्ञान से भरपूर व्यक्ति है। ऐसा व्यक्ति जो प्रतिदान की आशा के बिना प्रेम करता है और बिना पश्चाताप हत्या कर सकता है। *राम चंद्र श्रृंखला* की इस तीसरी किताब में, अमीश ने लंका के राजा रावण के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उभारा है। क्या वह इतिहास का सबसे बड़ा खलनायक है या परिस्थितियों का मारा?

कथेतर

अमर भारत

B O O K H O U S E 1

भारत को खोजें देश के कहानीकार अमीश के साथ, जो आपको तीखे लेखों, स्पष्ट भाषणों और बुद्धिमत्तापूर्ण बहस के द्वारा देश को एक नये ढंग से समझने में मदद करते हैं। *अमर भारत* में, अमीश आकर्षक रुप से आधुनिक दृष्टिकोण के साथ एक प्राचीन संस्कृति का विस्तृत ख़ाका खींचते हैं।